

कठिनाइयों में संभावनाएँ

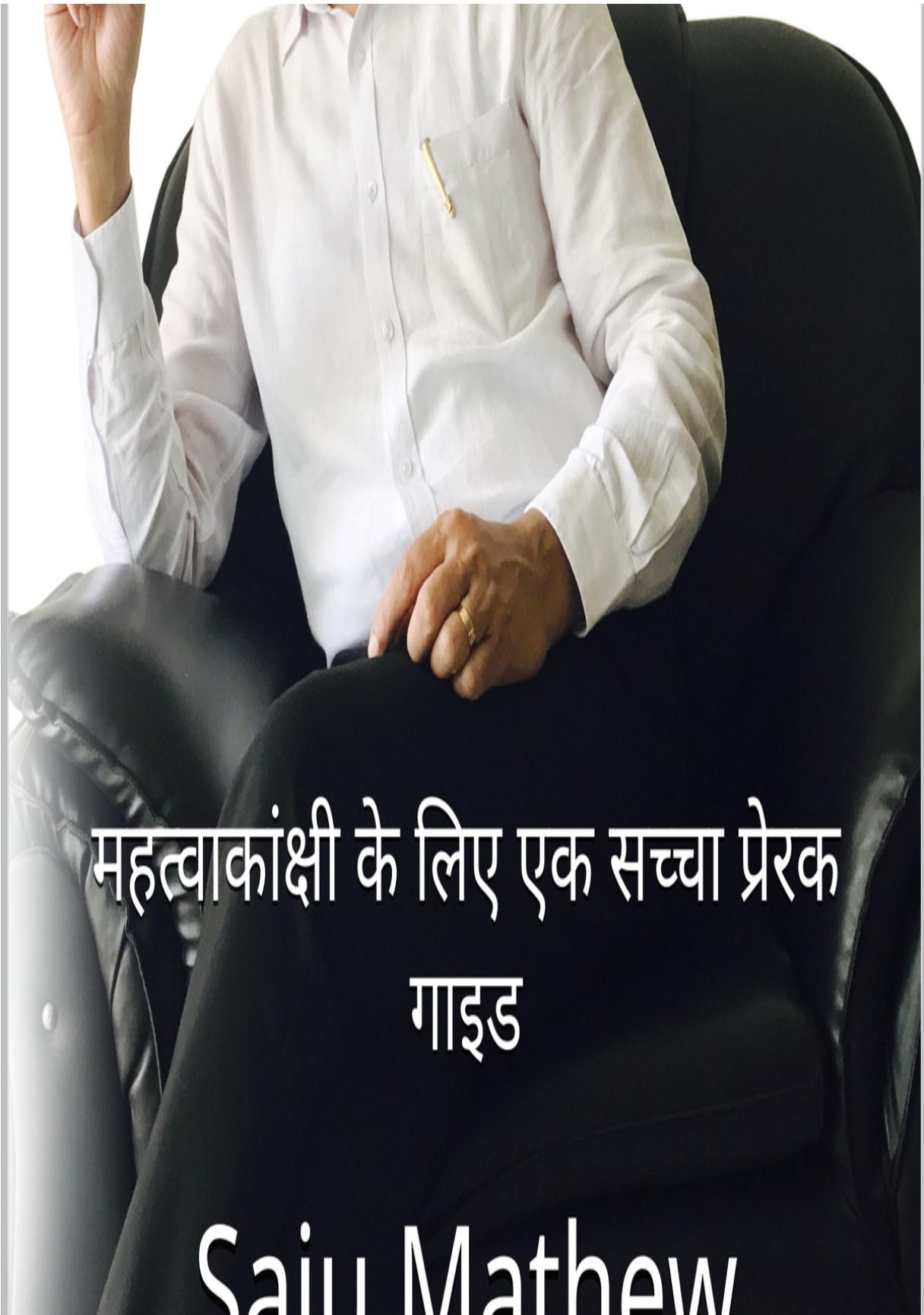


महत्वाकांक्षी के लिए एक सच्चा प्रेरक
गाइड

Saju Mathew

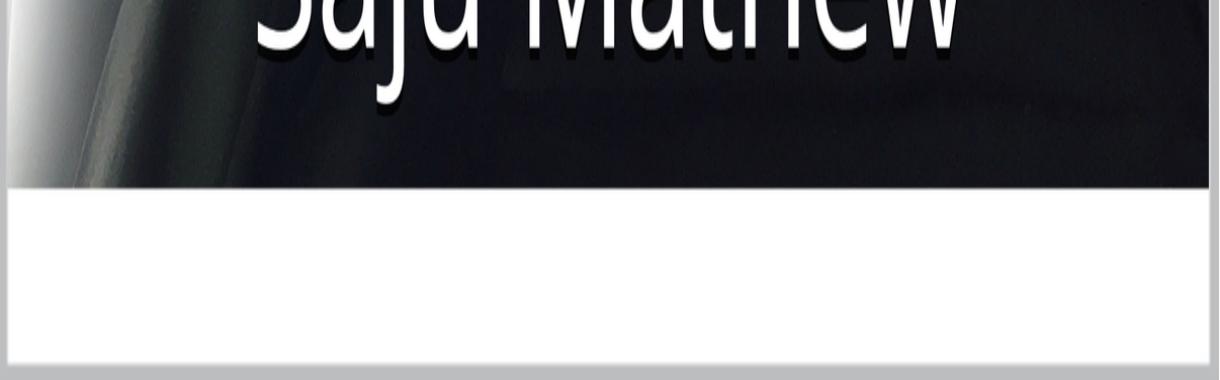
कठिनाइयों में संभावनाएँ





महत्वाकांक्षी के लिए एक सच्चा प्रेरक
गाइड

Saiu Mathew



SUPER INTERVIEW

कठिनाइयों में संभावनाएँ
महत्वाकांक्षी के लिए एक सच्चा प्रेरक गाइड

सजु मैथ्यू

निष्ठा

मैं यह किताब अपने परिवार, शिक्षक और कर्मचारी वर्ग को समर्पित करता हूँ | मेरे दिवंगत पिता के. टी. मैथ्यू, माता सोसममा मैथ्यू, प्यारी पत्नी जैजो सजु, अद्भुत बेटे अमल सजु और अमलिन सजु, मेरे प्यारे शिक्षक वेलायुधन महाशय, संपादक एलिजाबेथ जिजो और डिजाइनर लिंडा जॉनसन, जिनके प्रोत्साहनभरे शब्दों से मुझे इस किताब को सफलतापूर्वक पूरा करने में मदद मिली, इन सबका मैं विशेष रूप से आभार व्यक्त करता हूँ |

मैं इस पुस्तक को अपने अन्य कर्मचारी वर्ग को भी समर्पित करता हूँ, जिन्होंने मुझे पूरी प्रक्रिया में समर्थन किया | मैं हमेशा उनके कार्यों की सराहना करूँगा, विशेष रूप से शिवदास पी.एम. का (उपाध्यक्ष क्लॉवर्स ग्रुप) जिसने मुझे अपने शोध कौशल को विकसित करने में सहायता की; आशिष, सिनी, अशवती, बिबिन, धन्या, सुधा, निवाथिथा, आशी, शारुख और सशिकाला की सराहना करूँगा, खास तौर पर उनके नैतिक समर्थन के लिए |

सुश्री रेखा शिवदास को एक विशेष धन्यवाद |
आप सब मेरे सर्वोत्तम प्रशंशक रहे हैं |

- सजु मैथ्यू

अंतर्वस्तु

1. सफलता का त्रिकोण
2. विश्वास
3. क्रिया
4. असफलता का डर
5. जिम्मेदार बनिए - एक अंतर बनाइए
6. सफलता के नौ मूल मंत्र
7. कौशल नहीं जुनून मायने रखता है
8. सकारात्मक सोच और मुमकिन सोच
9. नौ प्रमुख गलतियाँ
10.
रवैया
11.
कृतज्ञता का रवैया

1. सफलता का त्रिकोण

प्रस्तुत पुस्तक में आपकी रुचि खासतौर पर यही दिखाती है कि
आप महत्वाकांक्षी हैं। आपको बहुत – बहुत शुभकामनाएँ।

यह,

तीन और बातों का भी खुलासा करते हैं -

आप महत्वाकांक्षी हैं, दूसरों की सफलता आपको आकर्षित करती हैं।

तथा

आप अपने जीवन में बदलाव लाने की आशा करते हैं।

मुझे इस बात पर कोई शंका नहीं है, कि आप अपने सपनों से अधिक दूर नहीं हैं क्योंकि इस पुस्तक का चयन करने की आपकी रुचि ही यह दिखलाती है कि आप अपने सपनों को पूरा करने के लिए आगे बढ़ चुके हैं और परिवर्तन आपकी जड़ों में समा चुका है।

हमें सर्वश्रेष्ठ ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिए कि उन्होंने हमें सहज ज्ञान तथा अंतर्दृष्टि दी जिससे हम बदलाव ला सकें क्योंकि हमारे आस – पास ऐसे कई लोग हैं जिन्हें अब तक यह एहसास नहीं हुआ है।

हर नेतृत्वशाली तथा प्रेरणादायक प्रशिक्षण कार्यक्रम में, मैं प्रतिभागियों से दो ही प्रश्न पूछता हूँ – कि क्या उनके पास अपनी निजी तथा आधिकारिक जीवन को सुधारने का कोई रामबाण है तथा वे अपने देश की प्रगति में किस प्रकार अपना समर्थन दे सकते हैं ?

अधिकांश स्वयं – सहायक सेमिनार प्रतिभागियों के पास समान्यतर एक ही प्रवृत्ति का उत्तर होता है जैसे निष्ठा, प्रतिबद्धता, ईमानदारी, नवोन्मेष आदि। उत्तम जवाब, जिन्हें मैं भी अस्वीकार नहीं करता हूँ। किंतु मैं आपको यह बता दूँ कि जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए अथवा अपने देश की प्रगति के लिए, आपके पास तीन तत्व होने चाहिए – सपना (ड्रीम्स), भरोसा (बीलीफ्स) तथा कार्य (एक्शन) करने की इच्छा क्योंकि वे सफलता के तीन महत्वपूर्ण अवयव हैं।

बल्कि यह बताइए कि सफलता का क्या अर्थ है ? शब्दावली की बहुत – सी परिभाषाएँ हैं – जिसे सफलता कह सकते हैं। ऑक्सफ़ोर्ड शब्दकोश के अनुसार, सफलता का अर्थ है – लक्ष्य अथवा प्रयोजन की उपलब्धि।

सफल व्यक्ति अन्य व्यक्तियों से भिन्न क्यों लगते हैं ? कारण और कुछ भी नहीं किंतु उन्हीं के सपने (ड्रीम्स), भरोसे (बीलीफ्स) तथा कार्य (एक्शन) हैं ।

हर कार्यशाला के दौरान, मैं अपने प्रतिभागियों को अपने सपनों की सूचि बनाने के लिए कहता हूँ । ज्यादातर मुझे कार्यपुस्तिका सम्पूर्ण खाली दिखती है या कुछ ही पंक्तियाँ लिखी हुई होती हैं ।

अधिकांश लोग अपने जीवन के महत्व से अनजान रहते हैं । अधिकतर लोगों के लिए सपने केवल नींद में दिखते हैं जिनका कोई खास कारण नहीं होता है । किंतु सफलता साधक के लिए यह सब अलग ही होता है ।

उनके लिए सपना ऐसी चीज़ है, जो उन्हें तब तक सोने नहीं देती जब तक कि वह पूरा नहीं हो जाए ।

मैं यह ज़रूर कहूँगा कि सपनों का प्रभाव अत्यंत बड़ा होता है । यह बहुत ही रोमांचक बात है गौर करने की कि आज बहुमत जो आराम और सुविधा का लाभ उठा रहे हैं, वे वस्तुएँ किसी एक व्यक्ति या समूह का सपना ही हैं ।

विमान अथवा दूरसंचार उद्योग के मामलों पर विचार करना चाहिए । एक नियमित यात्री होने के कारण, दुबई अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा मुझे हमेशा आकर्षित करता है क्योंकि यहाँ विविधता, ऑपरेशन के आयतन, मेलजोल तथा अन्य सुविधाएँ हैं । इन सबसे हमेशा गंतव्य को भड़काने का विचार सामने आता है ।

दुबई अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा प्रतिदिन दो हज़ार से ज्यादा विमान तथा दो लाख यात्रियों को संभालती है । औसत तौर पर, हर मिनट में एक विमान उड़ान – भूमि पर उतरता है अथवा उड़ान भरता है जबकि उसी वक्त दूसरी तरफ़ १४० यात्रियों के आप्रवासन की प्रतिक्रिया वहाँ होती है । इसके अलावा, वे दुनियाभर के अन्य कई हवाई अड्डों से भी जुड़े हुए हैं ।

अब, इस पुस्तक को पढ़ते हुए ज़रा कल्पना कीजिए कि अभी न जाने कितने ही विमानों की आवाजाही ज़मीन पर तथा आसमान में हो रही होंगी, कितने ही लोगों की आवाजाही हो रही होंगी, जुड़े हुए संचालन तथा दुबई हवाई अड्डे एवं अन्य जुड़े हवाई अड्डों के व्यावसायिक विकास हो रहे होंगे । इसके अलावा, एक ही समय में कल्पना करें कि

.....
...कितने देश अपने अंतरिक्ष मिशन की योजना बना रहे होंगे ?

...कितने लोग शायद दुनिया के अन्य भागों में जाने के लिए अपने अगले विमान की तैयारी कर रहे होंगे ?

...कितने प्रेमी – प्रेमिकाएँ अलग होने वाले विचार पर रो रहे होंगे ?

...कितने मरीज़ एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप पर स्थानांतरित हो रहे होंगे ?

...कितने पर्यटन समन्वयक पूरे विश्व में अपने ग्राहकों को भिन्न – भिन्न यात्रा वृतांत का परिचय देने में व्यस्त होंगे ?

...कितने संगठन चिट्ठियों को अगले संदेशवाहक के लिए रख रहे होंगे ?

अहा ! यह उड़ान उद्योग, ये एक परस्पर जुड़े उद्योग हैं | यह सारी दृष्टि मेरी कल्पना से परे है |

क्या आपने कभी यह सोचा कि यह विमान उद्योग कहाँ से उत्पन्न हुई है ? यह एक सरल किंतु महान सपने से उत्पन्न हुई |

किसी एक के ऊँचे उड़ने के एक गहरी – मजबूत जड़ों वाले सपने ने, आज सच में विमान उद्योग को बना डाला है | इसने अंतरिक्ष अभियानों की शुरुआत की है, मानवों को चंद्रमा तक पहुँचने में मदद की है तथा यह दुनिया के भविष्य को भी बदल सकता है |

दूरसंचार उद्योग का मामला भी अलग नहीं है |

हमारे सपने ही हमें सफल बनाने के लिए हमारे जीवन में प्रमुख भूमिका निभाते हैं | ये लोगों को सक्रिय, समर्पित, ईमानदार और अभिनव बनाती हैं |

**सपने विचारों को प्रेरित करते हैं, विचार योजनाओं को उत्तेजित करते हैं,
योजनाएँ कार्यों की मांग करते हैं तथा सही कार्य सफलता लाते हैं।**

पहली बार जब मैंने यह सुना था कि हमारे जीवन में सपने की ज़रूरत है, मेरे लिए इसे स्वीकार करना ज़रा कठिन था क्योंकि शुरुआत से ही मुझे अपने माता – पिता तथा शिक्षकों द्वारा एक व्यावहारिक व्यक्ति बनने की सीख मिली थी, ना कि सपने देखने वाला बनने की | उनके अनुसार सपने देखना आलसी तथा असफल लोगों की गुणवत्ता है | बल्कि, हर इंसान को एक ऐसा सपना तो देखना ही चाहिए जिससे वह खुद को अपनी वर्तमान स्थिति से ऊपर उठा सके क्योंकि ,

ठहराव हमें सामान्यता के अलावा और कुछ नहीं दे सकता।

अधिकतर लोग अपनी ख्याति की इच्छा करते हैं तथा खुद को अपने जानने वालों के बीच ही सही, एक सफल व्यक्ति साबित करने की पूरी कोशिश करते हैं | लेकिन फिर ऐसा क्या होता है कि वे आगे भी अपना सामान्य जीवन ही व्यतीत करते हैं ?..... यह समझना आसान है कि, या तो उनके कोई सपने ही नहीं हैं या उनके सपनों की जड़ें ही गहरी नहीं हैं |

एक पुरानी कहावत है ,

जड़ें जितनी गहरी होंगी, पेड़ उतने ही मजबूत बनेंगे।

सपनों का हत्यारा

हमारे सपने कमज़ोर क्यों हो जाते हैं ? ऐसा क्या है जो हमें साधारण जीवन जीने में विवश करता है ? ये और कुछ नहीं केवल हमारे कमज़ोर विचार हैं, जो अपने सपनों का हत्यारा है |

मेरा जन्म एक दूरस्थ स्थान में हुआ है,
मैं एक गरीब परिवार में जन्मा हूँ,
मेरी बुनियादी स्कूली शिक्षा अपर्याप्त है,
मैं दिखने में सुडौल और सुंदर नहीं हूँ,
मुझमें भाषा को प्रकट करने की योग्यता नहीं है,
मेरे पास अपने सपनों की परियोजना को पूरा करने के लिए पर्याप्त पूँजी नहीं है,
मेरे या मेरे रिश्तदारों के पास ऊँचे दर्जे के किसी भी राजनीतिक नेता की कोई पहचान नहीं है, जो मुझे आगे बढ़ा सके आदि |

जब तक उन सपनों के हत्यारों को तुम नहीं हराओगे, तब तक सफलता मिलना आसान नहीं होगा | सपनों के हत्यारे से सावधान रहना चाहिए क्योंकि वे विचार हमारी ऊर्जा को सोख लेते हैं तथा हमारी सफलता की यात्रा में बाधक बनते हैं |

वे हमारे प्रयास करने से पहले सीधे हमारे सामने आकर प्रकट हो जाएँगे तथा हमें किसी भी संभव कोशिश को करने से रोकेंगे | यह बात याद रखिएगा, कि जब तक हम ऐसे विचारों को नियंत्रण में न लें, तब तक हमारी सफलता केवल सपना ही बनकर रह जाएगी, हम उसे हकीकत में कभी पूरा नहीं कर पाएँगे | उन विचारों को नियंत्रण में करना सामान्य हो सकता है, किंतु आसान नहीं क्योंकि ऐसा ज़रूरी नहीं कि सामान्य चीजें आसान हों |

**एक साधारण व्यक्ति के सामान्य विचार – “मैं एक दूरस्थ स्थान में जन्मा हूँ
इसलिए ऊँचे – ऊँचे सपने देखना मेरे लिए अनुचित है।”**

दुर्भाग्यवश अधिकांश लोगों का यह मानना है कि शहरी समुदाय के ही सारे लोग अमीर होते हैं तथा उनका जीवन बहुत ही सफलदायक होता है। वास्तव में, किसे पता है कि कितने ही लोग आज ‘क्रेडिट कार्ड्स’ द्वारा निभाए गए महत्वपूर्ण भूमिका के कारण ही अपना जीवन बिता पा रहे हैं?

दूसरा सपनों का हत्यारा - “मैं एक गरीब घर में पैदा हुआ हूँ इसलिए मुझे अपने जीवन में बड़े सपने नहीं देखने चाहिए।”

मैं ज़रूर कहूँगा कि, जो लोग इस तरह के विचार को मन में पालते हैं वे मात्र पलायनवादी अथवा डरपोक होते हैं, उन्हें इस बात का एहसास होना चाहिए कि हमारे माता – पिता की आर्थिक स्थिति अथवा अन्य किसी भी परिस्थिति का हमारे सपनों से कोई लेना देना नहीं है।

गरीब घर में पैदा होना आपकी भूल नहीं है, परंतु अपने माता – पिता को गरीबी की जिंदगी आगे जीने के लिए छोड़ देना आपकी लापरवाही दर्शाता है।

बहुत – से लोग इस बात से अनजान हैं कि कई अमीर माता – पिता के बच्चे आज भी अमीर नहीं हैं। उनमें से कई लोग आज जीवन की मुख्यधारा में भी नहीं आते हैं तथा कुछ तो भिखारी का जीवन भी व्यतीत कर रहे हैं।

यह बात याद रखिए कि आपके जन्म की घटना अब इतिहास का एक हिस्सा मात्र है। अभिलेखों को तोड़ना या बदलना संभव हो सकता है किंतु इतिहास को नहीं।

इतिहास हमेशा इतिहास ही रहेगा और यह तथ्य सदा के लिए जीवित रहेगा। इतिहास को तोड़ने या नए अभिलेख बनाने की जगह, यह सोचना कि इतिहास तथा अभिलेख समान ही हैं।

दुर्भाग्यवश, हममें से अधिकतर लोग नए अभिलेख बनाने की बजाय इतिहास को बदलने का प्रयास ही कर रहे हैं। वास्तव में, स्वयं आपका जन्म भी आपके नियंत्रण में नहीं था।

यह बात सच है कि कुछ प्राकृतिक आपदाएँ हैं, जैसे बारिश, भूकंप, सुनामी, जन्म – मरण आदि, जिसमें हमारा कोई नियंत्रण नहीं होता। तो हम उसके लिए क्यों परेशान होएँ, जिनके लिए हम ज़िम्मेदार ही नहीं हैं?

एक दिलचस्प बात ध्यान देने की है कि अधिकांश सिद्ध नेता अमीर या भव्य पृष्ठभूमि से नहीं आए हैं, बल्कि ये अति साधारण पृष्ठभूमि के साधारण से परिवार या समाज से ही आए हैं।

विश्वास करने हेतु, हम अपने भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ० ए. पी. जे अब्दुल कलाम तथा अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन के जीवन के इतिहास को देख सकते हैं।

यह मत भूलिए कि हमारी सफलता को लेकर अतृप्त प्यास, जो छिपा है उसे जानने का आग्रह तथा जहाँ पहुँचा नहीं जा सकता, वहाँ पहुँचने की आदमी की प्रबल इच्छा ही हमारी सफलता की कुंजी है।

तीसरा सपनों का हत्यारा – “मेरी शिक्षा अपर्याप्त है इसलिए मैं किसी कार्य में श्रेष्ठ नहीं बन सकता अथवा स्वयं को इस आधुनिक दुनिया के सामने प्रस्तुत नहीं कर सकता।”

सही मायने में देखा जाए तो ऐसा कौन – सा विद्यालय है जो हमें किसी भी क्षेत्र में सौ प्रतिशत निपुणता देती है? पूर्णतः कोई नहीं।

एक योग्यता परीक्षा में किस चीज़ का मूल्यांकन किया जाता है? हो सकता है कि, संबंधित बोर्ड ने यह परिक्षण किया हो कि उम्मीदवार को पूछे गए प्रश्नों के उत्तर ज्ञात हैं या नहीं किंतु कभी उस व्यक्ति की सम्पूर्ण क्षमता को नहीं जाँचा। अधिकांश विद्यालय जो एक ही शिक्षा प्रणाली का अनुसरण करते हैं, वे उस एकमात्र अकेले रेस्तरां के समान हैं, जो दूरस्थ स्थान में पर्यटकों का गंतव्य बनता है, जो केवल एक ही सामग्री प्रस्तुत कर सकता है। हो सकता है, कुछ लोगों को वह अच्छा लगे, कुछ लोग उसे आंशिक रूप से स्वीकार करें क्योंकि उनके पास दूसरा कोई विकल्प उपलब्ध नहीं है अथवा कुछ लोग उसे अस्वीकार भी कर सकते हैं। वे छात्र भी इन पर्यटकों से भिन्न नहीं हैं। तो कैसे, हमारी शैक्षिक योग्यता हमारे सपनों की सीमा का निर्णय ले सकती है?

लोग आगे चलके अपने जीवन की असफलता के लिए अपने विद्यालयों अथवा अध्यापकों को दोषी ठहराते हैं। भले ही हमारी बुनियादी शिक्षा हमारे सपने को आकार देने के लिए निश्चित भूमिका निभाती है, फिर भी उसे संपूर्णतया दोषी ठहराना विवेकहीन है।

प्रकृति के सिवाय इस धरती पर ऐसा कोई विद्यालय नहीं बना है जो हमें संपूर्ण योग्यता प्रदान कर सके।

वास्तव में, सारा जीवन हम विद्यालयों तथा शिक्षण संस्थानों से पूर्ण योग्यता की अपेक्षा का व्यर्थ प्रयास करते रहते हैं।

अधिकांश आम व्यक्ति के मन में यह दृढ़ विश्वास होता है कि सफल व्यक्ति की सफलता का कारण उसके उच्चतम विद्यालय अथवा महाविद्यालय हैं, जहाँ से उसने स्नातक की उपाधि प्राप्त की।

अगर ऐसी ही बात होती, तो अब तक तो ऑक्सफ़ोर्ड तथा हार्वर्ड विश्वविद्यालय ने न जाने कितने ही बिल गेट्स तथा डॉ॰ ए. पी. जे अब्दुल कलाम का निर्माण कर लिया होता।

इस बात पर ध्यान देना आवश्यक है कि बहुत – से उच्चतम कोटि के संस्थान अपने सर्वश्रेष्ठ माहौल तथा सुविधाओं के कारण ही विख्यात हैं, न कि शिक्षा की गुणवत्ता के कारण। उनकी अधिकांश लोकप्रियता केवल उन एक – दो लक्ष्यवादियों के महान सफलता के कारण है तथा इस बात पर भी गौर करना चाहिए कि उन छात्रों को सफलता की पदवी दिलाने में भी शायद ही इन संस्थानों का कोई योगदान रहा होगा।

चलिए मान लेते हैं कि, हमारे विद्यालय ही अच्छे नहीं थे किंतु हमनें भी खुद को ऊपर उठाने के लिए क्या किया? हममें से ऐसे कितने लोग हैं, जो आज भी विद्यालय अथवा ग्राम पुस्तकालय में खाता बनाए रखने में सफल रहे हैं?

आम तौर पर लोग विद्यालय अथवा शिक्षण संस्थानों में चार कारणों से ही जाते हैं।
कुछ लोगों के लिए शिक्षा आभूषण के समान है, तो कुछ लोगों के लिए यह उनकी रोजी रोटी का स्रोत है, कुछ इसे विकल्प अथवा व्यस्त रहने का आधार मानते हैं तथा अल्पसंख्यक के लिए शिक्षा एक निरंतर प्रक्रिया है।

सीखने की कमी के कारण यह अल्पसंख्यक समूह विचलित हो जाता है तथा अपने सपनों को साकार करने के पश्चात भी वे उसी शिक्षा को जारी रखता है। वही अल्पसंख्यक समूह ही वास्तव में व्यवसायिक मनुष्य बनता है और वे ही एक हैं, जो अपने या दूसरों के जीवन में बदलाव लाते हैं।

अन्य सपनों का हत्यारा – “मैं सुडौल और सुंदर नहीं हूँ।”

अधिकांश लोगों के लिए शारीरिक दिखावट एक चिंता की बात है। उन लोगों का यह मानना है कि उनके आकर्षण की कमी ही उनकी सफलता का प्रमुख बाधक बनता है।

अपने आत्म मूल्यांकन पैमाने के अनुसार वे खुद के ही रूप को बहुत ही कम श्रेणी के स्तर पर रखते हैं | अधिकांश पुरुषों तथा महिलाओं का यह मानना है कि, उन्हें दुनिया उनकी सुडौलता तथा सुंदरता के लिए देख रही है | वास्तव में, सच्चाई तो कुछ और ही है |

क्या आपको यह लगता है कि सारे आकर्षक लोग ही सफल होते हैं ? नहीं, कतई नहीं | वास्तव में, सारे सफल व्यक्ति आकर्षक हैं, न कि उनके शारीरिक दिखावट के कारण बल्कि उनके उत्तम कर्मों के कारण | उनका उज्जवल चेहरा और कुछ नहीं अपितु उनकी सफलता का ही प्रतिबिंब है जिसे उन्होंने प्राप्त किया है |

यह हमारी शारीरिक दिखावट नहीं, अपितु हमारे सपनों का एहसास है जिससे दुनिया हमें याद रखती है | हममें से कितनों को ग्राहम बेल या सामुएल मोर्स का चेहरा याद आता है, जब हम आधुनिक संचार की सुविधाओं का लुप्त उठा रहे होते हैं ?

लोग अपने आकर्षण के लिए नहीं जाने जाते अपितु अपनी विशिष्टता के लिए जाने जाते हैं।

हर वस्तु अपने में ही अदम्य होती है | इस संसार में लगभग निन्यानवे प्रतिशत लोगों का विवाह हो ही जाता है | यह तथ्य हमें यह दर्शाता है कि अधिकतम मनुष्य परस्पर को अपना ही लेते हैं |

सुंदरता का अनुभव किसी पद से नहीं अपितु उसके स्वभाव से होता है।

एक अन्य सपनों का हत्यारा – “भाषा को प्रकट करने की मेरी योग्यता तुच्छ है।”

अधिकतम मनुष्य अपनी भाषा को उत्तम ढंग से प्रकट न कर पाने की योग्यता से चिंतित रहते हैं, खास तौर पर यदि वह भाषा अंग्रेज़ी की हो तो |

मैं आपसे यह पूछना चाहूँगा कि जिन व्यक्तियों की अंग्रेज़ी भाषा प्रवाही है, क्या वे सब एक सफल व्यावसायिक या सिद्ध नेता हैं ? नहीं, बिलकुल भी नहीं |

यदि अंग्रेज़ी की भाषा की योग्यता से ही हमारी सफलता का निर्णय होता, तो जापान कभी विद्युतीय व्यापार में अपनी श्रेष्ठता स्थापित नहीं कर पाता | जब उनका प्रवेश यूरोपियन देशों में हुआ, तब जापान की दो प्रतिशत से भी कम की जनसंख्या अंग्रेज़ी भाषा का अनुकरण करती थी | रूस, चीन तथा कोरिया की स्थिति भी भिन्न नहीं थे |

यदि भाषा को प्रकट करने की योग्यता ही सफलता का निर्णय करती है, तो अंग्रेजों ने कैसे अपना साम्राज्य खो दिया? हम सबको यह ज्ञात है कि किसी समय में पूरे विश्व में सबसे अधिक साम्राज्य अंग्रेजों के पास हुआ करते थे। किंतु आज उस अपूर्व महाशक्ति की क्या परिस्थिति है?

यह अति दुखद बात ध्यान देने की है कि, आज अधिकांश लोगों को अपनी मातृभाषा से ही प्रेम नहीं है। मैं यही कहूँगा कि, यह केवल इंसानों के लिए ही कठिन है, अन्य पशु-पक्षियों को इस बात का आभास तक नहीं है।

हममें से कई लोगों ने अपनी ही भाषा को गरीब या दलित भाषा के समान तुच्छ मान लिया है।

यहाँ तक की वे सप्रयोजनपूर्वक इसके प्रयोग को टाल देते हैं। किंतु वे इस बात से अनजान हैं कि, अधिक भाषा का ज्ञात होना हमारी बुद्धिमता को ही संकेत करता है।

अन्य नकारात्मक विचार – “मेरे स्वप्न - परियोजना का शुभारम्भ करने हेतु मेरे पास पर्याप्त पूँजी नहीं है।”

अपितु कुछ लोगों का यह दृढ़ - विश्वास है कि उनका आर्थिक धन उनके सपनों को पूरा करने के लिए अपर्याप्त है तथा सफलता के लिए अधिक मात्रा में धन का होना अति आवश्यक है। किंतु वास्तव में,

व्यवसाय में प्रधान धन कुछ भी नहीं आत्मविश्वास ही सब कुछ है।

मेरा अनुभव यह कहता है कि यह किसी धन या अन्य संसाधन की कमी के कारण नहीं है कि मनुष्य खुद को कोई कार्य शुरू करने से रोकता है अपितु यह उसकी इच्छा शक्ति ही है, जो उसे बढ़ने नहीं देती। विश्वास कीजिए, कि हमारे आस - पास अनेकों संसाधन तथा उदार लोग भी हैं जो हमारी सहायता के लिए तैयार खड़े हैं। हमें शायद ही कोई सफल व्यक्ति इस संसार में मिले, जिसे अपने उद्यम को शुरू करने के लिए किसी से प्रचूर निःशुल्क धन प्राप्त हुआ हो।

संसाधन सफलता नहीं लाते, सफलता संसाधन लाती है।

इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि इस संसार में अधिकांश सफल परियोजनाओं का प्रारंभ या तो शून्य से हुआ है या तो अल्प आर्थिक शुल्क से। मैं किसी भी कार्य की शुरुआत के लिए न्यूनतम आर्थिक पूर्तिकर की आवश्यकता से इंकार नहीं करता हूँ।

| किंतु केवल आर्थिक धन कभी किसी व्यापार की प्रगति तथा सफलता को निश्चित नहीं कर सकता | इन्हें निरंतर बनाए रखने के लिए कई अन्य सामग्रियों की आवश्यकता भी होती है |

उद्यमवृति नेतृत्व तथा साहस के मिश्रण से बनता है।

मेरे विचार से, उद्यमवृति एक ऐसा अदम्य एहसास है जो एक सच्चे व्यवसायी को कभी सोने नहीं देता है | वह उन्हें तब तक बेचैन करके रखता है जब तक वे अपने सपनों की परियोजना का प्रारंभ नहीं कर लेते | वे इसमें कहीं भी कठिनाइयाँ नहीं देखते हैं अपितु हर जगह उन्हें संभावनाएँ ही दिखती हैं | किसी भी प्रकार के प्रतिघाती सुझाव व सलाह का खंडन उनके द्वारा सदा के लिए कर दिया जाता है |

उन्हें किसी भी कार्य को शुरू करने से कोई नहीं रोक सकता, सिवाय उनकी मौत के | उनके लिए उद्यमवृति तथा मोक्ष एक समान ही है |

जाने – अनजाने में वे अपनी हर योग्यता व प्रतिभा के स्वरूप को अपने व्यापार की पूँजी में परिवर्तित कर लेते हैं | उन्हें अपनी आर्थिक पूँजी की इतनी चिंता नहीं रहती है | वे कभी किसी समर्थन की माँग करने से भी संकोच नहीं करते हैं | वे संपूर्ण ह्रदय से संभावनाओं पर विश्वास रखते हैं | किसी से किसी बात पर चर्चा करने से पूर्व, वे इन तीन संभावनाओं पर अमल करते हैं –

- स्वीकार किए जाने की सम्भावना
- अस्वीकृत होने की संभावना, तथा
- भविष्य के लिए माने जाने की संभावना

चूँकि तीनों में से दो संभावनाएँ सकारात्मक हैं, इसलिए प्रत्येक अनुरोध जो वे प्रस्तुत करते हैं, उनके लिए वे संभावनाओं की शुरुआत है | अस्वीकृति कभी उन्हें हताश या निराश नहीं करते हैं | उनके पास अपने प्रयासों पर विश्वास करने के कई कारण हैं | उनका इस बात पर दृढ़ – विश्वास है कि

कोई भी व्यक्ति किसी चीज़ को भविष्य में अस्वीकृत करने के लिए नहीं अपितु वर्तमान में स्वीकृत करने के लिए विचार करता है।

हमारे आस – पास ऐसे बहुत – से लोग हैं जो हमारा मार्गदर्शन, प्रशिक्षण तथा समर्थन करने की इच्छा रखते हैं, किंतु शर्त केवल यही है कि हममें भी उन सूत्रों की खोज करने की संपूर्ण इच्छा होनी चाहिए |

बाइबल में लिखा है कि –

“माँगों तो तुम्हें दिया जाएगा, ढूँढो तो तुम पाओगे,
खटखटाओ तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा।”

..... मैथ्यू ७: ७

मैं ऐसे बहुत – से लोगों को जानता हूँ जो अपनी असफलता के कारण अतिनिराश होकर विलाप करते हैं तथा यह कहते हैं कि “मैंने बहुतों – से पूछा, किंतु किसी ने नहीं दिया, मैंने बहुत ढूँढ़ा पर मुझे कुछ न मिला और बहुत – से दरवाजे खटखटाए, पर किसी ने नहीं खोला।”

मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि हो सकता है कि आपने शायद बहुत – से लोगों से पूछा होगा, लेकिन हर इंसान से नहीं, कई स्थानों में ढूँढ़ा होगा, लेकिन हर स्थान पर नहीं तथा कई दरवाजे खटखटाए होंगे किंतु हर दरवाजा नहीं।

मुझे इस कथन पर अति विश्वास है क्योंकि मैं ऊर्जा संरक्षण कानून पर अत्यंत विश्वास करता हूँ।

ऊर्जा संरक्षण कानून यह दर्शाता है कि ऊर्जा का ना ही निर्माण किया जा सकता है और ना ही उसे नष्ट किया जा सकता है, बल्कि यह एक रूप से दूसरे रूप में परिवर्तित हो जाती है। हमारे प्रयास भी और कुछ नहीं, केवल इन्हीं ऊर्जा का प्रयोग करना है तथा प्रयोग में लाने वाली ऊर्जा कभी व्यर्थ या निष्फल नहीं होती। यह अवश्य ही कोई उत्तम परिणाम लाएगा। इसका परिणाम हमारी मेहनत के अनुसार ही निश्चित होगा क्योंकि निवेश से ही उत्पादन का पता चलता है।

हममें से ऐसे कितने लोग होंगे, जो वास्तव में किसी उचित व्यक्ति की मदद अथवा मार्गदर्शन की अपेक्षा करते हैं? अधिकतर लोग एक सफल व्यक्ति को स्वीकारने तथा उसकी सफलता का सम्मान करने से पीछे हठते हैं। दूसरों की सफलता उन्हें बेचैन कर देती है। कई लोग अपने अहंकार के कारण उचित व्यक्ति से किसी प्रकार का ज्ञान अथवा मार्गदर्शन नहीं लेते हैं।

हममें से कितने लोग किसी चीज़ की तलाश ईमानदारी से करते हैं? खोज सब कर रहे हैं किंतु उतनी निष्ठा से नहीं। निष्ठापूर्वक कार्य का महत्व उन लोगों को अवश्य ज्ञात होगा जो बिक्री तथा विपणन की नौकरी में अपने नए ग्राहकों की तलाश में जुटे रहते हैं।

यह संसार संभावनाओं तथा अफ़सरों से परिपूर्ण है। दुर्भाग्यवश, अधिकांश लोग असंभावनाओं पर भरोसा करते हैं अपितु संभावनाओं पर नहीं। वे इस बात से अनजान हैं

कि –

असंभावनाएँ संभावनाओं का ही असिद्ध रूप हैं।

हमें केवल उन्हीं असिद्ध बातों को अपने ज़हन से बाहर निकालना है | हो सकता है कि, ऐसा करने के लिए आपको कई प्रयास करने होंगे | असंभावनाएँ ही संभावनाओं को दर्शाती हैं क्योंकि संभावनाओं की उपस्थिति के बिना असंभावनाओं का कोई अस्तित्व हो ही नहीं सकता |

संभावना बेशक अदृश्य रहे किंतु इसका ये अर्थ तो नहीं कि वो मौजूद ही न हो।

संभावना की दृश्यता भिन्न – भिन्न कारणों पर निर्भर करती है, जैसे की आत्म क्षमता एवं आत्म रुचि, रोशनी का स्तर एवं क्षीण कारण जैसे धुंध, धुल एवं भांप |

संभावनाएँ तब दिखाई देने लगती हैं, जब उसमें हम अपनी रुचि देने लगते हैं, उत्साहजनक लोगों के साथ अपने आस - पास की जगह को रोशनी प्रजल्वित करते हैं और विषाक्त लोगों और परिवेश से खुद को दूर करते हैं |

मुश्किलें बहुत आम हैं और अनिवार्य भी | हर कठिनाई हमें हमारी उपलब्धि के मूल्य का ध्यान दिलाती हैं | हर रुकावट या दीवार ये संदेश देती है कि, -

दूसरी तरफ भी एक क्षेत्र है जो वर्तमान क्षेत्र से बहुत भिन्न है।

प्रत्येक द्वार संभावनाओं, सत्कारों और आशाओं का प्रतीक है |

ये द्वार खुलने के लिए बने हैं | अन्यथा एक मामूली दीवार ही पर्याप्त होता | ये द्वार कुछ ये संदेश देते हैं –

प्रवेश सिर्फ प्रयासों से ही संभव है सिर्फ और सिर्फ प्रयासों से।

तथा हर ताले का छेद दूसरा संदेश देता है कि,

वह सिर्फ सही चाबी को ही अनुमति देगा, स्वीकारेगा तथा उसका पालन करना चाहेगा।

एक सफल व्यक्ति और औसत दर्जे के व्यक्ति में सिर्फ यही बड़ा अंतर है कि जहाँ औसत दर्जे के व्यक्ति सारे बंद द्वार को अपनी कोशिशों का अंत मानता है, वहीं दूसरी तरफ़

सफल व्यक्ति इसे एक नए अवसर की तरह देखता हैं, जहाँ वे अपनी सारी नयी तकनीक लगा सकते हैं।

कुछ को चाबी की तलाश रहती है, कुछ नए चाबी बना लेते हैं वहीं कुछ लोग एक मास्टर चाबी से एक नहीं अपितु बहुत – से सामान्तर द्वारों को खोलने का प्रयास करते हैं।

लोग कठिनाइयों के आगे हार जाते हैं, अपना दम तोड़ देते हैं। उनके दम तोड़ने की वजह यह नहीं होती कि उनके पास, उस पर काबू पाने के पर्याप्त अवसर नहीं हैं, बल्कि वे उन रास्तों को खोजने के लिए झिझक तथा नकारात्मक का रखैया अपनाते हैं।

मैं जानता हूँ कि कुछ लोग अपनी बुरी किस्मत या दुर्भाग्य को काफी कोसते हैं जब वे काफी कोशिशों के बाद भी असफल हो जाते हैं। सामान्य रूप से देखा जाए तो, लोग अपने अनुभवों पर यकीन कर लेते हैं और उन्हें हकीकत समझ लेते हैं। बारम्बार के असफल प्रयास लोगों को सफलता पर नहीं बल्कि असफलता पर यकीन करने को मजबूर कर देती है क्योंकि असफलता उनका अनुभव, दिनचर्या और हकीकत बन जाती है।

इस संसार में कोई भी मार्ग बिना घुमावदार रास्ते के बिना स्थायी रूप से बंद नहीं है। एक दूसरा विकल्पीय मार्ग सार्वभौमिक ज़रूरत है और इसे कोई इंकार नहीं कर सकता है। यही नहीं, जो मार्ग आज बंद होता प्रतीत हो रहा है वो आज नहीं तो कल अवश्य खुल जाएगा।

हर बंद द्वार एक संदेश देता है कि या तो वो एक चाबी से खुलेगा अन्यथा ठोकने से।

जब सारे बंद द्वार ठोके जाते हैं, तब उसे तीन तरीके से खोले जा सकते हैं।

- निमंत्रित अतिथियों को अंदर बुलाने के लिए।
- ये देखने के लिए कि कौन ठोक रहा है।
- या किसी का बार - बार ठोकना या असहनीय तरीके से ठोकने से तंग आकर उन्हें रोकना।

ये तीनों स्थितियाँ संभावनाओं का आगमन हैं ना कि कठिनाइयों का। आप अपने प्रवेश के लिए आश्वाशित रहिये। प्रतिरोध का स्तर इस बात पर निर्भर करता है कि आप कितनी अच्छी तरह से दरबान को प्रभावित करते हैं।

मेरे या मेरे कोई भी संबंधी का उच्च स्तरीय राजनीतिक संबंध नहीं है जो मुझे पदोन्नति दिलवा सके | एक और साधारण स्वप्न के अंत का ख्याल |

हममें से बहुत लोग ये मानते हैं कि अधिनायक जन्मजात बने हुए आते हैं | अपितु केवल तीन प्रतिशत ही अधिनायक जन्मजात होते हैं और बाकि, सारी परिस्थितियों या किसी भूमिका को निभाने से बने हैं | ये भी याद रहे कि वो एक ही रात में नहीं बने हैं |

आम लोगों के बीच में ये एक तरह की अवधारणा है कि,

उच्च स्तरीय राजनीतिक संबंध किसी भी व्यक्ति को सफल बना सकता है, परन्तु ये सत्य है कि, एक सफल व्यक्ति ही उच्च स्तरीय राजनीतिक संबंध बना सकता है।

सफल व्यक्ति शहद उपज करने वाले फूल की तरह होते हैं | वो कई तरह की मधुमक्खियों को आकर्षित करते हैं |

उनका सुख अधिकांश लोगों को लाभ देता है तथा दरिद्रता का प्रभाव किसी पर भी नहीं पड़ता | मधुमक्खियाँ तथा तितलियाँ उन पर तब तक बैठेंगी जब तक उनमें शहद उत्पन्न होता रहेगा |

सफलता लोगों को इक्कठा करती है और हार उन्हें बिखेर देती है | सफलता जहाँ लोगों को आकर्षित करती है, वहाँ दूसरी ओर असफलता दूसरों को विचलित करती हैं |

सामान्यता नहीं बल्कि विशिष्टता दूसरे लोगों को आकर्षित करती हैं।

स्वप्नों को कुचलने वालों का कोई अंत नहीं होता | सहकर्मियों का प्रभाव, धार्मिक प्रतिबन्ध, राजनीतिक अनिश्चितता एवं वित्तीय वातावरण वगैरह भी स्वप्नों को कुचलने का कार्य करती हैं |

हमारे संघठन भी हमारे स्वप्नों को आकार देने के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं | हममें से काफी लोग भौतिक विज्ञान के प्रेरण तथ्य से अवगत होंगे | जब एक पदार्थ का विद्युतीकरण हो जाता है तब दूसरा पदार्थ जो उसके संपर्क में आता है उसका अपने आप ही विद्युतीकरण हो जाता है | ऐसा ही हम मनुष्यों के साथ भी होता है |

एक कहावत है “ एक जैसी सोच के लोग एक साथ ही रहते हैं ”

सिवाय कुछ असाधारण स्थितियों के, अधिकतर समान विचार वाले लोग साथ ही रहते हैं। वे एक - दूसरों को आकर्षित करते हैं। उनके गुण तथा आदतें बहुत मेल खाती हैं। लोग जिस तरह की दोस्ती के माहौल में रहते हैं वो उनकी आदतों में झलक जाता है। खासकर किशोरावस्था की अवस्था में, सहकर्मियों का प्रभाव अन्य किसी भी साधन से अधिक प्रभावित होता है। सपनों के हत्यारों की संगति आपके बड़े सपनों को हमेशा के लिए क्षति पंहुचा देते हैं तथा उसको फिर से उनके सामने जोड़ना असंभव हो जाता है।

**एक ज़हर की बूँद कुएँ में समूचे स्वच्छ जल को नष्ट करने के लिए पर्याप्त है
किंतु यदि समान मात्रा में उस जल में शुद्धिकरण पदार्थ डाला जाए
तो वह साफ़ करने के लिए पर्याप्त नहीं है।**

चाहे वो खुशबू हो या कलुषित बदबू, दोनों ही अपने आस - पास के लोगों पर प्रभाव डालते हैं।

आप अपने संगठनों की समीक्षा न करना भूलें, जब आपके स्वप्न कमज़ोर हों या जब आप अपने जीवन में किसी भी आशा को लेकर निष्क्रिय महसूस करने लगो। जीवन को रंगों से भरी हुई समझें क्योंकि रंग काफी रंगों को आकर्षित करते हैं। हर सपना कुछ नहीं बल्कि कुछ नया करने की भावना है और हर नवोन्मेष आत्म बदलाव लाता है। हमारे गलत संगति या चीज़ों से लगाव हमारी हार का मुख्य कारण बन सकती है।

यहाँ चार प्रकार के लोग हैं।

पहला वर्ग उन लोगों से मिलके बनता है जो अपनी बीती यादों में रहते हैं। वे मुश्किल से ही अपने भविष्य के लिए कोई कार्य करते हैं। वे केवल अपनी या अपने पूर्वजों की कीर्तियों का गुणगान ही करते रहते हैं। वे दूसरों पर मान दंड ही लगाकर खुश रहते हैं। वे शायद ही कभी किसी की प्रशंसा करते हैं। वे दूसरों की सफलता को आसानी से पचा नहीं पाते हैं। चाहे वे कितना भी विनम्र होने का अभिनय कर लें, किंतु वे मुश्किल से ही किसी की स्वतंत्रता का सम्मान कर पाते हैं यहाँ तक की अपनी जीवनसाथी का भी। वे केवल विनम्र होने का ढोंग करते हैं जो उनकी अक्षमताओं को ढकने का कार्य करती है। उनमें से कई उदासीन तथा अंतर्मुखी स्वभाव के होते हैं इनका किसी से भी लगाव थोड़ा कठिन होता है। ये व्यक्ति केवल निराशा ही महसूस करते हैं तथा इनके सपने सीमित होते हैं।

दूसरा वर्ग मनुष्य के उस समूह का है जो वर्तमान जीवन में बिना किसी महत्वकांक्षा के जी रहा है। उनमें से कईयों के जीवन में अल्पकालिक लक्ष्य भी शामिल हैं।

वे परिवर्तन पर इतना विश्वास नहीं करते तथा उनके अनुसार दूसरों की सफलता मात्र उनकी अच्छी किस्मत के कारण है | वे अविष्कार तथा नवोन्मेष को प्रोत्साहित नहीं करते हैं | वे मिडिया तथा सहकर्मियों से सहजता से प्रभावित हो जाते हैं | उनमें शायद ही कुछ अनोखा होता है |

वे नेता कम तथा अनुयायी अधिक बनते हैं |

तीसरे वर्ग के व्यक्ति भविष्य पर विश्वास करते हैं | वे बिना कर्म किए भविष्य में विश्वास करते हैं | वे सदा चमत्कार की प्रतीक्षा करते हैं | उनके लिए सफलता केवल एक संयोग है | अधिकतर लोग कठिन परिश्रम की आवश्यकता को स्वीकारते हैं, किंतु उसे अपनाते नहीं हैं | वे अपने परिवेश से प्रेरित रहते हैं | वे स्वयं से अधिक दूसरों की वास्तविकता पर विश्वास करते हैं | वे शायद ही कभी अपने जीवन में कोई परिवर्तन लाते हैं | वे दूसरों को कई मामलों में सलाह देते हैं | जबकि उनमें ही व्यावहारिक ज्ञान की कमी होती है | वे बेमन से ही दूसरों का कोई भी कार्य करते हैं | वे हर कार्य असंतोषजनक बनकर स्वीकार करते हैं | वे भाग्य तथा संयोग पर विश्वास करते हैं | उनके सपने केवल छोटी – सी अवधि में ही पूरे हो जाते हैं | उनके सपनों की जड़ें अत्यधिक गहरी नहीं हैं तथा उनके अधिकतर सपने भी शायद ही साधित होते हैं |

चौथे वर्ग के लोग होनहार समूह से सम्मिलित होते हैं | वे वर्तमान में जीते हैं | उनके लिए,

अतीत एक इतिहास है, भविष्य एक रहस्य है तथा वर्तमान ही वास्तविकता है।

वे अपनी वास्तविकता पे विश्वास करते हैं | वे किसी भी कार्य में विलंभ नहीं करते हैं तथा अपनी असफलता की ज़िम्मेदारी लेने से भी सकुचाते नहीं हैं | वे कभी प्रयास करने से संकोच नहीं करते तथा कठिनाइयों में भी संभावनाएँ देखते हैं |

उनके सपने अति सीमित हैं अपितु गहरे हैं | उनके सपनों की पूर्ति समाज पर सीधा प्रभाव डालती है | वे इतिहास का हिस्सा बन जाते हैं |

हममें से कई लोगों का यह विचार होगा कि सपने देखना अति सरल कार्य है | वास्तव में, ऐसा नहीं है | मेरा यह मानना है कि

बड़े सपने का होना ईश्वर की कृपा तथा विश्व का सर्वश्रेष्ठ उपहार है।

यह सच है कि अधिकांश व्यक्ति अल्पसंख्यकों के सपनों के परिणामों का लुप्त उठा रहे हैं | मुझे विश्वास है कि आप भी मुझसे इस बात पर सहमत होंगे कि आधुनिक

संसार कुछ ही सफल व्यक्तियों के सपने की उपज है।

इस संसार में केवल एक प्रतिशत लोग ही सफल हैं, शेष या तो प्रयत्नवादी हैं या असफल।

यह सच है कि वे एक प्रतिशत लोग अल्प दृष्ट्यत, अत्यधिक मांग में तथा अति दुर्लभ होते हैं।

साधारणतया अनूठी चीजें सामान्य मनुष्य की पहुँच में सहजता से नहीं आते।

सामान्यतया, हमारे जीवन में मार्गदर्शन और सलाह हमें अपने करीबी शानदार समुदाय से मिलती है तथा दुर्भाग्यवश, यह शानदार समुदाय और कोई नहीं अपितु वही शेष निन्यानवे प्रतिशत लोग हैं। जो हममें हैं वही हम बाँट सकते हैं।

जब असफल व्यक्तियों का मन अपनी विफलताओं के अनुभव से भरा हुआ हो तब वे अन्य व्यक्तियों के सम्मुख भी केवल अपनी नकारात्मकता, निराशा तथा अपनी विफलता का कारण ही प्रकट करते हैं।

बेहतर होगा कि हम सदा सफल व्यक्तियों की संगति में ही रहें क्योंकि उनकी निकटता हमें नाना प्रकार से प्रभावित कर सकती है।

मनुष्य का मस्तक एक शार्क की तरह है। यदि हम शार्क को घरेलू जल – कुंड में रखते हैं तो उसका आकार कदापि उस जल – कुंड से अधिक नहीं बढ़ सकता। किंतु उसी समय यदि हम उसे सागर में रहने के लिए छोड़ देते हैं तो उसका आकार उसी जल – कुंड से कई गुना ज्यादा बढ़ जाता है।

अपने परिवेश का समझदारी से चयन करना चाहिए क्योंकि आपके परिवेश का ही सीधा प्रभाव आपके सपनों पर पड़ता है।

यदि हम असफल व्यक्तियों की संगति में आएँगे तो वे ही हमारे सपने के चालक बन जाएँगे तथा हम ‘बोनसाइ’ बनकर रह जाएँगे। यहाँ तक कि, यदि हम सफल व्यक्ति के प्रत्येक गुण को प्राप्त कर लें तो भी हम उनके समान कार्य नहीं कर पाएँगे क्योंकि हमारे सपनों की जड़ों को सदा असफल व्यक्तियों के प्रभाव में आकर ही काट दिया जाता है।

एक अनूठा मेंढक

कुछ वैज्ञानिक जो व्यवहार का परिक्षण करते हैं, वे इस बात का अनुसंधान कर रहे थे कि हमारे निर्णय तथा कार्यों पर हमारे सहकर्मी तथा परिवेश का कितना प्रभाव पड़ता है।

उनके एक अनुसंधान के दौरान, उन्होंने पच्चीस मेंढकों को एक लम्बे - से स्टील के पतीले में रखा तथा पतीले के अंदर एक पतली – सी छड़ी को पैतालिस डिग्री के कोण पर रख दिया गया, जिसकी ऊँचाई उस पतीले के मध्य तक ही पहुँचती थी ताकि मेंढक उस छड़ी की सहायता से चढ़कर पतीले से बाहर कूद सकें।

उस पतीले तथा उन मेंढकों को एक पृथक कमरे में रख दिया गया तथा सी . सी . टी . वी द्वारा उनकी गति व चाल पर नज़र रखी गई थी।

सारे मेंढक एक के बाद एक घंटों – घंटों तक उस छड़ी पर चढ़ने का प्रयास करने लगे, किंतु उनमें से कोई भी उस पतीले से बाहर निकलने में समर्थ नहीं रहा, सिवाय उस मेंढक के जो गूंगा व बेहरा था।

एक गूंगा व बेहरा मेंढक कैसे उस पतीले से बच पाया ? अन्य मेंढक क्यूँ नहीं ? वैज्ञानिकों ने

उन मेंढकों के व्यावहारिक स्वरूप का विश्लेषण किया | उनके ध्यान में तीन बातें आईं – पहली तथा महत्वपूर्ण बात यह थी कि अधिकांश मेंढक एक ही प्रकार का व्यवहार दर्शा रहे थे – प्रयास करना, असफल होना तथा समूह में पुनः शामिल होना।

यहाँ वैज्ञानिकों ने एक महत्वपूर्ण पहलू पर गौर किया कि समूह में शामिल होने के बाद प्रत्येक असफल मेंढक अपनी पंक्ति के आगे के मेंढक से कुछ बड़बड़ा रहा था | वह और कुछ नहीं, केवल असंभवता का एक संदेशा था कि “यह कठिन है।”

ज़ाहिर है कि उस गूंगे व बेहरे मेंढक को अन्य किसी मेंढक से ऐसा कोई नकारात्मक संदेशा नहीं मिल रहा था जिससे उसके मन में किसी प्रकार की दुविधा उत्पन्न हो या असफलता का कोई विचार भी मन में आ सके।

आगे चलकर ये देखा गया कि हर बार जब कोई मेंढक बार – बार असफल होकर भी पुनः समूह में शामिल हो जाता है तो शेष अन्य मेंढक भी उसका समर्थन करके अपनी थकावट तथा निराशा से तुरंत संभल जाते हैं। इस अनुसंधान से यह पता चलता है कि असफल प्राणी अपनी असफलता को स्वयं स्वीकार करता है तथा उसका दावा करता है।

आखिरकार वैज्ञानिकों ने इस बात पर गौर किया कि कुछ देर के प्रारंभिक प्रयासों के बाद मेंढकों ने आगे प्रयास करने से हार मान ली तथा उनमें से कुछ मेंढक निर्दलीय हो गए तथा पतीले के दूसरे हिस्से पर चढ़ने का आंतरायिक प्रयास करने लगे, किंतु तब भी कोई निकल नहीं पाया।

अपने सपनों को पूरा करने के लिए हमें स्वयं को नकारात्मक विचारकों से तथा दवाइयों, शराब, धूम्रपान, दूरदर्शन की लत, निहित स्वार्थ सहित राजनैतिक विचारधारा आदि के प्रभावों से स्वयं को दूर रखना चाहिए।

कई संगति हमारी सफलता में रुकावट बनते हैं, उनके प्रभाव से दूर हो जाना शायद कठिन भी हो सकता है किंतु ऐसा करना आवश्यक है।

संगति की तुलना में पृथक्करण अधिक कठिन हो सकता है।

यदि पंखों पर भारी वज़न के होने से ऊँचा उड़ना कठिन हो सकता है, तो नकारात्मक विचारों तथा उनके प्रभावों के अशक्त होने पर हमारे सपने ऊँचे कैसे उड़ सकते हैं?

हमारी गलत संगति, अपर्याप्त तैयारी, तुलना तथा जीवन में दोहराए गए विपरीत अनुभवों के कारण असफलता का भय हमें जकड़ सकता है।

अनुचित चयन सदा असुखद परिणाम लाते हैं। असुखद परिणाम चिंता लाते हैं तथा चिंता हमारे सपनों के पंखों को भारी बनाते हैं तथा यहाँ हमें चिंता से पृथक्करण के महत्व का पता चलता है।

चिंता से पृथक्करण करना कठिन है किंतु परिश्रम द्वारा यह संभव हो सकता है।

स्मरण रखिएगा –

परिश्रम का कोई विकल्प नहीं होता है, परिश्रम का परिमाण ही हमारे सपनों की मंज़िल तय करता है।

एक सफल व्यक्ति इस बात से परिचित होता है कि,

जहाँ सपने का अंत हो जाता है, वहाँ उन्नति रुख जाती है तथा जब उन्नति रुख जाती है तब पतन की शुरुआत हो जाती है।

जीवन में बड़ी उपलब्धियों को पाने के लिए हमें अपने अवचेतन मन में आत्मविश्वास को जगाना होगा तथा उसे सफलता प्राप्त करने का विश्वास दिलाना होगा, जो कि तभी संभव है जब हम अपने जीवन में कम से कम एक बार जीत हासिल करते हैं।

अधिकांश लोगों का यह मानना है कि उनका जन्म हारने के लिए हुआ है ना कि जीतने के लिए। उनके मन में एक ही शिकायत है, कि वे जहाँ भी जाते हैं या जो भी करते हैं, उन्हें उसमें हार का सामना ही करना पड़ता है। क्या यह सच है?

लोग ये नहीं समझते कि हर हार के पीछे कोई न कोई लाभ होता है तथा उस लाभ में भी फायदे को खोज निकालना प्रत्येक मनुष्य पर निर्भर करता है।

मनुष्य अपने जीवन में हुई हानि का एक स्पष्ट हिसाब बना लेता है किंतु लाभ का नहीं।

हमें अपने जीवन की हर छोटी उपलब्धि का हिसाब रखना चाहिए। ऐसी जानकारी हमारे लिए एक मजबूत समर्थक बन कर खड़ी हो सकती है।

हम जिसका ध्यान रखते हैं वह जल्दी बढ़ता है। अपने छोटे - से लाभ का भी हिसाब रखने से जीवन में कार्य करने के लिए अधिक प्रोत्साहन मिलता है। भिन्न - भिन्न उपलब्धियों तथा कार्यों की सूची सटीक बनाए रखने तथा उसकी समीक्षा करने से जीवन में कई अनोखे परिवर्तन हो सकते हैं।

हर बार मैं अपने कार्यशाला के प्रतिभागियों पर इस बात का ज़ोर देता हूँ कि सपने देखना अति आवश्यक है, अधिकांश व्यक्ति अपने सपनों की उपलब्धियों को लेकर संदिग्ध रहते हैं।

वे आकर्षण के नियम को नहीं समझ पाते।

आकर्षण का नियम अति साधारण है किंतु संसार में इसकी जड़ें काफी गहरी हैं। लोगों पर इसका बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है। इसका नियम यह दर्शाता है कि जो आप ढूँढ़ रहे हो वो एक दिन आपको ज़रूर मिलेगा। निरंतर प्रयास करने से हमें अपने भविष्य के दर्शन भी हो सकते हैं। जो व्यक्ति आकर्षण के नियमों पर विश्वास करते हैं उन्हें इस संसार में हर जगह संभावनाओं का क्षेत्र ही दिखाई देता है। यह उस हर व्यक्ति के लिए मुमकिन है जो कठिनाइयों में भी संभावनाएँ देखने के प्रयास करने को तैयार हैं।

कठिनाइयों में भी संभावनाएँ

२००८ – ०९ के दौरान मध्य पूर्व में व्यापारिक मंदी अपने शिखर तक पहुँच गई थी तथा विपरीत आर्थिक माहौल के कारण बहुत – सी संस्थाओं को अपने कर्मचारियों को आगे बढ़ाने में दुविधा हो रही थी। अधिकांश संस्थाओं को व्यापार में हानि हुई तथा उनके कर्मचारियों को नौकरी से हाथ धोने पड़े। खानाबदोश परिवार में जहाँ स्कूल जाने वाले बच्चे

भी थे उनके समूह पर इस घटना का बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ा | बहुत – से लोग जिन्होंने बैंक ऋण पर कार खरीदा था, वे अपनी कार हवाई अड्डे के पार्किंग क्षेत्र में छोड़कर ही देश छोड़कर भाग गए थे | उन संस्थाओं तथा प्रत्येक व्यक्ति पर बढ़े हुए ऋण की वसूली के लिए बैंक को अधिक संघर्ष करना पड़ा | गल्फ देशों में बहुत से उद्योग जो लोगों को नौकरी दिलाती थी, उनकी अवस्था स्थिर हो गई थी तथापि कुछ हद तक ओमान की सल्तनत इन सब परिस्थितियों से बची हुई थी |

जब मैंने ओमान में स्थित गलफर इंजीनियरिंग तथा कांट्रैक्टिंग कंपनी एल. एल. सी में त्याग पत्र दिया था, तब व्यापारिक मंदी शिखर छू रही थी इसलिए स्वास्थ्य तथा सुरक्षा विभाग के उपाध्यक्ष जो की मेरे शुभ चिन्तक भी थे उन्हें मेरे त्यागपत्र देने की बात पर बड़ा अचरज हुआ | मेरी धर्मपत्नी जैजो के अलावा बाकि सबको यही लगता था कि उन दिनों में भारत में प्रशिक्षण तथा सलाहकार कंपनी खोलने का मेरा निर्णय गलत था |

मेरे बार – बार अनुरोध करने पर भी मेरे उपाध्यक्ष, जो एक निर्णयकर्ता थे वे मुझसे मिलने के लिए इंकार कर देते थे | एक दिन वे मुझसे मिलने के लिए सहमत हो गए |

विचार – विमर्श के दौरान उन्होंने मुझसे पूछा कि साजू क्या यह समय इस कार्य के लिए उत्तम है कि तुम अपने प्रशिक्षण प्रबंधक के स्थिर कार्य को छोड़कर, अपना खुद का प्रशिक्षण तथा सलाहकार कंपनी खोलने का निर्णय कर रहे हो ? क्या तुम जानते हो कि व्यापारिक मंदी शिखर छू रही है तथा इस समय कोई भी निगम किसी भी प्रशिक्षण पर कोई भी राशि खर्च करने को तैयार नहीं होगी ?

किंतु मेरे विचार भिन्न थे | मेरा विचार था कि अधिकांश व्यक्ति जिनकी नौकरी जा चुकी थी वे मध्य पूर्वी स्थान पर पिछले कई सालों से कार्य कर रहे थे | हो सकता है कि, उनमें से कई लोगों ने अपने व्यस्त कार्य जीवन के कारण तथा सीमित अवकाशों के कारण स्वास्थ्य तथा सुरक्षा विभाग में किसी भी आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीय योग्यता से स्वयं का अद्यतन नहीं किया होगा | अब वे सब स्वतंत्र रूप से ऐसे किसी भी कार्यक्रम को किसी भी दाम में भाग लेने के लिए तैयार हो जाएँगे क्योंकि व्यापारमंदी की घटना के बाद उनको खुद को ऐसे तैयार करना होगा कि पहली बार में ही उनका चयन कर लिया जाए |

मुझमें बहुत आत्मविश्वास था कि उन कठिनाइयों में भी संभावनाएँ हैं | आखिरकार मैं अपने उपाध्यक्ष को अपने विचारों को समझाने में समर्थ रहा तथा उन्होंने मेरे अनुरोध पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए |

त्यागपत्र देने के दस दिन के अंतर्गत ही मेरा उद्यमी बनने का सपना क्लोवर्स सेफ्टी सर्विसेस प्राइवेट लिमिटेड के रूप में सच हो गया तथा मैंने भारत के बड़े – बड़े शहरों में स्वास्थ्य और सुरक्षा कार्यक्रम के प्रस्ताव देने शुरू कर दिए।

मेरे पहले महीने की आमदनी मेरे पिछले कार्य की आमदनी से पाँच गुना से भी अधिक थी।

हमें कठिनाइयों में भी संभावनाएँ देखने की चेष्टा करनी चाहिए।

हमारे सपने सफलता कैसे लाते हैं ?

जब एक व्यक्ति बरगद के पेड़ के समान अपने विचारों की संभावनाओं को बढ़ाता है तब वह सारे नकारात्मक विचारों को पराजित कर सकता है। तब नकारात्मक विचारों को बरगद के पेड़ के नीचे से ऊपर उठने के लिए अधिक संघर्ष करना पड़ेगा, जब उसे वहाँ नकारात्मक विचारों को बढ़ाने हेतु पर्याप्त रोशनी प्राप्त नहीं होगी।

जब बरगद के पेड़ के नीचे कोई भी रोशनी नहीं पहुँच सकेगी तब नकारात्मक विचारों की वह जंगली धास या तो नष्ट हो जाएगी या उसकी उपज ही कम हो जाएगी। हमारे सपने हमें मानसिक रूप से तैयार करते हैं ताकि हम सफलता प्राप्त कर सकें।

सफलता अंतिम परिणाम नहीं अपितु एक अविरत प्रक्रिया है।

अपने सपनों को वास्तविक जीवन में पूरा करने से पहले उन व्यक्तियों ने कई बार ही सफलता का जामा पहना होगा क्योंकि उनके सपने अति बुलंद थे। व्यक्ति अपनी कल्पनाओं को वास्तव में पाने से पहले ही अपने कल्पनाओं के अभियान, उडान, गपशप, यात्रा तथा कई विचारों की धारणा बना लेता है। वे अपने सपनों का निरंतर ध्यान रखने का प्रयास करते हैं, इस प्रकार निरंतर ध्यान रखने से वह उनके जीवन का हिस्सा बन जाता है तथा उन्हें सफलता प्राप्त करने के लिए तैयार कर देता है।

सारी कल्पनाएँ सपने देखने से ही शुरू होती हैं। सपने देखने तथा कल्पना करने की निरंतर प्रक्रिया लोगों को उनके सपने के महत्व का एहसास दिलाती है। यह कल्पना एक मानसिक – दर्शन ही है। कल्पना के दौरान हम मन में एक छवि बना लेते हैं तथा जब हम उसी छवि की बार – बार कल्पना करते हैं तब वह छवि हमारे दिलों दिमाग में पूरी तरह से छप जाती है।

जब हम निरंतर सपने देखते हैं तथा खुद की जीत की कल्पना करते हैं, तब हमारे अवचेतन मन में हमारी जीत की वही छवि छप जाती है तथा तब वह अवचेतन मन हमारे चेतन मन को उस छवि को वास्तव में सच बनाने का स्मरण कराती रहती है जिससे हम उसे पूरा करने का प्रयास करने लगते हैं तथा उसे पूरा कर ही दिखाते हैं। हमारा अवचेतन मन सदा ही हमारे चेतन मन को अपने मन में छपी छवि को पूरा करने के लिए राज़ी कर लेता है।

हमारी उम्मीदें और कुछ नहीं केवल हमारे अवचेतन मन की आशाएँ ही हैं। अधिकांशतय हम अपने चेतन मन से अधिक अपने अवचेतन मन के विचारों को ही स्वीकार करना पसंद करते हैं।

हममें से कितने लोग अपनी सफलता को पाने के लिए तैयार रहते हैं?

मैं एक बार एक स्वयं - सेवा कार्यशाला में गया था, वहाँ एक प्रशिक्षक ने आए प्रतिभागियों से यह प्रश्न पूछा कि यदि आपको कल यू. एस डॉलर के हिसाब से पाँच लाख रूपए मिल जाएँ तो आप उन रूपयों का क्या करेंगे?

अधिकांश व्यक्तियों के पास इसका कोई उत्तर नहीं था तथा कुछ व्यक्तियों ने यह उत्तर दिया कि वे उसे बैंक में जमा कर देंगे। उनमें से किसी ने भी कोई रचनात्मक अथवा उद्यमी सुझाव वहाँ नहीं रखा।

हमें स्वयं को सफलता प्राप्त करने के लिए तैयार रखना चाहिए। सफलता एक माननीय मेहमान की तरह होती है, यदि हमारी लापरवाही के कारण उनकी खातिदारी में कोई कमी आ जाए तो वे स्वयं हमसे दूरी बना लेते हैं।

इसी प्रकार जब हम अपनी सफलता को प्राप्त करने के लिए पूरी तरह से तैयार नहीं होते हैं तब सफलता स्वयं ही हमसे दूर जाने लगती है तथा जब सफलता हमसे दूरी बना लेती है तब नकारात्मकता तथा असफलता अपना अधिकार वहाँ जमा लेती है।

फनी राम की कहानी

श्री फनी राम एक प्रमुख टोपाज थे (टोपाज भारतीय नौसेना में एक ऐसा पद है जिसमें व्यक्ति को शौचालय तथा अन्य कचरा प्रबंधन की गतिविधियों को सँभालने की ज़िम्मेदारी मिलती है।)। उनका जन्म तथा पालन - पोषण बिहार के एक दूरस्थ गाँव में हुआ था, जहाँ जाति के भेदभाव की गहरी जड़ें फैली हुई थीं। छोटी जाति के लोगों को

अमीर अथवा उच्च जाति के लोगों के कुएँ से पानी तक लेने का कोई अधिकार नहीं था | फनी राम भी एक पिछड़े हुए समुदाय का ही सदस्य था, और उसकी आज़ादी तथा सामाजिक स्वीकृति केवल उस समुदाय तक ही सीमित थी |

तब किसी लड़की को जन्म देना बुरा माना जाता था तथा उनके माता – पिता को बदकिस्मत समझा जाता था | स्त्रियों को शिक्षा देना कल्पना में भी संभव नहीं था तथा ऐसा करना उनके सामाजिक मानदंडों में भी नहीं था |

उसके परिवार की आर्थिक पृष्ठभूमि की कमी के कारण तथा उच्चकोटि के समुदाय के दबाव के कारण उसे प्राथमिक स्कूल में भी शिक्षा प्राप्त करने का कोई मौका नहीं मिला |

फनी राम का परिवार उस इलाके के ज़मींदार का किरायेदार था | उसके माता – पिता की कुल आमदनी अपर्याप्त थी, जिस कारण उनके नौ सदस्यों वाला बड़ा परिवार ढंग से दो वक्त की रोटी तक नहीं खा पाता था | कई बार तो उन्हें तथा उनकी बड़ी बहनों को भूखे पेट अथवा कम खाए ही सो जाना पड़ा |

भले ही फनी राम स्वयं स्कूल नहीं जा पाया किंतु वह हमेशा अमीर तथा उच्चकोटि के लोगों के बच्चों को स्कूल जाते हुए दूर से ही अचरजता से देखता रहता था | उसके नन्हे से मस्तिष्क में सदा स्कूल जाने की बात आती थी तथा सभ्य जीवन जीने का विचार आता था |

मुंबई के कर्नल रवि शर्मा वहाँ के ज़मींदार के करीबी रिश्तेदार थे तथा उनके वहाँ के नियमित आंगतुक थे | वे उच्च शैक्षिक तथा उदार व्यक्ति थे | उनके कोमल तथा मानवीय दृष्टिकोण के कारण फनी राम को वे अधिक प्रिय थे तथा वह सदा उनकी वापसी के समय रेलवे स्टेशन तक उनके साथ चलता तथा उनका वह एकमात्र सूटकेस अपने सिर पर रख कर ले जाता |

एक दिन मुंबई वापसी के दौरान कर्नल रवि शर्मा ने फनी राम को जल्द ही मुंबई ले जाने का निश्चय किया | यह वास्तव में फनी राम तथा उसके परिवार के लिए एक अविश्वसनीय घटना थी |

कर्नल शर्मा मुंबई में भारतीय थलसेना के एक छोटी – सी टुकड़ी के कमांडिंग अफसर थे |

ज़रा - सा भी विलंभ ना करके उन्होंने फनी राम को मुंबई बुला लिया तथा आगे चलकर उन्होंने फनी राम को भारतीय सेना में टोपाज के पद के रूप में भरती करवा दिया |

भारतीय सेना में रहकर भी फनी राम अन्य टोपाजों से थोड़ा अलग था |

सामान्यतया उस समय टोपाज वर्ग के लोग अति ठेठ हुआ करते थे | उनमें से अधिकतर लोग निषिद्ध मदिरा का सेवन, धूम्रपान, तम्बाकू चबाना तथा महिलाओं की अश्लील तस्वीरें जमा करने का शौक पालते थे | उनकी निजी बैठकों के दौरान उनकी बातचीत का प्रमुख विषय महिलाएँ होती थीं, खासकर अफसरों की पत्नी अथवा उनकी बेटियों के विषय में |

वे उन महिलाओं के साथ अपने हुए अवैध संबंध की मन घड़क कहानी का निर्माण करते थे | तथापि फनी राम उन सबसे भिन्न था |

वह हमेशा अन्य विभागों के योग्य तकनीकी लोगों के ही संगति में रहता था तथा वह एक आज्ञाकारी कर्मचारी था |

आगे चलकर फनी राम का विवाह हो गया तथा देखते ही देखते वह तीन लड़कियों का पिता बन गया | भले ही उसकी आमदनी कम थी फिर भी वह अपने बीवी – बच्चों को अपने साथ अपने कार्य केंद्र पर किसी तरह रखने में सक्षम रहा | जब वह कार्य पर नहीं होता था तब वह कभी भी अवांछित चीज़ों में अपना समय बर्बाद नहीं करता था | उसने अपने बच्चों की शिक्षा के लिए एक – एक पैसा इकट्ठा किया |

एक दिन जब वह मेरे कक्ष से कुछ पुरानी पुस्तकें तथा अखबार इकट्ठा कर रहा था तब मैंने उससे पूछा कि वह उन पुरानी अंग्रेज़ी के अखबारों तथा प्रबंधन की किताबों से क्या करेगा ?

उसने उत्तर दिया कि साहब ये मेरी बेटी के लिए हैं | चूँकि मेरे पास इन्हें खरीदने के लिए पर्याप्त धनराशि नहीं है इसलिए मैं इन्हीं से काम चला रहा हूँ | कुछ सीखने तथा प्रगति करने के उसके उस जुनून को देखकर मैं उससे उसकी बेटी की आगे की पढाई तथा फनी राम के अपने बच्चों के प्रति उसके सपने के विषय में पूछने लगा | हमारी बातचीत के अंत से पहले उसने भावुक होकर यह कहा कि,

“साहब एक दिन मैं अपनी बेटियों को उच्च शिक्षा के लिए विदेश भेजूँगा |” भले ही मुझे उस समय उसके सपने के पूरे होने पर शंका थी, फिर भी मैंने उसे आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया |

एक कम आमदनी वाला अनपढ़ टोपाज जो एक दलित परिवार से है, वह कैसे अपने सपनों को पूरा कर सकेगा ? यह मेरे लिए बहुत कठिन था कि मैं उस प्रश्न का उत्तर दृঁढ़ सकूँ |

बारह वर्ष के लंबे अंतराल के बाद जब मैं एक नेतृत्व कार्यशाला में भाग लेने के लिए पुनः विशाकापटनम गया तब संयोग से मैं दोबारा फनी राम से मिला । वह अब अपने कार्य से सेवामुक्त हो चुका था तथा उसके बाल और दाढ़ी भी सफेद हो गए थे, फिर भी वह चुस्त दिख रहा था । उसने मुझे दूर से ही पहचान लिया । मैं यह जानने के लिए उत्सुक हो रहा था कि क्या वह अपने सपने पूरे कर पाया ।

उसने बताया कि साहब मेरी बड़ी बेटी ने अपनी एम . बी . बी . एस की डिग्री एक सरकारी दक्षिण भारतीय मेडिकल कॉलेज से की तथा अब वह अपनी स्नातकोत्तर की पढ़ाई कर रही है । उसका विवाह दक्षिण भारत के एक हृदय शल्य चिकित्सक से हो गया है । दूसरी बेटी ने चार्टर्ड एकाउंटेंसी की पढ़ाई पूरी कर ली है तथा अब वह अपने एम . बी . ए स्नातक पति के साथ कनेडा में रहती है तथा तीसरी बेटी भारतीय वायुसेना में महिला अफसर का प्रशिक्षण ले रही है ।

एक दलित वर्गीय, अनपढ़, अल्प आमदनी वाला, लीडिंग टोपाज, एक दूरस्थ गाँव से जहाँ उन्हें हर चीज़ की कमी थी, कैसे उसे जीवन का इतना बड़ा वरदान मिल गया ? कारण और कुछ नहीं, केवल उसका एक बड़ा सपना ही था ।

किस प्रकार उसने अपने सपने को पूरा किया, यह बताते हुए वह सच में रो पड़ा था । आज भी मुझे उसकी गीली आँखें याद आती हैं, जो अपने सपनों के साकार होने की खुशी में बह रहे थे ।

जब हम बड़े और गहरे सपने देखते हैं तो हमारा ध्यान केवल उसे प्राप्त करने में होता है तथा तब हम उसके अलावा किसी और चीज़ पर ध्यान नहीं देते । जब हम गंभीर होकर किसी कार्य को पूरा करने में लगते हैं तो वह हमारी प्राथमिकता बन जाती है तथा तब हमारे मस्तिष्क की जालीदार सक्रिय प्रणाली (आर . ए . एस) हमें केवल वही दिखाती है जो हम देखना चाहते हैं ।

उसी समय यदि हम अपने ही सपनों के पूरे होने पर शंका करते हैं तो हम अपने सपनों को पूरा करने के लिए या तो संकोच करते हैं या उसे ऊपर उठाने से झिझकते हैं ।

हमारे सपने हमारे अपने बच्चों के समान होते हैं । अगर हम अपने बच्चों का ध्यान नहीं रखेंगे तो कौन रखेगा ? ज़रा सोचिए, अगर हम उनके भविष्य के विषय में विचार नहीं करेंगे तो कौन करेगा ?

यदि अपने सपनों का पोषण हम ठाठ से नहीं करेंगे तो उनकी उत्पत्ति बहुत कम होगी तथा उन सपनों का भविष्य समय की दया पर निर्भर करेगा ।

अधिकांश लोगों को सपनों की कमी क्यों हो रही है ?

मेरे बचपन में, मैं गिरिजाघर का तथा रविवार की स्कूली कक्षा का एक आंगतुक दर्शक मात्र हुआ करता था। मेरी अनियमित उपस्थिति रविवार के किसी सगाई के उत्सव के कारण नहीं बल्कि गिरिजाघरों के पुरोहितों द्वारा तथा रविवार के स्कूली अध्यापकों द्वारा दोहराए जाने वाले नीरस उपदेशों की बोरियत के कारण होती थी। उनके भाषण मेरे अंदर कोई रुचि नहीं लाते थे अपितु अधिकतर उनके उपदेशों के समय, मैं सपनों में खो जाया करता था।

वे पुरोहितजन तथा रविवार के स्कूली शिक्षक भी मेरे अंदर ईसा मसीह का सुसमाचार डालने तथा मुझे प्रचारक, पुरोहित अथवा उपदेशक बनने का सपना देने में असमर्थ रहे।

मनुष्य जिसका भी अनुसरण करता है उसके कौशल, प्रतिभा तथा सपनों को वह ग्रहण कर लेता है। जाने – अनजाने में वे अपने प्रेरणास्रोत का चयन, उनको स्वीकारना, उनका सम्मान तथा उनका अनुसरण करने लगते हैं। माता – पिता, शिक्षक – शिक्षिका, पुरोहित तथा बड़े, इन युवाओं के सच्चे प्रेरणास्रोत बन सकते हैं इसलिए इन्हें उनके सामने उत्प्रेरक की भूमिका अच्छे से निभानी चाहिए।

माता – पिता, शिक्षक – शिक्षिका, पुरोहित तथा बड़ों को नेता, सीढ़ी तथा लालटेन की भूमिका निभानी चाहिए।

अनावरण हमारे सपनों को आकार देने के लिए एक केन्द्रीय भूमिका निभाता है। हम जो भी देखते हैं, सुनते हैं तथा पढ़ते हैं उसका प्रभाव हमारे सपनों पर पड़ता है। हमारे सपनों को सक्रिय बनाने के लिए अवश्य ही कोई न कोई बाहरी पहल होगी जो हममें आग उत्पन्न कर सके या हमारे आतंरिक सामर्थ्य को जगा सके।

उत्तम अनावरण सदा उत्तम सपने लाते हैं।

अपने जीवन में उत्तम सपनों को पाने के लिए हममें स्वतंत्र सोच का होना आवश्यक है।

आगे की पंक्ति में चलने वाले पशु के सिवाय शेष अन्य पशुओं के झुंड को केवल सामने वाले पशु के पीछे का हिस्सा ही दिखाई देता है। किंतु यदि पशु अकेला चल रहा है तो उसे बहुत – सी हरी – हरी घास दिखाई देती है।

माता – पिता, शिक्षक – शिक्षिका, पुरोहित तथा नेता को अन्य व्यक्तियों को ऊँचे सपने देखने के लिए प्रेरित करना चाहिए | दूसरों को सपने दिखाना सपनों को जीवित रखने का एक प्रत्यक्ष प्रमाण है | जैसा कि पहले बताया गया है कि हम दूसरों में केवल वही बाँट सकते हैं जो हमारे पास है |

ज़ाहिर सी बात है कि जो हमें अपनी ओर आकर्षित करते हैं, उनके पास या तो कोई सकारात्मक सपने होंगे या उन्होंने अपनी कोई असफलता की कहानी हमें सुनाई होगी जिसका असर हमपे हो गया है | जो नेता अपने अनुयायियों को सपने दिखाने में असफल रहता है उसे शायद ही कभी सफलता मिली होगी |

हर नेतृत्व की सफलता का स्तर इस बात पर निर्भर करता है कि वह अपने समूह में कितना बड़ा सपना बाँटता है|

पशुओं को छोड़कर, मनुष्य सदा ही जीवन में परिवर्तन की खोज में लग जाता है | उनके बदलाव लाने की असीम खोज ने उन्हें पत्थर आयु वर्ग के आदिम आदमी से आधुनिक वर्ग का मनुष्य बना डाला | यह एक लंबी यात्रा है | कोई भी रिश्ता, प्रणाली अथवा दर्शन हमारी यात्रा की गति को कम कर देता है जो जल्द ही हमें अस्वीकृति की ओर आकर्षित करते हैं |

कोई भी रिश्ता तब तक यादगार नहीं बनता या अधिक समय तक नहीं टिकता जब तक उसमें सपनों का मिश्रण नहीं होता|

सपने एक लालटेन के समान होते हैं जो हमें सफलता का मार्ग दिखाते हैं | वे अपने उत्साह से हमारे मार्ग को प्रज्वालित कर देते हैं | वे हमें कठिनाइयों में भी संभावनाएँ होने का विश्वास दिलाते हैं |

.....

२. विश्वास

विश्वास - सफलता की दूसरी महत्वपूर्ण सामग्री है | आपको अपने सपने पूरे कर पाने का विश्वास करना चाहिए |

विश्वास का प्रत्यक्ष प्रभाव हमारे सपनों को परिपूर्ण करने में सहायक होता है | हमारे विश्वास में इतनी शक्ति होती है कि वह एक पहाड़ को भी हिला सकता है | जब हम किसी सपने पर बहुत गहरा विश्वास करते हैं तब हम अपने मन में उसे पूरा करने की एक प्रत्याशित छवि बना लेते हैं | निरंतर विश्वास से हमारे अवचेतन मन में उसकी छवि का अभिलेख बन जाता है तथा उसको स्वीकृति मिल जाती है | आगे की कार्यवाही को तदनुसार अवचेतन मन द्वारा नियंत्रित किया जाता है जिससे उसकी छवि के अभिलेखों को पहचाना जा सकता है |

जब हमें किसी कार्य पर विश्वास होगा तब हमारा ध्यान भी हमारे विश्वास पर होगा | जब हम किसी चीज़ पर ध्यान देते हैं तब हम आपत्तियों को नहीं देखते हैं, तथा जितना अधिक हम विश्वास करेंगे उतनी ही अधिक संभावनाएँ हमें कठिनाइयों में दिखाई देंगी |

हममें से कड़ियों को शायद अगस्त, १९९० वर्ष में भारतीय नौसेना का जंगी जहाज अंडमान की वह तबाही याद होगी | वर्षाकालिक पवन अपनी चरम सीमा पर थी तथा सागर बहुत ही कठोर बना हुआ था | चालक दल के अधिकांश सदस्य समुद्र के उतार – चढ़ाव से होने वाली अस्वस्थता के कारण संघर्ष कर रहे थे | बहुत तेज़ उतार – चढ़ाव के कारण जहाज़ का सागर में रहना दुष्वार हो गया तथा आखिरकार वह जहाज़, चालक दल के चौदह सदस्यों को अपने साथ सागर की गहराई में डुबा ले गया |

बचाव दल के लिए यह एक आश्वर्यजनक घटना थी कि उत्तरजीवियों में से एक व्यक्ति ऐसा भी बच गया था जिसे तैरना आता ही नहीं था | गैर तैराकी होने के बावजूद उसने कुछ समय तक एक तैरते हुए खाली ड्रम को पकड़ रखा था तथा बाद में बचाव करने वाली जहाजों ने उसे डुबने से बचा लिया |

उत्तरजीवियों के पुनर्वास के दौरान मैंने उससे पूछा कि जब उस पर कठोर सागर में कूदने का दबाव डाला गया था तब क्या उसे अपनी जान जाने की चिंता नहीं हुई ? उसने कहा – नहीं | उसने यह भी कहा कि मुझमें पूरी आशा तथा विश्वास था कि मैं जरूर बच जाऊँगा | समुद्र में कूदने से पहले मुझे एक कहावत याद आई, “ जो अपनी मदद करता है, भगवन उसी की मदद करता है ” |

जापान की एक पुरानी कथा है, दो छोटे मेंढक जो एक बड़े से स्टील के बर्टन में गिर गए, जो छाज से भरा हुआ था | चूँकि मेंढक बहुत छोटे थे तथा बर्टन बहुत बड़ा था, जबकि छाज आधा ही भरा था फिर भी मेंढक उस बर्टन से बाहर नहीं कूद पा रहे थे | वे शाम तक वहाँ से निकलने का संघर्ष करते रहे | आखिरकार एक मेंढक ने दूसरे मेंढक से कहा कि, “प्रिय दोस्त हम दोनों छाज के बर्टन में गिर गए हैं और बाहर नहीं निकल पा रहे हैं | अब मैं इतना थक गया हूँ कि मैं और तैर नहीं सकता हूँ | मुझे बचने की संभावना नहीं दिख रही है तो चलो हार मान लेते हैं तथा मृत्यु से पहले भगवान को याद कर लेते हैं |” दूसरे मेंढक ने कहा कि, “मैं मानता हूँ कि हम इस बर्टन में गिर गए हैं तथा बाहर निकल नहीं पा रहे हैं किंतु इसके लिए मैं आत्मसमर्पण नहीं करना चाहता | मुझे विश्वास है कि कुछ अच्छा ज़रूर होगा इसलिए चलो मरने तक हम प्रयास करें | “ पहला मेंढक और अधिक प्रयास नहीं करना चाहता था तथा उसने आत्म समर्पण करके मृत्यु को गले लगा लिया |

भले ही, दूसरा मेंढक थक गया था, फिर भी उसे विश्वास था कि कुछ अच्छा होगा और उसने प्रयास करना नहीं छोड़ा |

अंत में, मेंढक के निरंतर फड़फड़ाने से छाज में से मक्खन का मंथन होने लगा तथा वह पहले वाले उस मेंढक के मृतक शरीर पर जम गया, जिस कारण छाज में एक मंच - सा बन गया, जिसके द्वारा मेंढक बर्टन से बाहर आ गया तथा उसकी जान बच गई |

जब अपेक्षित परिणाम में विलंब होता है या कुछ गलत निकल जाता है तब लोग बेकरार हो जाते हैं | जबकि वह खंडन एक वास्तविक खंडन नहीं होता है केवल विस्तारित देरी होती है | परिणाम में इस प्रकार की देरी लोगों के विश्वास को कमज़ोर बना सकती है | हमें परिणाम में होने वाली देरी पर चिंता नहीं करनी चाहिए क्योंकि हर किसी जन्म के पीछे एक परियोजना पूरी होने की अवधि होती है | हमें उस अवधि का सम्मान तथा उसे स्वीकार करना चाहिए |

हाथियों की परियोजना पूरी होने की अवधि चूहों अथवा खरगोशों से अधिक होती है |

परियोजना पूरी होने की अवधि जितनी लंबी होती है, बच्चा उतना ही तंदरुस्त होता है।

परियोजना पूरी होने की अवधि के अस्तित्व को मान लेने का अर्थ यह नहीं कि हम खुद को खाली रखेंगे तथा किसी चमत्कार के होने का इंतज़ार करेंगे | इस अवधि का इरादा अधिकतम वृद्धि और प्रतिरक्षा है, ताकि जब वह भूण बाहर आ जाए तो वह स्वतंत्र रूप से जीवित रह सके | परियोजना पूरी होने की अवधि माता – पिता से भी यह उम्मीद करती है

कि वे नव शिशु को इन चुनौतियों, कठिनाइयों तथा संभावनाओं भरी दुनिया में लाने के लिए भलीभांति तैयार हों।

उसी प्रकार, अपने सपनों को पूरा करने के लिए पर्याप्त समय देने की अनुमति देने से हमें स्वयं को पर्याप्त रूप से तैयार करने में मदद मिलेगी, जिससे हम अपने सपनों के सारे दायरों को अधिक प्रभावित तौर पर पूरा कर सकेंगे।

आप हाइड्रोकार्बन के परिशोधन की प्रक्रिया पर या लोहे के निर्माण पर विचार कर सकते हैं।

जिन प्रक्रियाओं में अधिक समय लगता है वे हीं नाना प्रकार के उत्पादों का उत्पादन करते हैं।

परिणामों के विलंबित होने से निराश नहीं होना चाहिए। विलंबित होना सदा भविष्य की संभावनाओं की ओर संकेत करता है। यह विकल्पों पर विचार एवं पुनर्विचार करने का समय देता है तथा उम्मीद भी।

हमारा कोई भी प्रयास व्यर्थ अथवा अपुरस्कृत नहीं जाता है। हमारे सारे प्रयास कोई न कोई परिणाम ज़रूर लाते हैं। हमारे प्रयास किसी पदार्थ पर बल के समान है। हर चीज़ के सहने की एक सीमा होती है। जब किसी पदार्थ पर अधिक बल दिया जाता है तब उसके सतह की सहनशीलता की मात्रा बढ़ जाती है, तब उसकी सतह या तो मुड़ जाती है अथवा टूट जाती है जिससे उसमें विकार दिखने लगता है।

प्रयास तथा परिणाम की अवधारणा निवेश तथा उत्पादन के सिद्धांत पर कार्य करती है। निवेश से ही उत्पादन का निर्णय होता है। अच्छा या बुरा परिणाम हमारे निवेश पर निर्भर करता है, किंतु एक बात पक्की है, जल्द ही या देर से ही परन्तु परिणाम निकलेगा ज़रूर।

अपने सपनों पर विश्वास करने तथा उसके पूरे होने की आशा करने के लिए हमारे पास कई कारण हैं। न्यूटन के अनुसार गति का तीसरा कानून यह दर्शाता है कि, “हर एक क्रिया की प्रतिक्रिया होती है।” “हमारे सपनों के उन्मुख कार्य अवश्य ही अच्छे परिणाम लाएँगे।

मेरा मानना है कि, इस आधुनिक दुनिया में हमारी क्रिया में प्रतिक्रिया भी अलग से जुड़ जाती है। जैसे एक प्यारी सी मुस्कान भी एयर होस्टेस को हमारी लंबी यात्रा में हमारा अधिक ध्यान रखने को प्रेरित करती है।

नकारात्मकता पर विश्वास करना एक आम प्रवृत्ति है क्योंकि यह परिस्थितियों को सुधारने के लिए कम अथवा ना के बराबर ही मांग करती है | हर युवा सशक्तिकरण कार्यक्रम में, युवाओं का एक ही रोना या मानना होता है कि, “ नौकरी के लिए कोई जगह खाली नहीं है ।”

उनके कथन तभी विश्वासप्रद हो सकते हैं जब वे निम्न कथनों को साबित कर पाएँगे ।

इस दिन,

- दुनिया के किसी भी कोने में किसी ने भी किसी भी तरह का व्यापार आरंभ नहीं किया हो ।
- ऊँची पदवी से किसी की भी पदोन्नती नहीं हुई हो ।
- कोई भी किसी कार्य केंद्र में बीमारी अथवा किसी दुर्घटना के तहत मृत्यु को प्राप्त नहीं हुआ हो ।
- कोई भी किसी अन्य पद की ओर ना चला हो ।
- किसी उद्योग ने भी अपने विस्तार की प्रक्रिया का प्रारंभ नहीं किया हो ।
- किसी को भी अपनी नौकरी से सेवामुक्ति नहीं मिली हो । किसी को भी नौकरी से निकाला नहीं गया हो अथवा किसी ने भी अपने भले के लिए अपनी नौकरी से त्यागपत्र नहीं दिया हो ।तो यह सब खाली जगहें कहाँ है ?

बाइबल में लिखा है, “ जैसा बोओगे वैसा काटोगे ।”

इसका यह अर्थ नहीं है कि हमें वही मिलता है जो हम बोते हैं | हमें हमेशा उससे अधिक ही मिलता है, जितना कि हम देते हैं | एक किसान जो चावल का एक बीज ही बोता है उसे केवल चावल के पौधे का एक गुच्छा ही नहीं मिलता अपितु सूखी घास भी मिलती है ।

औसत व्यक्ति अपने सपनों के सिवाय अन्य बहुत – सी चीज़ों पर विश्वास करते हैं । ऐसा क्या है जो उन्हें अपने सपनों के पूरे होने में आशंका दिला रही है ? तुलना करना, गलत संगति में पड़ना, तथा गलत अनुभूति का होना, लोगों को अपने सपनों के पूरे होने में आशंका दिलाती है ।

औसत व्यक्ति सदा खुद की तुलना दूसरों से करते हैं | अधिक दिलचस्प बात यह है कि लोग उन सफल लोगों के साथ अपनी मानसिक स्वास्थ्य की तुलना नहीं करते अपितु उनके भौतिक धन की तुलना करते हैं | एक विशेष व्यक्ति की सफलता के पीछे मानसिक स्वास्थ्य का बहुत बड़ा योगदान होता है | बल्कि मानसिक स्वास्थ्य ही एक ऐसी चीज़ है जो

कि हमारे भौतिक धन की दीर्घायु तथा स्थिरता को सुनिश्चित करता है | अपेक्षाकृत, अच्छा मानसिक स्वास्थ्य ही लोगों को अच्छा विचारक तथा बड़ा बनाती है जबकि भौतिक धन उन्हें अधिक स्वामिगत तथा स्वार्थी बना देता है |

हमें हमारा भौतिक धन नहीं अपितु मानसिक स्वास्थ्य ही धनी बनाता है।

लोग सदा अपने लाभ की तुलना दूसरे लोगों से करते हैं | उस समय वे अपने प्रयासों का कोई हिसाब नहीं रखते |

प्रयासों की अपेक्षा परिणामों की ही सदा तुलना की जाती है।

हममें से कितने लोग सफल व्यक्तियों के परिश्रम तथा कष्ट भरे संघर्ष का हिसाब रखते हैं?

हम केवल उनके लाभ को देखते हैं किंतु उनके कष्ट को नहीं।

मैंने देखा है कि माता – पिता अपने बच्चों की तुलना अन्य बच्चों से करते हैं किंतु वे यह सच बड़ी आसानी से भूल जाते हैं कि वे खुद भी उन अन्य माता – पिता से भिन्न हैं | तो वे कैसे अपने बच्चे से दूसरे बच्चे की तरह होने की उम्मीद कर सकते हैं ? तुलना करना तभी उचित होता है जब वह दो समान वर्ग की वस्तु से की जाए।

प्रबल इच्छा ही केवल हमारे विश्वास को लंबे समय तक जीवित रख सकती है | लोग अपने साथियों तथा परिवेशों से प्रभावित रहते हैं | अपने अनुभवों की अन्य से तुलना करना हमारी आम प्रवृत्ति होती है | ऐसी तुलनाओं से वे हमारे लिए अधिक सहानुभूति के पात्र बन जाते हैं तथा हमें अपने सपनों तथा विश्वासों से भटका देते हैं | दूसरों की सफलता की अपेक्षा उनके हार का हम पर अधिक प्रभाव पड़ता है | दूसरों की असफलता हममें भी असफलता का भय जगा देती है तथा हमें किसी प्रकार के प्रयास करने से भी रोक देती है।

आम आदमी संवेदनशीलता से अधिक सहानुभूतिपूर्ण होते हैं।

सफल व्यक्ति स्वयं को दूसरों के स्थान पर रखकर, उनके विफलताओं के कारणों का विश्लेषण करता है, न कि उस पर लंबे समय तक विलाप करता है | वे रचनात्मकता से उनकी स्थितियों का विश्लेषण करते हैं।

सफल व्यक्ति बनने के लिए हमारे सपने, कार्य उन्मुख होने चाहिए | कुछ लोग सफलता के लिए केवल चमत्कारों पर ही विश्वास करते हैं | जो व्यक्ति अपना अधिक समय मंदिर अथवा गिरिजाघर में चमत्कारों के इंतज़ार में ही खर्च करते हैं, मैं उनके खिलाफ या उनकी आलोचना नहीं करता हूँ।

क्या वास्तव में चमत्कार होते हैं ? मेरे विचार से, चमत्कार और कुछ नहीं बल्कि किसी व्यक्ति द्वारा किसी कार्य की प्रतिबद्धता का परिणाम है | चमत्कार केवल उन्हें ही दिखते हैं जो ईश्वर के परम भक्त होते हैं |

हो सकता है कि पाठक इस बात से सहमत ना हों | मैं कोई विवाद नहीं करना चाहता, किंतु मैं यह मानता हूँ कि हर कथ्य का अपना एक कारण होता है | चूँकि हम उन सटीक कारणों से अवगत नहीं हैं इसका ये अर्थ नहीं कि उन कारणों का कोई अस्तित्व ही नहीं है |

हमारी विश्वास प्रणाली पहले के कई उल्लेख कारकों जैसे मिडिया, सहकर्मियों का प्रभाव, धर्म, राजनीति, नेतृत्व, हमारी जानकारी का स्तर, प्रशिक्षण के प्रकार, समाज आदि से प्रतिकूल प्रभावित हो सकते हैं |

हमारी विश्वास प्रणाली को मजबूत बनाने के लिए हमें कई बार खुद को उपयुक्त कारकों से दूर रखना होता है | अलगाव बहुत ही कठिन तथा कष्टदायक होता है | इसके अस्थायी नुकसान हमारे मस्तिष्क में नकारात्मकता बढ़ा सकती है |

कष्ट हर प्रसव का एक अंग है | ये कष्ट हमें आगे चलकर हमारे परिणामों को संजोने में मदद करेगी | हर प्रसव में एक हद तक कष्ट तो होता ही है | हमें कभी अपने कष्ट के भय को अपने प्रयासों को रोकने नहीं देना चाहिए ताकि हम अपने भविष्य में होने वाले लाभ की संभावनाओं को ना खो सकें | हमें अपने कार्यों पर विश्वास होना चाहिए ताकि हमारे सपने दिन ब दिन मजबूत होते जाएँ |

कुछ कार्यवाही अप्रिय भी होते हैं तथा हमारे आरामदेह स्थिति को भी परेशान कर देते हैं | यह चाहे कितना भी दर्दनाक क्यों न हो किंतु ये कार्य आवश्यक हैं | अंडे को बिना तोड़े उससे ओम्लेट बनाना संभव नहीं है |

महलों में जो सजावटी पत्थर हैं वे पहले से ही विकसित नहीं थे, अपितु बड़े चट्टानों के हिस्से थे जो कठोर तथा अजीब से आकार के थे, जिन्हें भारी झटकों तथा विघटन का सामना करना पड़ा था | उनके टूटे हुए टुकड़े शायद नदी के कठिन अनुभवों में ही लुढ़क गए होंगे | प्रत्येक पत्थर का लुढ़कना उनके बहिर्गत कोनों के नुकसान पर बल देता है तथा इस तरह के नुकसान अप्रिय रहे होंगे |

कई चट्टान लंबे समय तक लुढ़कने के कारण ही आज किसी राजकुमारी अथवा रानी के लटकन के रूप में उनके पास हैं तथा उनकी मृत्यु के पश्चात भी ये लटकन इतिहास का हिस्सा तथा एक यादगार पल बनकर रहेगा | उस चट्टान के अन्य हिस्से शायद किसी

इमारत अथवा सीढ़ियों का हिस्सा बनकर किसी सीमेंट के नीचे दबा होगा | वे चट्टान उन लोगों का भार उसके उपयोगकर्ता को बिना पहचाने उठा रहे होंगे जो उन पर चलते हैं |

जितना हमें धिसा जाता है, उतनी ही चमक हममें आती है तथा जब हममें चमक आ जाती है तब हम महलों तथा लटकनों की शोभा बन जाते हैं।

कठिन परिश्रम का कोई विकल्प नहीं होता है | बॉक्सर जो अपने अभ्यास के छल्ले में अधिक पसीना बहाता है, उसे अपने अंतिम खेल में कम मेहनत करनी पड़ती है | जब हम किसी चीज़ पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं तब हमें अति कम बाधाओं का सामना करना पड़ता है |

एक विद्युत परिपथ में प्रतिरोध की तरह बाधाएँ होना आम बात है तथा आवश्यक भी हैं। जिस प्रकार प्रतिरोध एक यंत्र के लिए ज़रूरत से ज्यादा बिजली प्रतिबंधित करता है, उसी प्रकार बाधाएँ भी अयोग्य व्यक्तियों को सफलता प्राप्त करने से प्रतिबंधित करता है।

बाधाएँ वास्तव में कठिनाइयाँ नहीं संभावनाएँ होती हैं क्योंकि वे हमें विकल्प ढूँढ़ने की वजह दे देती हैं।

बाधाएँ हमें खुद का परिक्षण करने के अवसर देती हैं | ये हमें हमारा अद्यतन करने का स्मरण कराती हैं | जितनी अधिक बाधाओं का सामना हम करेंगे, अपने जीवन के भविष्य में हम उतने ही अधिक मजबूत बनेंगे।

जब परिणाम लोगों की उम्मीदों से परे निकलता है तब लोग बहुत बेकरार हो जाते हैं।

आँसू कभी स्थायी नहीं होते हैं, इसका पानी भाप बनकर औझल हो जाता है।

बह्मांड में हमारे लिए कई योजनाएँ हैं | यह सच है कि कभी – कभी हमारी उम्मीदों का स्तर तथा हमारी दूरदर्शिता उतनी प्रखर नहीं हो पाती, जितनी प्रकृति की होती है। स्मरण रखिए, प्रकृति के नियम कभी हानिकारक नहीं हो सकते हैं।

कम से कम कुछ पाठकों ने यह अनुभव किया होगा कि प्रकृति ने उन्हें अतीत में कैसे भारी नुकसान तथा खतरों की संभावनाओं से बचाया होगा। कहीं विलंबता के कारण, तो कहीं नकारने से, तथा कई अस्वीकृतियों ने उन्हें भविष्य में लाभ दिलाया होगा।

फादर डेनिअल तथा उनकी किशोरी पुत्री सानिया, बहुत निराश हो गए थे, जब चार – पाँच स्थानीय बसों ने उनकी यात्राओं के कार्यक्रमों को एक के बाद एक करके रद्द कर

दिया था | बस स्टॉप पर निरंतर तीन घंटों तक इंतज़ार करते – करते वे थक गए थे तथा इस कारण उन्हें अपनी यात्रा योजना को रद्द करने का विचार आया | जब वे इस दुविधा में थे कि अपनी यात्रा स्थगित करनी है या नहीं | तब सानिया को एक छाते मरम्मत करने वाला दिखा | उसने पिता को अपने छाते की मरम्मत कराने की बात पर राज़ी करा लिया | बिना देरी किए वे दोनों उसके पास उस कोने में चले गए तथा उसने छाते की मरम्मत शुरू की |

तभी उन्होंने बस को बस स्टॉप पर आते देखा तथा वे उस छाते वाले पर जल्दी काम करने के लिए ज़ोर देने लगे | किसी तरह छाते वाले ने समय पर छाते की मरम्मत कर दी | तथापि जब तक वे स्टॉप तक पहुँचते, तब तक बस चल पड़ी तथा उनकी बस छूट गई |

कुछ समय के लिए, फादर डेनिअल अपनी बेटी की आखिरी समय की माँग पर शिकायत करने लगे | तथापि उन्होंने स्वयं को यह सांत्वना दी कि इस देरी के पीछे भी ईश्वर की कोई नेक योजना हो सकती है |

संयोगवश, बिना अधिक विलंब किए एक दूसरी बस उसी राह पर आ गई और दोनों शांतिपूर्वक बस में चढ़ गए |

आधे रास्ते में उन्होंने जो दृश्य देखा वह दिल दहला देने वाला था | पूरा रास्ता अम्बुलान्स की भीड़ तथा कई बचाव वाहनों से भरा हुआ था |

जो बस उनसे कुछ समय पहले छूट गई थी, वह बुरी तरह से गिर गई थी | एक ईंधन टैंकर के साथ एक गंभीर टकराव के बाद क्षतिग्रस्त हालत में थी | लगभग सभी यात्री घायल अथवा गंभीरता से जल चुके थे, तथा कुछ लोगों की हालत बहुत नाजुक थी |

हर कार्य के होने के पीछे कोई न कोई वजह ज़रूर होती है।

प्रकृति के पास हमारे प्रयासों को पुरस्कृत करने का अपना ही तरीका है, जो आम आदमी को प्रत्यक्ष दिखाई नहीं देता है | हमें तब निराश नहीं होना चाहिए, जब परिणामों में विलंब हो जाता है अथवा परिणाम उम्मीद से अलग हो जाते हैं |

हम केवल अपने प्रयासों में ही नियंत्रण कर सकते हैं, परिणामों में नहीं | अपना सर्वोत्तम प्रयास करने से न चुकें अन्यथा यह आपको विफलता का हकदार बना देगा |

एक कहावत है, जो खुद की मदद करता है, ईश्वर उसी की मदद करता है |

कठिन परिस्थितियाँ, सफलता चाहने वालों को वैकल्पिक साधक बना देते हैं।

ये सफलता चाहने वालों को मेहनती बनाते हैं | ये उन्हें कठिनाइयों में भी कई संभावनाएँ दर्शाते हैं | ये उन्हें अपने सुविधा क्षेत्र से बाहर ले जाते हैं, जहाँ नवाचार शायद ही मौजूद हो | इससे उन्हें अनुयायियों के नेताओं के रूप में उत्थान मिलता है |

प्रतिकूल स्थिति वास्तव में संभावनाएँ हैं क्योंकि यह हमें आत्म – प्राप्ति तथा अन्यों को पहचानने का अवसर देती है | यह दर्शाएगा कि कौन हमारे साथ है, तथा हमें आत्म विकास तथा अद्यतन की आवश्यकता का स्मरण कराएगा | स्व विकास केवल अद्यतन द्वारा ही संभव है तथा अद्यतन किसी परिवर्तन की तैयारी अथवा उससे मुकाबला करने की प्रक्रिया है |

स्व विकास किए बिना दूसरों का विकास करना आत्मघाती है।

परिणामों में विलंब होना समय की ही कोई मांग हो सकती है | उतार – चढ़ाव हर जीवन का एक हिस्सा होता है |

कोई भी जहाज़ लहर पैदा किए तथा ऊपर – नीचे हुए बिना पानी में नहीं चल सकता।

एक वर्ष में चार मौसम की तरह हमारे जीवन में भी कई मौसम हैं | तापमान कभी भी पूर्णतया स्थिर नहीं होता | बल्कि एक दिन में भी हम सुबह और शाम के तापमान में अंतर देख सकते हैं | अपने सपनों पर दृढ़ता से विश्वास रखें तथा इसके प्रयासों के विलंब से बचें | समस्याओं तथा परिणामों के विषय में चिंता करने से बचें |

हमारी हर समस्या का समाधान होता है क्योंकि समस्याएँ तथा समाधान एक ही सिक्के के दो पहलू हैं | हमें समाधानों की आशा करने का पूरा अधिकार है क्योंकि हर समस्या के कई समाधान होते हैं, जैसे हर सिक्के में एक से अधिक चेहरे होते हैं |

प्रत्येक सिक्के में दो से अधिक चेहरे हैं।

वास्तव में बिना समाधान के इस दुनिया में कोई समस्या नहीं है, और यदि आपको ऐसा लगता है कि आपकी समस्या का कोई समाधान नहीं है तो संभवतः वह समस्या असली नहीं होगी, अपितु स्व निर्मित कल्पनाएँ होगीं जिसे किसी समाधान की आवश्यकता नहीं होती है |

औसत लोग समाधानों की तुलना समस्याओं में विश्वास करते हैं क्योंकि वे समाधान के अस्तित्व से अनजान हैं | सफल लोगों तथा मध्यस्थों में एक मुख्य अंतर यह है कि, जब

सफल लोग समाधान तलाशते हैं, तब मध्यस्थ लोग अपने साथ विलाप करने के लिए और अधिक लोगों की खोज करते हैं।

एक सिक्के की तरह, प्रत्येक समस्याओं के भी दो से अधिक समाधान होते हैं। एकमात्र आवश्यकता यह है कि हमें उन समाधानों को देखने में सक्षम होने के लिए हमारी स्थिति को बदलना होगा। एक संवेदनशील दृष्टिकोण होने के लिए अन्य कोणों से देखने की आवश्यकता हो सकती है। यह कुछ मानसिक तथा शारीरिक कार्यों की माँग कर सकती है।

अपने सपनों पर विश्वास करें तथा नतीजे की आशा करें क्योंकि आपके आस-पास कई लोग और संगठन हैं जो आपकी सफलता के लिए इच्छुक हैं क्योंकि आपकी सफलता उनकी भी सफलता है।

.....

३. क्रिया

हमारे जीवन में बड़ी सफलता हासिल करने के लिए कोई भी छोटा रास्ता नहीं है। इसके पीछे कुछ और नहीं किंतु एक ही रहस्य छुपा है तथा वह है, लगातार और बड़े पैमाने

पर कार्यवाही करना | सफल लोगों को इस बात का ज्ञान होता है तथा उनकी तेज़ी ने ही उन्हें सफल बना दिया है |

क्रिया को सफलता के त्रिभुज का तीसरा हाथ कह सकते हैं | सफल लोगों तथा मध्यस्थों में एक मुख्य अंतर यह है कि, जब सफलता चाहने वाले कोई कार्य कर रहे होते हैं, तब मध्यस्थ लोग कुछ करने की बात करते हैं अथवा ‘किसी दिन’ कुछ करने की योजना बनाते हैं किंतु दुःख की बात यह है कि वह ‘एक दिन’ उनके जीवन में कभी नहीं आता है |

यद्यपि अन्य व्यक्तिगत गुण जैसे प्रतिबद्धता, समर्पण, नेतृत्व, जुनून आदि सटीक सफलता की दिशा में बहुत योगदान देते हैं, मगर वो ‘क्रिया’ ही हैं जो कि चीज़ों को आगे बढ़ने देता है और हमारे सपनों को पंख देता है |

हालांकि वे कार्यों के महत्व को जानते हैं, तो वे अपने जीवन में उस महत्वपूर्ण पहलू को शुरू करने में संकोच क्यों करते हैं ? ऐसा इसलिए होता है क्योंकि कार्यवाही करना आसान नहीं होता है |

एक कार्यवाही की शुरुआत करना हमेशा सरल अथवा आसान नहीं हो सकता, किंतु इसे करना हमेशा सही होगा | कभी - कभी हमारी कार्यवाही हमें हमारे सुविधा क्षेत्र से बाहर आने की मांग करती है तथा ये कभी – कभी हमें कुछ अप्रिय क्षेत्रों पर आगे बढ़ने के लिए मजबूर भी कर सकते हैं |

अधिकांश आम लोगों में सपनों की कमी होती है इसलिए वे प्रयत्न ही नहीं करते | कुछ लोगों के सपने होते हैं, किंतु वे उसे पूरा करने में विश्वास नहीं करते हैं तथा वे भी अपने सपनों को अधूरा छोड़ देते हैं |

सपनों तथा विश्वास करने वालों की एक आम श्रेणी भी होती है, किंतु उनके पास आगे बढ़ने का साहस नहीं होता है | अपितु किसी भी कार्य को करने की कोशिश करने से पूर्व भी उनके मस्तिष्क में सैंकड़ों प्रश्न पैदा हो जाते हैं | उनमें से अधिकतर लोग अपने प्रयासों के खिलाफ केवल नकारात्मक परिणामों को ही देखते हैं | अनजाने में वे सफल होने की बजाय विफल होने के कारणों की खोज करने लगते हैं | जाने – अनजाने में वे सफल व्यक्तियों के स्थान पर असफल व्यक्तियों को अपना प्रेरणास्रोत बना लेते हैं | असफलता का भय उन्हें कैद में बंद कर लेता है तथा उन्हें हर संभव प्रयास करने से रोक देता है |

निरंतर, लगातार, तथा बड़े पैमाने पर कार्यवाही नए अवसर पैदा करती है | कार्य उन्मुख लोग अपना काम करने के लिए उपयुक्त समय बनाते हैं, न कि उपयुक्त समय के आने का इंतज़ार करते हैं |

सफलता प्राप्त करने का कोई उत्तम समय नहीं होता अपितु समय का सदुपयोग ही सफलता लाता है।

सफलता प्रेमी किसी उपयुक्त समय का इंतज़ार नहीं करते | वे हर मौसम में बोते हैं तथा अच्छी फसल काटते हैं | उनके लिए सारे ही मौसम बसंत के समान हैं | औसत लोग बहुत कुछ करने की योजना बनाते हैं और कुछ नहीं करते हैं, वे अपने प्रयासों से पहले बहुत ज्यादा तैयारी में विश्वास रखते हैं और बहुत – से लोग इसमें विलंब करते रहते हैं।

इस दुनिया में विचारों की कोई कमी नहीं है बल्कि कई बार तो यह बहुत अधिक बढ़ जाते हैं | सामान्यता में लोगों की निरंतरता विचारों की कमी के कारण नहीं है बल्कि सामान्यता के खिलाफ कार्यवाही शुरू करने की इच्छा और साहस की कमी के कारण है।

मेरे नौसैनिक करियर के दौरान, मैं और मेरे दोस्त मशरूम के उत्पादन से लेकर एक निजी विश्वविद्यालय खोलने के लिए कई उद्यमी विचारों पर चर्चा करते थे | सबसे मज़ेदार बात यह है कि हममें से किसी ने भी उन उद्यमों में से कुछ भी शुरू नहीं किया है सिवाय नई चर्चाओं के।

किसी कार्यवाही को शुरू करना, जबकि उसके परिणाम भी अनिश्चित होते हैं, तो वह कार्य इतना सरल और आसान नहीं हो सकता है। आगे बढ़ते रहने की तुलना जड़त्व की स्थिति से निकलने में अधिक प्रयासों की आवश्यकता होती है। यह हमें कार्य करने की तुलना, उसे छोड़ने के लिए सभी कारण दिखा सकता है।

कार्यवाही और कुछ नहीं, केवल बदलाव की एक इच्छा है। परिवर्तन का विरोध करना एक साधारण बात है क्योंकि परिवर्तन सुविधा क्षेत्र से अलगाव की मांग करते हैं।

जो परिवर्तनों का विरोध करते हैं, उनके लिए परिवर्तन अनिवार्य होते हैं और जो लोग नवाचार अस्वीकार करते हैं, उनके लिए नवीकरण अनिवार्य होता है।

प्रत्येक कार्यवाही से पहले, आंतरिक रूप से श्री कार्यवाही तथा श्री चूक के बीच एक रस्साकस्सी होगी। श्री चूक अपनी हर जीत को जड़ता के राज्य में ज़ारी रखने के लिए कहते हैं।

निष्क्रियता जड़ता की ओर ले जाता है।

निष्क्रियता और सफलता कभी भी हाथों – हाथ नहीं चल सकती है तथा बड़ी सफलता केवल रातोंरात ही नहीं होती है। इसके लिए बहुत सारी मानसिक तैयारी, स्वयं शोधन एवं स्व – अनुशासन की आवश्यकता होती है। सफलता कोई घटना नहीं होती, यह

समर्पण तथा कड़ी मेहनत का ही नतीजा होता है। सफल उम्मीदवार केवल अपेक्षाओं की तुलना कार्यों में विश्वास करते हैं। सफल व्यक्ति मधुमक्खियों की तरह होते हैं। एक अकेला मधुमक्खी पर्याप्त अमृत इकट्ठा करके उसमें से चुटकी भर शहद निकालने के लिए पूरे दिन में दस घंटे काम करता है। रानी मधुमक्खी केवल एक दिन में १५०० के आस-पास अंडे देती है।

कई साधारण लोगों के लिए, अन्य की सफलता केवल एक दुर्घटना या किस्मत का मामला होता है, क्योंकि वे उनके प्रतिबद्धता तथा परिश्रम को कम आंकते हैं। वे अपनी गलत धारणा के साथ दूसरों का न्याय करते हैं तथा उनकी सफलता के पीछे के रहस्य को समझने में शायद ही कोई दिलचस्पी दिखाते हैं। लोगों का मानना है कि सफलता भाग्य से मिलती है। वे इस पर विश्वास करना पसंद करते हैं क्योंकि यह उन्हें अपनी मानसिक पीड़ा ‘शोक के दर्द’ से अस्थाई राहत देती है।

भाग्य कभी इरादों से तय नहीं होता है अपितु कार्यों से होता है।

कार्य को आरंभ मात्र करने पर ही आधी सफलता मिल जाती है। ये हमें कार्य में सुधार लाने के लिए अन्य कई अवसर प्रदान करते हैं।

उसे सुधारना बड़ा मुश्किल है जो अभी शुरू भी नहीं हुआ है।

किसी नए कार्य को किए बिना ही बदलावों की अपेक्षा करना और कुछ नहीं केवल एक लालच है। यद्यपि हर कोई कार्य के महत्व से भलीभांति परिचित है, तो लोग क्यों अपने जीवन के पाठ्यक्रम को बदलकर ऐसा करने में संकोच करते हैं?

लोग कई नकारात्मक प्रभावों के बंदी बने रहते हैं। उनमें से कई विलंब के शिकार तो कई असफलता के डर के। उनके पास निष्क्रिय होने के कई कारण हैं वे अपने स्वयं के ज्ञान तथा तैयारी के स्तर पर संदेह करते हैं तथा अपने ही संदर्भ में अधूरापन महसूस करते हैं। औसत लोग दूसरों को अधिक अनुमानित करते हैं या स्वयं को अति कम मूल्य देते हैं। वास्तव में, लोगों का ज्ञान तथा जागरूकता जितना ऊँचा लगता है, उतना है नहीं।

कुछ साल पहले, एक अन्तर्राष्ट्रीय दूरदर्शन चैनल टीम ने अमेरिका के एक व्यस्त गली में सौ से अधिक लोगों को एक मिनट के भीतर ‘यू’ अक्षर से शुरू होने वाले किन्हीं पाँच देशों के नाम बताने के लिए कहा परिणाम बहुत ही चौंकाने वाले निकले। अधिकांश लोगों को ‘यू’ अक्षर से दो नाम भी नहीं मिल रहे थे। सबसे दिलचस्प बात तो

यह थी कि उन प्रतिभागियों में से केवल तीस प्रतिशत लोगों के उत्तर में ही ‘युनाइटेड स्टेट्स ऑफ़ अमेरिका’ का नाम शामिल था।

इसी तरह कुछ वर्ष पहले मुंबई में, एक अन्य दूरदर्शन के चैनल ने एक प्रमुख बिजनेस स्कूल के अंतिम वर्ष प्रबंधन के लगभग सौ छात्रों से ‘एड्स’ के संक्षिप्त नाम का विस्तार करने के लिए कहा। कई लोगों ने कोशिश की, किंतु सही ढंग से उत्तर देने वालों की संख्या सात प्रतिशत से भी कम थी।

अन्य व्यक्तियों के साथ अपने ज्ञान की तुलना करने से बचें, क्योंकि दूसरों के बारे में हमारा अधिक अनुमान लगाना हमारे अंदर विफलता का भय पैदा करना है तथा असफलता का भय हमें किसी भी कार्य की शुरुआत करने से पीछे खीचेगा, शायद हमेशा के लिए।

कई लोग अपने तैयारी के स्तर को लेकर ही चिंतित तथा संदिग्ध रहते हैं। ध्यान देने की एक दिलचस्प बात यह है कि जो अधिक चिंता करते हैं, वे उसे सही करने के लिए कुछ नहीं करते। तैयारी ही अपर्याप्त तैयारी की भावना के खिलाफ एकमात्र समाधान है। हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि,

पूर्णता की लालसा एक मृगतृक का पीछा करने से अलग नहीं है।

पूर्णता में सुधार की अधिक संभावना होती है। नवाचार में शायद ही कोई स्थान होगा जहाँ पूर्णता पहले ही प्राप्त हो चुकी है। यदि पूर्णता को बनाए नहीं रखा जाता, तो चीजों में जंग लग जाती है। पूर्णता बनाए रखने के लिए नियमित रूप से अद्यतन करना आवश्यक होता है।

जब कोई व्यक्ति किसी भी कार्यवाही की शुरुआत करता है, तब कुछ संस्थाएँ भी हानिकारक भूमिकाएँ निभाती हैं। कुछ व्यक्तियों को छोड़कर, अन्य ये सहन नहीं कर पाते हैं कि वे उनसे कुछ अलग ही कर दिखाएँ। यह एक मनोवैज्ञानिक समस्या है जबकि अन्य अपने कार्यों का पालन करते हैं, वे आत्मविश्वास महसूस करते हैं एवं स्वीकार किए जाते हैं। इसी तरह, जब लोग उनसे कुछ अलग कर जाते हैं, तो ये बेचैन हो जाते हैं तथा वे दूसरों को हतोत्साहित करने का प्रयास करते हैं।

औसत लोग जिराफ की तरह होते हैं, वे किसी विशिष्ट नेता के बिना ही खुले झुंड में रहना पसंद करते हैं। चाहे लोग समृद्ध हों या गरीब, औसत लोग हमेशा एक झुंड का हिस्सा बनना पसंद करते हैं। उनके फैसले अन्य लोगों द्वारा प्रभावित होते हैं, उनके विचार स्वतंत्र नहीं होते हैं और वे अप्रत्यक्ष रूप से दूसरों को अपने विचारों और कार्यों को नियंत्रित करने की अनुमति देते हैं।

वे दूसरों की राय को अपनी राय से अधिक मौल देते हैं | वे हर कदम दूसरों के साथ ही उठाते हैं तथा दूसरों की राय उनके लिए बहुत मायने रखती है |

जनता की राय हमें प्रभावित करती है तथा आम लोगों को संभावित प्रयास करने से रोकती है | कभी – कभी यह उन्हें बहुत बुरी तरह से प्रभावित करती है | सलाह और राय की, इस दुनिया में कमी नहीं है |

“खैर ! आपके विचार कोई नए नहीं हैं | हमने इस पर विचार किया अपितु यह योजना काम नहीं करेगी |”

“आप जानते हैं कि विक्टर भी इसमें विफल रहा |” “आप जानते हैं कि उस फलाना प्रभावशाली व्यक्ति ने भी इसे करने की कोशिश की, पर वह भी असफल रहा |”

..... ये कुछ आम टिप्पणियों तथा राय के ही उदाहरण हैं | एक व्यक्ति को इससे अधिक और कौन किसी प्रयास या कार्यवाही करने से रोक सकेगा ?

चलिए कुछ देर के लिए हम उपरोक्त विवरणों का विश्लेषण करते हैं, “खैर ! आपके विचार कोई नए नहीं हैं | हमने इस पर विचार किया अपितु यह योजना काम नहीं करेगी |”

हमारे विचारों के विषय में अन्यों को पूरा कैसे पता है ? उनका दावा है कि उन्होंने इसके बारे में सोचा था | हो सकता है कि यह सच हो | याद रखिए, उन्होंने केवल विचार किया था | उन्होंने इस बारे में किसी तरह की कार्यवाही शुरू नहीं की थी | फिर वे कैसे विश्वासपूर्वक यह बयान दे सकते हैं कि यह काम नहीं करेगा ?

दूसरा बयान – “आप जानते हैं कि विक्टर भी इसमें असफल रहा था |” मुझ पर विश्वास कीजिए, इस तरह के कथन केवल अफवाह मात्र होते हैं | कौन है ये विक्टर ? उस परियोजना में सफल होने के लिए उसकी भावनाएँ तथा गुण क्या थे ? उसने किस विधि का पालन किया ? वह कैसे विफल हुआ तथा क्यों विफल रहा ?..... ये सब कोई नहीं जानता | वहाँ कई अनुत्तरित प्रश्न होंगे |

तीसरा बयान - आप जानते हैं कि उस फलाना प्रभावशाली व्यक्ति ने भी इसे करने की कोशिश की, पर वह भी असफल रहा |”..... आम आदमी के बीच एक सामान्य सोच होती है कि एक उच्च सामाजिक अथवा राजनीतिक प्रभाव ही हमारे सपनों को पूरा करने में हमारी मदद कर सकता है | मैं उन कारकों की महत्वता से इंकार नहीं करता हूँ जो हमारे सपनों को वास्तविकता में बदलते हैं | किंतु यह सुनिश्चित करें कि यह केवल एक ही कारक नहीं है जो आपकी सफलता का फैसला करता है |

हमारे सामाजिक या राजनितिक प्रभाव ही सफलता सुनिश्चित करेंगे, ये पक्का नहीं है, किंतु वही प्रभाव निश्चित रूप से सफल लोगों का अनुसरण अवश्य करेंगी।

आम तौर पर हम केवल सफल लोगों का लाभ ही देखते हैं | वास्तव में, वे भी अपने जीवन में दिन – प्रतिदिन चुनौतियों का सामना करते हैं | उन्होंने शायद जीवन में सफलता की तुलना अधिक निराशा का सामना किया होगा |

बात यह है कि प्रभावशाली व्यक्तियों के बीच असफलता की संभावनाएँ कम नहीं हैं क्योंकि उनकी अधिकांश कार्यान्वयन योजनाएँ एक दूसरे से जुड़े तथा एक दूसरे पर निर्भर हैं | किसी भी ओर से देरी या रूकावट उन्हें प्रतिकूल रूप से प्रभावित करते हैं |

कुछ शुरू करने के लिए, हमें उन नकारात्मक प्रभावों से छुटकारा पाने की आवश्यकता है जो हमें हमारे प्रयासों से वापस ले सकते हैं | हमारे जीवन में अधिकतर नकारात्मक प्रभाव केंकंडों के समान होते हैं, जब हम उनके सहयोग से बचने की कोशिश करते हैं तब वे हमें नीचे की ओर खींचते हैं |

किसी भी प्रयास के बिना कुछ भी बनाया नहीं जा सकता है | सफलता भी एक अपवाद नहीं है | दर्द सदा एक संबद्ध कारक है | हमारी इच्छाएँ हमें लोगों से या घटनाओं से अलग करने के लिए ज़ोर देती रहेंगी | जैसे रात के खाने की पार्टियों, अवकाश यात्राएँ, दूरदर्शन के सामने देर तक बैठने के लगाव, नींद के आठ घंटे तथा और भी बहुत कुछ | लेकिन अलगाव समय की आवश्यकता है |

नाभि गर्भनाल से अलग हुए बिना लंबे समय तक जी पाना कठिन है।

खुद पर विश्वास करें क्योंकि आप ही अपने उत्तम न्यायाधीश बन सकते हैं | आप ही हो जो अपने सपनों की गहराई की जानकारी रखते हैं, और अपनी क्षमता तथा अक्षमता के ज्ञान से अवगत रहते हैं |

जानकारी की कमी या गलत सूचना भी लोगों को कुछ आरंभ करने से रोकती है | लोग गलत सूचना या अपूर्ण जानकारी भी बिना डिझाइन के दे देते हैं | अब यह भी एक अन्य मनौवैज्ञानिक समस्या है | औसत लोगों को अपनी ज्ञानता की जानकारी का आभास दूसरों को होना पसंद नहीं आता है | वे अपने स्तर को मुखर करने की सबसे अच्छी कोशिश करते हैं | मैं कई कार्यरत प्रबंधकों को जानता हूँ जो अपनी ज्ञानता के खुलासे के भय के कारण किसी भी विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमों से बचने का प्रयास करते हैं |

आमतौर पर, औसत लोग उपलब्ध जानकारी का सटीक विश्लेषण नहीं करते हैं | लोग केवल उपलब्ध जानकारी के आधार पर निर्णय ले लेते हैं |

मेरे नौसेनिक करियर के दौरान, वहाँ परिवार के आवास स्थान की बहुत कमी थी | परिवार के घर का आवंटन वरिष्ठता के आधार पर किया जाता था | नव विवाहित नौसैनिक नाविकों के लिए सरकारी आवास प्राप्त करना कठिन था |

उस समय, मेरी नई – नई शादी हुई थी तथा मेरी पत्नी जैजो, एक आंतरायिक आंगतुक थी क्योंकि तब उनकी नौकरी केरल में थी |

मैं उनके हर यात्रा पर नए आवास की खोज करता था | मैंने कभी भी उनके लिए आवास का पता लगाने के लिए किसी भी एजेंसी का समर्थन नहीं लिया | मैं स्वयं विशाखापट्टनम में पास की सड़कों पर जाता था तथा कुछ छोटे दुकानदारों तथा घरों में पूछता था कि उस क्षेत्र में कोई भी घर खाली है या नहीं |

उनका सीधा जवाब होता था नहीं | उनकी राय को अनदेखा करते हुए, मैं अपनी खोज जारी रखता था तथा मेरी खोज मुझे कभी निराश नहीं करती थी | उसी सड़क पर कम से कम चार से पाँच घर खाली होते थे | वे जगह भी उसी जगह के करीब थे जहाँ से मुझे नकारात्मक जवाब मिले थे |

हर बार जब मुझे नकारात्मक जवाब मिलते थे, तब मेरी अंतरात्मा मुझसे कुछ सवाल करती थी |

क्या यह जवाब एक विश्वसनीय स्रोत से है जो उस क्षेत्र में खाली पड़े स्थान की अद्यतन सूची रखता है ? वास्तव में नहीं |

क्या जिस व्यक्ति ने नकारात्मक जवाब दिया था, वह किसी संघठन से संबंधित है, जो सड़क की सुरक्षा तथा अधिभोग के लिए ज़िम्मेदार हैं ? नहीं |

लोग आपको जगह की उपलब्धता के विषय में क्यों बताएँगे यदि किरायेदारों तथा मालिकों दोनों से रेफरल कमीशन प्राप्त करने का एक प्रावधान है जो उनके द्वारा संसाधित किया जाता है | वे नहीं बताएँगे |

इस पर कार्य करने से पहले लोगों के विचारों का विश्लेषण करना चाहिए | अन्यों के गलत इरादों के प्रभाव से हमारे कार्य रुकने नहीं चाहिए |

मैंने कई लोगों को देखा है जो कुछ भी शुरू करने से पहले उत्तम समय की प्रतीक्षा करते हैं। मैं भी मौसम के मामले में सहमत हूँ। किंतु बहुत अधिक इंतज़ार हमारे उत्साह को कम कर देता है तथा हमारे विचारों को छोड़ने के लिए प्रेरित करता है।

विचार अण्डों की तरह होते हैं। वे एक निश्चित अवधि के बाद सड़ जाते हैं।

असम्बद्ध विचार स्थिर पानी से भिन्न नहीं होते हैं। वे लंबे समय तक रहने से दूषित हो जाते हैं। कार्य करने से संकोच न करें क्योंकि परिवर्तन क्रियाओं के माध्यम से संभव होता है।

.....

४. असफलता का डर

बेशक, हमारे सपने, विश्वास, और क्रियाएँ हमारे जीवन को सामान्यता से महानता में बदल सकती हैं। लेकिन कार्यवाही शुरू करने का हमारा प्रयास कई अन्य नाजुक किंतु गंभीर कारकों से प्रभावित हो सकता है, जैसे विफलता के भय, जिम्मेदारियों को लेने के लिए अनि�च्छुकता आदि।

अति महत्वाकांक्षी, किंतु औसत लोग जो सफलता की योजनाओं के साथ, अपने सपनों को पूरा किए बिना ही जीते - मरते हैं। उन्होंने अवसरों तथा संभावनाओं की इस सुंदर दुनिया में एक कदम भी आगे बढ़ाए बिना छोड़ दिया। उन्होंने दुनिया में सफलता के विषय में एक अपारदर्शी संदेश छोड़ दिया है। उनकी सामान्यता ने कई लोगों को कार्य के बजाय भाग्य पर विश्वास करना सिखाया है।

वे अपने सपनों को पूरा क्यों नहीं कर पाए? क्यों उनके सपने अंत तक भी सपने ही बने रहे?.....

वे केवल सपने देख रहे थे, बिना कार्यों के सपने। अपने सपने को पूरा करने के लिए उन्होंने कुछ नया नहीं किया था। कुछ नवाचार करने की बजाय वे चीज़ों को दोहराने में विश्वास करते थे। कई लोग अपने जीवन में किसी भी प्रकार का बदलाव नहीं ला पाए। वे हर बार वही कार्य करते थे तथा उम्मीद करते थे कि परिणाम कल के मुकाबले भिन्न - भिन्न आएँ।

वे विश्वास के बिना सपने देखते थे।

वे कार्यों के बिना परिवर्तनों की प्रतीक्षा कर रहे थे।

वे बुवाई के बिना उम्मीदें करते थे।

उन्होंने बिना प्रयासों के उम्मीदों की आदत का पोषण किया। उन्होंने होनी, भाग्य तथा चमत्कारों में विश्वास किया। वे कार्यवाही करने की बजाय उनकी निष्क्रियता के कारणों को खोजने के लिए प्रेरित हुए। उन्होंने अपने असफल प्रयासों को सही ठहराने की कोशिश की तथा आखिरकार स्वयं की हार के लिए आत्मसमर्पण किया और इस तरह विफलता उनका अनुभव बन गई। यह उन्हें निराशाओं, मानसिक पीड़ा, हताशा तथा जीवन को सामान्य से कमजोर और सबसे खराब स्थानांतरित करती है। विफलताओं का अपना दोहराया अनुभव उनकी वास्तविकता बन गया और अंत में, वे संभावनाओं की बजाय प्रतिकूल परिस्थितियों के प्रचारक बन गए। सपनों के साथ, कुछ अन्य अपनी उपलब्धियों में विश्वास करते थे तथा इसके लिए भी कार्य करने को तैयार थे।

तो वे विफल कैसे हो गए ? वे विफलता के डर के शिकार थे | विफलता के भय ने उन्हें गुलामी में जारी रखने के लिए मजबूर कर दिया | ये उन्हें हर प्रयासों से प्रतिबंधित अथवा रोक देते थे | वे सदा प्रतिकूलता तथा विफलता से डरते थे |

विफलता का डर लोगों को कुछ नई शुरूआत करने से पीछे हटाते हैं | यह प्रत्येक आगे बढ़ने वाले कार्य को प्रतिबंधित या सीमित कर देते हैं | यह लोगों को सफलता के सपने देखने वालों की तुलना में विफलताओं की मेजबानी कराता है |

विफलताओं का भय अपने ऊष्मायन चरण पर अपने सपनों को समाप्त कर देता है | यह हमें असफलता के असत्य और एक डरावने आकृति की याद दिलाता है | यह नुकसान के प्रभाव को अतिशयोक्ति करता है |

विफलता के भय ने कई लोगों को सपनों के बिना जीना सीखा दिया है | उन्होंने भागीदारी की बजाय बदमाशी सीखी तथा हिस्सेदारी की बजाय स्वयं अलगाव का अभ्यास किया | उन्होंने सफलता पर विफलता की कल्पना की |

उन्हें विफलता के अन्य पहलू के विषय में बताने के लिए कोई नहीं था | उन्होंने अपने जीवन की हर घटना को अपने भाग्य का एक हिस्सा माना | अपने स्वयं के या दूसरों के जीवन में बिना कुछ जोड़े उन्होंने अपनी यात्रा को समाप्त कर दिया |

लोगों के बीच भय होना आम बात है तथा कुछ हद तक, यह आवश्यक भी है | सफलता प्रेमी तथा आम व्यक्ति के बीच यह मुख्य अंतर होता है कि जहाँ प्रथम श्रेणी के लोग भय से काम करते हैं, वहाँ अन्य लोग डर के कारण वह काम रोक देते हैं |

सफलता प्राप्त करने वालों के लिए, असफलता का भय उन्हें सही निर्णय लेने के लिए सतर्क कर देता है, किंतु अन्य लोगों के लिए आगे के प्रयासों को रोकने के लिए एक संकेत देता है |

जिन युवाओं से मैं बातचीत करता हूँ, उनमें से अधिकांश अपनी स्वयं की दुनिया बनाने में रुचि रखते हैं | उनमें से अधिकतर लोगों के पास नवीन विचार भी हैं | यह और कुछ भी नहीं है, किंतु असफलता का भय है, जो उन्हें कुछ भी शुरू करने से रोक देता है | उनकी अधिकांश चिंताएँ लगभग आम हैं |

लोगों को कई चिंताएँ होती हैं |

“अगर मैं असफल हुआ तो क्या होगा ?” वास्तव में, अनुभव के लाभ के अलावा कुछ नहीं होता | अगर मैं असफल हुआ तो दूसरे क्या सोचेंगे ? यह सच है कि दूसरे लोग

आपके बारे में बात कर सकते हैं, जब तक कि उन्हें चर्चा के लिए कोई और दिलचस्प विषय न मिल जाए | उनकी चिंता केवल अगली घटना तक ही होती है |

अगर मैं विफल रहा तो दूसरे मुझे मूर्ख समझ सकते हैं तथा वे मेरा मज़ाक भी उड़ा सकते हैं | अन्यथा क्या यह भी आश्वस्त करना संभव है कि अन्य लोग कुछ अलग नहीं सोच रहे हैं तथा अपने मन में हमारा उपहास नहीं कर रहे हैं ?

अधिकांश आम लोगों में उनके नियोक्ता, संगठन, वरिष्ठ अधिकारियों, मित्रों तथा यहाँ तक कि जीवन साथी के विषय में दो से अधिक राय होती हैं | यदि किसी तीसरे पक्ष ने उपरोक्त लोगों के विषय में अकेले में उत्साहजनकता के माध्यम से कुछ पूछा तो उनकी राय उनके नियमित रूप से अलग होती है |

एक को दूसरे के विषय में निराशावादी नहीं होना चाहिए | आम व्यक्ति अन्यों के विषय में उचित वक्तव्य देता है | अधिकांश लोगों की राय प्रकृति के मौसम की तरह होते हैं तथा लोग अक्सर अपनी राय बदलते रहते हैं | उनके असंगत राय का हमारे सपनों के साथ कोई लेना – देना नहीं होता है |

एक ही समय में हर किसी को संतुष्ट करना संभव नहीं है तथा यदि हम ऐसा करने का प्रयास करते हैं, तो हम निश्चित रूप से अपने लक्ष्यों तक नहीं पहुँच पाएँगे | कइयों को हमारे सपनों को नियंत्रण करने की अनुमति केवल प्रतिकूल प्रभाव लाती है | सफलता की यात्रा लगभग एक ‘क्रॉस कंट्री दौड़’ जैसी है | कई इन्हें एकसाथ शुरू करते हैं, कुछ शुरूआत में ही छोड़ सकते हैं,

कुछ बीच में ही छोड़ देते हैं तथा कुछ ही इसे सफलतापूर्वक पूरा कर पाते हैं | असफलता का भय हमें हर नवीन प्रयास करने से रोकता है | यह हमें प्रयास करने से पहले ही इसे त्यागने के लिए मजबूर कर देते हैं | यह सामान्यता के अलावा कुछ उत्पन्न नहीं करता है | यह भय हमें जीवन में हर संभव समृद्धि करने से इनकार करता है | यह हमें किसी काम के लायक नहीं छोड़ता है |

विफलता के डर से हम कैसे स्वयं को प्रबंधित तथा दूर कर पाएँगे ?

..... यह केवल चार कारकों से संभव है। अनुसंधान (रिसर्च), समीक्षा (रिव्यु), अस्वीकार (रिजेक्ट), तथा सम्मान (रिगार्ड) |

<u>Research</u>	<u>Review</u>
<u>Reject</u>	<u>Regard</u>

कुछ योजना बनाते समय पर्याप्त शोध कीजिए | आरंभ किए गए प्रत्येक शोध हमें कार्यों से परिचित कराता है। यह हमें तथ्यों को गहराई से समझने में मदद करता है; यह हमारी सफलता की यात्रा में छिपी खाइयों को प्रकाशित करता है।

अवास्तविक उम्मीद तथा दृष्टिकोण लोगों को उनके प्रयासों में असफल बना देते हैं। जितना अधिक हम शोध करते हैं, उतना ही अधिक हमारा दृष्टिकोण यथार्थवादी बन जाता है। जितना अधिक यथार्थवादी हम दृष्टिकोण में बन जाते हैं, उतना ही हम स्वयं को कठिनाइयों का सामना करने के लिए तैयार कर लेते हैं, जिससे हमारी विफलताओं की संभावनाएँ सीमित हो जाती हैं।

हमें जैसा बाहर से दिखता है, वैसा अक्सर होता नहीं है। चूँकि आधुनिक व्यवसाय तथा रिश्तों को अत्यधिक प्रदर्शन में ही विश्वास है, इसलिए हमें अपने व्यापार का पर्याप्त ज्ञान होना आवश्यक होता है। हमें पहली बार विफलता की हर संभावना से बचना चाहिए क्योंकि अधिकांश आम आदमी दूसरी बार विफलता का स्वाद चखना नहीं चाहेगा।

यह शोध हमें संभावनाओं के कई आयामों को देखने में मदद करेगा। यह हमारे मस्तिष्क को प्रतिकूल परिस्थितियों में संभावनाओं को फिर से बदलने के लिए तैयार करेगा। शोधों को यह मौका न दें कि, वे आपमें नकारात्मकता अथवा उत्साह की कमी भर दें, क्योंकि जो कठिनाइयाँ आप अपने शोधों के दौरान देख रहे हैं, वे वास्तविकता ही हैं।

वास्तविकताओं से अवगत होने से, लोगों को उनकी अपेक्षाओं के संदर्भ में यथार्थवादी दृष्टिकोण प्राप्त करने में मदद मिलेगी ताकि छोटी-सी असफलता भी उन्हें आगे के प्रयास करने से न रोक सके।

कार्य निष्पादन से पहले कई बार कार्य प्रक्रिया की समीक्षा करें। किसी कार्य के लिए एक व्यवस्थित दृष्टिकोण, उसकी योजना तथा कार्यान्वयन के दौरान विफलता के भय को कम कर सकती है।

व्यवस्था ही प्रक्रिया को स्वचालित करेगी।

एक समीक्षा प्रक्रिया लोगों को हर प्रक्रिया से परिचित होने में सक्षम बनाती है तथा परिचितता विफलता के डर को कम कर सकती है और अनुकूलनशीलता में वृद्धि ला सकती है। वह समीक्षा प्रक्रिया लोगों के बीच आत्मविश्वास तथा परिचय बढ़ाती है।

उन प्रभावों को अस्वीकार करना सीखें जो हमें नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं। ये लोग, मीडिया या वारदात हो सकते हैं। हमारे सामान्य जीवन में, हम मुख्यतः दो प्रकार के लोगों के संपर्क में आ सकते हैं। उनके प्रभाव हमारे प्रयासों के लिए हानिकारक हो सकते हैं। याद रखिए, दोनों ही उन लोगों के लिए हानिकारक हो सकते हैं, जिन्हें सपनों की तलाश रहती है।

पहली श्रेणी के लोग दूसरों को अपने प्रयासों से हतोत्साहित करने की कोशिश करते हैं, यही सोचकर कि दूसरों को सही निर्णय लेने और अपने जीवन में सफल कदम बनाने के लिए पर्याप्त परिपक्व नहीं हैं। वे जाने – अनजाने में यह मान लेते हैं कि, यह उनकी जिम्मेदारी है कि वे किसी भी संभावित असफलता से दूसरों का मार्गदर्शन करें तथा उन्हें संरक्षित करें। लोगों को 'जोखिम भरे प्रयास' से प्रतिबंधित करने के लिए, वे दूसरों की विफलता की कहानियों को उजागर करते हैं, उनका प्रचार करते हैं तथा उनके प्रयासों के बीच नकारात्मकता को शामिल करते हैं। उनके प्रभाव के कारण, हम प्रयासों के बीच सफलता का सपना देखने की बजाय विफलता का अधिक भय देखते हैं।

कुछ भारतीय माता-पिता इसी श्रेणी के होते हैं। यूरोपीय माता-पिता के विपरीत, वे अपने बच्चे के जीवन के हर पहलू में हस्तक्षेप करते हैं। वे अपने संतानों को अपने स्वार्थी उद्देश्यों के बंदी बनाते हैं। वे अपने बच्चों को अपने स्वयं के अध्ययन, करियर, जीवन साथी, जीवित रहने की जगह, चुनने की इजाजत नहीं देते हैं।

परोक्ष रूप से, वे दूसरों को अपने जीवन में कुछ भी स्वतंत्र रूप से करने में असमर्थ बनाते हैं। वे सभी अवसरों के परीक्षणों से इनकार करते हैं। वे दूसरों को एक अनुकूल समय का इंतजार करने की सलाह देते हैं, जबकि वह समय कभी नहीं आता। वे लोगों तथा परिस्थितियों को कोसने की आदत डालते हैं, और दूसरों को निंदा करने वाले तथा शिकायतकर्ता बना देते हैं। ऐसे माता-पिता तथा शुभचिंतक अपने बच्चों को कुछ नहीं, केवल एक मौजूदा प्रणाली के मूक अनुयायी बनाते हैं।

औसत लोग दूसरों को यह सिखाने का प्रयास करते हैं कि उनके जीवन में क्या काम नहीं कर रहा था, न कि क्या काम किया।

कुछ साधारण व्यक्तियों के लिए, अन्य लोगों की सफलता को पचाना बहुत कठिन होता है। यह उनकी जिंदगी को दुखी कर देती है तथा उन्हें रातों को नींद नहीं आती है। उन्हें अपने जीवन में हर जगह बाधा भी दिखती है, तदनुसार वे दूसरों को भी वही सीख देते हैं। वे दूसरों को हर संभव प्रयास से चेतावनी देते हैं, जिसका कारण उनका अन्य लोगों के प्रति चिंता नहीं अपितु उनकी सफलता की असहिष्णुता होती है।

भले ही वे अपने तर्कों पर संदेह करते हों, किंतु फिर भी वे ऐसा ही करते हैं। वे केवल अतिरिंजित रूप से किसी की विफलता की कहानी को सुनाने के लिए ही अपना समय खर्च करते हैं। उनसे विराग के अलावा और किसी भी प्रकार के प्रोत्साहन की उम्मीद करना बेकार होता है।

यहाँ तक कि, वे हमसे भी ज्यादा, हमारी हर असफलता को याद रखते हैं तथा हमें अपने हर नए प्रयास से पहले हमारी विफलता की याद दिलाने में भी संकोच नहीं करते हैं। वे सार्वजनिक रूप से हमारे शुभचिंतक बनने का अभिनय करते हैं तथा निजी तौर पर हमारे पीठ में छुरा घोंपने से भी पीछे नहीं हठते हैं। वे समान खयालात वाले लोगों के साथ मिलकर मेहनती लोगों को एकल करके उनकी खिल्ली उड़ाते हैं। वे केवल विफलता का भय दिखाते हैं, किंतु हिम्मत नहीं बाँटते हैं।

असफलता के डर से छुटकारा पाने के लिए, अपनी आत्म प्रशंसा करना तथा अपने अतीत में प्राप्त सभी सफलताओं को याद रखना अत्यावश्यक होता है। अपने तथा दूसरों के लिए 'कृतज्ञता के रवैये' का अभ्यास करना चाहिए। अपनी हानि के अलावा बाकि सभी पिछली जीत को याद रखना चाहिए तथा उनकी समीक्षा करने हेतु समय निकालना चाहिए।

यह आपकी उच्च विद्यालय की उपलब्धियों या साहित्यिक कार्य, आपके सर्वश्रेष्ठ सार्वजनिक भाषण, एनसीसी पदक, प्रशंसा का प्रमाण पत्र आदि हो सकते हैं। मुझे यकीन है कि, वे पुरस्कार आपके आत्मसम्मान को बढ़ावा दे सकते हैं तथा आपके अवचेतन मन को यह विश्वास दिलाकर, मन में पुनः यह घोषित कर सकते हैं कि आपकी जीत संभव है।

हमारे जीवन में जो कुछ हम चाहते हैं, उसे प्राप्त करने के लिए, हमें जड़त्व की स्थिति से छुटकारा पाने की आवश्यकता होती है। असफलता का भय हमें जड़त्व की स्थिति को जारी रखने के लिए प्रेरित कर सकता है क्योंकि कम से कम कुछ समय के लिए जड़त्व की स्थिति को जारी रखना अपेक्षाकृत आरामदायक तथा सरल होता है। लेकिन कई लोग इस बात से अनजान हैं कि

जीवन में अशांति परिवर्तनों का संकेत है और परिवर्तन के बिना सफलता अकल्पनीय होती है।

विफलता के भय से छुटकारा पाने का सबसे अच्छा तरीका कार्य करना है। जीवन में चुनौतियों तथा बाधाओं का सामना करने के लिए हमें निडर बनना चाहिए। कब तक हम प्रतिकूल परिस्थितियों से डरते रहेंगे? कब तक हम बाधाओं से छिप सकते हैं?

बाधाएँ उन मतलबी कुत्तों से अलग नहीं होती हैं जो अपने शिकार पर हिंसक आक्रमण करने का अभ्यास करते हैं। वे तब तक पीछा करते हैं, जब तक पीड़ित की प्रतिक्रिया नहीं दिखती। जितनी ही जल्दी वे अपनी प्रतिक्रिया दिखाते हैं, उतनी ही जल्दी वे बच पाते हैं।

प्रतिकूल परिस्थितियों से निपटने का सबसे अच्छा तरीका उनसे डरने की बजाय उनका सामना करना है, तथा बाधाओं से निपटने का सबसे अच्छा निपुण तरीका उन पर कार्य करना है न कि उन्हें बढ़ने के लिए छोड़ देना है।

रिसाव को रोकने के लिए हमें छेद को बंद करने की आवश्यकता होती है।

जब आवश्यकता अनिवार्य हो जाती है, डर गायब हो जाता है। पाठकों ने गौर किया होगा कि, जब लोगों के प्रिय लोग किसी असली मुसीबत में होते हैं, तब वे लोग उन्हें बचाने के लिए किसी भी हद तक चले जाते हैं। उनके लिए, तूफानी समुद्र या एक अंधेरा जंगल कभी भी एक बाधा नहीं बनता।

हमारे मन में एक आग लगी होगी तथा वह आग और कुछ नहीं बल्कि हमारी इच्छाएँ हैं। हमारी इच्छाओं को मजबूत बनाने के लिए, हमें गलत संगति से अलग होना होगा तथा व्यर्थ इंतजार करना बंद कर देना होगा। हमें अपने कार्य तथा सफलता को हानि पहुँचाने वाली हर चीज़ से छूटने की आवश्यकता होती है। कुछ विघटन अस्थायी नुकसान ला सकते हैं किंतु वे अस्थायी नुकसान हमें आगे चलकर किसी भी नुकसान से बचा सकते हैं।

असफलता का डर केवल एक प्रारंभिक भावना है तथा जो कार्यवाही और निष्क्रियता के बीच की उस पतली रेखा को पार करते हैं वही सच्चे विजेता होते हैं। नदी की तुलना नदी के किनारे ही पानी की शीतलता अधिक महसूस होती है। इसमें समा जाएँ, वह भी एक अलग अनुभव होगा।

इस ब्रह्मांड में सब कुछ गिरावट और विलुप्त होने के अधीन है | कुछ भी स्थायी नहीं हो सकता है | इसके अस्तित्व में हर चीज़ की अखंडता खो जाती है | बाधाओं और प्रतिकूल परिस्थितियों का मामला भी अलग नहीं है | बाधाएँ उतनी भयानक नहीं होती हैं जितना हमें लगता है | हमारी सोच ही केवल इन्हें बुरा बनाती हैं | हम उनसे जितना डरेंगे, वे हमपे उतना ही शासन करेंगे | जितना अधिक वे हमपे शासन करते हैं, उतना ही हम विफलता के भय के बंदी बन जाते हैं |

दीवारें दो उद्देश्यों से बनाई जाती है, अंदर की कीमती संपत्ति की रक्षा करने या बाहर जाने से उन्हें प्रतिबंधित करने | कुछ अवरोध भी भिन्न नहीं होते हैं | आगे चलके, वे हमें लाभ दे सकते हैं |

बाधाएँ साँपों की तरह होते हैं, उनमें से अधिकतर जहरीले तथा खतरनाक प्रतीत होते हैं लेकिन वास्तव में उनमें से अधिकांश जहरीले नहीं होते, यह और कुछ नहीं, केवल हमारा डर है जो उन्हें एक खतरनाक प्राणी का प्रभामंडल देता है।

बाधाओं के मामले भी अलग नहीं होते हैं। अधिकांश बाधाएँ न्यूनतम प्रयासों से हटाई या दूर की जा सकती है | कई उनसे संपर्क में आने पर भी बहुत डरते हैं | अधिकांश बाधाएँ हमारे विचारों तथा गलत धारणाओं से स्वयं निर्मित तथा अतिरंजित होते हैं |

आम तौर पर, आम लोगों की यह सोच है कि, वे दोस्तों की तुलना में अधिक शत्रुओं से; अवसरों से अधिक बाधाओं से तथा प्यार से अधिक नफरत से घिरे हैं | लेकिन सच्चाई उनकी सोच से अलग है | यही कारण है कि मानव जाति अभी भी इस ब्रह्मांड में मौजूद है |

यह स्पष्ट है कि यहाँ हर कोई एक दूसरे को नष्ट करने और नफरत करने के पक्ष में नहीं है | दुनिया केवल बाधा और बाधाओं से नहीं भरी है, बल्कि संभावनाओं और अवसरों से भी भरी है |

यदि केवल बाधाएँ प्रचलित होती, तो आविष्कार कभी संभव नहीं हो पाते | यदि नफरत ही आम बात होती, तो यहाँ पर 'CRY' जैसे संगठनों का होना असंभव होता |

विश्वास कीजिए, बाधाएँ कभी स्थायी नहीं होती और ना ही हो सकती हैं | आकर्षण सिद्धांतों के कानून के अनुसार, 'जैसे विचार हम छोड़ते हैं, वैसा हम प्राप्त करते हैं' | जो मनोदशा या भावनाओं का अनुभव हम करते हैं, वही हमारे नकारात्मक या सकारात्मक कंपन भेजने का कारण बनता है | आकर्षण का कानून अधिकतर हमारे कंपन से मेल खाता है, और हमें वही कंपन वापस देता है, चाहे वह सकारात्मक हो या नकारात्मक |

जब हम अवरोधों और बाधाओं के नकारात्मक प्रभावों से ज्यादा डर जाते हैं, तो हम इससे बाहर आने का रास्ता खोजने की तुलना में आत्मसमर्पण करने के और अधिक कारण खोजने लगते हैं। जब हम जाने – अनजाने में किसी चीज़ को आत्मसमर्पण कर देते हैं, तब हम उस का अधिकार मान लेते हैं।

प्राधिकरण स्वीकार करना हमें नेतृत्व की अपेक्षा उसका अनुसरण करना सिखाता है।

बाधाओं तथा विफलताओं के विषय में अत्यधिक चिंता करने से हममें, असुरक्षा की भावना और विफलता का डर पैदा हो सकता है।

आइए हम असफलता के डर को खुद पर हावी न होने दें। इससे दूर भागने की बजाय इसका सामना करने की हिम्मत रखनी चाहिए। जब असफलता का भय हावी होता है, तो अपने आप से पूछिए, "इससे ज्यादा क्या होगा? या तो मैं जीतूँगा या हारूँगा।"

वास्तव में, विजेता तथा हारने वाला दोनों ही लाभान्वित होते हैं। जब विजेताओं को लाभ तथा जीतने का अनुभव मिलता है, तब हारनेवाले उन तरीकों के विषय में अधिक सीखते हैं जो काम नहीं करते। कुछ विधियाँ कुछ विशेष स्थितियों में काम नहीं करते हैं, इसका मतलब यह नहीं कि वे तरीके कभी काम ही न आएँ।

हारे हुए लोग विजेताओं की तुलना में अधिक सबक सीखते हैं, क्योंकि सामान्य रूप से विजेताओं की सफलता की उपलब्धि पर वे अपनी कड़ी मेहनत को भूल जाते हैं तथा उन मामूली बातों को भी भूल जाते हैं जो उन्होंने प्रयासों के दौरान सीखे थे, किंतु हारे हुए लोग उन सब पाठों को ध्यान में रखते हैं। उन पाठों से उन्हें बाद में जीतने में मदद मिलती है। ऐसे लोगों के लिए, विफलता कुछ नहीं होता। उनके लिए विफलता केवल सफलता में देरी है।

महत्वाकांक्षी लोगों के लिए, जीवन में कोई असफलता नहीं है, सफलता में विफलता केवल देरी है।

सफलता कभी दुर्घटना या सुविधा क्षेत्र के उत्पाद नहीं होते हैं, यह हमेशा क्रियाओं से आती है, बिना क्रियाओं से नहीं। सफलता हमेशा निषुर फैसलों तथा प्रतिबद्ध कृत्यों का एक दृश्यमान संकेत होता है।

असफलता के डर को जीतने में विफल रहने वाले किसी व्यक्ति पर सफलता की बौछार नहीं होगी।

भय एक नकारात्मक भावना है। नकारात्मक भावना नकारात्मक कंपन को भेजती है। आकर्षण का कानून हमें कंपन की पेशकश का जवाब देगा तथा ऐसा करते हुए यह कंपन से मिलान करने का प्रयास भी करेगा। जितना अधिक हम डरते हैं उतना हम नकारात्मकता और असफलता को जोड़ते हैं। यह हमें जीवन की संभावनाओं को देखने के लिए अंधा कर देता है तथा असफलता का भय आश्रय के दाताओं की तुलना में अधिक आश्रय की तलाश करता है। काल्पनिक संरक्षण तथा कल्याण की अस्थायी भावना के खोल से बाहर आना अत्यावश्यक है।

चुनौतियों का सामना करें, ताकि हम परिचित हो जाएँ। घनिष्ठ परिचय बाधाओं को कम करता है तथा सफलता की कई संभावनाओं को खोल देता है। विफलता के भय को हमारे प्रयासों में रूकावट न बनने दें। इस तरह से रोकने तथा छोड़ने का प्रयास करना, साधारण व्यक्तियों के लक्षण हैं।

कार्यवाही में विलंबता परिणामों को अस्वीकृत या विलंबित कर देता है। देरी से निकलने वाले परिणामों का प्रभाव भी हमेशा उचित समय से अलग ही होता है। तो चलिए, अपने प्रयासों में विफलता के डर के कारण विलंब न होने दें ताकि अंतिम परिणाम निराशाजनक न हों।

.....

५. ज़िम्मेदार बनिए - एक अंतर बनाइए |

सफलता, हालांकि यह सपने, विश्वासों, कार्यों तथा विफलता के डर से मुक्ति की ही एक उपज है, ऐसे कई अन्य पहलू हैं जो हमारी प्रगति को भी प्रभावित कर सकते हैं। यदि आप मुझसे पूछें कि, कौन - सी सबसे बेहतरिन गुणवत्ता एक सफलता साधक के पास होनी चाहिए, निस्संदेह, मैं कहूँगा कि - "उन्हें अपने जीवन में होने वाली हर चीज की ज़िम्मेदारी लेनी चाहिए।"

ज़िम्मेदारी लेना तीन चीजें दर्शाता है - अखंडता, स्पष्टता तथा हिम्मत।

हम अपने आस-पास के उन लोगों को देख सकते हैं, जो दूसरों को अपने मध्यस्थ स्थिति के लिए दोषी मानते हैं। उनका दृढ़ विश्वास होता है कि दूसरे ही उनकी विफलता का कारण थे। वे अपने स्वयं के रवैये को छोड़कर अपने माता-पिता, स्कूलों, शिक्षकों, सामाजिक व्यवस्था, राजनीतिक जलवायु, स्थानीय प्रशासन, मौसम की स्थिति, मंदी, धर्म आदि को दोष देते हैं।

वे खुद को छोड़कर सबसे सवाल करते हैं। दोष देना तथा शिकायत करना उनके सामान्य लक्षण हैं। वे हमेशा अपनी ज़िम्मेदारियों से छुटकारा पाने का प्रयास करते हैं तथा दूसरों पर दोष डालने का प्रयास करते हैं। वे अपना काम नहीं कर पाते हैं, किंतु उसी समय वे दूसरों से उसी कार्य की अपेक्षा करते हैं। वे अपेक्षा करते हैं कि दूसरों को उनके साथ हर पहलू में उचित होना चाहिए। वे अपने कर्तव्यों से अधिक अपने विशेषाधिकारों के विषय में अधिक सतर्क रहते हैं।

वे अपनी भूमिका को पूरा किए बिना, दूसरों से 'आभार व्यक्त करने' की अपेक्षा करते हैं। वे कभी अपनी भूल नहीं मानते हैं किंतु दूसरों को हमेशा दोष देते हैं।

उनकी दार्शनिक सोच इससे अलग नहीं है कि - "सफलता मेरी क्षमताओं के कारण है तथा विफलता तुम्हारी अक्षमताओं के कारण।"

लोग अक्सर दूसरों को दोष देते हैं क्योंकि यह सबसे आसान काम है, जो वे कर सकते हैं। यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि, आम तौर पर लोग किसी की अनुपस्थिति में ही उनको दोषी ठहराते हैं, क्योंकि उन्हें उनकी प्रतिक्रिया का डर होता है। ऐसे लोग ही परिस्थितियों को दोष देते हैं, क्योंकि यह प्रतिक्रिया नहीं दिखा सकता।

वास्तव में, हमें अपने जीवन में किसी भी चीज़ के लिए दूसरों को दोष देने का कोई अधिकार नहीं है क्योंकि हमारे जीवन में जो कुछ भी होता है वह हमारे अपने कार्यों या चूक का उत्पाद ही होता है।

कार्य का पालन करने की अपेक्षा शिकायत करना आसान होता है क्योंकि शिकायत करना शून्य या कम प्रयासों की ही मांग करता है। जब तक हम अपनी सामान्यता के लिए दूसरों को दोष देते रहेंगे, तब तक सफलता मिलना असंभव होगा। वास्तव में, दोषीजन तथा शिकायतकर्ता व्यक्ति एक असत्य दुनिया में जी रहे हैं।

आम आदमी प्राकृतिक तौर पर डरपोक होता है। दुर्भाग्यवश, उनमें से अधिकांश लोग अपने स्वयं के भय से अनजान होते हैं। वे सबसे डरते हैं तथा खुद से कुछ भी नहीं कर पाते हैं। वे खुद से अधिक दूसरों पर विश्वास करते हैं।

शिकायतकर्ताओं के एक उल्लेखनीय चीजों में यह भी देखा गया है कि उनमें से अधिकतर लोग गलत व्यक्ति या समूह से ही शिकायत करते हैं, हालांकि वे जानते हैं कि ये व्यक्ति या समूह उनके समाधान के सही स्रोत नहीं हैं।

वे अपने मालिक की शिकायत अपनी जीवन साथी से करते हैं, अपने जीवन साथी के विषय में शराब पीने वाले साथियों से कहते हैं, अपने बार-मित्रों के विषय में कार्यालय के साथियों से कहते हैं तथा अपने कार्यालय के साथियों के विषय में अपने मालिक से कहते हैं। उनकी चर्चा समस्याओं के विषय में अधिक तथा समाधानों के विषय में कम होती है।

मैं उनके भविष्य को आकार देने में उनके माता-पिता, शिक्षकों, नेताओं, धर्मों, सामाजिक व्यवस्थाओं आदि के प्रभावों से इनकार नहीं करता। उन कारकों ने शायद उनके वर्तमान स्थिति को भी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई होगी।

हो सकता है, कि उन्हें गलत इरादों से दूसरों से संपर्क करवाया गया हो तथा दूसरों के द्वारा उनका गलत इस्तेमाल किया गया हो।

हालांकि, हमें हमारे वर्तमान स्थिति के लिए दूसरों को दोष देने का कोई अधिकार नहीं है, क्योंकि हम स्वयं अपने वर्तमान के रचनाकार होते हैं। जिन कड़वे अनुभवों का हम सामना करते हैं, जिस नुकसान से गुज़रते हैं, जो अपमान सहते हैं, जो अकेलापन महसूस करते हैं, तथा जिन अस्वीकृतियों का हम सामना करते हैं, यह सब सरल घटना नहीं है, बल्कि वे हमारे अतीत में किए गए विकल्पों के परिणाम ही हैं। जो भी आज हम अनुभव करते हैं वे घटनाएँ हैं, दुर्घटनाएँ नहीं। यह हमारे द्वारा किए गए कार्यों या फैसलों की श्रृंखला

का परिणाम है, हमारे द्वारा दी जाने वाली अनुमतियाँ अथवा हमारे पूर्व में किए गए विकल्प हैं।

आम आदमी अपनी सफलता का दावा करता है, किंतु उनमें से अधिकांश लोग अपनी असफलता की ज़िम्मेदारी को स्वीकार नहीं करते हैं।

हर एक को सफलता या विफलता, जो वे अपने जीवन में अनुभव करते हैं उसकी ज़िम्मेदारी अवश्य लेनी चाहिए। आम लोग अपनी सफलता का दावा ज़रूर करते हैं, किंतु उनमें से अधिकतर लोग अपनी असफलता की ज़िम्मेदारी को स्वीकार नहीं करते हैं।

लेकिन, हम कितनी देर तक दूसरों को दोष देते रह सकते हैं तथा बिना कोई हल ढूँढ़ें खुद को संतुष्ट कर सकते हैं? हम कितने समय तक सामान्यता को जारी रखने की अनुमति दे सकते हैं? बेशक, हमें इसे समाप्त करने की आवश्यकता है। हमें कुछ बाहरी स्रोत या प्राधिकरण से आने वाले समाधानों का इंतजार करना बंद कर देना चाहिए क्योंकि ऐसा कभी नहीं होने वाला है।

हमारे कार्यों तथा निर्णय लेने की ज़िम्मेदारी उठाने की आदत हमारे जीवन को सार्थक तथा उत्पादक बना सकती है। यह हमें स्वयं-प्राप्ति तथा शोधन के अवसर देगा।

हममें से कितने झुकाव के मूल कारणों का या हमारे जीवन में नकारात्मक परिणामों का विश्लेषण करते हैं? हममें से कितनों को विकल्पों में से 'डोमिनो प्रभाव' के बारे में पता है, जो हमने पहले किया है?

जब सफल व्यक्ति अपनी सफलता या असफलता का एक सौ प्रतिशत ज़िम्मेदारी लेते हैं,



तब साधारण व्यक्ति अपनी विफलताओं के लिए दूसरों को बराबर मात्रा में दोषी करार करने के कारण तलाश करते हैं।

चाहे वह उद्यमशीलता हो या रोजगार, सफलता केवल उन लोगों के द्वार पर ही दस्तक देती है जो अपने कार्यों तथा चूकों की जिम्मेदारी लेते हैं। जिम्मेदारी लेना, वह भी तब जब प्रत्याशित नतीजे नकारात्मक तथा कड़वे होते हैं, यह निस्वार्थता और साहस का संकेत देते हैं। यह व्यक्ति की अखंडता को इंगित करता है।

नेता, जो अपने टीम की विफलता की जिम्मेदारी लेने में संकोच करते हैं, उनके अनुयायियों से अलग नहीं होते हैं, और उनमें से कुछ उनसे भी बदतर होते हैं। जो नेता जिम्मेदारी लेने में संकोच करते हैं, किंतु फिर भी उस पद के विशेषाधिकारों का लाभ उठाते हैं, वे केवल शोषक तथा अहंकरोंमादी होते हैं।

जिम्मेदारी लेना बहुत मायने रखता है यह एक व्यक्ति की साहस और अखंडता को दर्शाता है और उसकी नियत का फैसला करता है। ऐसा न करने से कुछ समय बाद घटनाओं की एक श्रृंखला सी हो जाती है। जिम्मेदारी न लेने से लोगों का साथ निभाना कठिन हो जाता है और इस तरह के दृष्टिकोण लोगों को रूखा बना देते हैं तथा इससे विवादित परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं।

गैर-जिम्मेदारी, यदि एक आदत के रूप में आत्मसात हो, तो वह हमें एक परेशान, दुखी, निराशाजनक, गुस्सेवाला, अतार्किक, निराशाजनक या उद्धृत व्यक्ति में बदल देगा।

जबकि हम अपने जीवन में अच्छे और बुरे कर्मों की जिम्मेदारी लेते हैं, सफलता के लिए मार्ग एवं साधन हमारे लिए अधिक खुले होंगे। सफलता का मार्ग अधिक रोशनी तथा कम अवरोध से स्पष्ट होगा तथा यह हमें हमारे उद्देश्यों पर अधिक ध्यान केंद्रित करवाएगा।

जब हम अपने उद्देश्यों पर अधिक ध्यान देते हैं, तो हम कम अवरोधों को देखते हैं।

कम बाधाएँ हमें अधिक दूर तक ले जाती हैं; और जितना अधिक दूर हम जाते हैं, उतने ही अवसरों की संभावनाओं की हरी चराई बढ़ जाती है।

हम किसी भी स्थिति में दो तरीकों से संपर्क या प्रतिक्रिया कर सकते हैं।

हम या तो दूसरों की प्रतिक्रिया अपने पसंदानुसार होने की अपेक्षा कर सकते हैं या उन्हें वैसे ही स्वीकार कर सकते हैं। दूसरों को वैसे ही स्वीकार करने के लिए, हमें सहिष्णुता के चक्र को बढ़ाने की आवश्यकता होती है, ताकि यह आंतरिक विद्रोह के हमारे चक्र को कम कर सके। जब आंतरिक विद्रोह का चक्र कम हो जाता है, तो जीवन अधिक तनाव-मुक्त हो जाता है, अवसर प्राप्त करने योग्य तथा पुरस्कृत हो जाता है।

औसत लोगों को मुख्य रूप से तीन श्रेणियों में समूहित किया जा सकता है - प्रथम श्रेणी में वे लोग हैं जो अपने कार्यों की जिम्मेदारी को स्वीकार करते हैं तथा यदि आवश्यक हो तो बदलाव स्वीकार करने की इच्छा दिखाते हैं | वे आम तौर पर अपने सपनों को प्राप्त करते हैं तथा जीवन में सफल होते हैं |

गलत संगति इस समुदाय के प्रमुख खतरों में से एक होता है | विषाक्त लोगों के साथ लंबे समय तक सहयोग, अपने सपनों को समाप्त या कम कर सकता है और वे अंत में हार सकते हैं | हालांकि, इस समूह से संबंधित लोग हमेशा सफल होने का प्रयास करते हैं और वे नए अवसरों की तलाश में भी होते हैं, ऐसे लोग खुद को व्यक्ति, संगठन तथा गुणवत्ता के लिए उचित मानते हैं |

दूसरी श्रेणी उन लोगों का समूह है, जो मुख्यतः किस्मत और भाग्य में विश्वास करते हैं | उनमें से अधिकांश लोग यह मानते हैं कि वे घटनाओं तथा परिस्थितियों के शिकार हैं | वे अपने सामान्य जीवन के लिए बाहरी कारकों को हमेशा दोष देते हैं | वे विशेष रूप से उनके संबंधों के संबंध में उनके दृष्टिकोण में अति असंगत होते हैं | वे अपनी असफलता के मूल कारण को नहीं देखते हैं, लेकिन केवल तात्कालिक कारण पर ही ध्यान देते हैं | हालांकि, वे परिवर्तनों के प्रति उत्तरदायी होते हैं तथा निरंतर प्रयास उनके दृष्टिकोण को बदल सकते हैं।

वे संगठन से अधिक, लोगों के लिए उचित होते हैं | उनका निर्णय संगठनात्मक उद्देश्यों से अधिक लोगों के पक्ष में होता है | लंबे समय में, वे मुक्ति की गुणवत्ता के लिए अधिक चुनौतियों को भी सामना कर सकते हैं |

दृष्टिकोण में यह अस्थिरता उनकी सफलता के लिए हानिकारक भी हो सकते हैं | लोगों की तीसरी श्रेणी सबसे कठिन समूह बनाती है | वे जनता में उदार, परोपकारी, ईमानदार तथा प्रतिबद्ध होने का दिखावा करते हैं और निजी तौर में बिल्कुल विपरीत व्यवहार करते हैं | वे उस चीज़ के प्रति कृतज्ञता का कोई रवैया नहीं दिखाते हैं, जिसका लाभ वे जीवन में प्राप्त करते हैं |

वे अपने प्रारंभिक दृष्टिकोण में बहुत शांत और शांत होने का दिखावा करते हैं | लेकिन आगे चलकर, काफी भिन्न व्यवहार करते हैं | वास्तविक स्थिति में, वे बेहद अटल व्यवहार करते हैं तथा उनका जिद्दी स्वभाव दूसरों को निराश कर देता है | वे व्यवस्था प्रणाली को दूषित करते हैं तथा बिना किसी कारण के परिवर्तन का विरोध करते हैं | वे हमेशा चिंतित रहते हैं तथा अपने महत्व को खोने से डरते हैं | वे अपने नुकसान पर पछतावा नहीं करते बल्कि अन्य की विफलता का आनंद लेते हैं | लोगों, संगठन तथा गुणवत्ता के लिए खतरा पैदा करते हैं |

अधिकांश मामलों में, प्रतिक्रिया में मामूली - सा बदलाव, जीवन में अधिक से अधिक बदलाव लाने के लिए पर्याप्त होता है | किंतु बहुत से लोग इससे सहमत नहीं होते या इसके लिए कोई इच्छा ज़ाहिर नहीं करते हैं | उनमें से अधिकतर लोग स्वयं के सही होने का दावा करते हैं |

गैर-जिम्मेदार लोगों के साथ रहने से प्रगति नहीं, केवल सामान्यता मिलती है तथा उनके साथ यात्रा खतरनाक भी हो सकती है | जोखिम के दौरान, वे आगाह किए बिना ही गायब हो जाते हैं तथा कुछ तो आपके विरोधियों के साथ हाथ भी मिला लेते हैं |

गैर-जिम्मेदार व्यक्ति अपने संगठन में सभी प्रकार के नुकसान उत्पन्न करते हैं तथा जो लोग उनके लिए खड़े होते हैं, वे भी अपने सम्मान को निश्चित रूप से खो बैठते हैं | वे आसानी से लोगों और मादक पदार्थों से प्रभावित हो जाते हैं तथा सदा के लिए, अपने लक्ष्यों से अलग करने वाले तत्वों को आत्मसमर्पण कर देते हैं |

जिम्मेदारी लेने की आदत लोगों को जवाबदेह बनाती है तथा जवाबदेही की भावना उन्हें अधिक जिम्मेदार बनाती है | जिम्मेदारी लेने की आदत को बढ़ावा देने के लिए, सभी मामलों में जवाबदेही होने की आवश्यकता को महसूस करना आवश्यक है |

एक जिम्मेदार व्यक्ति जानता है कि इस दुनिया में कुछ भी निः शुल्क नहीं है तथा वे हर वस्तु का सही रूप से मोल करते हैं | वे अपने खुद की अपेक्षा दूसरे प्रकार के अन्य निवेशों का अधिक मोल करते हैं। वे अपने पर किए गए किसी भी निवेश का प्रतिफल देने के लिए प्रतिबद्ध होते हैं | वे अपने नियोक्ता की संपत्ति को स्वयं की तुलना में अधिक सुरक्षित रखते हैं | वे खुद को उन लोगों और संगठनों के लिए अपरिहार्य बनाते हैं, जिनके साथ वे सहयोग करते हैं |

जिम्मेदारी लेने की आदत लोगों को अधिक विश्वसनीय तथा भरोसेमंद बनाती है। यह उन्हें अधिक भरोसेमंद तथा आश्रित बनाते हैं | जो लोग ज़िम्मेदारी लेते हैं, वे उसका पालन करने की बजाय नेतृत्व करते हैं तथा खुद को इतिहास का हिस्सा बनाते हैं |

.....

६. सफलता के नौ मूल मंत्र

एक संगठन या एक व्यक्ति की सफलता का निर्णय उन नौ मूल मंत्र के स्तर तथा प्रभावशीलता द्वारा किया जाता है, जिसे वे बनाए रखते हैं। वे नौ मूल मंत्र लोग तथा संगठन दोनों की नियति का फैसला तथा रचना करते हैं। 'संगठनात्मक विफलता तथा सक्रिय उपायों' पर मेरे शोध के अनुसार संगठनात्मक विफलताओं के तिरानवे मामलों का विश्लेषण किया गया। अनुसंधान शोध में कहा गया है कि, अद्वानवे प्रतिशत संगठनात्मक या व्यक्तिगत विफलताएँ इन्हीं नौ मूल मन्त्रों की अनुपस्थिति या अपर्याप्तता के कारण हुए थे।

- जिज्ञासा, (क्यूरियोसिटी)
- सहयोग, (कोऑपरेशन)
- नियंत्रण (आत्म – नियंत्रण),
- कण्ट्रोल (सेल्फ – कण्ट्रोल)
- परामर्श, (कंसल्टेशन)
- स्थिरता, (कंसिस्टेंसी)
- आत्मविश्वास, कॉन्फिडेंस (सेल्फ – कॉन्फिडेंस)
- साहस, (करेज)
- प्रतिबद्धता, (कमिटमेंट) और
- क्षमता (कोम्पेटेंस)

वे नौ कारक हैं, जिनका संस्थाओं या व्यक्तियों पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।

जिज्ञासा

जिज्ञासा प्रगति का संकेत है।

ऐसा क्या है जो लोगों को खोजकर्ता बनाती है ? यह और कुछ नहीं, किंतु वह जिज्ञासा है जिसे वे बनाए रखते हैं | अदृश्य को देखने की जिज्ञासा, गुप्त बातों की खोज की जिज्ञासा, किसी बेबुनियाद वस्तु से नई रचना की जिज्ञासा |

यह जिज्ञासा लोगों को प्रतिकूल परिस्थितियों में भी संभावनाएँ देखने का अवसर देती है | जिज्ञासा लोगों को नदी के दूसरे किनारे तक पहुँचा देती है | खोज ऐसी ही जिज्ञासाओं का नतीजा है | आम आदमी के विपरीत, जिज्ञासा वाले लोग हमेशा मानते हैं कि, सीखने तथा निष्कर्ष निकालने के लिए और भी बहुत कुछ है | वे अपने कौशल का अद्यतन करने में विश्वास रखते हैं | उन्हें अपने प्रयासों पर निवेश करने में कोई दिक्कत नहीं होती है |

कालग्रस्त से बचने के लिए अद्यतन करना आवश्यक है।

जिज्ञासा नवाचार का आधार है | नवाचार व्यवसायों की निरंतरता और व्यक्तियों के विकास का निर्णय लेते हैं | इन दिनों हर उद्यमी के लिए खराब उत्पादकता एक बड़ी चिंता है | किसी संगठन में लोगों में रुचि की कमी, नई चीजें सीखने की अरुचि प्रगति में प्रमुख अवरोध बन जाते हैं |

जिज्ञासा के बिना लोग एक नदी में तैरते पत्ते की तरह होते हैं | उनके मार्ग तथा गंतव्यों को सामान्य प्रवाह द्वारा तय किया जाता है। उनमें से अधिकतर लोग अपने जीवन में शून्य या अल्पावधि के लक्ष्य रखते हैं | अधिकांश व्यक्ति तोते के समान ही व्यवहार करते हैं | वे उसी में जीते हैं, जो उनके पास होता है, वे कुछ नया नहीं बनाते तथा अपने एवं अन्यों के जीवन में भी कोई परिवर्तन नहीं लाते हैं | बिना जिज्ञासा के लोग अपना सुखद क्षेत्र बनाते हैं तथा उसी में रहना ही पसंद करते हैं | वे विकास तथा चुनौतियों से डरते हैं | वे उपयोगकर्ताओं का उत्पादन करते हैं किंतु व्यावसायिक मनुष्यों का नहीं | वे नेताओं की तुलना में अधिक अनुयायी होते हैं |

सुविधा क्षेत्र में रहने वालों के लिए, परिवर्तन की आवश्यकता की मांग अति कम होती है।

मुंबई नेतृत्व कार्यशाला में जिज्ञासा के महत्व पर चर्चा करते हुए, कुछ प्रतिभागियों ने मुझे निजी तथा आधिकारिक जीवन में जिज्ञासा का सृजन करने तथा उसे बनाए रखने के

तरीके पूछे | वे कुछ ऐसे तरीकों की खोज में थे, जो उनके शामिल हुए किसी चीज़ों में रुचि पैदा व बनाए रख सके | लोगों की रुचि किसी चीज़ में कम या खो क्यों जाती है ?

इसका कारण यह है कि, हमारे जीवन में कई चीजें हमारे पसंद के मुताबिक नहीं होती हैं | आम तौर पर हम बिना किसी कारण के दूसरों को संतुष्ट करने या उन्हें मनाने की कोशिश करते हैं। हम जो कार्य वर्तमान में करते हैं, उस पर विश्वास करने की अपेक्षा किसी और ही बात पर विश्वास करते हैं | दुर्भाग्यवश, कई लोगों के पास इसे करने का साहस ही नहीं होता है क्योंकि वे उन विकल्पों में पूरी तरह से विश्वास नहीं करते हैं।

हमारे द्वारा बनाए गए कई विकल्पों की उपलब्धता, तथा प्राथमिकताएँ ही, एक ही पहलू में रुचि की कमी का प्रमुख कारण हैं।

जब कई आवाजें आसपास हों तो हम कैसे किसी ध्वनि पर ध्यान दे सकते हैं ? हम कुछ विशिष्ट बातों पर ध्यान केंद्रित कैसे कर सकते हैं जब कई प्राथमिकताएँ हमें प्रभावित कर रहे होते हैं? ऐसा करना व्यावहारिक रूप से कठिन या असंभव है।

हम कैसे अपने कार्यों में रुचि का निर्माण करते हैं तथा उसे बनाए रखते हैं ? हमें यह जांचना होगा कि हम जो कार्य कर रहे हैं, वह हमारी पसंद का है या नहीं | कई लोग उसे दूसरों को संतुष्ट करने के लिए करते हैं | हम कितनी देर तक दूसरों को संतुष्ट कर सकते हैं?

हर किसी के अंतहीन जरूरतों को पूरा करना असंभव है।

चाहे दूसरों के लिए कितना भी आकर्षक हो, किसी को इसकी स्थिति या स्वभाव के स्तर की आवश्यकता के बारे में चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। जब सहिष्णुता समझौता बनने लगती है, तब हमें उसे छोड़ देने का साहस होना चाहिए।

साथ निभाने का सबसे अच्छा तरीका है, साथ चलें, यदि हम साथ नहीं चल सकते, तो बेहतर है उससे दूर चले जाना..... अज्ञात।

कुछ बातों को यूँ ही छोड़ देने से, हमें मानसिक तनाव से राहत मिल जाती है | यह हमारे पंखों से वजन हटाता है तथा हमें उच्च उड़ान भरने में सक्षम बनाता है।

यह हमें 'मुक्त होने की स्वतंत्रता' देता है | इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि यह दोनों के लिए कितना दर्दनाक है | यह लंबे समय में नियोक्ता तथा कर्मचारी दोनों को मदद करेगा | हर किसी को अपनी रुचि अनुसार ही काम का चयन करना चाहिए और अपनी सफलता में विश्वास रखना चाहिए।

अपने करियर या संबंधों पर संदेह करने से बचें | संदिग्ध दिमाग हमेशा संगठनों को दोषी ठहराने का और अलग होने के कारणों की खोज करते रहते हैं और वे कभी भी सफलता को वास्तविक नहीं बनाते हैं।

संदेह करना डर का एक व्यक्त रूप है - विफलता का डर।

अपने कार्य में रुचि बनाए रखने के लिए बेहतर यही होगा कि हम अपने करियर को पसंद करने के कारणों की सूची बनाएँ, ना कि उसे नापसंद करने की | दुर्भाग्यवश, कई लोग अपने करियर को नापसंद करने के कारणों से परिचित होते हैं किंतु उसे पसंद करने के कारणों से नहीं।

वित्तीय आजादी, सामाजिक मान्यता, आत्मनिर्भरता कारक आदि कारकों को ना भूलें, जो हमें हमारे करियर से या उसके माध्यम से प्राप्त होते हैं।

हमें हमेशा अपने करियर या जीवन में होने वाले लाभों का ही स्पष्ट हिसाब होना चाहिए, ना कि नुकसान का | चूँकि जब हम अपने जीवन में होने वाले हर लाभ पर ध्यान देंगे, तो यह हममें अधिक आत्मविश्वास जगाएगा तथा धीरे-धीरे हम अपनी क्षमताओं पर विश्वास करने लगेंगे।

अपने करियर को अपने आत्म-विकास का मंच बनने दीजिए | हर दिन को अवसरों का एक नया दिन समझें, जैसे नई अवधारणाओं तथा विचारों को उत्पन्न करने एवं लागू करने के अवसर | अपने नए विकास योजनाओं के प्रस्ताव रखने से न डरें, आपके नियोक्ता इसे पसंद करेंगे क्योंकि; नए विचारों का स्वागत करने की उनकी मानसिकता ने ही उन्हें उद्यमी बना दिया है | चाहे आपके प्रस्ताव स्वीकार किए जाते हैं या नहीं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता | आपको मान्यता दी जाएगी | आज या कल, आपको अवसर ज़रूर मिलेंगे क्योंकि आप एक 'योजनाकार' हैं।

योजनाएँ प्राणियों की तुलना 'रचनाकारों' की मानसिकता को प्राप्त करने में मदद करती हैं।

हर बार जब हम योजना बनाते हैं, तब हम मालिकों तथा उद्यमियों की मानसिकता को प्राप्त करते हैं | हम और अधिक रचनात्मक और मेहनती बन जाते हैं | तब हम विशिष्टता को अपनाते हैं तथा यह विशिष्टता हमें सफल बनाती है।

नियोजन से स्वामित्व तथा जिम्मेदारी की भावना उत्पन्न होती है।

मैंने कई कर्मचारियों को नौकरी की सुरक्षा को लेकर चिंतित होते देखा है | वास्तव में, 'नौकरी की सुरक्षा' क्या है ? यह केवल एक अवधारणा है |

कोई भी निवेशक एक खराब कार्यकर्ता को समायोजित नहीं कर सकता | प्रत्येक संगठन का अस्तित्व सीधे इसकी उत्पादकता के अनुपात में है | कितने समय के लिए एक उद्यमी एक औसत या प्रदर्शनिकर्ता के तहत नौकरी की सुरक्षा प्रदान कर सकता है ? अधिकतर प्रदर्शनिकर्ता संगठनों के लिए परजीवी हैं | वे अपने संगठन को आश्रय स्टेशन या मिडवे घरों के रूप में देखते हैं | अपने कार्यों को लेकर उनमें किसी प्रकार का मनोवैज्ञानिक लगाव नहीं होता है |

अंडरपरफॉर्मर्स (आशा से कम सफलता पाने वाले) संगठन की संपत्ति की तुलना में ऋण हैं |

सवाल यह है कि, हमें सुरक्षा की आवश्यकता कब होती है ?

हमें दो परिस्थितियों में सुरक्षा की आवश्यकता होती है, जब तक हम स्वयं की रक्षा करने में असमर्थ हों या तब, जब कुछ अनिश्चित हो | अगर हम सक्षम हों तो, हमारी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए किसी की ज़रूरत नहीं है | अगर हम मेहनती हों तो, कोई भी हमें अस्वीकार नहीं कर सकता है क्योंकि उन्हें हमारी आवश्यकता है |

कोई भी नियोक्ता किसी रचनात्मक कार्यकर्ता को खोना नहीं चाहेगा |

सक्षम होना इतना आसान नहीं है | इसके लिए अति लचीलेपन तथा तत्परता की इच्छा की आवश्यकता होती है | इसमें कड़ी मेहनत, दृढ़ता और प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है | इसके लिए अद्यतन और निस्वार्थता की आवश्यकता होती है |

हमारे कार्यों तथा संगठनों का प्रत्यक्ष प्रभाव हमारी जिज्ञासाओं पर पड़ता है, जिससे हम अधिक संभावनाओं को तलाशते हैं | हममें अपने पर्यावरण तथा संघों को चुनने का विवेक होना चाहिए |

सफलता के विषय में बात करने तथा सोचने वाले लोगों की संगति में होना हमेशा बेहतर होता है | मूर्ख व्यक्तियों तथा बेवकूफों की संगति में होने के बजाय अच्छे लोगों की संगति में होना हमेशा बेहतर होता है क्योंकि मूर्खों तथा बेवकूफों के साथ निरंतर सहयोग, हमें उनसे अलग नहीं बना सकता |

किसी चीज़ में रुचि रखने के लिए, हमेशा समीक्षा करने के लिए तैयार रहें | उस चीज़ को सुधारना कठिन है, जिसे मापा नहीं गया हो |

अपनी उपलब्धियों का मूल्यांकन दैनिक, साप्ताहिक, मासिक तथा वार्षिक आधार पर करें, ताकि हम खुद को सुधार सकें।

आलोचना की अनुमति दें, आलोचना ही आंतरिक मूल्यांकन तथा स्वयं-शोधन के अवसर प्रदान करता है।

जब आलोचक आपको अपनी आलोचना के तेज़ नाखूनों तथा दाँतों से हमला करते हैं, तब हताश ना होएँ। अपने आत्मविश्वास को खोने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वे आलोचक आपको केवल आंशिक रूप से ही जानते हैं। उन्हें आपकी पूर्ण क्षमता के विषय में कोई जानकारी नहीं है। इसके अलावा, कोई भी आलोचक एक अच्छा निर्माता नहीं बन सकता, क्योंकि आलोचक की मौजूदगी ही रचनाओं तथा रचनाकारों पर आधारित होते हैं।

हर आलोचना सिर्फ एक आंशिक मूल्यांकन है, बिल्कुल अधूरा आकलन।

जिज्ञासा को एक गुण की तरह बनाए रखें, ताकि हम प्रतिकूल परिस्थितियों में भी संभावनाओं को देख सकें।

जिज्ञासा हमें सफलता का मार्ग दिखाता है। यह एक तथ्य है कि सफलता का मार्ग हमेशा ही उपलब्ध होता है, किंतु केवल उस व्यक्ति को ही दिखता है, जो इसके विषय में जानने की जिज्ञासा रखता है।

कई साधारण लोगों के लिए, उनके आसपास के लोगों तथा वस्तुओं का कोई मोल नहीं होता है। उनके लिए, वे उनके निरंतर कार्यक्रम में आने वाली बाधा मात्र हैं।

एकल उपयोग वाली वस्तु का मिलना कठिन होता है।

चाहे वह एक उत्पाद हो या अवधारणा, इस दुनिया में हर चीज़ के कई उपयोग तथा आयाम हैं। अध्ययनों का कहना है कि, वर्तमान समय की कई सफल परियोजनाएँ भी अपने समय में एक बार विफल रही थीं। वे शुरुआती विफलताएँ, वैचारिक विफलता के कारण नहीं थे, अपितु उनके कार्यान्वयन ही विफल रहे। हो सकता है कि, शुरूआती चालक अपने प्रयास को सफल बनाने के लिए वैकल्पिक विकल्पों को पहचानने में विफल रहे। हर चीज़ के लिए, कई विकल्प होते हैं किंतु वे विकल्प केवल उन लोगों के लिए दृश्यमान होते हैं, जिन्हें उसकी जिज्ञासा हो।

हालांकि उनकी योजनाएँ काम नहीं करती हैं या फिर वे आंतरायिक असफलताओं का सामना करते हैं, साधारण लोगों के विपरीत, सफल लोग विकल्पों की ही खोज करते हैं क्योंकि वे विकल्पों में विश्वास करते हैं।

इस दुनिया में, हर समस्या का एक से अधिक समाधान या विकल्प है।

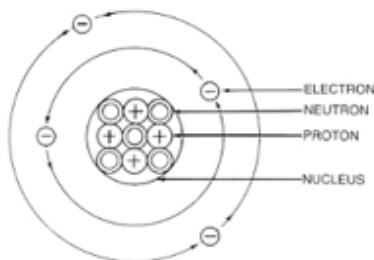
वह क्या है, जो हमें विकल्पों पर विचार कराती है ? यह और कुछ नहीं, केवल हमारे द्वारा बनाई गई जिज्ञासा है | आवश्यकता के बिना आविष्कार का जन्म संभव नहीं | हमारी केंद्र – बिंदु तथा इच्छा शक्ति हमें खोज करने तथा उसपे अमल करने के लिए तैयार करती है | अवसर केवल उन लोगों के लिए उपलब्ध होते हैं, जिनको उसकी तलाश रहती है |

इस ब्रह्मांड की एक दिलचस्प बात सामने आती है, यह ब्रह्मांड हमेशा 'आवश्यकता तथा उत्पादन' की व्यवस्था रखता है | यह ध्यान देने की एक दिलचस्प बात है कि, हर आविष्कार या उत्पादन ही समाधान है | कोई भी आविष्कार आसान, अवांछित, समय व्यर्थ करने वाला नहीं है |

यह एक दिलचस्प तथ्य है कि हर सृष्टि से पहले, इस धरती पर किसी न किसी ने समान आवश्यकता का विचार महसूस किया होगा | रचनाएं तथा आविष्कार हमेशा किसी न किसी की ज़रूरत के समाधान होते हैं | जब भी धरती पर किसी चीज़ की आवश्यकता महसूस होती है, उसी समय दुनिया के किसी कोने में उसकी रचना हो जाती है | यह पास या दूर उपलब्ध हो सकता है, किंतु एक बात निश्चित है, समाधान ज़रूर होगा | उपलब्धता की दूरी हमारी जिज्ञासा के जोर से तय होगी |

जिज्ञासा सफलता की दूरी को कम करता है।

हमारे सपने एक परमाणु में विद्युदणु की तरह होते हैं जिसमें बाहरी कक्षाओं में नाभिक असर वाले प्रोटॉन, न्यूट्रॉन तथा विद्युदणु होते हैं | विद्युदणु हमेशा नाभिक से अधिक दूर रहने की प्रवृत्ति को और नाभिक हमेशा विद्युदणु को इसके प्रति आकर्षित करने का प्रयास करते हैं |



औसत दर्जे के लोगों के लिए, आकर्षित करने तथा बचने वाले बल एक समान हैं, ताकि उनके सपने कभी भी उच्च न उड़ सकें। यह उनकी निष्क्रियता या सफलता की उपलब्धि की दिशा में अपूर्ण कार्यवाही के कारण नहीं है, किंतु उनके प्रयास अलग-अलग दिशाओं में बिखरे हुए हैं ताकि उनमें से कोई भी अपनी पूर्ति को पूरा न कर सके। जब प्रयासों को एक ही दिशा में गठबंधन किया जाता है, तो किसी भी परिस्थिति से निकलना आसान हो जाता है तथा कार्य समय से पूर्व हो जाता है।

जब हम अधिक उत्सुक हो जाते हैं, तब हम उस पर अधिक ध्यान देते हैं। जिज्ञासा हमें हमारे प्रयासों को संरेखित करने में मदद करती है ताकि सफलता एक वास्तविकता बन जाए।

असफलता संभावनाओं की अनुपलब्धता के कारण नहीं है बल्कि उसकी खोज के लिए जिज्ञासा की कमी के कारण है।

जब तक हम अपनी जिज्ञासा को और अधिक तलाशने के लिए प्रोत्साहित नहीं करते, सफलता कभी भी निरंतर नहीं होगी। आइये देखें कि, हम हमारी जिज्ञासा को कैसे विकसित कर सकते हैं?

हमारी जिज्ञासा को विकसित करने के कई तरीके हैं, जिनमें निम्नलिखित कारक शामिल हैं,

१. पुनरावृत्ति से बचें

दोहराए जाने वाले दिनचर्या हमारी जिज्ञासा का अंत कर सकते हैं क्योंकि ऐसी दिनचर्या हमें कार्यों से अधिक परिचित बनाते हैं और ऐसी परिचितता हमें यह मानने के लिए आगे बढ़ाती है कि, 'इसमें सुधार करने के लिए कुछ नहीं है'। जिज्ञासा तथा नवीनता हमेशा साथ – साथ चलते हैं। हर नए प्रयास में, कुछ नया करना तथा नई चीजों को नियमित रूप से करने की आदत को बढ़ावा देना, जिससे स्वचालित रूप से जिज्ञासा हमारी विशेषता बन जाती है।

२. पूर्वपेक्षा से बचें।

प्रस्तुतीकरण, सीखने का पहला कदम है।

औसत लोगों की यह भावना कि, 'मुझे पता है कि सब कुछ कैसे काम करता है' सबसे ज्यादा विनाशकारी भावनाओं में से एक है। वे कभी भी कुछ सीखने या कुछ नया करने की कोशिश नहीं करते हैं। मैं कई अनुभवी बिक्री कर्मियों को जानता हूँ, जिन्हें नए

उत्पाद या अवधारणाओं को बेचने में कठिनाई होती है, क्योंकि उन्हें नई बिक्री रणनीति अपनाने में दिक्कत होती है।

उनका पूर्ववर्ती मन उनकी सीखने की प्रक्रिया के लिए एक बाधा बन जाता है, तथा वे नई चीज़ सीखने का विरोध करते हैं। नई चीज़ सीखने का विरोध जिज्ञासा को खत्म कर देता है।

एक बच्चे की मानसिकता के मुताबिक हर दृष्टिकोण रखें, ताकि हमारे पास जिज्ञासा की एक अद्भुत भावना हो सके।

३. संभावनाओं की खोज को अपनी आदत बनाएँ।

सकारात्मक मानसिकता का विकास करें तथा प्रतिकूल परिस्थितियों में भी संभावनाओं की तलाश करें। एक सकारात्मक मानसिकता अधिक संभावनाओं की खोज के लिए उत्सुकता पैदा करती है तथा इस तरह की संभावनाओं की पूर्ति का अंतिम परिणाम सफल होने के अलावा और कुछ नहीं हो सकता।

४. प्रश्न पूछें

‘ब्रेन स्टोरमिंग’ प्रक्रिया लोगों के बीच जिज्ञासा पैदा करने के सर्वोत्तम तरीकों में से एक है। निर्णय लेने के दौरान, बुद्धिमान लोग हमेशा हिंदी के उन छह ‘क’ वाले शब्दों पर विचार करते हैं, वे हैं - क्या, कब, कहाँ, कौन, क्यों और कैसे। किसी भी स्थिति में खुद से, इन छह ‘क’ को पूछने का अभ्यास करें, तो निश्चित रूप से चीजों में अधिक स्पष्टता तथा संभावनाएँ आएँगी, जो प्रतिकूल परिस्थितियों में दिखाई देंगी। सब कुछ जानना संभव नहीं होता है तथा अज्ञानता को दूर करने का सबसे अच्छा समाधान है, स्वयं या दूसरों से प्रश्न पूछना। प्रश्न पूछने से पता चलता है कि आप अनजान होने के बजाय व्यस्त हैं।

५. विफलता के डर से उभर आएँ।

असफलता का डर उत्सुकता को समाप्त करता है। असफलता के भय को हराए बिना अपने सपने को प्राप्त करना कठिन होगा। हम जितना अधिक उत्सुक होते हैं, उतना ही कम हम डरते हैं। सकारात्मक परिणामों पर ध्यान केंद्रित करने से हमें और अधिक संभावनाएँ तलाशने में अधिक उत्सुकता मिलती है। परिणाम चाहे सकारात्मक हों या नकारात्मक, आप अपने अनुभवों के कारण हमेशा एक लाभकारी व्यक्ति रहेंगे। याद रखें, संभावनाएँ कभी समाप्त नहीं होतीं।

६. कई विवरणों को प्रोत्साहित करें।

विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के साथ बातचीत, हमें एक-दूसरे को जानने के लिए अधिक उत्सुक बना देता है। विभिन्न क्षेत्रों तथा नए अनुभवों से निपटने से हमारा दिमाग सक्रिय बनता है। सक्रिय दिमाग हमेशा जिज्ञासु बनते हैं। मल्टीटास्किंग (बहुकार्यन) लोगों को अधिक उत्सुक तथा लाभकर बना देते हैं। कई विवरण लोगों में उनकी आंतरिक क्षमता को पहचानने तथा आत्मविश्वास को बढ़ाने में मदद करते हैं।

७. रोज़मर्रा की चीज़ों से कुछ नया तलाशने का प्रयास करें।

हालांकि हमारी आँखें हमारे लिए अधिक महत्वपूर्ण हैं, फिर भी हममें से कितने, नियमित रूप से इन महत्वपूर्ण अंगों के महत्व के विषय में सोचते हैं या हमारी आँखों के गतिशील पहलुओं पर विचार करते हैं? शायद ही कोई होगा, क्योंकि हम इसके आदि हो चुके हैं तथा हम इसे स्वीकृत मान चुके हैं। वास्तव में, हमारे आस-पास कई आकर्षक चीजें हैं जो अपने ही तरीके से गतिशील तथा दिलचस्प होते हैं। इस तरह के कारकों के विषय में पता करने की एक खोज हमें अधिक उत्सुक, बुद्धिमान, संभावना तलाशने वाला, तथा आत्मानुभूति पाने वाला एवं बेहतर निर्णय लेने वाला बनाएगा।

चूँकि जिज्ञासा रचनात्मकता तथा नवीनता का आधार है, इसलिए आगे की घटनाएँ इसके बिना असंभव हो जाती हैं। रचनात्मक होने के नाते हम अधिक प्रश्न पूछने वाले बनते हैं तथा अपने सुविधा क्षेत्र से बाहर आने में खुद की मदद कर पाते हैं। अपने सुविधा क्षेत्र से बाहर निकले बिना बदलाव लाना कठिन होगा।

८. आत्मसमर्पण से बचें।

बोरियत तथा थकावट के प्रति समर्पण, हमें कभी भी सक्रिय खोजकर्ता नहीं बनाएगी। जितना अधिक हम थकान तथा बोरियत को स्वीकार करते हैं, उतने ही कम अवसर हम आगे देख पाते हैं। कोई थका हुआ हो सकता है, किंतु निराश नहीं, ऊब सकता है किंतु परित्यक्त नहीं। साधारण असफलताओं को आत्मसमर्पण करने की आदत से बचें ताकि हम विकल्पों की तलाश में जिज्ञासा बनाए रख सकें।

सहयोग

सहयोग निस्वार्थता का एक स्पष्ट संकेत है | जीवन - साथियों, सहकर्मियों, समाज तथा प्रकृति के बीच सहयोग, लोगों और संगठनों को सफल बनाने तथा किसी विशेष कार्यों को हासिल करने में एक प्रमुख भूमिका निभाती है। सहयोग की विशेषता लोगों को अहंकार से मुक्त कराती है तथा इससे लोगों को दूसरों पर विजय प्राप्त करने में मदद मिलती है। यह हमारे जीवन को अधिक सुंदर एवं आशाजनक बना सकता है।

कई लोग सहयोग तथा सहिष्णुता के बीच भ्रमित होते हैं। सहयोग, एक ही अंत की ओर एक साथ काम करने की कार्यवाही या प्रक्रिया है। जबकि सहिष्णुता राय या व्यवहार के अस्तित्व को बर्दाश्त करने की वह क्षमता या इच्छा है, जिससे कोई नाखुश या असहमत होता है।

सहयोग की कमी अभियान को नाकाम या विलंब कराती है।

सहयोग हमें एक दूसरे को जानने में मदद करता है। यह हमें दूसरों की प्रतिभाओं को पहचानने में मदद करता है। यह मिशन को सरल तथा उसकी उपलब्धियों को त्वरित बनाता है।

पाठकों ने शायद यह देखा होगा कि किस तरह छोटी चींटियाँ अपनी तुलना की अपेक्षा भारी खाद्य पदार्थों को उठा कर ले जा रही हैं।



यह उनका भौतिक आकार नहीं है जो एक महान अभियान को सफल बनाता है, किंतु उनके सहयोग की उत्सुकता ही है।

सहयोग हमें अधिक सामाजिक तथा स्वीकार्य बनाता है। यह हमें तनाव तथा मानसिक दर्द से राहत देता है।

सहयोग के लक्षण हमें अधिक मानवीय बना देते हैं।

लोग दूसरों के साथ विभिन्न कार्यों के कारण सहयोग करते हैं | वे अपने धार्मिक हितों, राजनीतिक विचारधाराओं की सुरक्षा, अपनी भौतिक एवं जैविक जरूरतों को पूरा करने, या अपने निहित स्वार्थों की रक्षा के लिए ऐसा करते हैं। सहयोग की कमी दूसरों द्वारा पृथक्करण (अलगाव) तथा अस्वीकृति ला सकता है।

अलगाव लोगों को असमर्थ कर सकता है।

एक पृथक व्यक्ति तथा एक कैदी पक्षी की मानसिकता लगभग समान ही होती है। यह उन्हें बहुत कम अवसर प्रदान करता है कि वे अपनी पूरी क्षमता को पहचानें। सतत अलगाव उन्हें अधिक निंदक बनाता है तथा वे अपनी सुविधा क्षेत्र में ही रहना पसंद करते हैं। निरंतर कैद उनके आत्मविश्वास तथा सहनशक्ति को कम कर सकते हैं, जिससे उनके उच्च उड़ान भरने की सहनशीलता कम हो जाती है। निश्चित तौर पर, ऐसे पक्षियों को अपने स्वामी से दूर उड़ने से हिचकिचाहट हो सकती है। उनके लिए बाहरी दुनिया चुनौतियों तथा प्रतिकूलता से भरी हुई है। वे स्वतंत्रता की बजाय किसी पर आश्रित होने पर आरामपूर्वक निर्भर रहते हैं।

सहयोग की कमी के कारण लोगों को अन्यों के गुण नहीं दिखते हैं। इससे वे दूसरों को कम या अधिक समझने लगते हैं। यह कई लोगों के लिए एक बाधा के रूप में कार्य करता है। यह उन्हें अवसरों से इनकार करता है तथा अधिक प्रतिकूलता लाता है। सहयोग का अभाव उनके भार को भारी बनाता है तथा अपने रास्ते को रोकता है। बाधा उनकी सामान्य विशेषता होती है। उनमें से अधिकतर आशावादी से अधिक निराशावादी होते हैं।

अलग-थलग रहना तथा दूसरों के समर्थन या सहयोग के बिना कुछ मिलना बहुत कठिन है। ऐसे लोग भी हैं, जो स्वयं को समाज से अलग करने की कोशिश करते हैं। उनमें से अधिकतर अपने झूठे अहंकार के शिकार होते हैं।

उनमें से अधिकांश दूसरों की क्षमता तथा कार्यक्षम में विश्वास नहीं करते हैं। वे ऐसी गलतफहमी में रहते हैं कि दूसरे लोग अद्यतन नहीं हैं तथा उनसे निपटने के लिए वे समान्तर भी नहीं हैं। वे खुद को उचित ठहराने के लिए दूसरों में अंतर करते हैं। वे हमेशा दूसरों की गलती निकालने की कोशिश करते हैं। वे हमेशा दूसरों में गुणों की बजाय दोष की तलाश करते हैं। इनमें से अधिकतर अहंकारी, अल्प आत्मविश्वासी तथा अद्यतन नहीं होते हैं।

क्लोवर्स ग्रुप द्वारा ५० परिवारों पर एक सर्वेक्षण किया गया जो दूसरे देशों में प्रवास की तलाश में थे। उससे यह पता चला कि दूसरे देशों में प्रवास करने का उद्देश्य केवल अच्छा जीवन स्तर, चिकित्सा एवं अन्य सरकारों की सहायता, सामाजिक सुरक्षा

और अपने बच्चों के लिए शैक्षिक अवसर प्राप्त करने का प्रयास ही था | सर्वेक्षण में और अधिक दिलचस्प बात यह थी कि उनमें से अधिकतर 'अच्छे लोगों' की तलाश में थे तथा वे निष्ठा से यह यकीन करते थे कि उनकी पसंद की जगह अच्छी होगी और अच्छे लोग केवल वहीं उपलब्ध होंगे ।

'अच्छे लोगों की तलाश' करने वालों पर मुझे बहुत दुःख होता है | वे ऐसे लोगों की तरह होते हैं जो चॉक के टुकड़े की खोज करते हैं, जबकि चॉक के ढेर पर बैठे होते हैं या वे लोग जो आसपास के हीरों को अनदेखा कर, आम पथर के लिए दौड़ते हैं ।

उन्होंने अब तक यह महसूस नहीं किया है कि इस धरती पर ऐसा कोई स्थान नहीं है जहाँ केवल अच्छे या केवल बुरी चीजें ही मौजूद हों | इसके अलावा, इस धरती पर ऐसा कोई स्थान नहीं है जहाँ केवल अच्छे या केवल बुरे लोग ही रहते हों | संयोजन एक सामान्य घटना है ।

कीमती धातुएँ कभी भी मुक्त रूप में नहीं मिलतीं, वे हमेशा अशुद्ध अयस्कों से निकाले जाते हैं।

अच्छे लोगों के मामले भी इससे अलग नहीं होते हैं | उन्हें अवश्य बहुतों के बीच से चुनना होगा | चिंता ना करें, समूह अच्छे और बुरे दोनों से बने होते हैं, शर्त ये है कि निर्वाचिक, चयन के दौरान बुद्धिमान रहे ।

हम विकल्पों तथा द्वंद्वों की दुनिया में रह रहे हैं। चयन तथा विकल्प व्यक्ति के अकेले के ही होते हैं ।

हर जगह दुष्टता की तरह, महानता भी दुर्लभ नहीं है।

'अच्छे लोगों' के साधक हमेशा सहयोग करने के लिए सही लोगों की तलाश में रहते हैं, लेकिन दुर्भाग्यवश, उनकी खोज कभी समाप्त नहीं होती क्योंकि वे अनजाने में मृगतृष्णा का पालन करते हैं। इस तरह के अधिकांश 'अच्छे लोग चाहने वाले' अंतर्मुखी और उनके माता-पिता और दोस्तों के साथ भी कम सहयोगी होते हैं। हो सकता है, उनमें से कुछ के पास एक दोस्त तक न हों ।

मैं कुछ लोगों को जानता हूँ जो खुद को 'आत्म निर्मित' के रूप में चित्रित करते हैं | 'आत्म निर्मित' के लिए उनकी परिभाषा वास्तविक परिभाषा से पूरी तरह भिन्न होती है | वे हमेशा दूसरों को समझाने की कोशिश करते हैं कि जीवन में उनकी उपलब्धियाँ केवल उनकी अपनी योग्यता के कारण हैं और उनकी सफलता में किसी और की कोई भूमिका

नहीं है। उसी समय, वे अन्य लोगों और परिवेशों को उसमें दोषी ठहराते हैं, जिसमें वे अभी पीछे हैं।

स्वार्थ के कारण लोग अपने जीवन में दूसरों के महत्व को अनदेखा कर देते हैं। वे अपने अतीत को भूल जाते हैं। वे किसी के लिए कोई संबंध नहीं दिखाते हैं। वे आभार का कोई रवैया नहीं दिखाते हैं। वे ब्रह्मांड की मांग का एहसास नहीं करते हैं।

ब्रह्मांड लोगों से पृथक लोगों की अपेक्षा सामाजिक प्राणी के रूप में बने रहने की उम्मीद करता है।

हममें से अधिकांश आसानी से अपने जीवन में दूसरों के द्वारा दिए गए आशीर्वादों को भूल जाते हैं; हम इस तथ्य को अनदेखा कर देते हैं कि मनुष्य अपने जन्म से पहले ही अन्य लोगों के साथ अपने संबंध बना लेता हैं तथा वह संबंध उनकी मृत्यु के बाद भी जारी रहता है।

कोई खुद की पुण्यतिथि का उत्सव नहीं मनाता, किंतु दूसरों की मनाता है।

हम खुद को पूरी तरह से अकेला कैसे कर सकते हैं? सहयोग की आवश्यकता को हम कैसे इनकार कर सकते हैं? हम अपने जीवन में दूसरों के महत्व को कैसे अनदेखा कर सकते हैं? सहयोग के बिना जीवन बहुत कठिन हो जाता है।

जीवन साथी के सहयोग के बिना परिवार को बढ़ाना मुश्किल है। सभी प्रकार के समूहों के सहयोग के बिना अनुसंधान करना असंभव हो जाता है। लोगों के सहयोग के बिना एक राजनीतिक या धार्मिक समूह को स्थापित करना असंभव है। वास्तव में, ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है, जहाँ हमें दूसरों के सहयोग की आवश्यकता नहीं पड़ती है।

सहयोग हमें प्रतिकूल परिस्थितियों में भी कई संभावनाएँ दिखा सकती है। ये लगभग सभी बंद दरखाजे खोलता है। ये बर्फ को पिघला सकते हैं तथा अवसरों को दोहरा सकते हैं।

सहयोग से संगठन का निर्माण संभव होता है।

कई प्राथमिकताएँ तथा स्वार्थ सहयोग को कठिन या अनचाहा बनाते हैं। हम नहीं जानते होंगे, किंतु हमारे पास के व्यक्ति ही विचारों या समर्थन का एक बड़ा स्रोत हो सकते हैं। यह आम आदमी की प्रकृति है कि वे पहले से मौजूद महानता को भूल जाते या नज़रअंदाज़ करते हैं तथा उसी समय वे कुछ ऐसी चीजों के लिए प्रयास करते हैं जो दूर हैं।

लोग वास्तविक चीज़ों की अपेक्षा अवास्तविक चीज़ों की तलाश में और अधिक उम्मीद महसूस करते हैं।

हममें से कितने उन अवसरों के विषय में जागरूक होते हैं, जिन्हें हमारे पड़ोसियों द्वारा पेश किया जा सकता है ? बहुत से लोग उन दुर्भाग्यशाली लोगों की तरह होते हैं, जो अवसरों की खोज करते हैं जबकि एक ही गुट में होते हैं | वे अनजान रहते हैं कि उनके अवसर उनके करीब हैं | हो सकता है - एक हाथ की दूरी पर ही हों | अपने हाथों को मिलाने के लिए ३० डिग्री सामने की ओर, और खुलने के लिए, तथा अपने होठों को आधा इंच ज्यादा चौड़ा करके मुस्कुराने के लिए उनकी उत्सुकता उनके जीवन में अपार अवसर एवं बदलाव ला सकता है।

कई लोगों के लिए, ३० डिग्री हाथ बढ़ाते हुए या मुस्कुराहट के लिए आधे इंच के अपने होठों को चौड़ा करना इतना आसान नहीं होता है | उनका अहंकार उन्हें ऐसा करने की अनुमति नहीं देगा | इसमें कोई शक नहीं कि जीवन सुंदर बन सकता है | केवल बात यह है कि हमें बदलने के लिए पर्याप्त तैयार होना चाहिए | चलिए आवश्यक परिवर्तनों के विषय में सुनिश्चित रहें।

आवश्यक परिवर्तन की मात्रा प्रत्येक के लिए अलग-अलग हो सकती है।

किंतु एक बात सुनिश्चित है कि हमारे अधिकतर मामले गर्म पानी और भाप की तरह होते हैं | भले ही गर्म पानी और भाप के बीच का अंतर सिर्फ एक डिग्री का मामला ही होता है, भाप गरम पानी की अपेक्षा बहुत कुछ कर सकता है।

बहुत से लोग सामान्यता और उत्कृष्टता के बीच के पहले या उसके ऊपर की पतली सी रेखा पर होते हैं | जीवन में भारी परिवर्तन करने के लिए थोड़ा सा ही सुधार पर्याप्त होता है | सहयोग की सरल इच्छा से पिछले परिणामों से अलग परिमाण पाए जा सकते हैं।

केवल ब्रह्मांड के कानून के साथ सहयोग करने के लिए तैयार रहें, परिणाम निराशाजनक नहीं होंगे।

लोग दूसरे की क्षमता के विषय में क्या जानते हैं ? हो सकता है, सामने वाला व्यक्ति एक प्रमुख खरीदार, नियोक्ता, ग्राहक या उद्धारकर्ता हो।

वहाँ कभी 'ना' मत कहना जहाँ 'हाँ' कहना चाहिए, क्योंकि अवसर कभी भी अनिश्चित मन को नहीं दिखाई देते।

'हाँ' कहने का अभ्यास करें, न केवल अनुकूल परिस्थितियों के लिए बल्कि चुनौतियों के लिए भी। सहयोग कामों को बनाता है। जब विभिन्न आकार की उंगलियाँ तथा उनके कृत्य एक – दूसरे के साथ सहयोग करते हैं, तब वे कई अद्भुत मूर्तियों को वास्तविक बना देते हैं, किंतु बिना ऐसे सहयोग के, ऐसा करना संभव नहीं होता है।

हमें नए विचारों तथा अभिनव विचारों को समायोजित करने तथा स्वीकार करने के लिए पर्याप्त तैयार रहना चाहिए। विचारों की ताजी हवा के आने के लिए हमें अपने दिमाग की खिड़कियाँ खोलने की जरूरत है। मुख्य रूप से दो 'अ' हमें दूसरों के साथ सहयोग करने से रोकते हैं – अहं (ईगो) तथा अपेक्षा (एक्सपेक्टेशन)।

स्व-जागरूकता रखने में कुछ गलत नहीं है, तथा यह बहुत जरूरी भी है। किंतु जितना अधिक हम स्वयं को महत्व देते हैं, उतना ही हम सीमित होते हैं तथा इस तरह की सीमित जगहों पर हमेशा अज्ञानता के कई कब्र होते हैं।

अहंकार लोगों को अंधा बना देता है। अहंकार एक आवक बल है। यह हमेशा अंतराल के साथ समाप्त होता है। यह शायद ही कुछ उत्पन्न करता है, किंतु आत्म-विनाश लाता है।



यह हमें दूसरों के गुणों को नहीं दर्शाता है। यह लोगों को बदलने तथा सहयोग करने में प्रतिरोधक बनाता है। यह प्रयास तथा परिणाम के बीच एक बाधा के रूप में कार्य करता है। दृष्टिकोण में मामूली – सा बदलाव उल्लेखनीय परिवर्तन ला सकता है। सहयोग दूसरों को जीतने में सक्षम बनाता है।

दूसरों से कुछ अपेक्षा करना असामान्य नहीं है। किंतु उम्मीद उचित होनी चाहिए। लोग अद्वितीय हैं। उनके पास उनका अपना तरीका तथा जुनून होता है। इस ब्रह्मांड में, हर सृष्टि के पीछे एक उद्देश्य होता है और उनका कामकाज भी अलग होता है।

एक सहकारी पर्यावरण में, नियोक्ता और कर्मचारी अपने समान लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मिलकर काम करते हैं तथा वे न्यूनतम में उनके बीच तर्क रखते हैं।

लोग स्वेच्छा से खुले संचार में संलग्न होते हैं तथा वे दृष्टिकोण में सक्रिय होते हैं। समस्याएँ दिखने से पहले वे उसे हल कर देते हैं। हर किसी से सहयोग पाना, हमेशा एक आसान काम नहीं हो सकता है, किंतु यह करना जरूरी है।

प्रभावी सहयोग से कार्यस्थल में गलतफहमी कम हो जाती है। यह परिवर्तन प्रबंधन तथा संकट प्रबंधन को आसान तथा प्रभावी बनाता है। सहयोग हासिल करने के प्रयास एक योग्य निवेश हैं, क्योंकि यह दक्षता, उत्पादकता और प्रतिस्पर्धा को बढ़ाता है।

सहयोग निर्णय लेने की प्रक्रिया तथा संगठनात्मक प्रदर्शन में सुधार लाता है। प्रबंधन एवं कर्मचारी की प्रतिबद्धता को सहयोग के माध्यम से बढ़ाया जा सकता है क्योंकि यह निर्णय निर्माताओं और उसके अनुयायियों के बीच आपसी विश्वास को बढ़ाता है।

इस पुस्तक को लिखने के रूप में, मेरे द्वारा २०१५ में तलाक के लिए दायर किए ५० जोड़ों के बीच एक सर्वेक्षण से पता चला था कि - उनमें से सत्तासी प्रतिशत लोग अपने जीवन का अधिकांश समय अपने जीवन - साथी की अपेक्षा किसी और के साथ बिताते हैं, नौ प्रतिशत लोगों ने एक - दूसरे के साथ नियमित रूप से केवल बहस करने के लिए ही संवाद किया तथा चार प्रतिशत लोगों ने अपने साथी के साथ खुलकर बात करने का प्रयास तक नहीं किया।

चाहे वह एक संगठन हो या एक परिवार, सहयोग केवल खुले संचार के माध्यम से ही संभव होता है। सहयोग पाने के लिए, संचार के मौजूदा स्तर की समीक्षा करना आवश्यक है। निर्णय निर्माताओं को पारस्परिक संचार के लिए एक मंच बनाने तथा बनाए रखने में विशेष पहल करनी चाहिए।

माता-पिता को अपने बच्चों के साथ बातचीत करने के लिए समय निकालना चाहिए तथा उन्हें उनकी समस्याओं को सुनने के लिए उन्हें तैयार रहना चाहिए। जोड़ों (couple) को भी एक-दूसरे की बातों को सुनने के लिए पर्याप्त धेर्य होना चाहिए। निर्णय निर्माताओं को अपने लोगों की बात सुनने के लिए तैयार होना चाहिए।

सुनने की इच्छा अभिव्यक्ति के भय को कम कर देता है।

तथ्य जानने की उत्सुकता ही कभी-कभी प्रमुख मुद्दों को हल कर सकते हैं। जब संचार और सहयोग स्थापित होते हैं, तब असंभावनाएँ संभावनाओं में बदल जाते हैं, अस्वीकृति स्वीकृति को रूपांतरित करती है तथा झिझक विश्वासों में बदल जाते हैं। मौजूदा संचार क्षेत्र में प्रमुख संचार बाधाओं को पहचानने तथा उसी से निपटने के प्रयास किए जाने की आवश्यकता होती है।



हममें से बहुत से लोग अपनी भावनाओं को व्यक्त करने में संकोच करते हैं | अकथनीय भावनाओं से किसी को कुछ प्राप्य नहीं होता है | मैं कई माता – पिता को जानता हूँ जो अपने बच्चों को हृद से ज्यादा लाड़ – प्यार करने में संकोच करते हैं, सोचते हैं कि ऐसे भाव उन्हें नष्ट कर देंगे | अकथनीय भावनाओं से दुःख के आलावा और कुछ नहीं मिलता |

हममें से कईयों को दूसरों से सहयोग की उम्मीद होती है, किंतु साथ ही उनके विचारों का शायद ही कोई मोल करते हैं | वे सिर्फ 'जरूरत साधक हैं' और दूसरों को दबानेवाले होते हैं जिनको दूसरों की कैद आनंदित करती है | उस जगह से सहकारिता की उम्मीद नहीं की जा सकती, जहाँ पर सारा ध्यान आज़ादी की अपेक्षा कैद करने में होता है | आपसी सम्मान सहयोग की कुंजी है तथा ऐसा तभी संभव होगा जब लोग दूसरों को वैसे ही स्वीकार करेंगे जैसे कि वे हैं | दूसरों को वैसे ही स्वीकार करना बहुतों के लिए कठिन होता है | अत्यधिक उम्मीदों से लोग असंतुष्ट या निराश होते हैं।

एक सहकारी मानसिकता दूसरों को स्वीकार करने तथा सम्मान करने के लिए लोगों को तैयार करती है ताकि वे प्रतिकूल परिस्थितियों में भी कई संभावनाएँ पा सकें।

आइये देखें कि हम एक सहकारी मानसिकता को कैसे प्राप्त कर सकते हैं।

सहयोग बढ़ाने हेतु युक्तियाँ :

१. विश्वास कीजिए - हठ एक शक्ति नहीं, अपितु विकलांगता है।

मैंने कई तथाकथित ऊँचे घराने के लोगों को अपने चारों ओर आम लोगों की सहायता से परहेज करते देखा है | वे गलत तरीके से सोचते हैं कि आम लोगों के साथ सहयोग करने से उनकी छवि (झूठी छवि) छोटी हो जाती है | काफी हृद तक, उनमें से ज्यादातर यह मानते हैं कि 'घमंड', ऊँचे वर्ग की एक ज़रूरी गुणवत्ता है | वास्तव में, वे एक मूर्खता की दुनिया में रहते हैं। वे ऐसा मानते हैं कि दूसरों के साथ सामाजिककरण तथा सहयोग करना एक आसान काम है | किंतु सत्य इसका उल्टा है। इसमें बहुत सारे समझौते, उच्च सहनशीलता तथा महान पारस्परिक कौशल की आवश्यकता होती है | याद रखिए;

हठ, अंतर्मुखित होना तथा स्व-अलगाव और कुछ नहीं, केवल विकलांगता है।

२. अपनी स्वतंत्र उपलब्धियों को सूचीबद्ध करें।

जिन लोगों को दूसरों के साथ सहयोग करना कठिन लगता है, वे यह साधारण लेकिन प्रभावी चार-चरणीय व्यायाम कर सकते हैं।

चरण १

अपने जीवन में व्यक्तिगत उपलब्धियों की सूची बनाएँ। यह स्कूल या कॉलेज की परीक्षाओं में आपकी उपलब्धियाँ, खेलों की गतिविधियाँ, प्रेम में जीत, विवाह, जमीन की खरीदी, घर या आपकी पसंदीदा कार, किताबें लिखना या कोई अन्य वस्तु हो सकती हैं।

चरण २

अपने द्वारा प्राप्त की गई उपलब्धियों को उपरोक्त सूची से बिना किसी सहायता के अलग करें। संभवतः आपको इनमें से किसी की पहचान करना मुश्किल हो सकता है। चिंतित ना होइए; यह इंगित करता है कि आप अपने आकलन में ईमानदार हैं, क्योंकि शायद ही कोई व्यक्ति बिना किसी के समर्थन के कुछ हासिल कर सकता है।

चरण ३

अब उपरोक्त निविष्ट के साथ, प्रत्येक उपलब्धि के संबंध में एक पूरा अनुच्छेद निर्धारित करें:

मुझे - श्री /श्रीमती ----- द्वारा ----- प्राप्त करने के
लिए मदद मिली। उन्होंने / उन्होंने मेरे लिए -----
- किया तथा मैं श्री /श्रीमती ----- का आभारी हूँ।

(सुनिश्चित करें कि, आप प्रत्येक उपलब्धि के लिए समान वाक्यों को पूरा करते हैं जो आपको पहचानते हैं और उस व्यक्ति के नाम को याद रखते हैं जिसने आपको प्रत्येक मामले में आपकी मदद की और उस प्रकार की मदद के अनुसार विस्तारित किया।)

चरण ४

चरण ३ में किए गए प्रत्येक गद्य को कम से कम हर दिन में कुछ समय के लिए ज़ोर से पढ़ें, मुझे यकीन है कि आप अधिक आराम महसूस करेंगे तथा कृतज्ञता के बढ़ते दृष्टिकोण को देखेंगे। आप महसूस करेंगे कि आप उन समान लोगों या आस-पास के लोगों तक पहुँचे।

३. भूलने का अभ्यास करें।

लोग त्रुटियाँ, गलतियाँ और उल्लंघन करते हैं। उन्हें पूरी तरह से दूर करना कठिन है। चूँकि त्रुटियाँ, गलतियाँ तथा उल्लंघन; घटनाओं, परिस्थितियों एवं भावनाओं के उत्पाद हो सकते हैं तथा किसी के द्वारा भी दोहराया जा सकता है।

दूसरों की गलतियों को लंबे समय तक ध्यान में रखते हुए, उन्हें किसी भी आगे के सहयोग से अलग कर देना एक अस्थायी समाधान हो सकता है, किंतु स्थायी नहीं। इस तरह की प्रवृत्ति आत्म-विरंजन तथा अस्वीकृति के अलावा कुछ भी नहीं पाएगी। सहयोग को बढ़ाने के लिए, हमें लोगों को अपनी गलतियों के लिए क्षमा करने की कला का अभ्यास करना होगा।

क्षमा करना ना भूलें क्योंकि माफ करना महान हृदयों की गुणवत्ता है। वास्तव में, आप कब तक लोगों से नफरत कर सकते हैं? आप उनसे कितने समय तक अलग हो सकते हैं?

हमें नफरत और जुदाई के लिए समय बर्बाद कर, हमारे आशाजनक जीवनकाल को खराब नहीं करना चाहिए क्योंकि ज़िंदगी बहुत छोटी है। किसी भी समय हम जीवन के मंच से बाहर हो सकते हैं और एक पुनः प्रयास करना संभव नहीं हो सकता है।

नियंत्रण (स्व-नियंत्रण)

सफलता कभी दुर्घटना नहीं होती ...

सफलता हमेशा कड़ी मेहनत, समर्पण, प्रतिबद्धता, दृढ़ता, अनुकूलनशीलता, लचीलापन आदि का परिणाम होते हैं | वास्तव में, हर कोई अपने जीवन में सफल होना चाहता है तथा उनमें से अधिकतर लोग भी इसके लिए काम करने को तैयार होते हैं | तो फिर उन पर सफलता की बौछार क्यों नहीं हो रही है ?

आम तौर पर, हम अपने चारों ओर तीन प्रकार के लोगों को पा सकते हैं।

पहले के समूह में ऐसे लोगों का समूह शामिल होता है, जिन्होंने पहले ही अपनी ताकत (Strength), कमजोरी (Weakness), अवसर (Opportunities) , और धमकियों (Threats) “SWOT” की पहचान की है। वे जानते हैं कि वे कौन हैं तथा उन्हें अपने जीवन में किस चीज़ की ज़रूरत है | वे अपने जीवन के उद्देश्य से अवगत होते हैं तथा अपने परिवेश से कम प्रभावित होते हैं | वे किसी भी कारण के लिए दूसरों को कभी दोष नहीं देते हैं और हमेशा अपनी सफलता या विफलता की जिम्मेदारी लेते हैं |

वे हमेशा नए अवसरों और चुनौतियों की तलाश करते हैं | वे अनुशासन का सम्मान करते हैं तथा वे नियमित रूप से सफलता के लिए अपने स्वयं के मार्ग की निगरानी करते हैं। वे अपनी पगड़ंडी से सफलता की दिशा में विचलन करने से बचते हैं और वे दूसरे के अंतरण को भी अनुमति नहीं देते हैं। वे कभी भी दूसरों के ‘सुविधा चक्र’ में प्रवेश या उन्हें परेशान नहीं करते हैं | वे दूसरों से सहज दूरी बनाए रखते हैं तथा हर किसी के लिए एक विशिष्ट कक्षा की अनुमति देते हैं | वे आत्म-नियंत्रण बनाए रखते हैं तथा कभी दूसरों के ज़रूरत साधक नहीं बनते हैं |

वे खुद को नियमित रूप से अद्यतन करते हैं तथा परिवर्तनों की इच्छा दिखाते हैं। वे प्रतिकूल परिस्थितियों में संभावनाओं को देखने का रवैया अपनाते हैं। वे लोगों या घटनाओं के विषय में नहीं, व्यवस्था प्रणाली के विषय में बात करते हैं | वे आम तौर पर सफल हो जाते हैं।

लोगों का दूसरा समूह सबसे अधिक वंचित समूह है।

यह एक ऐसा समूह है, जिसमें उनकी ताकत, कमजोरी, अवसर और धमकियों (SWOT) की पहचान नहीं हुई है, यह उनकी तुच्छ शिक्षा, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक पृष्ठभूमि या संघ के कारण भी हो सकते हैं।

अधिकांश लोग यह मानते हैं कि सफलता भाग्य का मामला है तथा यह केवल कुछ लोगों के लिए संभव है। वे दूसरों को किसी भी चीज़ के लिए और हर बात के लिए दोष देते हैं तथा जीवन में अपनी असफलता की कोई ज़िम्मेदारी नहीं लेते हैं। वे हमेशा एक 'अच्छे समय' के आने के लिए इंतज़ार करते हैं, लेकिन वे उस अच्छे समय को बनाने के लिए कुछ भी नहीं करते। वे इसके लिए कुछ भी किए बिना चमत्कारों की अपेक्षा करते हैं।

वे एक उद्धारकर्ता स्वर्गदूत की प्रतीक्षा करते हैं जो उनका जीवन बदल सकते हैं तथा वे हमेशा अपने राजनैतिक या धार्मिक नेताओं में अपने उद्धारकर्ता स्वर्गदूतों को देखने की कोशिश करते हैं। वे नियमित नौकरी करना पसंद करते हैं तथा वे किसी भी बदलाव को बढ़ावा नहीं देते हैं।

वे अधिकतर लोगों के विषय में बात करते हैं, घटनाओं के विषय में कम कहते हैं तथा प्रणालियों के विषय में कभी नहीं। वे आम पुरुषों के समूह का निर्माण करते हैं।

तीसरे वर्ग के लोग सबसे दुर्भाग्यपूर्ण समूह बनाते हैं।

इस समूह के सदस्य अपनी ताकत, कमजोरियों, अवसरों और धमकियों (SWOT) को छोड़कर आंशिक रूप से कई चीजों को जानते हैं। वे उन तत्वों को पहचानने की आवश्यकता का सम्मान नहीं करते, जिससे वे सफल बनते हैं। वे खुद को अपने समाज में सबसे अधिक जानकार व्यक्ति मानते हैं। वे केवल बहस के लिए बहस करते हैं। वे हमेशा बिना किसी तैयारी के जनता में अपनी उपस्थिति को महसूस कराने की कोशिश करते हैं।

वे बुद्धिमान लोगों की सलाह की उपेक्षा करते हैं तथा साथ ही वे मीडिया और परिवेश के प्रभावों की अनुमति देते हैं। वे लोगों, घटनाओं और प्रणालियों को दोषी मानते हैं लेकिन उनके विकास के लिए कुछ भी नहीं करते। वे हमेशा दूसरों में ही गलती निकालते हैं। वे दूसरों को सलाह देते हैं, किंतु स्वयं के विकास के लिए कुछ भी नहीं करते हैं।

वे सदा दूसरों को परखते हैं, किंतु खुद के परखे जाने को बर्दाशत नहीं कर पाते हैं। वे नैतिकता का दावा करते हैं किंतु उसका अभ्यास नहीं करते। वे खुद को अद्यतन नहीं करते हैं तथा आत्म और अन्यों के लिए सीखने के अवसरों से इनकार करते हैं। उनके लिए, विकास योजनाएँ और प्रशिक्षण के अवसर केवल व्ययों की बात हैं और वे मानव क्षमताओं में विश्वास नहीं करते हैं। अधिकतर 'जरूरतमंदों' के रूप में कार्य करते हैं। उनके पास कोई आत्म-नियंत्रण नहीं है और वे खुद को सही साबित करने के लिए कुछ भी करते हैं। वे हमेशा दूसरों की टिप्पणी तथा उपहास करते हैं। वे दूसरों के सुविधा चक्र में प्रवेश तथा उन्हें

परेशान करते हैं और दूसरों के आत्मसम्मान को नष्ट करने का प्रयास करते हैं। सपनों के हत्यारे, अधिकांश इसी श्रेणी के होते हैं तथा वे सफलता के लिए मुख्य बाधक बनते हैं।

सफलता हासिल करने तथा जीवन में सफल होने के लिए, अपने आप पर नियंत्रण रखना आवश्यक है। लोगों को सफल बनाने में आत्म-नियंत्रण एक प्रमुख भूमिका निभाता है।

आत्म-नियंत्रण वाहन में ब्रेक के रूप में कार्य करता है तथा इसके बिना कोई भी वाहन अपने उद्देश्य की सेवा नहीं कर सकता है।

कई लोग नियंत्रण तथा अनुशासन की उपेक्षा करते हैं, क्योंकि उनका मानना है कि नियंत्रण और अनुशासन अवांछित होते हैं तथा उनसे बचना आना चाहिए। उनके लिए, नियंत्रण, प्रगति के लिए बाधा है और अनुशासन एक अवरोध। यह लोगों या व्यवस्था प्रणाली द्वारा लगाए गए नियंत्रणों के विषय में सच बताते हैं, किंतु आत्म-नियंत्रण में नहीं।

नियंत्रण तथा अनुशासन अपरिहार्य है क्योंकि यह लोगों को उनकी सफलता के सही रास्ते को पहचानने और उस पर आगे बढ़ने में मदद करता है।

ऐसे कुछ लोग हैं जो अपने जीवन में सही पथ को पहचानने के लिए पर्याप्त रूप से आशीष प्राप्त कर चुके हैं। लेकिन दुर्भाग्यवश, बाहरी कारणों और आत्म-नियंत्रण की कमी के कारण, वे सफलता के अपने सही रास्ते से भटक गए हैं तथा आसन्न पथ पर चले गए हैं, प्रभावों और प्रभुत्वों के पथ पर।

अपने गंतव्य पर समय पर पहुँचने के लिए सही रास्ते पर चलना आवश्यक है तथा उन पथों से मामूली विचलन से हमारे जीवन में प्रभाव पड़ सकते हैं। यह या तो सफलता को विलंब कर सकता है या इनकार कर सकता है।

सफलता (ट्रैक ए) के सही रास्ते पर आगे बढ़ने से ये निश्चित रूप से हमें गंतव्य तक ले जाएँगे, तथा इसकी सफलता पर संदेह करने के तब तक कोई कारण नहीं है जब तक कि कोई इसमें जान – बूझकर बाधा न डाले।

सफलता की ओर का पथ।

D(Track of dominance)	B(Track of influence)	A(Track of success)	C(Track of influence)	E(Track of dominance)

हम अपने गंतव्य का निर्णय तथा अपनी नियति का निर्माण कर सकते हैं तथा हम दूसरों की दया की दया का पात्र कभी नहीं बनेंगे। हम हमेशा दूसरों के लिए दृश्यत रहेंगे तथा कई लोगों के लिए खुद को एक आदर्श बनाएँगे। हमारी गतिविधियाँ हमें नेता बनाएँगी, अनुयायी नहीं।

इस पथ के लोग, हमेशा सुनिश्चित करेंगे कि वे सही रास्ते पर हैं और वे नवीनतम विकास तथा परिवर्तनों के साथ खुद को अद्यतन करते हैं। वे अवसरों पर कार्य करने के लिए और सफलता को स्वीकार करने के लिए भी तैयार होंगे। वे हमेशा अपनी कमजोरियों को अवसरों में परिवर्तित करने का प्रयास करते हैं तथा उन्हें कभी धमकियाँ बनने की अनुमति नहीं देते हैं। उन्हें विपत्तियों में भी संभावनाएँ मिलती हैं।

सही रास्ते पर चलते हुए बहुत कम प्रयास और संसाधनों की मांग होती है। यह पथों पर अवरोधों और आपत्तियों को कम कर देता है। किंतु कई लोगों को यह सत्य नहीं पता होता है तथा इस सच्चाई को एहसास ना करना, उन प्रमुख पागलपनों में से एक है, जिससे सुशिक्षित लोग भी पीड़ित होते हैं। सही रास्ते पर चलने से मानसिक तनाव कम हो जाता है और मन की शांति भी बढ़ जाती है। यह हमें अधिक स्पष्ट और आत्मविश्वासी बनाता है।

ट्रैक ए से 'प्रभाव' के पथ ट्रैक 'बी' या 'सी' में हटने की प्रवृत्ति, प्राकृतिक हो सकते हैं, किंतु यह निश्चित तौर पर सफलता में देरी कर सकती है और इन पथों पर स्थायी यात्रा द्वारा हमेशा के लिए सफलता का इनकार हो सकता है। ऐसे पथों से लौटने के लिए शीघ्र मान्यता तथा लगातार प्रयासों की आवश्यकता होती है। सबसे दुखद बात यह है कि बहुत से लोग अपने वर्तमान बंदी - स्थिति से अनजान होते हैं।

सफलता प्राप्त करने और बनाए रखने के लिए इस तरह के रास्तों से त्वरित अलगाव आवश्यक है। कभी-कभी इसके लिए एक सही सलाहकार भी चाहिए होता है। इसे सफलता के रास्ते (ट्रैक ए) पर वापस आने के लिए एक लक्ष्य आधारित प्रयास की

आवश्यकता है। ट्रैक ए को निरंतर रखने के लिए, नियमित रूप से सलाह और निगरानी की आवश्यकता होती है। महान सपने, आत्म-नियंत्रण और आत्मनिर्धारित लक्ष्य लोगों को सफलता के रास्ते पर रख सकते हैं।

ट्रैक ए से ट्रैक 'डी' या 'ई' के लिए कोई भी बड़ा विचलन सबसे अवांछनीय स्थिति के रूप में माना जा सकता है। इस रास्ते को 'प्रभुत्व का रास्ता' कहा जा सकता है, मीडिया, ड्रग्स, धर्म, राजनैतिक विचारधारा, निहित स्वार्थों आदि का प्रभुत्व। अधिकांश औसत दर्जे के लोग इस रास्ते पर होते हैं। वे पहले से ही अपने सही रास्ते से हट जाते हैं और उनकी किस्मत उन लोगों और उन परिवेश की दया पर होते हैं जिनके द्वारा वे शासित होते हैं। वे हमेशा संदेह करते हैं तथा लोगों के आस-पास के मार्गों पर गलती ढूँढ़ने की कोशिश करते हैं। वे ट्रैक ए पर लोगों को अपनी गरीबी और वर्तमान की दुःखद स्थिति का मुख्य कारण मानते हैं और ट्रैक डी और ई पर चलने वालों को ट्रैक ए की अपेक्षा अपना तथाकथित प्रेरणाश्रोत मानते हैं। वे ट्रैक ए के लोगों को शोषक, जमघट और निर्दयी लोगों के रूप में देखते हैं। वे अंधाधुंध अपने नेताओं पर भरोसा तथा उनका पालन करते हैं जिनका उनके साथ किसी भी तरह से कोई संबंध नहीं होता है।

वे अपने आसपास के मेहनती लोगों तथा श्रमिकों को गलत समझते हैं तथा उनके पीठ पीछे उनकी बुराई करते हैं। वे खुद को ऊपर उठाने की बजाय सफल लोगों को दबाने की कोशिश करते हैं। उनकी संख्याओं के कारण उनकी आवाजें कई लोगों द्वारा सुनाई देती हैं। वे बहुमत का प्रतिनिधित्व करते हैं।

मैं दोहराता हूँ कि सफलता कभी दुर्घटना नहीं होती है। सामान्यता से स्वतंत्रता को कभी भी निःशुल्क प्राप्त नहीं किया जा सकता। निरंतर आत्म-नियंत्रण के साथ सशक्त कठोर परिश्रम उसी को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है। हमें अपने विचारों, शब्दों और कार्यों में आत्म-नियंत्रण बनाए रखना चाहिए, क्योंकि

हमारे विचार हमारे शब्द हैं, शब्द हमारे कर्म हैं और हमारे कर्म हैं जो हम बन जाते हैं।

कोई भी लंबे समय तक अपने वास्तविक स्वभाव से भिन्न व्यवहार नहीं कर सकता है। जल्द या बाद में ही, सही चेहरे प्रकट हो ही जाते हैं।

सफलता या विफलता का स्तर और प्रभावकारिता, नियंत्रण के द्वारा तय किया जाता है, जो हम अपने जीवन में बनाए रखते हैं। यह हमारे संगति और विस्थापनों का

फैसला करता है | यह हमारी नियति की योजना बना सकता है | हमारे द्वारा किए गए नियंत्रण निश्चित रूप से हमारी पसंद और वादों को प्रभावित करते हैं | यह हमारे कार्यों या अकार्यों को तय करते हैं जो लाभ या हानि के आधार होते हैं |

एक व्यक्ति को आत्म-नियंत्रण या व्यवस्था प्रणाली या उसके परिवेश द्वारा लगाए गए नियंत्रणों को लागू करने के लिए पर्याप्त बुद्धिमान होना चाहिए | हमारे तुच्छ या शून्य निर्णय तथा परिस्थितियों का विश्लेषण नकारात्मक परिणाम भी उत्पन्न कर सकते हैं |

जहाँ 'ना' कहना चाहिए, वहाँ 'ना' कहने से कभी न डरें | याद रखें - हमारी अवांछनीय 'हाँ', आगे चलकर एक व्यापक नकारात्मक प्रभाव ला सकता है |

व्यवस्था प्रणाली या दूसरों द्वारा लगाए गए नियंत्रणों के मुकाबले आत्म नियंत्रण रखना बेहतर है |

आत्म-नियंत्रण की अनुपस्थिति दूसरों द्वारा नियंत्रित करने की अनुमति देता है।

जब दूसरों द्वारा लगाए गए नियंत्रण हमें नियंत्रित करना शुरू करते हैं, तो हम केवल उपकरण या पच्चर बन जाते हैं | दुर्भाग्यवश, इस तरह के औजारों और पच्चों के महत्व का एहसास तब होता है, जब व्यवधान होता है | अधिकतर इस तरह के पच्चर और उपकरण शायद ही मान्यता प्राप्त कर पाते हैं |

जब दूसरों द्वारा लगाए गए नियंत्रण हमें नियंत्रित करते हैं, तब हम खेल में पात्र बन कर रह जाते हैं, न कि निर्माता | उनके आंदोलनों की सीमा पूर्व निर्धारित होती है और वहाँ किसी विचलन की अनुमति नहीं होती है | उनका अस्तित्व ही पूरी तरह से उनके रचनाकारों की दया पर होता है |

लोगों के बीच एक गलत धारणा है कि नियंत्रण विकास को कम करता है | लोगों का हमारे समाज में नियंत्रण के खिलाफ होना आम बात है, और वे दूसरों को आज़ाद पंछी बनने की सलाह देते हैं | वास्तव में, आत्म-नियंत्रण के बिना कोई व्यक्ति, बिना नियंत्रण के पतंग के समान ही होता है |

आत्म-नियंत्रण की कमी कभी भी ताकत नहीं, किंतु कमजोरी होती है | यह इच्छा शक्ति की कमी तथा अक्षमता का दृश्यत संकेत होता है | इसका अंतिम परिणाम कभी भी होनहार और लंबे समय तक चलने वाला नहीं होता है |

हम अपने आत्म-नियंत्रण को बढ़ाने के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं | हमें बुद्धिमति से समृद्ध होना चाहिए |

अधमता आत्म-नियंत्रण को कम कर देती है और उछाल बढ़ा देती है।

अल्पावधि अस्थायी और क्षुल्लक लाभ देखने के बजाय, प्रत्येक को जीवन में बड़ी तस्वीर देखने में सक्षम होना चाहिए। कई क्षुद्र क्षणिक लाभ द्वारा निर्देशित होते हैं। वे उन लोगों के लिए कृतज्ञतापूर्वक व्यवहार करते हैं जिन्होंने उन्हें अपने अतीत में समर्थन दिया था। वे शीघ्र ही भावनात्मक हो जाते हैं तथा दूसरों पर कठोर भाषा का प्रयोग करते हैं और उनके साथ बनाए गए दीर्घकालिक संबंधों को खराब कर देते हैं। वे अपने माता-पिता के साथ मूर्खतापूर्ण क्षणभंगुर लाभ के बारे में भी बहस करने से पीछे नहीं हठते, वे 'विनम्र' होने का दिखावा करते हैं किंतु वे किसी का सम्मान नहीं करते।

उनका भावनिक दृष्टिकोण ही उनका मुख्य शत्रु होता है। अध्ययन बताते हैं कि उच्च स्तरीय सोच आत्म-नियंत्रण को बढ़ावा देती है।

जब लोग बगीचे को एक फूल से परे देखते हैं तो लोग आत्म-संयम का प्रयोग कर पाते हैं। स्व-नियंत्रण के लिए दीर्घकालिक लक्ष्य रखना आवश्यक है। जीवन में अल्पावधि के लक्ष्य वाले लोग विपरीत से अधिक भावुक लगते हैं।

लंबी अवधि की परियोजना पर काम करते समय हताशा से बचने, लक्ष्यों के लिए समय आधारित करना आवश्यक होता है ताकि प्रत्येक उपलब्धि आगे के प्रयासों के लिए समर्थक के रूप में कार्य करे तथा परिणामों के लिए यात्रा निराशाजनक न हो।

आत्म-नियंत्रण को प्राप्त करने के लिए कुछ हृदबंदी भी आवश्यक होते हैं,

- दवाइयों और शराब के प्रभाव से हृदबंदी,
- विषाक्त लोगों से हृदबंदी जो नकारात्मकता फैलाते हैं और
- मीडिया से हृदबंदी जो नफरत के अलावा और कुछ नहीं फैलाते हैं।

आत्म-नियंत्रण रखने के लिए आवेग प्रबंधन आवश्यक है। बिना आत्म-नियंत्रण वाले लोग बहस के लिए तर्क देते हैं। वे दूसरों से उत्पीड़न और नफरत के आलावा और कुछ भी नहीं कहते हैं। स्वयं को जानना, हमारी भावनाओं और आवेगों को प्रबंधित करने में मदद कर सकता है।

आत्म-प्राप्ति एक दुर्लभ उपहार है जो लोगों को आशीर्वाद के रूप में मिलता है। इसके लिए बहुत – से लोग प्रयास करते हैं तथा कुछ ही सफल होते हैं। आवश्यकता की भावना लोगों को आत्म-नियंत्रित बनाती है। यह उन्हें वहाँ शांत रखता है जहाँ ज़रूरी होता है तथा लोगों को वक्ताओं की तुलना में अधिक श्रोता बनाता है। यह उन्हें केंद्रित तथा

प्रतिबद्ध बनाता है | जब लोग आत्म-नियंत्रित हो जाते हैं, तब जीवन के प्रति उनका कुल परिप्रेक्ष्य बदल जाता है | यह हर तर्कवादी लोगों से आम बयान को स्वीकार करवाएगा |

"यदि आप सही हैं तो आपको बहस करने की ज़रूरत नहीं है और यदि आप गलत हैं, तो आपको बहस करने का अधिकार नहीं है।

परामर्श

जानकारी सफलता की कुंजी है।

परामर्श हर निर्णय निर्माता को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। परामर्श लोगों के बीच के अंतर को कम कर देता है। यह ज्ञान तथा सूचना के आदान-प्रदान के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है, तथा कर्मचारियों के बीच स्वामित्व और जिम्मेदारी की भावना पैदा करता है।

मैंने लोगों को अपने दुर्भाग्य तथा बारम्बार नुकसान के विषय में शिकायत करते हुए देखा है। बेशक, अधिकतर लोग ज़िंदगी में दोहराए गए नुकसान से निराश या हताश हो सकते हैं। जब खुद को दोबारा झटका पड़ता है तो उन्हें अपने ही भाग्य का अभिशाप करना काफी स्वाभाविक लगता है।

आम तौर पर लोग रोने के दौरान दो प्रकार के आसन दिखाते हैं। कुछ लोग अपनी छाती को बार-बार पीटते हैं तथा दूसरे अपने हाथों को ऊपर ईश्वर की ओर इशारा करते हुए ज़ोर – ज़ोर से रोते हैं।

एक कथन है, जो व्यक्ति हाथों को फैलाकर विलाप करता है, वही दूसरों की अपेक्षा सबसे पहले शांत हो जाता है। नित्यता से समाधान पूछने में हम बाहर जवाब ढूँढ़ने लगते हैं। यह लक्ष्य तक पहुँचने के लिए तब आवश्यक होता है, जब लक्ष्य बहुत दूर या अस्पष्ट होता है।

चलिए आगे बढ़ें, पूछें और कर दिखाएँ।

जीवन के सभी क्षेत्रों में समस्याएँ तथा मुद्दे आम होते हैं। इससे कोई भी मुक्त नहीं होता है। खोज हमें कुछ अलग करने की सोच देते हैं।

समाधान खोजने का सबसे अच्छा तरीका कुछ अलग सोचना है।

जब कोई समस्या या मुद्दा होता है, तो लोग इसे दो तरीकों से देखते हैं।

कुछ लोग विलाप कर सकते हैं तथा इसके साथ लंबे समय तक रह सकते हैं और सुधार कर सकते हैं। हालांकि, वे उन घटनाओं या स्थितियों को अभिशाप और दोष देते हैं, जो उन्हें मुद्दों या समस्याओं की ओर ले जाते हैं।

लोगों का दूसरा समूह समस्या से निपटने का कार्य करता है किंतु अलग तरीके से। वे खुद को पहले समस्याओं से मुक्त करते हैं तथा उनके दृष्टिकोण, स्थिति और लोगों के प्रति सहानुभूति से अधिक संवेदनशील होते हैं।

हालांकि समस्याएँ पहली श्रेणी के लोगों को चिंता करवाती है, समाधान या विकल्प दूसरे समूह को दिखाई देते हैं, जो मदद के लिए पूछने में कोई हिचकिचाहट नहीं दिखाते, क्योंकि वे हमेशा परामर्श तथा संभावनाओं में विश्वास करते हैं। औसत या असफल लोगों के विपरीत, वे स्वयं को सुझाव और सलाह के लिए खुले बनाते हैं तथा दूसरों की बात सुनने के लिए कोई झिझक नहीं दिखाते हैं और अन्यों के ज्ञान और अनुभव को स्वीकार और सम्मान करने के लिए तैयार होते हैं।

अधिकतर लोगों को अपनी अज्ञानता के विषय में जानने का डर होता है। कई मूल्यांकन तथा आलोचना से डरते हैं। वे कालग्रस्त के रूप में जाने जाना नहीं चाहते। उनमें से कुछ यह भी मानते हैं कि उनका ज्ञान सौ प्रतिशत है।

लोग परामर्श से नफरत करते हैं, जिसका कारण किसी विषय पर उनका अतिरिक्त ज्ञान नहीं किंतु अहंकार है। कुछ लोगों के लिए, यह जानना काफी असहनीय होता है कि, उनकी तुलना में दूसरों को अधिक जानकारी है।

बहुत से लोग दूसरों से सलाह लेने में संकोच करते हैं। कुछ लोगों को सब कुछ जानने की उम्मीद होती है तथा उनका मानना होता है कि, ज्ञान की कमी केवल एक विकलांगता है।

इस धरती में सभी नए मार्गों को जानने की अपेक्षा करना ही लालच है।

मैं कई उद्यमियों को जानता हूँ, जो स्वयं ही सब कुछ करने के लिए संघर्ष करते हैं। वे मूर्खतापूर्ण मामलों में अपने बहुमूल्य समय को नष्ट करते हैं, जो उनके विकास को धीमा करता है या पूरी तरह से अपने अंतिम लक्ष्य से विचलित करता है। उनमें से अधिकतर प्रकृति में पूर्णतावादी होते हैं। वे अपने लोगों की क्षमताओं के विषय में अनिश्चित होते हैं। उनके पिछले बुरे अनुभव, उनके प्रत्यायोजित करने की तुच्छ क्षमता एवं परामर्श की कमी के कारण हो सकते हैं।

जब परामर्श को बढ़ावा दिया जाता है, तो चीजें बहुत तेज़ी से प्राप्त की जा सकती हैं।

परामर्श अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को बढ़ावा देता है।

दूसरों के विचारों को सम्मान देना केवल महान दिलों द्वारा संभव होता है | दूसरों से परामर्श करने की इच्छा से निर्भयता तथा निस्वार्थता दिखाई देती है | परामर्श सहयोग हासिल करने में मदद करता है | याद रखिए,

सहयोग संस्थाओं को वास्तविक बनाती है।

परामर्श कई योजनाओं को बढ़ावा देता है तथा यह विचारों को प्रोत्साहित करता है | यह प्रतिकूल परिस्थितियों में भी संभावनाओं को प्रकट करता है | यह लोगों को सीमा से परे सोचने का अवसर देता है, बशर्ते यह सही लोगों के साथ किया जाए |

कौन – सी बात लोगों को परामर्श से संकोच कराती है ? यह उनका अहंकार, आत्मविश्वास की कमी, खराब संचार कौशल, असफलता का डर, भय, असुरक्षा की भावना, ज्ञान की कमी और परामर्श स्रोतों आदि हो सकते हैं |

परामर्श के लिए लोगों को चुनने हेतु किसी को बहुत बुद्धिमान होना चाहिए | विषाक्त लोग हर जगह होते हैं | उनके साथ बातचीत कभी - कभी हानिकारक भी हो सकते हैं | वे प्रारंभिक अवस्था में ही आत्मा और उत्साह को खराब कर सकते हैं |

चूँकि, उनके साथ संबद्धता, नकारात्मकता के अलावा कोई परिणाम प्राप्त नहीं कर सकते; तब उनके साथ सौदा करने का सबसे अच्छा तरीका मौन रहना ही है |

यह हर किसी की सहज गुणवत्ता या रुचि नहीं है जो सभी स्थितियों में दूसरों को प्रोत्साहित करता है | दूसरों से उसी की अपेक्षा करना भी उचित नहीं हो सकता | परामर्श केवल स्वस्थ और उत्पादक बनता है, जब इसमें शामिल दलों का इरादा स्पष्ट और निष्पक्ष होता है |

परामर्श का अर्थ केवल दूसरों से अनुकूल राय सुनने या प्राप्त करने के लिए नहीं होना चाहिए | मुझे पता है कि बहुत से लोग जो दूसरों के साथ उनके विचारों के समर्थन के लिए परामर्श करते हैं, किंतु वे तब निराश हो जाते हैं जब प्रतिक्रिया उनकी उम्मीदों से अलग ही होते हैं | इस तरह के परामर्श शायद ही कोई रचनात्मक परिणाम प्राप्त कर पाते हैं |

प्रत्येक को उतना धैर्यवान तो होना ही चाहिए कि वह अपनी राय से भिन्न राय सुन सके, चाहे वह कितना भी अरुचिकर क्यों न हो |

हम परामर्श को प्रभावी कैसे बना सकते हैं ? परामर्श को प्रभावी बनाने के लिए, किसी को परामर्श के इरादों से स्पष्ट होना चाहिए | एक अहंकारपूर्ण या मापने वाला

दृष्टिकोण अपेक्षा से अधिक प्रतिकूल परिणाम लाएगा | अपने आप को प्रस्तुत करने के लिए तैयार रहें क्योंकि

प्रस्तुत करना सीखने का प्रारंभिक चरण है।

किसी की अज्ञानता को स्वीकार करने से ना झिझकें, क्योंकि यह जानकार लोगों द्वारा ही संभव है।

अपने अच्छे के लिए आलोचनाओं का सामना करने से न डरें, क्योंकि यह हम पर लोगों का ध्यान होने का एक प्रमाण है।

मेरा विश्वास कीजिए, काम के होने के लिए हमेशा एक रास्ता होता है। मैंने कई युवाओं को उद्यमी बनने के लिए रुचि लेते हुए देखा है, किंतु उनमें से अधिकांश का मानना है कि वे पैसों की कमी के कारण अटक गए हैं। उनके अनुसार, धन उद्यमियों को बनाता है। किंतु सत्य पूरी तरह से अलग है।

वास्तव में, हमारे आसपास के लोग दूसरों की मदद करने के लिए तैयार होते हैं। सवाल यह है कि हममें से कितने लोगों ने उनसे मदद माँगी? हमारे आसपास कई लोग हैं, जो रचनात्मक विचारों में निवेश करने को तैयार हैं। किंतु हममें से कितने लोग दूसरों के लिए ऐसा दृष्टिकोण रखते हैं। लोग बिना किसी कारणों के इसे असंभव समझ लेते हैं। इनकार किए बिना, वे इनकार करते हैं। अस्वीकार किए बिना, वे अस्वीकृति की उम्मीद करते हैं। उनकी धारणा उनके मार्गदर्शक कारक होते हैं।

जब आप संदेह में हों, तो परामर्श करने से ना झिझकें। जब आप परेशान हो जाते हैं, तो मदद माँगना ना भूलें तथा जब आप थके हुए होते हैं, तो सहायता लेने से न झिझकें। क्योंकि किसे पता कि, आप सफलता और असफलता के बीच वाली पतली रेखा पर हो या आगे हो। एक साधारण बढ़ावा आपको सफल बनाने के लिए पर्याप्त हो सकता है।

स्थिरता

इस दुनिया में कई आकर्षक तथा विचलित करने वाली चीजें हैं, जो सफलता के प्रति हमारे प्रयास से हमें हटाते हैं। कई विवाहित जोड़े अलग होते हैं, 'लिव - इन' रिश्टें असफल होते हैं, बिना किसी पूर्व सूचना के कर्मचारी संगठनों को छोड़ देते हैं, शोध तथा प्रयासों को बीच में ही छोड़ देते हैं, शुरू होने से पहले ही परियोजनाओं को छोड़ देते हैं और कई उद्यमी प्रयास आधे रास्ते में त्यजित हो जाते हैं, बिक्री कर्मी संभावित ग्राहकों के दरवाजे पर दस्तक देने से पहले मुड़ जाते हैं तथा छात्र अपनी पढ़ाई को बीच में ही छोड़ देते हैं।

बहुत से लोगों को अंत तक किसी चीज़ में बने रहना कठिन लगता है। ऐसा क्यों है? लोगों ने अपने प्रयासों को बीच में क्यों छोड़ दिया? कारण कई हो सकते हैं। हार मानने वालों के कई कारण होते हैं तथा उनके ऐसा करने के समर्थन में कई तर्क हो सकते हैं। वे हर जगह विपत्तियाँ पाते हैं तथा हार मान लेने के लिए अपनी कई प्राथमिकताओं और कई चीजों पर अपने ध्यान के केन्द्रित होने के प्रभाव को स्वीकार करने के लिए नाखुश होते हैं।

लोगों को स्थिरता की कमी होती है - सपनों, विश्वासों, प्रतिबद्धताओं, प्रयासों तथा विश्वास में स्थिरता।

संगतता सबसे प्रशंसनीय गुणों में से एक है, जो सफल लोग अपने जीवन में बनाए रखते हैं।

कुछ शुरू करना और किसी की शुरूआत करना बहुतों के लिए संभव होता है, किंतु अंत तक उन

प्रयासों में निरंतरता बनाए रखना चुनौती का विषय है। इसमें बहुत धीरज और प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है। जब आपत्तियाँ सफलता के मार्ग पर लगातार रूकावट बनती हैं, तो लोग या तो अपने प्रयासों को गिरते हैं या उससे भटक जाते हैं। निरंतरता का अभाव विफलता को दोहराता है तथा ऐसी विफलता उनकी वास्तविकता बन जाती है।

लोग अपने विचारों तथा कर्मों से दूसरों को धोखा क्यों देते हैं? उनमें से अधिकांश, कई प्राथमिकताओं तथा अपने ध्यान का कई जगहों पर केंद्रित होने का शिकार होते हैं। कई प्राथमिकताओं और कई बातों पर ध्यान केंद्रित होने से लोगों का किसी एक चीज़ पर ध्यान केन्द्रित नहीं हो सकता तथा परिणाम कभी विफलता से अलग नहीं होगा।

अधिक मात्रा में कर्मचारियों का आवाजाही इन दिनों अधिकतर संगठनों के साथ सबसे बड़ी चिंताओं में से एक है। लोग विभिन्न कारणों से अपने संगठनों को छोड़ देते हैं।

उनकी अधिकांश समस्याएँ लगभग आम होती हैं - एक निषुर मालिक, प्रबंधकों द्वारा रौब जमाना, लक्ष्य, शिफ्ट ड्यूटियाँ, अल्प वेतन, आदि, समस्याएँ कभी समाप्त नहीं होती हैं। किंतु असली कारण उनकी योजनाओं से पूरी तरह अलग हो सकते हैं।

शोधों से पता चलता है कि ऐसे लोगों की स्थिरता की कमी होती है। उनमें से अधिकांश अपने करियर में कहीं भी नहीं पहुँचते हैं। वे अपने संगठन को बेहतर उत्पाद, व्यवस्था प्रणाली और लोगों की तलाश में बदलते रहते हैं।

उनमें से अधिकांश यह सोचते हैं कि उनके लिए तय किए गए क्षेत्र उनके वर्तमान स्थान से बाहर है। वे अपने अनुग्रहों को बिना महसूस किए, शांति और सुरक्षा के लिए भटकते रहते हैं।

असुरक्षा की भावना स्वरचित तथा अतिरंजित होती है।

वास्तव में, कोई भी नई जमीन, हमारी सर्वोच्च वस्तुओं को हमसे छीने बिना हमें कुछ नहीं दे सकता। यह हमारे परिवार, दोस्त, बचपन की यादें आदि हो सकते हैं।

जिन लोगों में स्थिरता की कमी होती है, वे समाधान की तुलना में कारणों की तलाश करते रहते हैं। जब उनके प्रदर्शन पर सवाल उठाए जाते हैं, तो वे दूसरे की सफलता का कारण बताते हैं, किंतु अपनी असफलता के कारणों को नहीं बताते। वे उनसे सीखने के बजाय दूसरों को दोष देने के कारणों का पुनः आविष्कार करने का प्रयास करते हैं।

उनके पास किसी भी चीज़ का कोई स्थायी राय नहीं होता है। उनके विचार अधिक समयोचित तथा बहुमत के पक्ष में इसके नैतिक आधार के बावजूद होते हैं।

सुसंगतता की कमी वाले लोग किसी के लिए भी उपयोक्त नहीं होते, यहाँ तक कि खुद के लिए

भी नहीं। उनके साथ कोई भी यात्रा बहुत जोखिम भरा होगा और वे किसी को भी मध्यस्थता के क्षेत्र के अलावा कहीं और नहीं ले जाएँगे।

सहानुभूति से भरे हुए एक कमजोर नेता के साथ काम करने की अपेक्षा एक मजबूत नेता के अधीन सेवा करना हमेशा बेहतर होता है, क्योंकि कठिन नेता की भावनात्मक कार्यवाही दूसरे की सहानुभूति की तुलना में कई बार सुरक्षात्मक होते हैं।

कई प्राथमिकताओं तथा कई चीज़ों पर ध्यान केन्द्रित होने से लोग अपने लक्ष्य से हट जाते हैं।

कर्द्द प्राथमिकताएँ जीवन को मायूस कर देते हैं।

कोई भी एक समय में दो मालिकों की सेवा नहीं कर सकता है। एक ही समय में दो चीजों को करना कठिन होता है। मैं मानता हूँ कि गाड़ी चलाते समय लोग बात करते हैं या खाते हैं, किंतु क्या आप सोच सकते हैं कि ये कौशल उनके गाड़ी चालक होने के पहले दिन ही अधिग्रहण किया गया था?

एक ही समय में कर्द्द कार्य करने के लिए बहुत सारे प्रयासों और अभ्यासों की आवश्यकता होती है। कभी-कभी, यह जीवन के लंबे प्रयासों का परिणाम भी हो सकता है। यह और कुछ भी नहीं, किंतु स्थिरता का परिणाम है।

मुख्य लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करना एक आसान या हर किसी के बस का काम नहीं है। इसके लिए बहुत सारी दृढ़ता और प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है। दृष्टिकोण में संगत होना तभी संभव है, जब कोई व्यक्ति अपनी कार्यवाही के कारणों के साथ आश्वस्त होता है। हममें से कर्द्द बिना कारण जाने ही कार्य करते हैं। बहुत से लोगों का मार्गदर्शन मोहक, हठ, और उछाल द्वारा होता है, न कि असली उद्देश्यों द्वारा।

जब प्रयोजनों की स्पष्टता के बिना प्रयास किए जाते हैं, तो कार्य कठिन, अरोचक तथा बिना परिणामस्वरूप के हो जाते हैं। किसी को उन उद्देश्यों को पहचानने, सम्मानित करने और समर्थन करने में सक्षम होना चाहिए। लोग परिणाम की खोज करते हैं, कभी-कभी शीघ्र परिणाम की। बेशक, हर चीज़ के लिए एक गर्भावस्था अवधि होती है, तथा एक गर्भावस्था की अति लंबी अवधि एक ही समय में, बच्चे और माँ दोनों के लिए हानिकारक हो सकते हैं।

चिंता और असफलता का भय हमें अपने लक्ष्य से भटका देता है। हमारे जीवन में अधिकांश चिंताएँ निराधार होती हैं तथा हम उन्हीं मुद्दों को सुलझाने में अपना सारा समय बर्बाद कर देते हैं, जो हमारे नियंत्रणों से भी परे होता है।

जब चिंताएँ हमें पीड़ा देती हैं, तो हमें तीन प्रश्न पूछने का अभ्यास करना चाहिए।

क्या यह एक वास्तविक समस्या है या सिर्फ एक डर है? - यदि आपको लगता है, कि यह एक वास्तविक समस्या नहीं है या सिर्फ एक डर है, तो इसे अनदेखा कर दीजिए।

हालांकि, अगर आपको लगता है कि यह एक वास्तविक समस्या है, तो स्वयं से दोबारा पूछें,

क्या मैं इसके लिए कुछ कर सकता हूँ ? - यदि आपको लगता है कि 'हाँ' कर सकते हो, तो इसे तुरंत ही करें | अगर आपको लगता है कि आप इसके लिए कुछ नहीं कर सकते हैं, शायद यह एक दिक्कत नहीं होगी या यह तुरंत आपको प्रभावित नहीं करेगा, इसका मतलब आपको निवारक उपाय देखने के लिए अधिक अवसर मिल रहे हैं |

अंत में अपने आप से पूछिए, "क्या मेरी कार्यवाही या निष्क्रियता, सकारात्मक या नकारात्मक रूप से मुझे या किसी और को भी प्रभावित करेगा ? यदि आपको लगता है कि परिणाम सकारात्मक होने वाले हैं, तो खुश रहें तथा आनंद उठाएँ, तथा यदि कोई नकारात्मक परिणाम अपेक्षित होते हैं तो ऐसा करने से बचें |

हमारे अधिकतर निर्णय हमारे आसपास के लोगों द्वारा प्रभावित होते हैं | हालांकि, हमें दूसरों के हस्तक्षेप के लिए उनको दोष देने का कोई अधिकार नहीं है क्योंकि उनमें से अधिकतर हमारी चर्चा के लिए आक्रामक नहीं होते हैं किंतु हमारे निर्णय लेने की प्रक्रिया में आमंत्रित होते हैं |

हम जाने - अनजाने में लोगों को अपने विचारों या कार्यों को प्रभावित करने के लिए आमंत्रित कर देते हैं, चर्चा करते हैं या अनुमति देते हैं और धीरे-धीरे उनके प्रभाव हमारे मुख्य लक्ष्य पर प्राथमिकता प्राप्त कर लेते हैं तथा हम अपने उद्देश्य से हट जाते हैं |

स्थिरता अवसर प्रदान करता है।

सफलता कई नित्य प्रक्रियाओं का परिणाम है | असंगत लोग उपरोक्त प्रक्रिया के दौरान कई संभावनाएँ नहीं देख पाते हैं | वास्तव में, हम बहुत सारी संभावनाओं से घिरे हुए हैं | प्रतिकूल परिस्थितियों में उन संभावनाओं को देखने में प्रत्येक को माहिर होना चाहिए | कठिनाइयाँ स्वयं ही संभावनाओं का प्रमाण है क्योंकि कोई भी सीमा की दीवारें बंजर भूमि के लिए नहीं बल्कि उपयोगी भूमि के लिए बनाता है |

प्रयासों में स्थिरता परिणाम लाते हैं | अधिकांश समय में सामान्य लोग अपने प्रयासों के परिणाम निकलने के कुछ ही मिनटों या घंटों पहले ही उसे छोड़ देते हैं | जब विफलताओं के पुनः आघात होते हैं, तब वे अपना आत्मविश्वास खो देते हैं |

यह ध्यान देने की दुखद बात है कि लोग दूसरों पर भरोसा करते हैं किंतु स्वयं पर नहीं | लोग दूसरों के काम पर भरोसा करते हैं किंतु आत्म-प्रयासों पर नहीं | लोग अन्य की उपलब्धियों की प्रशंसा करते हैं, किंतु आत्म-निर्मित लाभ का नहीं |

लोग उसमें अच्छी किस्मत की उम्मीद करते हैं जिसमें उन्होंने कुछ भी नहीं किया होता है, बल्कि उनके लगातार प्रयासों पर कभी भी ऐसा नहीं किया, जिसके लिए उन्होंने इतना परिश्रम किया था।

एक सफल व्यक्ति बनने के लिए, किसी को प्रतिबद्ध होना चाहिए, विस्तार पर ध्यान देना चाहिए तथा अपने मूल लक्ष्यों पर केंद्रित रहना चाहिए। दिशा की दृढ़ भावना के बिना, लक्ष्य धुंधले हो जाते हैं, तथा धीरे - धीरे लेकिन निश्चित रूप से, लोग अपनी गति को खो देते हैं।

असंगत पैंतरेबाजी जहाज को डुबा सकती है।

स्थिरता हमें कई तरीके से लाभ दिला सकती है:

स्थिरता हमें सफलता का मार्ग दिखा सकती है। प्रत्येक को अपने जीवन की यात्रा की पूरी सनदी योजना होने की आवश्यकता नहीं होती तथा यह संभवतः संभव भी नहीं है। फिर भी, प्रत्येक को इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि वह 'किस' ओर बढ़ रहा है।

निरंतरता हमें अनुशासित बनाता है। यह हमें उदाहरण द्वारा नेतृत्व करने में सक्षम करेगा। प्रत्येक दिन सामान्तर प्रयासों से, हम आम लक्ष्यों के लिए काम करने में दूसरों को भी मनाने में सक्षम होते हैं। एक अनुशासित नेता हमेशा दूसरों को अपने नवशोकदम पर चलने के लिए प्रेरित करता है तथा स्थिरता लोगों को सुरक्षित और संतुष्ट महसूस कराती है।

कई लोग स्थिरता तथा कठोरता के बीच भ्रमित होते हैं। लचीलापन सफलता का एक अनिवार्य तत्व है। कई लोगों को यह पता नहीं चलता है कि निरंतरता तभी संभव होती है, जब कुछ लचीलेपन की अनुमति होती है। अन्यथा, प्रतिकूल परिस्थितियों में से बचना कठिन हो जाएगा।

अनम्य वृक्ष हवा से आसानी से टूट सकते हैं।

पुराने विचारों पर पकड़ रखकर, उन्हीं चीजों को बार-बार दोहराना और एक ही स्वरूप का पालन करना सामान्य रूप से निरंतरता के संकेत के रूप में माना जाता है। वास्तव में, ऐसा नहीं है। उन कार्यवाहियों का कभी अनुपालन नहीं किया जा सकता तथा वे केवल हमें अपने लक्ष्यों से ही पीछे खींच सकता है। सफल लोग हमेशा जीवन की प्रक्रिया को अपने तरीके से और अपने समय में प्रकट करने की अनुमति देते हैं।

मानसिक लचीलापन सफलता की कुंजी है।

हम लचीलेपन तथा स्थिरता में कैसे अंतर करते हैं ? लचीलापन लोगों को अपने स्रोतों की अपेक्षा किए बिना किसी भी नई संभावनाओं तथा विचारों में खुलने के लिए प्रोत्साहित करता है, जबकि स्थिरता उसे खुलने के लिए तभी अनुमति देती है जब स्रोत विश्वासप्रद होते हैं ।

स्थिरता में प्रयास सफलता की कुंजी है ।

सफलता के लिए एक अनन्त खोज ही हमें दृष्टिकोण में स्थिरता बनाए रखने में मदद कर सकती है । एक अनन्त खोज तभी संभव होती है, जब वहाँ कई ध्यान केन्द्रित करने वाली चीजें या प्राथमिकताएँ नहीं होती ।

किसी प्रयास को शीघ्र छोड़ना काफी आसान, और सरल होता है । किंतु ऐसे छोड़ने के बाद के परिणाम से उतनी आसानी, सरलता या तेजी से नहीं गुजर सकते ।

आम लोग प्रयास करना तब छोड़ देते हैं, जब परिणाम विलंब या अस्वीकार हो जाते हैं । किंतु सफलता साधक अपने प्रयासों को जारी रखते हैं । वे हमेशा विकल्पों में विश्वास करते हैं । जब उनके मार्ग अवरुद्ध हो जाते हैं, वे स्थानांतरित को खोजते और पा लेते हैं । हर चीज़ के लिए हमेशा एक वैकल्पिक तरीका होता है ।

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है कि, आज..... कल की प्रगति है, आज हम जो भी अनुभव करते हैं वह हमारे द्वारा किए गए फैसले या पिछले दिनों में किए गए चूक या स्वीकृति के परिणाम का उत्पाद होता है ।

दिलचस्प तथ्य यह है कि आम लोगों की यह आदत होती है कि उस कार्य के लिए जिसके लिए उन्होंने कुछ कार्य पहले से ही शुरू कर दिए हैं, उसकी उपलब्धि की आशा रखने की बजाय वह उस चीज़ से परिणाम की उम्मीद करते हैं, जिसके लिए उन्होंने कभी कोशिश ही नहीं की होती या किसी भी कार्यवाही की शुरुआत ही नहीं की होती है ।

हालांकि, यह दुर्भाग्यपूर्ण बात ध्यान देने की है कि अधिकतर हार मानने वाले आरंभकर्ता भी थे । उन्होंने अपने जीवन में कुछ नया शुरू करने की भावना रखी । वे अपने जीवन या कार्यों में परिवर्तनों को आमंत्रित, स्वीकार, सम्मान और पालन करने के लिए तैयार थे । वे नए विचारों को समायोजित करने और पोषण करने के लिए तैयार थे तथा उनमें से अधिकांश परिवर्तनों के लिए भी ग्रहणशील थे । ...

अधिकांश हार मानने वाले लोगों में आशा और आत्मविश्वास का अभाव था । वे अपने उद्देश्य और अभियान के विषय में शंकित थे ।

उनमें से कईयों ने विश्वास तथा आत्मविश्वास के बिना ही प्रयास किए।
अधिकांश लोग अपने जीवन में असफल रहे क्योंकि ...

... उन्होंने सपने के बजाय छोड़ने का विकल्प चुना क्योंकि उन्हें लगा कि उनके सपने कभी पूरे नहीं होंगे।

... उन्होंने विश्वास करने के बजाय छोड़ने का विकल्प चुना क्योंकि अनुभव के बिना विश्वास उनके लिए मुश्किल था।

... उन्होंने नदी को पार करने की बजाय छोड़ने का विकल्प चुना क्योंकि वे बीच में झूबने की आशंका रखते थे।

... उन्होंने सहयोगी होने की बजाय छोड़ने का विकल्प चुना क्योंकि वे संदिग्ध थे।

... उन्होंने बुवाई की बजाय छोड़ने का विकल्प चुना क्योंकि उन्हें 'अप्रत्याशित' की उम्मीद थी।

... उन्होंने इंतजार की बजाय छोड़ने का विकल्प चुना क्योंकि वे धैर्य खो चुके थे।

... उन्होंने ध्यान देने की बजाय छोड़ने का विकल्प चुना क्योंकि उनमें दृढ़ संकल्प और समर्पण की कमी थी।

... उन्होंने समस्याओं को हल करने की बजाय छोड़ने का विकल्प चुना क्योंकि वे समझौता करने के लिए तैयार नहीं थे।

... उन्होंने कोशिश करने के बजाय छोड़ने का विकल्प चुना क्योंकि वे दर्द लेने के लिए तैयार नहीं थे।

... अंत में, उन्होंने छोड़ने का विकल्प चुना ... क्योंकि छोड़ना कम थकाऊ और कम दर्दनाक था।

अपने प्रयासों के लिए कुछ परिणामों की अपेक्षा करना, कोई अपराध या अनुचित दृष्टिकोण नहीं है। साथ ही, हमें सार्वभौमिक सत्य को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए कि, सब कुछ के लिए एक गर्भावस्था अवधि होती है और हमें गर्भावस्था की अवधि के रूप में उचित समय का सम्मान करने की आवश्यकता होती है। गर्भावस्था अवधि को निष्क्रिय चरण के रूप में नहीं बल्कि तैयारी चरण के रूप में मानना चाहिए।

हम एक ही दिन में कुछ महान हासिल करने की उम्मीद नहीं कर सकते हैं। केवल प्रतिबद्ध प्रयासों और कड़ी मेहनत के माध्यम से किसी चीज़ का वास्तविक महत्व हासिल किया जा सकता है। रोम, उसकी सुंदर इमारतों, उद्यानों, बागानों और फव्वारे के साथ वास्तुशिल्प सुंदरता रात भर में नहीं बनी थी। निर्माण को पूरा करने के लिए कई दासों के दर्द और श्रम लगे थे। हर सफलता के पीछे, कड़ी मेहनत का एक बड़ा हाथ होता है। सफलता के लिए एक मजबूत इच्छा और तलाश की आवश्यकता होती है।

भले ही हम पहले या बाद में भुगतान करते हैं, इस दुनिया में कुछ भी मुफ्त में नहीं होता है।

मधुमक्खी का एक हावड़ा लगभग ५५,००० मील उड़ता है और २ मिलियन फूलों का दौरा केवल आधे सेर शहद का उत्पादन करने के लिए ही करता है। कोई भी सार्थक कार्य, वास्तव में कभी इतना आसान नहीं हो सकता है।

यह आवश्यक नहीं है कि हमारे सभी प्रयासों से हमें अपेक्षित परिणाम प्राप्त हो। जब हम बीज बोते हैं, तो कुछ अंकुरित हो सकते हैं, कुछ बढ़ सकते हैं तथा कुछ नष्ट हो सकते हैं। किंतु महत्वाकांक्षी किसान कभी भी बुवाई बंद नहीं करता है।

जब कष्ट बढ़ जाते हैं, तब लोग अपने प्रयासों को त्याग देते हैं तथा प्रयास से अधिक उसे छोड़ देने में आराम पाते हैं।

प्रयासों को छोड़ना, लोगों को उपलब्धियों के क्षेत्र की अपेक्षा प्रतिकूल परिस्थितियों की ओर ले जाता है। हमारे प्रयासों के संदर्भ में हमें एक सुसंगत दृष्टिकोण होना चाहिए।

हम अपने दृष्टिकोण में निरंतरता कैसे प्राप्त कर सकते हैं? दृष्टिकोण में स्थिरता केवल तभी संभव है जब हम घुसपैठ से इनकार करते हैं - परिस्थितियों, लोगों और घटनाओं के भावनात्मक और अन्य प्रभावों का घुसपैठ। जब परिस्थितियों, लोगों और घटनाओं ने हमारे फैसलों या कार्यों को प्रभावित करना शुरू कर दिया, तो खुद को उचित मार्ग पर रखना कठिन होता है।

हमें सीमा परिभाषित करने की आवश्यकता है। हमें इस बात का आश्वस्त होना चाहिए कि किस हद तक हम दूसरे की राय पर प्रभाव डाल सकते हैं। दूसरों के इरादे का न्याय करने के लिए पर्याप्त बुद्धिमान होना चाहिए। लोग जाने - अनजाने में दूसरों को विफल कर देते हैं। उनमें से अधिकतर ऐसा अनजाने में कर लेते हैं। यहाँ तक कि वे किसी और के जाने - अनजाने कार्यों के भी शिकार हुए होते हैं।

स्थिरता हमेशा नियंत्रण का संकेत होती है। स्थिरता प्राप्त करने के लिए, अपने जीवन पर पूर्ण नियंत्रण होना चाहिए और यह केवल तभी संभव होगा जब वे जीवन में अपने उद्देश्य के बारे में स्पष्ट होंगे।

हमारे विशेष कार्यों के भिन्न होने पर हम एक आम दृष्टिकोण कैसे प्राप्त कर सकते हैं? दृष्टिकोण में स्थिरता बनाए रखने के लिए, लोगों को 'जरूरतों' और 'चाहत' के बीच

अंतर करने में सक्षम होना चाहिए | ज़रूरतों के साथ समझौता करना कठिन हो सकता है | प्रतिकूल परिस्थितियों में लोग अपनी आवश्यकताओं की खोज करते हैं | वे अपनी उपलब्धि के लिए अपने जीवन को खतरे में डालने के लिए भी नहीं सोचते हैं और यही कारण है कि जब कफ्फू घंटों में छूट मिलती है, तब ही लोग अपनी ज़रूरत की चीजें जुटाने के लिए अपने घरों से बाहर निकलते हैं |

एक हद तक, आम लोग अपनी इच्छाओं से समझौता करने के लिए तैयार रहते हैं और यही कारण है कि उनमें से अधिकांश अपने पूरे जीवन में उसे प्राप्त नहीं कर पाते हैं | जब तक हम अपनी इच्छाओं को अपनी ज़रूरतों में परिवर्तित नहीं करते, तब तक सफलता अविश्वसनीय रहती है |

जब इच्छाएँ ज़रूरतों में बदल जाती हैं, तब कोई उससे पीछे तब तक नहीं हट सकता, जब तक कि वह हासिल न हो जाए | जब इच्छाएँ ज़रूरतों में बदल जाती हैं, तब स्थिरता का आश्वासन पक्का हो जाता है | जब तक हम अपनी ज़रूरतों को प्राप्त नहीं कर लेते, तब तक हमें नीद नहीं आती है | यह हमें लगातार सुधार के लिए गति देता रहेगा |

विश्वास (आत्मविश्वास)

प्रतिकूल परिस्थितियों में भी लोग कैसे जीवित रहते हैं ? यह कुछ भी नहीं है, किंतु उनका आत्मविश्वास है | आत्मविश्वास, अपने जीवन में लोगों को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है | सफल होने के लिए कई अच्छे गुण रखने के बावजूद भी, हमारे चारों ओर बहुत से लोगों में आत्मविश्वास की कमी के कारण, उन्हें संबंधित क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त करने में कठिनाई होती है।

कौन - सी चीज़ लोगों को अपने जीवन में परिवर्तन का आरंभ करने से दूर रखती है ? उन्हें अभिनव होने से क्या रोकता है ? वह क्या है जिससे लोग अपने उद्यमी प्रयासों को छोड़ देते हैं ? - यह निस्संदेह कुछ भी नहीं, किंतु आत्मविश्वास की कमी है |

बुनियादी नौसैनिक प्रशिक्षण के दौरान, तैराकी वर्ग सभी गैर-तैराकों के लिए अनिवार्य था | एक गैर तैराक होने के नाते, यह मेरे लिए बहुत कठिन था | चूँकि तैराकी परीक्षा को पार किए बिना अंतिम सफलता कठिन थी, इसलिए हम अतिरिक्त तैराकी कक्षाओं में भाग लेते थे |

मुझे अभी भी याद है, हमारे कोचिंग सत्र के दौरान, हमारे कोच हिंदी में एक कहावत के साथ हमारा दैनिक सत्र शुरू करते थे, "जो डर गया, वो मर गया," जिसका अर्थ है, " हमारा डर ही हमें खत्म कर सकता है |"

आत्मविश्वास लोगों को अपने जीवन में किसी भी चुनौती को स्वीकार करने में सक्षम बनाता है और वे जोखिमों को लेने से भी पीछे नहीं हठते | वे वास्तव में मार्क जकरबर्ग के कथन पर विश्वास करते हैं कि, " कोई जोखिम ही नहीं लेना सबसे बड़ा खतरा है " |

आत्मविश्वास वाले लोग अपने जीवन में अनुसंधान करने से कभी संकोच नहीं करते हैं | वे जानते हैं कि उनका जीवन ही एक अनुसंधान है | वे डर और प्रतिरोध के बिना ही चुनौतियों का सामना करते हैं | वे प्रतिकूलता के बीच संभावनाओं को देखते हैं |

आत्मविश्वास वाले लोग, अवसर बनाते हैं खोजते नहीं |

वे भविष्य का सपना देखते हैं किंतु वर्तमान में ही जीते हैं | उनके लिए, पृथकी पर हर बिंदु सफलता की अपनी लंबी यात्रा का प्रारंभिक बिंदु है | वे लोगों पर भरोसा करते हैं किंतु उन पर निर्भर नहीं रहते |

जब आत्मविश्वासी लोग समस्याओं की अपेक्षा हमेशा समाधान ही देखते हैं, तथा प्रतिकूल परिस्थितियों में भी हर संभावना को देखते हैं, तब आत्मविश्वास की कमी वाले लोग केवल समस्याओं को ही देखते हैं, समाधान को नहीं, तथा अपनी विफलता के लिए दूसरों को दोष देते हैं। वे अपने प्रयासों में हर प्रतिकूलता की आशा करते हैं। उनके लिए, हर नई पहल कठिनाइयों की शुरुआत है। हर नया उद्यम एक कर्ज उठाने का प्रयास है। उनकी चर्चाओं के मुद्दे प्रतिकूल परिस्थितियों और बाधाओं के आसपास केंद्रित होते हैं, संभावनाओं पर नहीं।

अधिकांश असुरक्षित लोगों का मानना है कि उन्हें सब पता है। वे करोड़पतियों से नफरत करते हैं तथा उनकी बुराई करते हैं, किंतु अपने अंतर्मन से उन्हीं के जैसा बनना चाहते हैं। वे नेताओं की तुलना में अधिक अनुयायी होते हैं और बुरा दृष्टिकोण बनाए रखते हैं। वे लोगों, संगठन, तथा व्यवस्था प्रणाली की भी बुराई करते हैं। वे अच्छे इरादों पर संदेह करते हैं और उनके दृष्टिकोण में अधिक न्यायपूर्ण होते हैं। वे दूसरों को सलाह देते हैं, किंतु कभी उनका पालन नहीं करते हैं। वे आसानी से पीड़ित हो जाते हैं।

असुरक्षित लोग अपने सपनों को महसूस किए बिना जीते व मर जाते हैं।

ऐसा क्या है जो एक व्यक्ति को अपने दृष्टिकोण में आशावादी या निराशावादी बनाता है? यह उनके 'स्वॉट' – शक्ति (स्ट्रेंथ), कमजोरी (वीकनेस), मौके (ओप्पोरचुनिटी), तथा खतरा (थ्रेट) और उनकी वरीयताओं तथा आत्मीयता का एहसास करने की उनकी क्षमता है, जो वे प्रत्येक तत्व को दिखाते हैं। किसी व्यक्ति के आत्मविश्वास को विकसित करने या नष्ट करने में 'स्वॉट' की प्राप्ति महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आत्मविश्वास एक अपरिहार्य गुणवत्ता है जो किसी को सफल बनाता है।

आत्मविश्वास क्या है?

यह आत्म-प्रभावकारिता और आत्मसम्मान का मिश्रण है। आत्म-प्रभावकारिता वह धारणा है जिसमें कोई व्यक्ति अपने जीवन में कई कार्यों को प्रभावी ढंग से पूरा कर सकता है। यह एक ऐसी भावना है कि हम जीवन में किसी भी स्थिति को संभालने में सक्षम होते हैं। आत्मसम्मान आत्म-प्रभावकारिता की तरह भी होती है किंतु यह शारीरिक या मानसिक दक्षता की तुलना में सक्षमता को अधिक महत्व देता है।

हम उच्च आत्मसम्मान वाले लोगों को कैसे पहचान सकते हैं?

उच्च आत्मसम्मान वाले लोग अपनी क्षमता में विश्वास करते हैं। उनका मानना है कि वे जीवन में सर्वश्रेष्ठ पा रहे हैं क्योंकि उनमें से अधिकतर उनके कार्यों और चूक के लिए

स्पष्ट औचित्य होते हैं | उनके जीवन के विशेष कार्यों के प्रति उनके योगदान के विषय में उन्हें संदेह नहीं होता है |

वे अपनी जवाबदेही और जिम्मेदारियों से पूरी तरह परिचित होते हैं | वे दूसरों की आज़ादी का सम्मान करते हैं | वे शोषण की अपेक्षा परस्पर फायदेमंद रिश्तों में विश्वास रखते हैं |

कैसे उच्च आत्म सम्मान जीवन में किसीको सफल बनाता है ? आम आदमी के विपरीत, उच्च आत्मसम्मान वाले लोग कमजोरियों और खतरों के विषय में चिंता करने की बजाय अपनी ताकत और अवसरों पर विश्वास करते हैं |

पाठकों ने गौर किया होगा कि अधिकांश उच्च आत्म सम्मान वाले लोग कड़ी मेहनतकश और सफलता साधक होते हैं | उनमें से अधिकतर जोखिम लेने वाले भी होते हैं | जीवन में आम खतरे शायद ही उन्हें निराश कर सकते हैं | चूँकि वे विशिष्टता में विश्वास करते हैं, इसलिए उन्हें जीवन में प्रतिस्पर्धा नहीं मिलती | विस्मृत होने के बजाय वे हमेशा अपने कौशल को, जिसके वे अधिकारी नहीं हैं, तेज करने की कोशिश करते हैं |

जीवन में चुनौतियों पर काबू पाने का सबसे अच्छा तरीका 'शक्तियों' को मजबूत करना है।

चुनौतियाँ और खतरे जीवन में बहुत आम होते हैं और कोई उससे मुक्त नहीं होता है | यह हमारे आत्मविश्वास के अलावा और कुछ भी नहीं है, जो हमें उन चुनौतियों और खतरों में जीवित रहने में मदद करता है |

बुद्धिमान व्यक्ति आत्म-आत्मविश्वासी बनने के बाद सफलता की संभावना बढ़ा देते हैं।

विश्वास व्यक्ति को लोगों और प्रणालियों का सम्मान करने वाला बनाता है | यह लोगों को अधिक संवेदनशील तरीके से सोचनेवाला बनाता है |

हम जीवन में आत्मविश्वास कैसे प्राप्त कर सकते हैं ? आत्मविश्वास को बढ़ावा देने के लिए

अपने आप पर भरोसा रखें।

स्वयं पर विश्वास किए बिना आत्मविश्वास हासिल करना या बनाए रखना असंभव है | प्रत्येक को हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि इस दुनिया में कोई भी व्यक्ति, सौंदर्यता, ज्ञान, स्वास्थ्य या धन के संबंध में संपन्न नहीं होता है | उन क्षेत्रों में उनकी उत्कृष्टता प्रकृति में

सापेक्ष होती है। हालांकि कई पहलुओं में लोग सामान्य दिखते हैं, किंतु वे एक निश्चित स्तर पर अद्वितीय होते हैं।

चूँकि लोग एक निश्चित स्तर पर अद्वितीय होते हैं, वहाँ तुलना करने की कोई गुंजाइश नहीं होती क्योंकि तुलना समान उत्पादों या लोगों के बीच ही उचित हो सकती है। कोई अवर या श्रेष्ठ नहीं होता है क्योंकि यह कुछ और नहीं, बल्कि हमारी सोच है जो किसी को श्रेष्ठ या निम्नतर बनाता है।

श्रेष्ठता प्राप्त नहीं की जाती है, दी जाती है।

किसी की श्रेष्ठता हमेशा दूसरे के आत्मनिर्भर अवरुद्धता के हिस्से में होती है। हमारी हीन भावना दूसरों की योग्यता के कारण नहीं बल्कि हमारी अपनी क्षमता के विषय में हमारी अज्ञानता के कारण होती है।

मेरा विश्वास कीजिए, कई पहलुओं में, आप अपने चारों ओर कई लोगों की तुलना में कहीं ज्यादा बेहतर होते हैं। आपके पास कई गुण हैं जो दुनिया के सबसे सफल लोगों के पास भी नहीं हैं। अपने आप को कम समझने का कोई कारण नहीं होता है क्योंकि आप अद्वितीय हैं और आपकी क्षमता दूसरों के माप के स्तर से परे है।

विश्वास करें – आपके अलावा कोई भी आपको विफल नहीं कर सकता।

वास्तव में, विफलता तब तक नहीं होती है, जब तक हम उसे स्वीकार नहीं करते हैं। मेहनती लोगों के लिए, खुद विफलता ही, अधिक सीखने का एक मौका है। सुधार के लिए हमेशा अवसर होते हैं। उपलब्धियों में देरी का अनुभव करते समय, इसे करने के लिए अन्य तरीके ढूँढ़ें। अधिकांश सफल व्यक्ति विकल्प में विश्वास करते हैं।

विकल्पों की खोज करने की आदत हमें अधिक आत्मविश्वास दे सकती है।

हर परीक्षण हमें सफल होने का मौका देता है। जब तक हम विफलता स्वीकार नहीं करते, हम सही मार्ग पर होंगे- 'प्रयास' का मार्ग। विरोधी या परिस्थितियाँ बदल सकती हैं किंतु परीक्षण जारी रहता है। जब तक कोई अपने परीक्षणों को रोक नहीं लेता तब तक उसको 'असफल' घोषित नहीं कर सकते।

**हमारा जीवन एक तस्वीर की तरह है तथा जिस कोण से हम इसे खींचते हैं,
उससे तस्वीर में बहुत अंतर बन जाता है।**

अपनी ताकत और कमजोरियों को पहचानो।

जैसा कि पिछले अध्याय में वर्णित है, अपनी ताकत और कमजोरी को जानें।

अपनी ताकत को पहचानना आसान होता है। बस अपने पिछले प्रदर्शन, लाभ, और नुकसान की समीक्षा करें। जिन भी गुणों ने आपको पहले सफल बनाया था, निश्चित रूप से आपकी शक्तियाँ ही हैं और उन गुणों को बढ़ावा दिया जाए तो वह आपको स्थायी रूप से सफल बना सकते हैं।

जब भी हम अपने लाभ का हिसाब करते हैं, हमारा अवचेतन मन उन प्रयासों का सम्मान करता है। ऐसे विचार हमारे अवचेतन मन में दृढ़तापूर्वक स्थापित हो जाते हैं।

धीरे-धीरे, हमारे अवचेतन मन को उम्मीदों की अपेक्षा कार्यवाही को अधिक पहचानना और विश्वास करना सीखना होगा। जो व्यक्ति कृत्यों में विश्वास करता है वह शायद ही प्रतिकूलता और चुनौतियों पर निराश होता है। जितना अधिक हम चुनौतियों पर काबू पाते हैं, उतना ही हम परिस्थितियों को संभालने में विश्वास करते हैं।

तैयार रहें।

खराब प्रदर्शन पूर्व योजना और तैयारी की कमी के उत्पाद होते हैं। जितना अधिक आप तैयारी करेंगे, उतना अधिक आत्मविश्वास आपको अपनी विशेषज्ञता और योग्यता के विषय में महसूस होगा। तैयारी आपको जीवन की अनपेक्षित चोटों से पराजित होने से बचने में मदद करेगी।

अपने विषय, उद्योग, आपके लक्ष्यों और जो सफलता के लिए आपको प्रेरित करता है, वह सब कुछ सीखने में अतिरिक्त प्रयास करें। कार्य शुरू करने से पहले, मानें कि यह संभव है और आप यह कर सकते हैं। महान पहाड़ों को एक रात में जीता नहीं जा सकता। हम बरगद के पेड़ तक को टुकड़ों – टुकड़ों में काट सकते हैं। हर टुकड़ा और कुछ भी नहीं, केवल आपकी उपलब्धियाँ – सफलता के प्रति आपका लक्ष्य है। तैयारी आपको प्रतिकूलता की तुलना में अधिक संभावनाएँ दिखाएँगी। तैयारी आपको और अधिक परिचित करवाती हैं तथा परिचितता प्रयासों और परिणामों के बीच की दूरी को कम करती है।

दृष्टिकोण में अभिनव रहें।

नवीनता और सृजनात्मकता अत्यधिक बुद्धिशीलता, विश्लेषण तथा वैकल्पिक सोच की मांग करता है। अपने आप में निर्माण आत्मविश्वास का एक प्रमाण है, आलोचना का

सामना करने का आत्मविश्वास और साहस | हर अभिनव विचार और दृष्टिकोण आपको एक निर्माता के रूप में मान्यता देता है |

विश्लेषणात्मक सोच हमेशा तर्क द्वारा समर्थित होती है। जितना अधिक आप सोच में विश्लेषणात्मक और तर्कसंगत होंगे, उतना ही आपके आत्मविश्वास का स्तर बढ़ेगा।

**जितना अधिक आप दृष्टिकोण में अभिनव होंगे,
उतनी ही कम प्रतिस्पर्धा का सामना आप जीवन में करेंगे।**

दृढ़ता से बोलने का अभ्यास।

आत्मविश्वास से और दृढ़ता से बोलने का अभ्यास करें। प्रयोग किए शब्दों पर नियंत्रण रखें, चूँकि इससे श्रोता आपके प्रत्येक वचन पर विचार करता है। आपकी बातों में आत्मविश्वास छलकने दीजिए। अधिकांश वक्ता अपनी शब्दावली की समृद्धि के कारण ही विख्यात नहीं हुए हैं, बल्कि छंदों और वाक्यों पर उनके नियंत्रण के कारण भी।

बोलने के दौरान हर रुकावट आत्मविश्वास का नुकसान इंगित करता है। विचारों पर जोर देने के लिए पर्याप्त विराम देना सीखें। बोलने का एक मुखर तरीका आपके आत्मविश्वास का संकेत देता है। आपको लगता होगा कि आपका आत्मसम्मान बढ़ना शुरू हो गया है। एक झटकेदार, घबराहट, आक्रामक शैली को अपनाने के बजाय भाषण की लयबद्ध शैली रखें। विषयों को संपर्क करना सीखें तथा अपने भाषण में संबंध बनाए रखें, ताकि आपके दर्शक अपनी रुचि न खो दें।

याद रखें, आपके दर्शकों की बढ़ती हुई रुचि और कुछ नहीं बल्कि आपके आत्मविश्वास का परिणाम है।

सकारात्मक सोच।

नकारात्मक आत्म-बात से बचें, वह आपको कम आत्मविश्वास महसूस करवाएगा। “मैं कर सकता हूँ,” दृष्टिकोण बनाए रखें। किसी भी मुद्दे या स्थिति से पहले, आपको विश्वास होना चाहिए कि यह संभव है।

यह सच है - यह संभव है - इस दुनिया में चीजें मौजूद हैं क्योंकि किसी ने ऐसा कर दिखाया।

मज़ेदार, सकारात्मक लोगों के साथ सहयोग करें तथा जहरीले लोगों से बचना सुनिश्चित करें। अधिक संवेदनशील बनें तथा रचनात्मक बनने का अभ्यास करें। याद रखें, हर अभिनव विचार आपके अवचेतन मन की स्वीकृति को प्रतिबिंबित करता है जिससे आप

परिवर्तन ला सकते हैं और यह आपके आत्मविश्वास के साक्ष्य के रूप में कार्य करता है। कृतज्ञता का रवैया दिखाना न भूलें, क्योंकि यह केवल एक आश्वस्त मन के साथ संभव होता है और यह निडरता का सबूत है।

कार्य करने का अभ्यास करें और कार्य करने में विलंब न करें।

बिना कार्यवाही के, सपने का कोई मतलब नहीं है। हर कार्य सीखने, अनुभव और भाग लेने का अवसर देता है। सक्रिय भागीदारी से दूर रहने से संदेह और डर पैदा होता है, जबकि संगति आत्मविश्वास और साहस पैदा करता है।

कार्यवाही में विलंब हमारे मुख्य लक्ष्य से हमें विचलित करता है। विलंब कम या महत्वहीन प्राथमिकताओं के हस्तक्षेप की अनुमति देता है। कार्यवाही में हमारी देरी कम महत्व की कई प्राथमिकताओं को संचित करने की अनुमति दे सकती है, जो कभी भी और अंत में हमारे मुख्य लक्ष्य को भी मुखर कर सकती है, आखिरकार हमें किसी भी उपलब्धियों के बिना ही छोड़ दिया जाएगा।

हमें उपलब्धियों के रूप में दावा करने के लिए कुछ होना चाहिए क्योंकि हर उपलब्धि हमारे आत्मविश्वास का संकेत है। हमारी उपलब्धि रिश्तों, नए कौशल, धन, बौद्धिक लाभ आदि के अधिग्रहण हो सकते हैं।

अपने भेष तथा शरीर की भाषा को अपने आत्मविश्वास को दर्शनि दें।

आत्मविश्वास हमारे शरीर की भाषा और उपस्थिति से मापा जा सकता है। आत्मविश्वास वाले लोग सामान्य रूप से अपने सिर को उठाते हैं, तनके चलते हैं, सीधे बैठते हैं, और बातचीत करते समय दूसरे व्यक्तियों से नज़र मिलाते हैं। उनका आत्मविश्वास उनके हाथ मिलाने से तथा किसी व्यक्ति से बात करते समय उससे नज़र मिलाने के तरीके से महसूस किया जा सकता है। वे हमेशा दृढ़ता से चलते हैं और अपने पहनावे पर ध्यान देते हैं। वे कपड़े और सामान चुनते हैं जो उनके उद्योग और जीवनशैली के अनुरूप होते हैं।

सात्स

लगभग सभी के जीवन में प्रतिकूलता बहुत आम बात है | किस सफल व्यक्ति का जीवन ऐसे प्रतिकूल परिस्थितियों से मुक्त है? सफल लोगों के लिए, उनकी सफलता कोई दुर्घटना नहीं थी | वास्तव में, हर सफलता के पीछे संघर्ष की कई अनौपचारिक कहानियाँ हैं |

**हर सफल व्यक्ति का जीवन किसी भी चमकदार ग्रेनाइट सतह की तरह होता है,
उसके पीछे एक खुरदरी सतह हमेशा ही रहती है।**

उनके चमचमाते चेहरे दर्दनाक स्थितियों और अनुभवों के लिए उनकी सहिष्णुता का नतीजा है | परिणामों की अपेक्षा किए बिना उसे स्वीकार करने के उनके साहस ने उन्हें वह बना दिया, जो आज वे हैं | सुविधा क्षेत्र छोड़ने के उनके साहस ने उन्हें अद्वितीय बना दिया है |

स्पष्टता सफलता की कुंजी है।

जीवन में चुनौतियों को स्वीकार करने के लिए किसी को भी स्पष्ट होना चाहिए, चाहे परिणाम कुछ भी हो | बिना कूच के बंदूक चलाना कठिन होता है | बिना दर्द के लाभ संभव हो सकता है किंतु स्थायी नहीं |

विद्रोह हमेशा से साहस का परिणाम ही था - कठिनाइयों का सामना करने का साहस, सुविधा क्षेत्र को छोड़ने का साहस, नुकसान को स्वीकार करने का साहस, पृथक और अस्वीकार होने का साहस, और अपमानित और उपहास करने के लिए साहस का परिणाम | मेरा विश्वास कीजिए, ऐसा साहस कभी निराश नहीं करता |

लगभग हर कोई परिवर्तन और जीवन में प्रगति चाहता है, किंतु अधिकांश लोगों को अपने कार्य को करने के लिए साहस की कमी हो जाती है | वे प्रतिकूलता से डरते हैं और बुरे परिणामों को लेकर चिंतित रहते हैं | चूंकि हर प्रयास में तीन अलग-अलग परिणाम या संभावनाएँ हो सकती हैं - तुरंत सफल होने की संभावनाएँ, असफल रहने की संभावनाएँ, और बाद में सफल होने की संभावनाएँ, हमें केवल दूसरी संभावना की आशा क्यों करनी चाहिए ?

यह और कुछ भी नहीं, किंतु महान नेताओं और दूरदर्शी लोगों का साहस ही है, जो उन्हें प्रणालियों और जीवन में परिवर्तन लाने जैसा बनाता है | यह और कुछ भी नहीं, किंतु उन्हें कई लोगों के लिए नवाचार और अवसर लाने के लिए उनका साहस है |

वे परिवर्तन में दृढ़ता से विश्वास करते हैं | अपने जीवन के माध्यम से, वे हमें दृष्टिकोणों में नवाचार की आवश्यकता की याद दिलाते हैं | वे अपने साहस से सबसे कठिन सपने को वास्तविकता में रूपांतरित कर देते हैं | उन्होंने हमें निर्णय और कार्यों में स्पष्ट होना सिखाया है |

नियमित कार्यों में शायद ही कभी स्थिर परिणाम उत्पन्न होते हैं, जबकि परिवर्तित कार्यवाही हमेशा एक अलग परिणाम पेश करती है।

जब बाधाएँ और प्रतिकूलताएँ आती हैं तो साहस दिखाना आवश्यक होता है | याद रखिए, हर प्रतिकूलता कुछ संभावनाओं के साथ आती है, किंतु यह केवल उन लोगों के लिए दृश्यमान होगा जो दृढ़ता और इसे तलाशने का साहस दिखाएँगे | यह अवास्तविक परिणाम और परिष्करणों की अपेक्षा करना मानव प्रवृत्ति है |

लोग हिम्मत से प्रतिक्रिया करने में संकोच क्यों करते हैं, जब हालात उसीकी मांग करते हैं ? लोग प्रतिकूल और शोषण की स्थिति में समझौता क्यों करते हैं ? कारण बहुत सरल है। उनमें से अधिकतर विफलता के भय के बंदी हैं | उन्हें लगता है कि वे भरोसेमंद से अधिक अन्यों पर निर्भर होते हैं | आश्रय देने में सक्षम होने के मुकाबले वे आश्रित रहना चाहते हैं | वे अपनी क्षमताओं पर नहीं दूसरों की क्षमताओं पर विश्वास करते हैं |

अनुयायी शायद ही कोई अवसर पैदा करते हैं।

जब परिणाम में बाधाएँ या देरी का अनुभव होता है, तो यह और कुछ नहीं केवल हमारी हिम्मत ही है, जो हमें झेलने के लिए तैयार बनाती है | जब विपत्तियाँ लगातार मिलती हैं तो साहस खो जाता है, तब विफलता और हताशा के अलावा और कोई परिणाम नहीं मिलता |

प्रत्येक को दो प्रकार के साहस दिखाने चाहिए, विफलताओं का सामना करने का साहस तथा जीवन में अधिक चाहने का साहस | प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने का साहस, वास्तविकता को स्वीकार करने का साहस दिखाता है - विफलता या सफलता की वास्तविकताओं का |

अधिक चाहने के साहस से बहुत फर्क पड़ता है | इसके लिए बहुत अधिक आत्मविश्वास की आवश्यकता होती है | जीवन में अधिक चाहने से, संभावनाओं और अवसरों के अस्तित्व में विश्वास करने की आवश्यकता होती है | इसके लिए बहुत सारी उम्मीदें, मेहनत करने की इच्छा, प्रतिबद्धता और लचीलेपन के दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है | दुर्लभ निर्णय हमेशा ऐसे साहस के परिणाम होते हैं |

सफल लोगों को कई अच्छे गुणों का वरदान मिलता है | वे निःशक्ति सपना देखते हैं, विश्वास करते हैं, तलाशते हैं, चाहते हैं तथा कार्य करते हैं | वे कभी अफसोस या शिकायत नहीं करते और वास्तविकता के रूप में अपनी विफलता या सफलता को हमेशा स्वीकार करते हैं | वे हमेशा सुधार करने की इच्छा दिखाते हैं।

उन्हें सपनों की ओर बढ़ने से कोई भी नहीं रोक सकता | वे बुद्धिमान किसानों के समान हैं जो मौसम के अनुसार ही बीज बोते हैं | वे लगातार तैयार करते हैं और जब समय आता है तब उस पर कार्य करते हैं | वे दूसरों का अनुसरण कभी – कभी ही करते हैं | वे आम मार्गों के माध्यम से कभी नहीं चलते, क्योंकि वे जानते हैं कि आम मार्ग पहले से ही 'खोजे जा चुके' हैं।

हीरे सामान्य मार्गों पर शायद ही मिल सकते हैं।

सफलता साधक हमेशा अकेले चलने का ही साहस दिखाते हैं और वे दूसरों की राय से कम प्रभावित होते हैं।

वे कभी भी स्थायी रूप से किसी पर निर्भर नहीं होते हैं और वे स्थायित्व पर विश्वास कम करते हैं | वे सर्वोच्चता और एकाधिकार में विश्वास नहीं करते हैं | वे निरंतर परिवर्तन और अद्यतन करने के अधीन होते हैं | वे अनुचित प्रणाली से अलग होने में संकोच नहीं करते क्योंकि वे साहसी हैं | वे 'निहित हितों' द्वारा बढ़ाए गए छोटे लाभ और विशेषाधिकारों से कभी भी आकर्षित नहीं होते हैं | वे हमेशा दूसरों की सर्वोच्चता पर अपनी क्षमताओं में विश्वास करते हैं | वे हमेशा स्वतंत्र रूप से सोचते और कार्य करते हैं और नवाचार एवं अद्वितीयता के माध्यम से वे क्रांति करते हैं।

आम लोगों के लिए, सफलता साधक की चुप्पी स्वीकृति या समर्पण का संकेत होते हैं तथा उनके अस्थायी घटाव भी असफलता के समान होते हैं | दरअसल, ऐसे न्यायाधीश इस बात से अनजान हैं कि यह चुप्पी कुछ भी नहीं है बल्कि उनकी बातचीत की महान कला है और वे झटके उनकी विफलता का संकेत नहीं हैं बल्कि उनके स्वयं-शोधन प्रक्रिया का परिणाम है।

मेरा विश्वास कीजिए, आज के सफल लोगों में कोई भी ऐसा नहीं है जो असफलता या नुकसान से बचा हुआ था, किंतु उनके साहस ने उन्हें बनाए रखा और अकेले खड़ा रख पाया।

महत्वाकांक्षी लोगों के साहस ने पहाड़ों और महासागरों पर विजय प्राप्त की और विशेष कार्यों को पूरा किया | समर्पित लोगों के साहस ने कई सपनों को वास्तविकताओं में

परिवर्तित कर दिया है और उन्होंने बहुत सी असंभवनों को संभावनाओं में बदल दिया है।

निर्णय लेने में साहस होना जरूरी है। जब निर्णय लेना महत्वपूर्ण और चुनौतीपूर्ण हो जाते हैं, तो यह उनका साहस ही है, जो उनके सपनों को पाने के लिए उनका समर्थन करता है। विशेष रूप से कठिन अलोकप्रिय निर्णय लेना इतना आसान नहीं होता है। इस तरह के फैसले हमें समाज से अलग या इनकार कर सकते हैं। इस तरह के प्रतिकूल परिस्थितियों में भी हिम्मत रखनी चाहिए क्योंकि अस्वीकार और अस्वीकृति लगभग सभी सफल लोगों के आम अनुभव होते हैं।

ईसा मसीह से इनकार किया गया, गैलीलियो को इनकार किया गया, कोपरनिकस को इनकार किया गया ...। और वास्तव में, इस समाज से शुरू में किसने इनकार नहीं किया? प्रारंभिक अस्वीकृति और खंडन के बिना किसी भी सफल व्यक्ति को इस समाज द्वारा स्वीकार नहीं किया गया।

किंतु हर अस्वीकृति ने उन्हें मजबूत और अभिनव बना दिया। उन्होंने सफलता और असफलता को समान रूप से स्वीकार करने का अभ्यास किया। उन्होंने अपने प्रयासों पर ध्यान केंद्रित किया, परिणामों पर नहीं। उनके लिए, परिणाम हमेशा संबंधित कारक रहे थे।

इस समाज में कई लोग अपनी सुरक्षा या आश्रय खोने से डरते हैं। चूँकि इस दुनिया में सब कुछ गिरावट और बिगड़ने के अधीन है, हमें कोई स्थायी आश्रय कौन दे सकता है?

कितनी देर तक हम किसी चीज़ पर निर्भर रह सकते हैं? दूसरों की दया पर कब तक रह सकते हैं? प्रत्येक जीवन का एक उद्देश्य है और हमारे अनुचित और शोषण प्रणालियों के लिए निरंतर प्रस्तुत करना और कुछ नहीं, किंतु गुलामी और निर्भरता है। याद रखिए, हम जितना अधिक निर्भर करते हैं, उतने ही अधिक दास बन जाते हैं तथा जितना अधिक गुलाम बनते हैं, हम उतने ही अधिक दास बनाते हैं, न कि स्वामी।

संरक्षक खुद को नेता के रूप में बदलते हैं, आश्रित अधिक आश्रित बनाते हैं।

सोचने में फर्क होना जरूरी होता है। किसी को अलग ढंग से सोचने के लिए साहस दिखाना चाहिए ताकि परिणाम निराशाजनक न हो।

लोग, जो बिक्री और मार्केटिंग करियर में होते हैं, शायद उन्होंने अलग तरीके से सोचने के लाभों का अनुभव किया हो।

ऐसी नौकरियों में लोगों को हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि उनकी सफलता हमेशा एक रणनीति से दूसरे पर बदलने के दौरान दिखाए जाने वाले साहस की मात्रा के लिए

आनुपातिक रहे ।

उन्हें कभी भी स्वयं को एक विधि के दास बनने की इजाजत नहीं देनी चाहिए और स्थिति में मांग की जाने और परिणामों के डर से उन्हें एक योजना से दूसरी योजना में बदलने के लिए पर्याप्त साहसी होना चाहिए ।

यह दुनिया अवसरों और संभावनाओं की भूमि है । अपवाद संभावनाओं को और अधिक कीमती और दक्षतापूर्ण बनाते हैं । हम उन संभावनाओं को तलाशने में जो साहस दिखाते हैं, वे हमारी उपलब्धियों पर कृपा करते हैं ।

प्रतिकूलता से प्राप्त होने वाली हर संभावना हमें आनंद और संतुष्टि देती है और आत्मविश्वास बढ़ाती है । यह हमें खोने के बजाय जीतने की भावना देती है ।

जो आत्मविश्वास हमें प्राप्त होता है वह हमें ब्रह्मांड से अधिक मांग करने वाला बनाता है । वर्तमान में जो कुछ भी हम करते हैं यह हमें उससे अधिक करने की हमारी क्षमताओं में विश्वास करता है । यह हमारी छिपी प्रतिभाओं को उजागर करता है और हमें सफलता का स्पष्ट मार्ग दिखाता है ।

चुनौतियों के बिना एक दुनिया की उम्मीद कभी नहीं की जा सकती है और इस तरह के संसार के लिए उम्मीद करना और कुछ नहीं केवल कायरता है । किंतु याद रखिए, वे चुनौतियाँ अस्थायी होती हैं ।

लहर खाड़ी की तुलना समुद्र तट पर अधिक महसूस होती है ।

नारियल के बाहर के सख्त खोल को तोड़े बिना उसके स्वादिष्ट नर्म नारियल का आनंद उठाना कठिन होता है । प्रयास कठिन और थकाऊ हो सकते हैं, किंतु इसके लिए धैर्य का होना आवश्यक होता है । हम कब तक समस्याओं और मुद्दों से दूर भाग सकते हैं ?

जितना अधिक हम दौड़ते हैं, उतना ही हमें पीछा किया जाएगा,
जितना हम दूसरों को पीछा करने की इजाजत देते हैं,
उतना ही हम थक जाते हैं और शीघ्र ही पराजित हो जाते हैं ।

चुनौतियों से भागने की बजाय पर्याप्त रूप से उसका सामना करने की हिम्मत करनी चाहिए । वास्तविक मुद्दों से दूर होने से कभी भी कोई स्थायी समाधान नहीं निकलेगा और कभी-कभी यह उसके विकास या वृद्धि का समर्थन कर सकता है । हमेशा ध्यान रखें कि,

जीवन रक्षा हमेशा बहादुरों का अधिकार है और कायरों के लिए एक विशेषाधिकार।

अधिकार हमेशा स्वयं से सौंपे जाते हैं और विशेषाधिकार दिए जाते हैं | देना हमेशा दाता की दया पर होता है, न कि लेने वाले की रुचि में | आगे बढ़ने की आशा हम तब ही कर सकते हैं, जब हम अपनी नियति को तैयार करते हैं |

याद रखें, चुनौतियाँ सामना करने के लिए होती हैं, डरने के लिए नहीं | डर संदेह लाता है और संदेह विफलता की ओर जाता है |

वीरतापूर्ण निर्णय क्रांतियों का आधार बनते हैं।

क्रांति हमेशा परिवर्तन लाती है और बदलने की इच्छा हर सफलता का आधार होती है |

सफलता को वास्तविकता बनाने के लिए, वास्तविकताओं का सामना करने का एक विशाल साहस हासिल करने और बनाए रखने की आवश्यकता होती है | साहस को जुटाने और उसे बनाए रखने के कई तरीके होते हैं, जिसमें शामिल हैं,

1. अपने भय को पहचानें।

लोग अक्सर अपने विशिष्ट भय को स्वीकार करने से इनकार करते हैं जो उनके आत्मविश्वास और साहस को कमजोर बनाता है | साहस बनाने के लिए, अपने विशिष्ट भय को पहचानने और उन्हें सूचीबद्ध करने की आवश्यकता होती है | किसी भी प्रकार के डर की सूची में संकुचित या शर्मिंदा होने की कोई बात नहीं है, क्योंकि अधिकांश लोग एक या अन्य भय के शिकार होते हैं |

2. तुलना से बचें।

तुलना कई प्रतिक्रियाओं का कारण बनती है | आमतौर पर, तुलना लोगों को या तो ईर्ष्यालु या भयभीत बनाती है | यह लोगों को बेचैन बना देती है | प्रत्येक व्यक्ति दूसरों से अलग होता है और दूसरों के साथ खुद की तुलना करने का प्रयास करने से अपने आत्मविश्वास में कमी आने के अलावा और कुछ नहीं होता है | हमेशा दूसरों की योग्यता को देखना हमारे आत्मविश्वास और साहस को कमजोर कर सकता है | उनका सम्मान करें, किंतु पालन न करें।

बहुत अधिक आत्म-अधीनता के होने से धीरे-धीरे आत्मविश्वास और साहस कम होने लगता है। अपने आप में विश्वास करें ताकि आप अपने जीवन में कई बदलाव ला सकें और आपके जैसे कई लोग पहले ही ऐसा कर चुके हैं। याद रखें - कोई भी कमज़ोरियों और किसी तरह की क्षमताओं से मुक्त नहीं होता है।

3. अच्छी यादों को स्वीकार करें और बुरी यादों को अस्वीकार करें।

आम तौर पर लोग अपने अनुभवों के आधार पर दूसरों पर अपनी राय बनाते हैं। उदार और सच्चे होने के बावजूद, लोगों ने उनके साथ बुरा व्यवहार या बदतमीज़ी की होगी। यह एक सार्वभौमिक तथ्य है कि हमें दूसरों की सोच और व्यवहार पर कोई पूर्ण नियंत्रण नहीं होता है।

उस समय के दूसरे व्यक्ति की मनोदशा ने उन्हें वैसी प्रतिक्रिया करने पे मजबूर किया होगा जिस तरीके के वे वास्तव में हैं। ऐसे अनुभवों ने मानसिक रूप से उन्हें लंबे समय तक पीड़ा दिया होगा।

लोग बिना किसी विशिष्ट उद्देश्य से पिछले घटनाओं के शोध में अपना दिन - रात बिता देते हैं। यह उन्हें अपने आत्मविश्वास, साहस और लोगों पर भरोसा करने में पीछे खींच सकता है।

सकारात्मक अनुभवों वाले लोगों के विषय में नकारात्मक भावनाओं का सामना करने के लिए, साहस प्राप्त करने के लिए, अपने पराक्रमों की तुलना में अपनी उपलब्धियों के अनुग्रह के क्षणों के विषय में सोचें और आप अपने भीतर साहस के स्तर में एक अंतर देख पाएँगे।

4. अपनी ताकत स्वीकार करें।

याद रखें, आप पिछले कई अवसरों पर सफल और साहसी थे। आपके विचार और निर्णय शानदार और ईर्ष्यापूर्ण थे। उन स्थितियों को खोदकर देखें और पता करें कि उस समय आपके द्वारा किए गए कार्य को करने के लिए किस बात ने आपको साहसी बनाया था। हमारे साहस को स्वीकार करते हुए हम अपने व्यवहार को विकसित कर सकते हैं और अपने जीवन के हर पहलू में साहस का निर्माण शुरू कर सकते हैं।

5. चुनौतियों का सामना करें।

भय को दूर करने का सबसे अच्छा तरीका चुनौतियों का सामना करना है। जैसा कि पिछले अध्याय में वर्णित है; जितना अधिक हम चुनौतियों से दूर भागेंगे, उतना ही विपक्ष हम पर

विजय प्राप्त करेगा | कुछ शुरू करने का डर सिर्फ शुरुआत में ही होगा | परिकलित जोखिम उठाने का साहस दिखाएँ क्योंकि जोखिम लिए बिना परिवर्तन असंभव होगा | जोखिम पर काबू पाने का हर अनुभव हमारे आत्मविश्वास और साहस को बढ़ावा देगा |

6. अभिनव बनें|

जब सब कुछ आप के विरुद्ध होने लगता है, तब अपने तरीके विकसित करें | 'सीमा से बाहर सोचने' की एक आदत बनाएँ | अपनी सीमाओं और शक्तियों के अनुसार योजना को संशोधित करें | दृष्टिकोण में अभिनव बनें क्योंकि प्रत्येक अभिनव विचार अलग-अलग सोचने के लिए हमारे साहस का प्रमाण बनता है | यह सुविधा क्षेत्र को तोड़ने की आपकी इच्छा को इंगित करता है |

7. दुर्लभ निर्णय लेने की हिम्मत|

दुर्लभ निर्णय केवल सच्चे नेताओं से ही आते हैं|

दुर्लभ निर्णय लेना सभी के लिए संभव नहीं होता है | इसमें बहुत साहस की आवश्यकता होती है – आलोचना और नुकसान का सामना करने का साहस |

8. कभी हार न मानें|

नकारात्मक विचारों से प्रभावित होना, सामान्य और स्वीकार्य है , किंतु उन्हें आगे के प्रयासों को नियंत्रित करने की अनुमति देना, कभी भी स्वीकार्य नहीं हो सकता है | त्याग करना अरुचि का चिह्न है और अज्ञात खोजों के विषय में जानने के लिए उत्सुकता और जिज्ञासा की कमी है | असफलता का डर उनके छोड़ने का मुख्य कारण हो सकता है और प्रत्येक त्याग लोगों को साहसी से अधिक कायर बनाता है |

प्रतिबद्धता

प्रतिबद्धता कार्यों के संभव होने में एक प्रमुख भूमिका निभाती है | वास्तव में, यह प्रतिबद्धता क्या है ? यह एक वचनबद्धता या दायित्व है जो कार्यवाही की स्वतंत्रता को प्रतिबंधित करता है | हालांकि हर कोई स्वतंत्र रूप से कार्य करना पसंद करता है, फिर भी लोग कुछ विशेष कार्यों का हिस्सा होते हैं | क्या चीज़ उन्हें इस तरह के विशेष कार्यों के सामान्य उद्देश्यों पर रोके रखता है - यह और कुछ भी नहीं है, किंतु उनके पास होने वाले प्रतिबद्धताओं का स्तर है | कार्यों, संबंधों और वितरण में प्रतिबद्धता होना जरूरी है |

मेरे कुछ कार्यशाला प्रतिभागियों ने एक बार मुझसे मेरे उद्यमी जीवन में सबसे कठिन चुनौती के विषय में पूछा | बिना विलंब किए, मैंने उन्हें बताया - "सही लोगों को प्राप्त करना, प्रतिबद्ध लोगों को प्राप्त करना है |"

पूरे समय प्रतिबद्ध होना एक गुणवत्ता है - एक सच्ची शाही गुणवत्ता |

प्रतिबद्धता उस विश्वास का प्रमाण होता है जो किसी के पास हो | प्रतिबद्ध होने के लिए, उनके कार्यों व जिसका वे अनुसरण करते हैं, उसपर विश्वास होना चाहिए | उल्लेखनीय तथ्य यह है कि समाज में अधिकांश लोग इसमें विश्वास किए बिना ही कई चीजें कर रहे हैं | वे बहुत वफादार और प्रतिबद्ध होने का दिखावा करते हैं | वे अन्य लोगों का पालन करते हैं, न कि उन पर उनके भरोसे के कारण, बल्कि साधारण लाभ के लिए दूसरों को संतुष्ट करने के लिए भी |

एक कहावत है,

**अनुयायियों पर संदेह करने से वे अपने नेताओं को शुरूआत से पहले ही
असफल कर सकते हैं|**

वचनबद्धता मान प्रणालियों का दृश्यमान स्वरूप है, जिसे हम बनाए रखते हैं | शब्द 'मूल्य' या 'मूल्य प्रणाली' का प्रयोग आम तौर पर आजकल हर जगह किया जाता है | मानव व्यवहार के संदर्भ में 'मूल्य' शब्द का क्या अर्थ है ?

मूल्य एक ऐसी चीज़ है जो किसी भी चीज़ के लिए समझौता नहीं कर सकता है
/

वचनबद्धता, कुछ या किसी के प्रति वफादार होने का वह वादा है, जो हर कर्मचारी से सबसे अधिक अपेक्षित निविष्ट होता है, किंतु 'प्रतिबद्धता की कमी' सबसे अधिक प्राप्त की गई है | शोधकर्ताओं का कहना है, कि केवल २० प्रतिशत लोग ही जीवन और काम में

अपनी प्रतिबद्धताओं को बनाए रखते हैं और अधिकांश संगठन केवल उन्हीं २० प्रतिशत प्रतिबद्ध लोगों पर ही कायम होते हैं।

किसी व्यक्ति या किसी चीज़ के प्रति प्रतिबद्ध और वफादार होना एक महान सौदा है, तथा विशेष रूप से कई विकर्षण और प्रेरक प्रभावों की इस आधुनिक दुनिया में, यह वास्तव में एक महान कार्य है। इसमें कोई संदेह नहीं है, कि केवल महान लोग ही ऐसा कर सकते हैं।

अंत तक बने रहने के लिए प्रतिबद्धता के एक उच्च स्तर की आवश्यकता होती है। इसके लिए उद्देश्य के एक उच्च स्तर के आत्म-नियंत्रण और स्पष्टता की आवश्यकता होती है। किसी चीज़ या किसी के प्रति प्रतिबद्ध और वफादार होने के लिए अंतिम परिणाम देखने के लिए धीरज और धैर्य की आवश्यकता होती है।

अधिकांश आबादी में उन गुणों की कमी हो रही है। वे त्वरित परिणाम की उम्मीद करते हैं, किंतु साथ ही, वे किसी भी अतिरिक्त प्रयासों को निवेश करने के लिए तैयार नहीं होते हैं। उनमें से अधिकतर हार मान लेने वाले होते हैं। वे अपने गंतव्य तक पहुँचने से कुछ ही सेकंड या मिनट पहले ही अपने प्रयासों को छोड़ देते हैं।

प्रतिबद्धता निस्वार्थता का संकेत है।

स्वार्थी उद्देश्यों और संकीर्ण प्राथमिकताओं से छुटकारा पाना आवश्यक है। स्वार्थ विकास के लिए त्वरण से अधिक मंदता को बढ़ावा देता है। इससे लोगों को संभावनाओं की तुलना में अधिक कठिनाइयाँ दिखती हैं। स्वार्थ, लोगों को संगठनात्मक लक्ष्यों को अनदेखा करवाता है तथा अवास्तविक लक्ष्य को बढ़ावा देता है।

स्वार्थी लोग हमारे शरीर में कैंसर के कणों की तरह होते हैं। वे चुपचाप दूसरों की आम भावना को कम कर देते हैं तथा वे अपने विरोधियों को हराने के लिए दिन - रात काम करते हैं। वे अपने दुश्मनों की छवियों को विचलित करने के लिए अस्वास्थ्यकर तरीके अपनाते हैं और दूसरों को नष्ट करने के लिए स्वयं को नष्ट करने में भी नहीं कतराते हैं। ऐसे लोग स्वयं और उनके संगठन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को भूल जाते हैं। वे स्वयं और दूसरों के लिए समस्याएँ पैदा करते हैं। वे अधिक समस्या बनाने वाले और कम समाधान चाहने वाले होते हैं।

समस्या वाले लोग शुरू में समाज से लड़ते हैं, फिर अपने लोगों के साथ और अंत में स्वयं के साथ और उनमें से अधिकतर अपने मन से आत्महत्या कर लेते हैं।

प्रतिबद्धता दीर्घकालिक दृष्टि से आती है और ऐसे दीर्घकालिक दृष्टि से स्वार्थी लोगों से कभी उम्मीद नहीं की जा सकती है क्योंकि वे हमेशा अपने विरोधियों का सामना करने में व्यस्त रहते हैं और उनके समय का बहुत बड़ा हिस्सा विचारों और कार्यों पर निवेश करने के बजाय विनाश के नियोजन पर निवेश करते हैं।

अधिकांश स्वार्थी लोग अस्थायी लाभों से प्रभावित होते हैं। वे अपने संगठन या उनके साथ जुड़े लोगों को धोखा देने से नहीं कतराते हैं। वे खुद को संगठनों के आज्ञाकारी कर्मचारियों और मान प्रणालियों के रक्षकों के रूप में पेश करते हैं। किंतु, वे अपने संगठन के लिए और जो लोग उन पर भरोसा करते हैं, उनके लिए कुछ भी नहीं करते हैं। वास्तव में, वे खुद को भी मिलाके, किसी को भी पसंद नहीं करते हैं। वे किसी को भी किसी चीज़ के लिए धोखा दे सकते हैं और देते हैं। वे आसानी से प्रभावित हो जाते हैं। वे उन लोगों के प्रति कृतज्ञता का कोई रवैया बनाए नहीं रखते हैं, जिन्होंने उन्हें उनके संकट में उनका समर्थन किया था।

यह वाक्यांश, 'कृतज्ञता का रवैया' बहुत मायने रखता है। जाने – अनजाने में हम यहीं दिखाना भूल जाते हैं। यह ध्यान देने योग्य दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि मनुष्य कृतज्ञता के कम से कम रवैये को दिखाते हैं। हमारे पालतू कुत्तों या हमारे प्यारे पक्षियों पर विचार करें, वे किस तरह का स्तर हमें दिखाते हैं - उनके स्वामी का?

यहाँ तक कि चिड़ियाघर में जानवर भी अलग नहीं होते हैं। इंसानों का क्या? वे अपने माता-पिता, मित्रों, संगठनों और धरती माँ को भी भूल जाते हैं। वे उनसे प्राप्त समर्थन और आशीषों का कोई संबंध नहीं दिखाते हैं। उनके अनुसार, दूसरों से प्राप्त लाभ उनके अधिकार थे, किंतु कभी विशेषाधिकार नहीं। वे यह भी सोचते हैं कि वे इससे अधिक योग्य हैं।

हालांकि उनके जीवन में खुश रहने के कई कारण हैं, वे अन्यथा होने के कारणों की खोज करते रहते हैं। रिश्ते प्रतिबद्धताओं पर बनते हैं। प्रतिबद्ध होने के लिए, किसी को, दूसरों को वैसे ही स्वीकार करने के लिए पर्याप्त रूप से तैयार होना चाहिए, न कि जैसा हम चाहते हैं कि वे हमारे तरीके से कार्य करें।

लोग अपनी प्रतिबद्धताओं से क्यों भटकते हैं?

जब दूसरों की सुविधा के लिए विकल्प बनते हैं, प्रतिबद्धता उस बीच में खो जाती है।

जब दूसरों की सलाह पर भागीदारी की जाती है, तो विशेष कार्य को बीच में छोड़ दिया जाता है।

जब विकल्प अस्थायी लाभ के लिए बने होते हैं, तो प्रतिबद्धताओं को शायद ही दिखाया जाता है।

यह दुर्भाग्य की बात है कि, भारत में युवाओं को उनके वृद्धों के हित के अनुसार अपने क्षेत्र के अध्ययन और करियर का चयन करने के लिए मजबूर किया जाता है, जो लोगों को काम करने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता खो देने का एक कारण है। ऐसे लोग हमेशा अपने मनपसंद महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के तरीकों की तलाश करते हैं।

एक को हमेशा वही करना चाहिए, जिसके लिए वह उत्साही रहता है।

जुनून प्रतिबद्धताओं को बनाए रखता है। यह एक तथ्य है, कि बहुत से लोग वहाँ नहीं हैं जहाँ उन्हें होना चाहिए तथा जो वे वास्तव में करना चाहते थे, वो वे नहीं कर रहे हैं। उनमें से ज्यादातर एक गोल छेद में एक वर्ग खूंटी की तरह होते हैं।

अनुपयुक्त होना, लोगों को अयोग्य बना देता है।

लंबे समय तक कुछ करने से प्रतिबद्ध रहने के लिए, किसी को दूसरों से प्रभावित हुए बिना अपने क्षेत्र के हितों का चयन करने में पर्याप्त साहसी होना चाहिए। कोई फर्क नहीं पड़ता कि क्या यह दूसरों के लिए आकर्षक या स्वीकार्य है या नहीं, चयन पूरी तरह से चयनकर्ता के हित में आधारित होना चाहिए। हम जो भी करते हैं, उसमें निरंतर रुचि बनाए रखना आवश्यक होता है।

हर विनिर्माण प्रयास केवल तब ही सफल होते हैं, जब बीच में कोई रुकावट नहीं होती। इस प्रक्रिया में कोई भी रुकावट कभी भी कच्चे माल की बर्बादी का कारण बन सकती है। मानव प्रयासों का मामला भी अलग नहीं है। बीच में प्रतिबद्धता का नुकसान समूचे अभियान को नुकसान पहुँचा सकता है। ऐसे अभियानों को आधे रास्ते पर छोड़ दिया जाता है।

महान उपलब्धियाँ और सफलताएँ हमेशा प्रतिबद्धता के लंबे वर्षों के परिणाम थे।

पिछले तीन ओलंपिक में ९ स्वर्ण पदक जीतने वाले यूसैन बोल्ट की प्रतिबद्धता हमें एक बेहतरीन सबक सिखाती है। वे अपने तीन ओलंपिक दौड़ के दौरान ११५ सेकंड से कम समय तक दौड़े और ११ करोड़ ९ लाख डॉलर जीते, जो प्रत्येक सेकेंड के लिए १ लाख

डॉलर से अधिक था | किंतु उन २ मिनटों के लिए, उन्होंने २० से अधिक वर्षों तक प्रशिक्षित किया |

स्वतंत्रता कभी निः शुल्क नहीं हो सकती है | यह हमेशा संघर्षों के माध्यम से प्राप्त होती है | जीवन में स्वतंत्रता की उच्च प्रतिबद्धता बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है |

उदार दृष्टिकोण से शायद ही स्वतंत्रता को जीता जा सकता है।

लोग कई चीजों के बंदी होते हैं | उन्हें वित्तीय, सामाजिक और सांस्कृतिक स्वतंत्रता की आवश्यकता होती है | प्रत्येक में विचारों की आज़ादी, राय की आज़ादी, नकारात्मकता से आज़ादी, गलत संगठनों से आज़ादी, और व्यसन से आज़ादी आदि होना चाहिए | एक आंतरायिक प्रयास ऐसी आजादी को शायद ही ला सकता है | इसके लिए स्वतंत्रता की देरी या अस्वीकार करने वाले कारकों के खिलाफ प्रतिबद्ध लड़ाई की आवश्यकता होती है |

आम आदमी को, सफल लोगों का जीवन सुचारू और शांत लगता है | अपने दैनिक जीवन में जिन वास्तविक संघर्षों का वे सामना कर रहे हैं, उसके विषय में कौन जानता है ?

उनके लिए, सफल व्यक्ति एक बतख की तरह होते हैं, जो पानी के ऊपर ही शांत और सुचारू रूप से तैरते हैं। किंतु बहुत कम लोग ही पानी के नीचे हो रहे उसके निरंतर छपछपाते पैरों के विषय में सोच पाते हैं। यह और कुछ भी नहीं, बल्कि उनकी प्रतिबद्धता है जो उन्हें शांत और सुचारू सतह पर रखता है।

प्रतिबद्धता परिणाम को एक वास्तविकता रूप देती है | लगभग सभी कीमती उपलब्धियाँ प्रतिबद्धताओं का परिणाम थीं | महान उपलब्धियों की प्राप्ति की राह में, उनकी प्रतिबद्धताओं ने उनके प्रयासों से विचलित होने की बजाय उनके उद्देश्य का पालन किया |

सफल लोग मेहनती मधुमक्खियों या कठफोड़वाओं की तरह होते हैं। दोनों परिश्रम से काम करती हैं। मधुमक्खियाँ शहद के एक औंस को इकट्ठा करने के लिए हजारों फूलों का दौरा करते हैं और अपनी कठिनाइयों को अपने उद्देश्यों से कभी निराश या पीछे नहीं लेते हैं।

कठफोड़वा का मामला भी अलग नहीं होता है | वे अपने घोंसलों के लिए शायद ही कभी नरम लकड़ी को चुनते हैं और लकड़ी की कठोरता उन्हें चिंतित नहीं करती है | वे जानते हैं कि समय पर उनके कार्य को पूरा करने के लिए उनकी प्रतिबद्धता आवश्यक होती है | उनके पास कोई अन्य चाह या विकल्प नहीं होता है |

कई विकल्प और प्राथमिकताएँ प्रतिबद्धता के दायरे को कम कर देती हैं।

खासकर इस आधुनिक दुनिया में, कई प्राथमिकताएँ और विकल्प अप्राकृतिक नहीं हैं। लेकिन उनकी जरूरतों और इच्छाओं के बीच भेद करने के लिए पर्याप्त समझदार होना चाहिए। ज़रूरत एक ऐसी चीज़ है, जो हमारे पास होनी चाहिए, जिसके बिना हम कुछ नहीं कर सकते। जबकि इच्छा एक ऐसी चीज़ है जिसे हम करना चाहते हैं, हालांकि यह आवश्यक नहीं है, यह एक अच्छी बात है। 'होना चाहिए' और 'अच्छा है' के बीच में एक बड़ा अंतर होता है।

जब शिक्षा, करियर या रिश्ते 'अच्छा करने की' सूची में आते हैं, तो प्रतिबद्धता खोने की संभावना अधिक हो जाती है। जो लोग उपरोक्त को अपनी इच्छा समझते हैं न कि ज़रूरत, वे कभी उस तेंदुए से अलग नहीं होते हैं, जिसने उस खरगोश को खो दिया, जिसे वह नाश्ते के लिए पीछा कर रहा था।

खरगोश की तुलना में कई बार मजबूत और तेज़ होने के बावजूद, यह तब तक नहीं मिल पाता क्योंकि वह तेंदुआ अपने नाश्ते के लिए दौड़ रहा था, खरगोश अपने जीवन के लिए दौड़ रहा था।

यहाँ प्रतिबद्धता का महत्व आता है।

यह और कुछ नहीं प्रतिबद्धता है जो हमारी सफलता का निर्णय लेती है।

अपने प्रयासों में प्रतिबद्धता जो हमारी सफलता का फैसला करती है। हमारे प्रयासों में एक प्रतिबद्धता के लिए, अपने लक्ष्यों को 'इच्छा' की बजाय 'आवश्यकताओं' के रूप में व्यवहार करने की ज़रूरत है।

ज़रूरतें इच्छाओं की तुलना प्रतिबद्धता की अधिक मांग करती हैं।

मैंने कई बिक्री कर्मियों को हताश या निराश होते देखा है, जब उनकी बिक्री प्रस्तावों को उनकी संभावनाओं से लगातार अस्वीकार कर दिया जाता है। निरंतर अस्वीकार करने से वे बहुत थक जाते हैं और यहाँ तक कि उन्हें अपनी बिक्री की नौकरी छोड़ने के लिए भी मजबूर किया जाता है। जब इनकारों को बार - बार दोहराया जाता है, तब निराश होना असामान्य नहीं होता है।

किंतु हमें इस तथ्य को स्वीकार करना चाहिए कि, अस्वीकृतियाँ और इंकार नई प्रतिक्रियाएँ नहीं हैं। इस दुनिया में कुछ भी स्वीकार नहीं किया जाता है, हर स्वीकृति के पीछे हमेशा कोई न कोई अस्वीकृत होती ही है। वास्तव में,

अस्वीकृति और कुछ भी नहीं, किंतु अनौच्छिक क्रिया है।

सजगता केवल एक बाह्य पदार्थ के साथ संपर्क करने का संकेत है और वे कभी भी किसी भी आक्रमण के खिलाफ स्थायी बाधा सुनिश्चित नहीं करते हैं। अस्वीकृति कभी स्थायी नहीं हो सकती तथा रूपांतरण के लिए लिया गया समय हमारे किए गए प्रतिबद्धता के स्तर पर तय होता है।

कई लोग कड़ी मेहनत और चतुर कार्य के बीच भ्रमित होते हैं। मैं कई युवाओं को जानता हूँ, जो परिवर्णी शब्द (SMART) के असल अर्थ को जाने बिना ही चतुर कार्य को करने में विश्वास करते हैं। वे अभी भी विश्वास करते हैं कि चतुर कार्य एक छोटा मार्ग है, जो बिना किसी कठिनाई के उन्हें अपने सपनों को शीघ्र ही प्राप्त करने में उनकी मदद करता है। वे चतुर कार्य को प्रयासों की तुलना में एक चाल समझते हैं और यह चतुर लोगों का खेल है (होशियारी के लिए उनका अर्थ वास्तविकता से काफी अलग होगा)।

सबसे दुःख की बात ये है कि, उनमें से अधिकतर इस तरह के तरीकों की तलाश में होते हैं, ताकि वे जल्द ही अमीर बन जाएँ और वे अपनी खोज को लंबे समय तक जारी रखेंगे। मुश्किल से ही किसी को यह मिलेगा और यदि वे सब कर पाते हैं, तो यह केवल बड़ी मेहनत के बाद ही होगा।

यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि, स्मार्ट परिवर्णी शब्द के प्रत्येक अक्षर अप्रत्यक्ष रूप से प्रतिबद्धता की आवश्यकता को इंगित करते हैं।

परिवर्णी शब्द दर्शाता है,

एस – विशिष्ट (स्पेसिफिक)

एम – मापनीय (मेज़रेबल)

ए - प्राप्त करने योग्य (अचिवेबल)

आर – उचित (रिज़नेबल)

टी - समय बाध्य (टाइम बाउंड)

जब स्मार्ट कार्य से सफलता की उम्मीद होती है, तो यह सुनिश्चित करना जरूरी होता है कि प्रतिबद्धता विशिष्ट है। यह तब ही संभव होता है, जब हम अपने आप को ध्यान भटकाने वाले प्रभावों और कई प्राथमिकताओं से अलग कर देते हैं। एक विजेता होने के लिए, एकाग्रता की एक उच्च राशि की आवश्यकता होती है।

कार्य केवल तभी उत्पादक होते हैं, जब हमें लगता है कि यह सार्थक है। प्रत्येक को अपने कार्यस्थल में या निजी जीवन में एक स्पष्ट औचित्य होना चाहिए। कई लोग अपने

कामों के कारणों को जाने बिना ही अपनी ज़िंदगी में बहुत कुछ करते हैं | अर्थपूर्ण कार्य कुछ परिणाम जल्द या बाद में उत्पन्न करते हैं और यह कभी भी एक बेकार प्रयास नहीं होता |

प्रत्येक को अपने काम पर पर्याप्त ध्यान देना चाहिए | चौकस होने के लिए, निर्विवाद प्रतिबद्धता होना जरूरी है | वचनबद्धता सपने से अलग होना मुश्किल कर देता है |

हमारे गंतव्य तक पहुँचने के लिए प्रयास के उचित मात्रा में होना आवश्यक है | चाहे वह निकट हो या दूर, प्रयास अपरिहार्य होता है | समयबद्ध प्रयास केवल उद्देश्य के प्रति प्रतिबद्धता के द्वारा संभव होता है |

चाहे वह स्वीकृति का मामला हो या अस्वीकृति का, प्रतिबद्धता के स्तर पर ही परिणाम का निर्णय लिया जाता है | प्रतिबद्धता संबंधों को मजबूत बनाता और लंबे समय तक चलने वाला बनाता है | यह अस्वीकृति से बचाता है तथा स्वीकृति को बढ़ावा देता है |

छोड़े जाने से बचने के लिए प्रतिबद्ध रहें।

निजी और आधिकारिक जीवन में सफल होने के लिए, उच्च स्तर की प्रतिबद्धता का होना आवश्यक है | आइए देखें कि, हम अपने प्रतिबद्धता के स्तर को कैसे बढ़ा सकते हैं |

प्रतिबद्धता के स्तर को बढ़ाने हेतु युक्तियाँ

1. अपनी आवश्यकताओं को जानें।

अपने अग्रिम कार्यों की जानकारी रखने से प्रतिबद्धता के स्तर में वृद्धि होती है | हमारी सटीक आवश्यकता जानने से हमें उद्देश्य की स्पष्टता मिलती है | यह हमारे लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करने में तथा हमारी जरूरतों के अनुसार समझौते से बचने में हमारी सहायता करता है | सामान्यता की अधिक सहिष्णुता कभी भी हमारे लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता नहीं करती है | वास्तव में, एक सफल व्यक्ति का जीवन सामान्यता और उत्कृष्टता के बीच एक अंतहीन लड़ाई होती है |

2. अपने अवचेतन मन को अपनी क्षमताओं में विश्वास करने हेतु बनाएँ।

लक्ष्यों को निर्धारित करते समय, अपनी आवश्यकताओं को सूचीबद्ध करने, लक्ष्य को निर्धारित करने तथा गतिविधियों को पूरा करने के लिए लेखा - चित्र तैयार करना उचित होता है | दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों को सूचीबद्ध करें और उसके पूरा होने पर उन्हें एक

- एक करके हटा दें | यह प्रक्रिया अवचेतन मन को स्वीकार करने में मदद करेगी कि आप आगे बढ़ रहे हैं |

उपलब्धियों के दृश्यमान प्रमाण होने से हमें उच्च स्तर की प्रतिबद्धता बनाए रखने में मदद मिलती है तथा हम अधिक प्राप्त करने में सक्षम होते हैं | आगे की कोशिशों के लिए उपलब्धियों को एक समर्थक के रूप में प्रदान किया जाता है |

3. अपने लक्ष्य निर्धारित करें - यथार्थवादी लक्ष्य |

अवचेतन मन के लिए अवास्तविक लक्ष्य स्वीकार करना कठिन होता है | अवचेतन मन को यह समझना आवश्यक होता है कि यह आपके द्वारा संभव है | ‘एक के बाद एक करने’ का दृष्टिकोण अवचेतन मन को परिणामों को देखने में मदद करता है ताकि वे आगे की कार्यवाही के लिए एक समर्थक के रूप में कार्य करें | हर उपलब्धि व्यक्ति को ध्यान केंद्रित करने में मदद करेगी तथा ध्यान केन्द्रित होने से प्रतिबद्धता स्तर में वृद्धि होगी |

4. कई प्राथमिकताओं और एकाधिक केन्द्रित होने से बचें।

यह स्वाभाविक है कि हमारे चारों ओर की चीजें हमें आकर्षित या विचलित कर सकती हैं | केंद्रित रहना सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है | कई प्राथमिकताएँ तथा एकाधिक केंद्रित ध्यान कइयों के लिए प्रमुख चिंताओं का कारण होती हैं | यह सफलता के लिए मुख्य बाधा के रूप में कार्य करती है | कई प्राथमिकताएँ लोगों को भ्रमित करती हैं और उनकी प्रतिबद्धता के स्तर को कम करती है | प्रतिबद्धता को बढ़ाने के लिए, हमें अपनी जरूरतों को प्राथमिकता देने और अपने प्रयासों को इस तरह से सुव्यवस्थित करने की आवश्यकता होती है कि हम अपनी प्रतिबद्धताओं को बनाए रखें |

5. अपनी प्रतिबद्धताओं को सूचीबद्ध करें तथा उसे प्रकाशित करें।

कागज के एक टुकड़े पर अपनी प्रतिबद्धता लिखने से प्रतिबद्धता स्तर में वृद्धि होती है | जब हम कागज पर कुछ लिखते हैं, तब हमारे सचेत और अवचेतन मन के बीच एक समझौता हो जाता है | इसे लिखित रूप में बनाकर, हम वास्तव में ऐसा करने के लिए सहमत होते हैं | हम अपनी उपलब्धि के लिए समय का निवेश करने की हमारी इच्छा दिखाते हैं | लिखित प्रतिबद्धता हमें केन्द्रित होने की याद दिलाती है तथा इससे अलग होने के लिए हमारी स्वतंत्रता को कम करती है |

दूसरों (समान सोच वाले लोगों को) को अपनी वचनबद्धता के बारे में बताने से आपको उसे पूरा करने में मदद मिलेगी | अवचेतन मन हमेशा एक जिम्मेदार व्यक्ति के रूप

में अपने आप को साबित करना चाहता है, यहाँ तक कि उस एक व्यक्ति की आँखों में भी, जिनके साथ आप अपना लक्ष्य साझा कर चुके हैं।

यदि आप कहते हैं कि आप कुछ करेंगे, तो एक बड़ी संभावना है कि आप वास्तव में ऐसा करेंगे। अपने लक्ष्य को घोषित करने से आप जवाबदेह तथा अनुशासित बन जाएँगे।

क्षमता

लोगों को सफल बनाने में क्षमता एक प्रमुख भूमिका निभाती है | व्यक्तिगत और आधिकारिक जीवन में सफल होने के लिए यह एक आवश्यक घटक है | विभिन्न राय के लोगों से निपटने, प्रतिकूल परिस्थितियों और चुनौतियों से निपटने, नवीन विचारों और विशिष्टता लाने के दृष्टिकोण में क्षमता होनी चाहिए।

वास्तव में, क्षमता क्या है ?

योग्यता कौशल, ज्ञान, अनुभव और व्यक्ति द्वारा प्राप्त प्रशिक्षण के सार को लागू करना, क्षमता का संयोजन है।

हमारे चारों तरफ बहुत से लोग हैं जो अपने बचपन के दोस्तों या प्राथमिक स्कूल के दोस्तों की सफलता पर आश्र्यर्थकित होते हैं | उनमें से अधिकांश के लिए, अपने पुराने स्कूल के साथी की जीत को स्वीकार करना और उनका सम्मान करना कठिन होता है | अन्य की सफलता भी उन्हें बेचैन या ईर्ष्यालु बना देती है | वे बचपन या अपने परिवार की पृष्ठभूमि के दौरान अपने खराब अकादमिक प्रदर्शनों पर अफवाहों को फैलाने के द्वारा उन्हें 'अक्षम और अयोग्य' साबित करने का प्रयास भी करते हैं | वे सफल लोगों पर नकारात्मक प्रचार या अभिमानी टिप्पणियों के प्रसार करने में भी नहीं डिझिक्ट होते हैं तथा निजी छवियों में उनकी छवि को धूमिल करते हैं।

यह ध्यान देने की दुखद बात है कि, जब कड़ी मेहनत और समर्पित लोगों की आलोचना होती है, तब आलोचक, सफल लोगों की अपनी योग्यता को बढ़ाने के लिए प्रयासों की मात्रा पर शायद ही कोई विचार करते हैं | जो धन और समय वे अपने विकास पर बिताते हैं शायद ही वे उसके लिए जिम्मेदार होते हैं।

सफल लोगों और औसत दर्जे के बीच एक प्रमुख अंतर यह है कि, सफल लोग हमेशा अपने ज्ञान को अद्यतन करने और उनकी दक्षता बढ़ाने में विश्वास करते हैं | वे अपने समय, धन और खुद को ऊपर उठाने में प्रयासों का निवेश करने में कोई दिक्कत नहीं करते हैं | वे हमेशा नए ज्ञान की खोज करते हैं और उसे बदलने की चाहत रखते हैं | वे खुद को हठधर्मी से मुक्त करते हैं और दूसरों के ज्ञान को स्वीकार करते हैं और उसे सीखते हैं, तथा स्वयं के विकास के लिए अपनी आय का एक निश्चित हिस्सा निवेश करते हैं।

यह बहुत दुख की बात है कि कुछ सुशिक्षित लोग संगठनों और व्यक्तियों के दक्षता बढ़ाने के प्रयासों को प्रोत्साहित करने में नाखुश होते हैं | साथ ही, वे अपनी कारों की समय पर मरम्मत करने या अपने घरों के रखरखाव के लिए जोर देते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि -

चाहे आदमी हो या मशीन, निरंतर बेहतर प्रदर्शन के लिए नियमित रखरखाव आवश्यक होता है।

बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रत्येक बैटरी को चार्ज करने की आवश्यकता होती है तथा प्रत्येक चारू को नियमित रूप से तेज करना आवश्यक होता है।

जैसा कि पहले चर्चा की गई, इस दुनिया में सब कुछ गिरावट और अपकर्ष होने के अधीन होता है। मानव जीवन एक लोहे की थाली की तरह होती है। उस पर जंग संचय काफी आम बात होती है। यदि हम जंग को नियमित रूप से नहीं हटाते हैं, तो जंग केवल लोहे की थाली को मात्र परत में बदल देती है और फिर रद्दी माल वाले विक्रेता भी उसे स्वीकार नहीं करते हैं।

हमारे चारों ओर के अधिकांश लोग, लोहे की थाली के समान होते हैं। शुरू में, वे अच्छी तरह से चमकते हैं और खुद को अपनी असलियत से अधिक दिखाते हैं। धीरे-धीरे, अपनी आदतों और संगठनों के कारण, वे अपनी चमक खो देते हैं, और उनकी चमक अंधेरे में बदल जाती है - अज्ञानता और जंगों के अंधेरे में।

सबसे दुःख की बात यह है कि अगर किसी को उनके द्वारा बर्बाद करने के खिलाफ चेतावनी दी जाती है, तो वे बिना उसे माने अनसुना कर देते हैं तथा वे उन शुभचिंतकों का भी मजाक उड़ाने में पीछे नहीं हठते हैं। वे व्यक्तियों या संगठनों के प्रशिक्षण को अतिरिक्त व्यय के रूप में देखते हैं।

वे अपने कौशल को अद्यतन नहीं करते क्योंकि उनका मानना है कि उनके शुरुआती अर्जित ज्ञान उनके जीवन के बाकि हिस्सों के लिए पर्याप्त से भी अधिक है।

यह ध्यान देने की दिलचस्प बात है कि, लोग ड्राइविंग स्कूल्स पर जाते हैं या अपने खाना पकाने के कौशल को सुधारने के लिए कक्षाओं में भाग लेते हैं, जब अपने करियर या व्यक्तिगत विकास की बात आती है तो वे खुद को अपने दृष्टिकोण में बहुत अनिच्छुक दिखाते हैं। जब उनके अधीनस्थों के प्रशिक्षण और विकास की बात आती है, तो उनका दृष्टिकोण कोई अलग नहीं होता है। वे उन्हें प्रशिक्षण के अवसर देने से इनकार करते हैं, किंतु उसी समय में उनसे परिणाम बढ़ाने की उम्मीद भी करते हैं। किसी भी मशीन की तरह, मनुष्य को भी नियमित रूप से 'रखरखाव' की आवश्यकता होती है, 'सी . एल. आई. टी' की प्रक्रिया।

सफाई (क्लीनिंग),

चिकनाई (लुब्रिकेटिंग), निरीक्षण (इंस्पेक्शन) और परीक्षण (टेस्टिंग)

क्षमता को बढ़ाने के लिए, आत्म-मूल्यांकन की प्रक्रिया से गुजरना या दूसरों को अपनी क्षमता का परीक्षण करने के लिए अनुमति देने में पर्याप्त रूप से तैयार होना चाहिए। दक्षता आकलन और आत्म-विकास की प्रक्रिया से गुजरने के लिए बहुत – से डर का सामना करना पड़ता है। उनमें से अधिकतर के लिए, परीक्षण और पूछताछ एक ही है। जब किसी भी कारण से उनके स्तर की योग्यता का परीक्षण किया जाता है, तो वे अपमानित महसूस करते हैं तथा वे सही होने की बजाय स्वयं को सही साबित करने के लिए अपने स्तर की पूरी कोशिश करते हैं। कभी-कभी, खुद को सही साबित करने के लिए, वे दूसरों को भी गलत साबित करने या प्रणाली को दोष देने में भी नहीं कतराते हैं। ऐसे लोगों में विकास और परिवर्तन लाना कठिन होता है।

हमारी संगति क्षमता के रखरखाव और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। चूँकि हर संघ, एक नई शिक्षा है, इसलिए सक्षम लोगों की संगति में होना बेहतर होता है, ताकि उनके अनुभव उन लोगों के लिए मूल्य जोड़ सकें जो उनके साथ सहयोग करते हैं।

सच्ची योग्यता और नकारात्मकता साथ – साथ नहीं चल सकते। जब हमारा मन नए ज्ञान और सूचना के लिए खुलता है, तब सक्षम होना आसान होता है, जो कि तभी संभव है जब हम खुद को अहंकार और गलत संगठनों से दूर रखते हैं। नकारात्मक अहंकार और गलत संगठन कैंसर के ऊतकों की तरह होते हैं। यदि कैंसर के ऊतकों की पहचान की जाती है और प्रारंभिक चरण में ही नष्ट हो जाती है, तो इलाज संभव होता है। जितना हम इसे पहचानने में देरी करते हैं, उतना ही हमारे शरीर में इसकी जड़ें गहरी हो जाती हैं तथा इन जड़ों को हम बिना क्षति के हटा सकते हैं।

गलत संगति गलत परिणाम देते हैं।

इस तरह के सहयोग से लाभ शुरूआत में आकर्षित लग सकते हैं। किंतु इसमें कोई संदेह नहीं है, कि लंबे समय में ये संगति हमें निराश कर सकते हैं, कभी-कभी बहुत ही भयानक रूप से भी। गलत संगठन हमें शायद ही कभी क्षमता वृद्धि की आवश्यकता की कोई याद दिलाते हैं।

नियमित प्रशिक्षण और पुनः प्रशिक्षण की प्रक्रिया के माध्यम से क्षमता को बढ़ाया जा सकता है।

प्रशिक्षण, क्षमता को सुधारने का एक प्रयास है।

प्रशिक्षण के लिए प्रत्येक अवसर का उपयोग करना चाहिए | चाहे हम प्रशिक्षण दें या प्राप्त करें, यह हमारे लिए फायदेमंद होता है | एक कहावत है, 'एक बार लिखना तीन बार पढ़ने के बराबर है और एक बार की पढ़ाई नौ बार पढ़ने के बराबर है।'

जो लोग प्रशिक्षण करियर में होते हैं, वे अपने जीवन में कई बार ऐसा महसूस कर सकते हैं कि, जब भी हम दूसरों को प्रशिक्षित करते हैं, हमारे ज्ञान में वृद्धि होती है और हम अपने मौजूदा ज्ञान के लिए नए निष्कर्ष जोड़ते हैं।

हमारे चारों तरफ बहुत से लोगों को अपनी नौकरी करने के लिए नियत किया गया है, किंतु खुद के नहीं अपितु दूसरों के विकल्पों के अनुसार। वे हमें सामान्य कथन की याद दिलाते हैं, “गलत जगह पर सही व्यक्ति या सही जगह पर गलत व्यक्ति।” अनुभव बताता है कि व्यक्ति की धारणा, रवैया, योग्यता और प्रेरणा के स्तर के आधार पर भूमिकाओं या जिम्मेदारियों के पुनर्गठन में मामूली परिवर्तन लोगों की योग्यता स्तर को बढ़ा सकती है।

क्षमता का अभाव आत्मविश्वास में कमी लाता है और आत्मविश्वास की कमी मनुष्य की गलती का कारण बन सकती है। जीवन में दोहराई गई त्रुटियाँ लोगों को कम आत्मविश्वास बनाती हैं तथा असफलता के डर का सामना करवाती हैं और उनके जीवन में कुछ भी नया आरंभ करने में झिझक लाती है।

तथाकथित कठिन कार्यों को ग्रहण करने में उनकी झिझक उन्हें एक अस्थायी सुविधा क्षेत्र में बनाए रखती है जो उन्हें बाद में आलस और हताशा के बंधन में बाँध देती है। इस तरह के सुविधा क्षेत्र केवल अज्ञानता के झुकाव को ही आकर्षित करते हैं। दक्षता हासिल करने के लिए सक्रिय भागीदारी सबसे अच्छा तरीका है। प्रत्येक को आसान कार्य करने के बजाय कठिन कार्य करने का अभ्यास करना चाहिए। यह और कुछ नहीं केवल हमारी कठिनाइयों का सामना करने के लिए हमारी अनिच्छा है, जो कार्य को कठिन या थकाऊ बना देता है।

इस ब्रह्मांड में कुछ भी करने के एक से अधिक तरीके होते हैं। कठिन कार्य हमेशा लोगों को सक्षम बनाते हैं - कम से कम, प्रतिकूलता का सामना करने के लिए सक्षम बनाते हैं। इस तरह की भागीदारी उन्हें मजबूत और टिकाऊ बना देती है। जैसा कि हम जानते हैं, वही कार्य बार-बार करके, अतीत से अलग परिणाम की उम्मीद करना कुछ भी नहीं, किंतु पागलपन है। नई जिम्मेदारियों को लेना, नई चीजें सीखने की इच्छा दिखाने और हम जो

कुछ भी करते हैं उसमें नवाचारों के प्रयास करने ज़रूरी है | प्रत्येक को नए ज्ञान की प्राप्ति के लिए और आगे बढ़ना चाहिए |

**जड़ता, आराम करने की स्थिति,
कभी भी हमें कोई नया ज्ञान प्राप्त करने में सहायक नहीं होगी।**

सफल लोगों को हमेशा अवसरों के नए ताजे इलाकों की तलाश में रहना होगा | उनके लिए, ज्ञान नए अवसरों के लिए दरवाजे खोलता है |

सफलता हमेशा लचीलेपन के माध्यम से आती है - उन्नत जानकारी को स्वीकार करने, दूसरों की सुनने के, और गलतियों और अज्ञानता को स्वीकार करने के लचीलेपन | नए ज्ञान की स्वीकृति और निर्देशों को प्रस्तुत करना लचीलेपन के संकेत होते हैं |

मैं कई बड़े लोगों को जानता हूँ, जो वर्तमान दिन के मूल्य प्रणालियों के अवमूल्यन और शिक्षा की गुणवत्ता के विषय में विलाप करने की आदत रखते हैं | कुछ क्षेत्रों में घटते गुणवत्ता के तथ्यों को अनदेखा किए बिना, मैं उन्हें यह बताना चाहता हूँ कि गुणवत्ता या मान प्रणाली में गिरावट एक नई घटना नहीं है और यह हमेशा के लिए दूसरों के साथ मुकाबला करने या नवीनतम परिवर्तन के मार्गदर्शन करने में सक्षमता की कमी का उत्पाद होता है |

एक सामान्य सोच है कि अनुभवी लोग सक्षम भी होते हैं | किंतु उनमें से अधिकतर नहीं | लोग खुद को अनुभवी के रूप में चित्रित करते हैं, किंतु एक ईमानदार मूल्यांकन से यह साबित होता है कि उनका अनुभव और कुछ नहीं केवल दो या तीन बातों के दोहराव ही होते हैं | यदि संगठन इस तरह के लोगों पर भरोसा करते हैं, तो उन्हें ऐसा लगता है कि उनके विश्वासों का गलत प्रयोग हो रहा है, यह सोचकर कि उद्योग में नवीनतम रुझानों और परिवर्तनों को पूरा करने के लिए उनकी क्षमता का स्तर पर्याप्त है | ऐसी गलत धारणा संगठनों में बड़ी विफलता भी ला सकती है |

एक मामले का अध्ययन - क्लॉवर्स सेफ्टी सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड को योग्यता आकलन से लाभ कैसे मिला ?

अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य और सुरक्षा पाठ्यक्रमों के प्रमुख प्रदाता क्लॉवर्स सेफ्टी सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड, ने अक्टूबर २०१५ के दौरान बिक्री में एक बड़ी गिरावट का सामना करने पर, इस अचानक हुए असहमति के कारणों को जानने के लिए एक बाहरी एजेंसी का समर्थन लिया |

बाहरी एजेंसी ने कर्मचारियों को लगभग तीन महीनों तक कर्मचारियों के सदस्यों और ग्राहकों के ज्ञान के बिना निगरानी में रखा था। मुख्य कार्यालय के कर्मचारी वर्ग, शाखा कार्यालयों और कॉल सेंटर के कर्मचारी सदस्यों में मूल्यांकन प्रक्रिया चली। उनके निगरानी के तरीके बहुत ही दिलचस्प थे। उनके कुछ कर्मचारी वर्गों के सदस्यों ने स्वयं को वास्तविक ग्राहकों के रूप में प्रतिरूपित किया और उनके कर्मचारियों से उनके विपणन और ग्राहक संबंध कौशल का आकलन करने के लिए बातचीत की। उनके उत्पाद ज्ञान का आकलन करने के लिए बिक्री और प्रशासनिक कर्मचारियों के बीच लिखित परीक्षाओं सहित विभिन्न तरीकों का आयोजन किया गया था।

मूल्यांकन का निष्कर्ष चौंकाने वाला था तथा प्रबंधन के विश्वास के विपरीत था। यहाँ तक कि वरिष्ठ बिक्री कर्मचारी वर्ग के कुछ सदस्य जिनको प्रबंधन 'संभावित' मानते थे, उनकी क्षमता का स्तर अपेक्षाकृत मानक के काफी नीचे थे।

वे एक लिखित परीक्षा जो पूरी तरह से उत्पाद से संबंधित जानकारी पर आधारित था, उसमें ३०% अंक भी प्राप्त नहीं कर पाए, हालांकि उसी उत्पाद की बिक्री वे पिछले पाँच सालों से कर रहे थे।

एजेंसी ने आगे ध्यान दिया कि,

- ०.३ प्रतिशत बिक्री कर्मचारी वर्ग के सदस्य अपने उत्पाद के ज्ञान को नियमित आधार पर अद्यतन करते हैं।
- १ प्रतिशत बिक्री कर्मचारी पाँच से अधिक बार ग्राहकों का अनुसरण करते हैं।
- २ प्रतिशत बिक्री कर्मचारी मौजूदा ग्राहकों के साथ नियमित संचार बनाए रखते हैं।
- ९९ प्रतिशत कर्मचारी वर्ग के सदस्य सामाजिक मीडिया पर हर दिन चार से पाँच घंटे बिताते हैं, जब उनके निजी टेलीफोनों के प्रयोग को कार्यालय में अनुमति दी जाती है।

यह प्रबंधन के लिए एक चौंकाने वाला तथा आँखें खोल देने वाला तथ्य था। हालांकि, समय पर मूल्यांकन, संगठनों को आगे के नुकसानों से बचा सका। मूल्यांकन ने भविष्य में विकास के लिए कई प्रभावी कदम उठाने में प्रबंधन की मदद की। कई वरिष्ठ कर्मचारी वर्ग के सदस्यों को खुद को अद्यतन करने के लिए उचित समय दिया गया था तथा उनमें से कुछ को निकाल दिया गया था जब वे 'सुधार से परे' साबित हुए थे।

इसके अलावा, एक विशेष कार्य समूह को उनके दृष्टिकोण में दैनिक एक प्रतिशत सुधार के घोषित अभियान के साथ बनाया गया था। बिक्री कर्मचारियों के सदस्यों ने दैनिक

रूप से एक प्रतिशत नए ग्राहकों से संपर्क करके सहयोग किया | ग्राहक देखभाल कर्मचारी भी सभी लंबित फाइलों को खाली करने में शामिल थे और हर कोई नियमित दृष्टिकोण से 'आगे बढ़ गया' था |

कई निष्कासित कर्मचारी वर्ग के सदस्यों ने 'तुगलक सुधार' के रूप में इस कदम की आलोचना की | उन्होंने एकजुट होकर आगे की विफलता और व्यापार के कुल पतन की भविष्यवाणी की | किंतु इसका नतीजा उनकी अपेक्षा के विपरीत था और यह बहुत अच्छा और आशाजनक था |

कई लोग यह नहीं जानते हैं कि हर दिन में एक प्रतिशत सुधार से, १०० दिनों में हमारे जीवन में १०० प्रतिशत विकास लाया जा सकता है | सपनों को आसानी से प्राप्त किया जा सकता है, उत्पादकता को बहुत बढ़ाया जा सकता है और अभियान को पूरा किया जा सकता है | बिना कठिन परिश्रम किए ही बड़ी सफलता हासिल की जा सकती है |

क्षमता आत्मविश्वास दिलाता है और विश्वास हमें संगठन के लिए और अधिक अपरिहार्य बनाता है | किसी को वही हासिल करने का प्रयास करना चाहिए और सभी संभव अवसरों को विवेकानुसार प्रयोग करना चाहिए |

सक्षम होना, लोगों को स्वतंत्र बना देता है।

सफल व्यक्तियों में से सबसे अधिक प्रशंसनीय गुण यह है कि वे 'शैक्षिक नेतृत्व' की तुलना में व्यावहारिक नेतृत्व में विश्वास करते हैं |

शैक्षिक नेतृत्व के तरीके अनुशासित समाजों के लिए अधिक व्यावहारिक होते हैं, जो आम तौर पर तीसरी दुनिया के देशों की आबादी का २७ % से कम प्रतिनिधित्व करते हैं | यहाँ व्यावहारिक नेतृत्व का महत्व सामने आता है | इसमें आम आदमी से निपटने के लिए पर्याप्त क्षमता की आवश्यकता होती है |

सफल लोग हमेशा नई चीजें सीखने की इच्छुकता दिखाते हैं और वे उन लोगों के लिए स्वयं को प्रस्तुत करने में संकोच नहीं करते हैं जो समान दृश्य साझा करते हैं | वे हमेशा जीवन को ही सीखने के लिए एक क्षेत्र के रूप में मानते हैं और अपने दैनिक जीवन में कम से कम एक नई चीज सीखते हैं | सीखना और अनुभव प्राप्त करना मरतेदम तक एक नियमित प्रक्रिया होती है |

वास्तव में, इस दुनिया को जबरदस्त परिवर्तन और तकनीकी प्रगति के अधीन किया गया है | नए ज्ञान और जानकारी दिन-प्रतिदिन बढ़ रहे हैं तथा हर चीज को अद्यतन करने

और अद्यतन करना मानव जीवन में एक अपरिहार्य तत्व बन गया है | बिना अद्यतन के जीवन निर्वाह इन दिनों कठिन हो गया है |

विशेषज्ञ हमारी दक्षता को अद्यतन करने में हमारी कमाई का कम से कम १०% खर्च करने की सलाह देते हैं | इस तरह के प्रयास कभी व्यर्थ नहीं होते | जो लोग खुद को अद्यतन करते हैं वे स्वयं को अपने संगठन में संपत्ति के रूप में रूपांतरित करते हैं तथा दूसरों के लिए कभी कोई दायित्व नहीं बनते हैं |

जिन नेताओं ने अपने लोगों की क्षमता में वृद्धि में विश्वास नहीं किया, वे कभी सच्चे नेता नहीं होते हैं तथा ऐसे नेता लंबे समय में अपने संगठन के लिए खतरे के अलावा और कुछ नहीं पाते हैं |

जो कर्मचारी अपने संबंधित क्षेत्रों में अपनी क्षमता बढ़ाने के लिए नाखुश होते हैं, वे परजीवियों की तरह उन लोगों का खून चूसते हैं जिन पर वे निर्भर रहते हैं | वे कभी भी कुछ भी उपज नहीं करते हैं, किंतु दूसरों की मेहनत का नुकसान करते हैं | इसे एक व्यक्ति या संगठनात्मक स्तर पर रहने दीजिए, क्षमता बढ़ाने का हर प्रयास नवाचार का संकेत और बढ़ने का आग्रह करता है |

जब प्रयास नवाचार उन्मुख होते हैं, तो सफलता एक वास्तविकता बन जाती है | अभिनव हमेशा क्षमता का नतीजा होता है |

दक्षता बढ़ाने हेतु युक्तियाँ

1. स्वयं और समूह के लिए आवश्यक दक्षताओं की पहचान करें।

क्षमता की आवश्यकताओं को विभिन्न तरीकों से पहचाना जा सकता है जिसमें सामूहिक योग्यता मूल्यांकन, प्रशिक्षण की आवश्यकता की पहचान, और व्यक्तिगत आधारित योग्यता मूल्यांकन शामिल होते हैं |

2. एक आजीवन शिक्षार्थी बनें, सीखने के लिए तैयार रहें, और नए नौकरी कौशल प्राप्त करें।

यहाँ बहुत सारे ई-लर्निंग और दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम हैं | कर्मचारी उपर्युक्त का उपयोग कर सकते हैं ताकि व्यक्तिगत वृद्धि की संभावनाओं को बढ़ाया जा सके |

3. लोगों के कौशल को तेज करने और बनाए रखने के लिए कार्य करें।

कमजोर स्थानों पर काबू पाने के लिए विशेष प्रशिक्षण में भाग लेना चाहिए | उदाहरण के लिए, नेतृत्व कार्यशालाएँ, विशेष सॉफ्टवेयर कार्यक्रम और कराधान प्रशिक्षण आदि, लोगों की योग्यता को बढ़ाने के लिए अत्यधिक सलाह देते हैं |

4. समीक्षा करें।

उच्च ग्रेड परीक्षाओं और सेवा परीक्षाओं के लिए तैयारी और उपस्थित होने से व्यक्तिगत क्षमता बढ़ाने में बहुत योगदान मिलता है |

5. एक या अधिक कार्य-संबंधित संगठनों में शामिल होंए।

चार्टर्ड क्वालिटी इंस्टिट्यूट (सी. क्यू. आई), प्रोजेक्ट मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट (पी. एम. आई) आदि जैसे संगठनों के साथ जुड़ना और सतत व्यावसायिक विकास (सी. पी. डी) कार्यक्रमों में भाग लेने से व्यक्तिगत क्षमता स्तर के विकास में मदद मिल सकती है |

.....

७. कौशल नहीं जुनून मायने रखता है |

मैंने कई युवाओं को उद्यमशीलता बढ़ाने की कार्यशालाओं, प्रबंधन सेमिनारों और अन्य नेतृत्व कार्यक्रमों के दौरान सफल उद्यमशीलता के विषय में उत्सुकता से पूछताछ करते देखा है। अपने खुद के कुछ शुरू करने के लिए उनका प्रारंभिक हित बहुत ही उच्च और विशाल होता है, किंतु उनमें से अधिकांश ऊष्मायन चरण में ही अपनी योजनाओं को यह सोचते हुए छोड़ देते हैं कि उनके साथ आगे बढ़ने के लिए कौशल की कमी है।

क्या यह कौशल की कमी है जो उन्हें कुछ शुरू करने से रोकती है? वास्तव में, नहीं। उनमें जुनून की कमी है, कौशल की नहीं।

मनुष्य और जानवरों के बीच एक प्रमुख अंतर यह है कि मनुष्य कुछ अनुभव और प्रयोग किए बिना निर्णय लेता है, जबकि जानवर अपने अनुभव के बाद ही ऐसा व्यवहार करते हैं। लोग, किसी के बिना पूछे ही अनुमान लगाने लगते हैं और दूसरों को सलाह देने लगते हैं। आम आदमी किसी को अपनी सलाह देने में बहुत उदार होता है - यहाँ तक कि निःशुल्क भी।

बाहरी दुनिया में, भारतीयों के विषय में एक कहावत है, "सभी भारतीय आधे डॉक्टर, आधे वकील और आधे शिक्षक होते हैं।"

मुझे भी लगता है कि यह सच है। उदाहरण के लिए, यदि हम अपने मित्रों या रिश्तेदारों को बताते हैं कि हम बीमार हैं, तो वे हमें कम से कम एक स्थानीय चिकित्सा के विषय में सलाह देने में संकोच नहीं करते हैं, हालाँकि वे इसके दुष्प्रभावों के विषय में अनिश्चित होते हैं।

यद्यपि लोग किसी बात से संबंधित कानूनी खंड के विषय में अनिश्चित होते हैं, वे फिर भी मामूली और अव्यवस्थित झड़पों के खिलाफ कानूनी सलाह देते हैं। इसी तरह, जब हम कुछ नई चर्चा करते हैं, तो हम देख सकते हैं, कि उनके अधूरे ज्ञान के बावजूद, लोग, जो कि एक पूरी तरह से अलग पेशेवर धारा से आए हैं, वे उस क्षेत्र के विशेषज्ञ को सलाह देने लगते हैं।

ऐसे लोग हमें गुणों की तुलना में हमारी कमी के विषय में याद दिलाते हैं।

वे हमें दक्षता की तुलना में हमारी अक्षमता का एहसास दिलाते हैं, तथा हर बयान में, हमें कुछ सफल लोग जिन्हें वे व्यक्तिगत रूप से भी नहीं जानते हैं, उनके कौशल तत्वों को बढ़ाकर कुछ शुरू करने के लिए उन्हीं तत्वों की आवश्यकता की याद दिलाते हैं। औसत लोग अपने कौशल तत्वों की तुलना उन सफल लोगों के साथ करना शुरू करते हैं तथा इनमें से अधिकांश अपने विचारों को ऊष्मायन चरण में छोड़ देते हैं।

'कौशल' को काम पर रखा जा सकता है किंतु जुनून को नहीं।

मुंबई में उद्यमी वृद्धि कार्यशाला के दौरान, कुछ प्रतिभागियों ने भारत में कुशल लोगों की कमी पर प्रकाश डाला था।

क्या हमारे आसपास कुशल लोगों की कोई कमी है? वास्तव में, नहीं। हम कई शौकिया गायकों को ढूँढ़ सकते हैं जो किसी भी वर्तमान-दिवसीय गायकों से बेहतर गा सकते हैं। इसी तरह, हमारे आसपास कई खूबसूरत गाँव की लड़कियाँ हैं, जो कि किसी भी वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय मॉडल या सुंदरता की रानी से अधिक सुंदर होती हैं। किंतु उनमें से कितनों को प्रवर्तकों द्वारा देखा जाता है? अवसरों और संभावनाओं की दुनिया में ऐसी प्रतिभाओं को पहचानने और बढ़ावा देने के लिए कितने प्रवर्तकों ने रुचि दिखाई है?

यह कौशल की कमी के कारण नहीं है कि, लोग सामान्यता में रह रहे हैं, किंतु उनकी इच्छा की कमी के कारण है। बहुत लोग बड़ा सोचने और ऊँचे सपने देखने से डरते हैं। इनमें से अधिकांश को अपने स्वयं लगाए गए सीमाओं द्वारा नियंत्रित किया गया है। आम लोग नौ साधारण आत्म-सीमाओं के बंधक होते हैं जो उन्हें सीमाओं से परे सोचने की अनुमति नहीं देते हैं।
सामान्य स्व-नियंत्रित सीमाएँ हैं ...

१. मैं इसमें आगे बढ़ने के लिए बहुत छोटा या बूढ़ा हूँ।

कुछ जैविक गतिविधियों को छोड़कर, कुछ आरंभ करने के लिए कोई 'सही उम्र' नहीं होती है। मैं इस बात से सहमत हूँ कि उम्र एक ऐसी चीज़ है जो परिपक्वता की ओर योगदान कराती है, किंतु यह एकमात्र ऐसा कारक नहीं है जो वही फैसला कराता है।

आयु परिपक्वता की प्रत्याभूति नहीं दे सकती है।

रचनात्मक विचार के साथ कई युवाएँ हैं, जो सोचते हैं कि अपने विचारों को शुरू करने के लिए वे अब तक सही उम्र तक नहीं पहुँचे हैं। उनमें से अधिकतर अपने अनुभव की कमी के विषय में चिंतित होते हैं।

दूसरी तरफ, ऐसे लोग भी हैं जो विश्वास करते हैं कि वे जीवन में किसी भी नए अभिनव कदमों के लिए बहुत बूढ़े हैं। वे मानसिक और शारीरिक दोनों रूप से सेवानिवृत्त होते हैं।

सफल लोगों के लिए, उम्र उनके सपनों को पूरा करने में कभी बाधा नहीं बनी। वास्तव में, जब उद्यमिता की बात आती है तो उम्र केवल एक संख्या ही होती है।

शरीर की तुलना में बुढ़ापे की प्रक्रिया मन से अधिक होती है।

याद रखें, उम्र हमेशा लाभदायक होता है। अधिकांश हद तक, यह आपको कार्य करने की स्वतंत्रता देता है। जब आप जवान होते हैं, तब आप जो भी करना चाहते हैं, उसके लिए स्वतंत्र होते हैं और जब आप बूढ़े हो जाते हैं, तो आप दूसरों को स्वतंत्रता प्रदान करने के लिए स्वतंत्र होते हैं।

यह आपके उम्र की ओर ध्यान नहीं बल्कि आपके उम्र की उपेक्षा है जो आपको एक उद्यमी बनाता है।

चूँकि कोई निश्चित उम्र नहीं है जो सफलता की प्रत्याभूति दे सकती है, तो इसके विषय में चिंतित क्यों होना चाहिए? आयु प्रकृति का एक उपहार है, यह आपके द्वारा दूसरों का लाड़ प्यार करता है या दूसरों द्वारा आपका लाड़ प्यार करवाता है।

2. यह एक सामान्य अभ्यास नहीं है...

सफल लोगों के विपरीत, औसत दर्जे के लोग नेतृत्व करने के मुकाबले अनुसरण करना पसंद करते हैं। यह उनको ऐसा करने से रोकता है जो दूसरे नहीं करते हैं। यह आम आदमी के साथ आम और प्रमुख मुद्दों में से एक है।

अभिनव विचार प्रकृति में सामान्य नहीं हो सकते हैं।

लोग अक्सर दूसरों को खुश करने की कोशिश करते हैं। लोगों को खुश करने का प्रयास केवल एक जाल है, क्योंकि यह आपको अपने लक्ष्य, सच्चाई, नैतिकता और पुण्यशीलता से भटका देता है।

दूसरों को खुशी मिले या नहीं, आप अपने लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित रखें। ईमानदारी और सच्चाई के लिए खड़े रहने से आपका 'लंबे समय तक टिकना' सुनिश्चित हो जाएगा।

चूँकि हम जानते हैं कि, हम परिवर्तन और प्रगति के लिए कोशिश कर रहे हैं, और हमें यकीन है कि वर्तमान तरीके या प्रक्रियाएँ हमें वांछित परिणाम लाने के लिए अपर्याप्त

हैं, तो फिर हम उसी तरीकों से क्यों चिपके रहें ?

लोग दो कारणों के लिए इस तरह की गलती करते हैं, या तो वे इस प्रक्रिया के प्रति अपनी सौ प्रतिशत प्रतिबद्धता को लेकर अनिश्चित हैं, या 'असफलता का डर' उन पर हावी है | चीजों को अलग तरह से सोचने के लिए न डरें क्योंकि अलग-अलग तरीकों से हमेशा अलग-अलग परिणाम ही मिलेंगे | जब हमारे विचार और क्रियाएँ दूसरों की तुलना में अलग नहीं होते हैं, तो विपरीत परिणाम का इंतजार करना और कुछ नहीं किंतु हमारी मूर्खता होती है | याद रखें,

सामान्य अभ्यास शायद कोई नवीनता न लाए, लेकिन सामान्यता लाएगा।

३. मेरे माता-पिता या जीवन साथी को शायद यह पसंद नहीं आएगा ...

हममें से बहुत अपने माता-पिता और जीवन साथी पर विश्वास नहीं करते हैं तथा अभी भी उनके विचारों पर संदेह करते हैं | उनमें से आपत्तियों का अनुमान लगाते हुए, वे अपने विचारों को शुरुआती चरण में ही छोड़ देते हैं |

उच्च प्रत्याशा के साथ कई पहल अपने ऊष्मायन चरण में ही छोड़ दिया जाता है यह सोचके कि ये कदम माता-पिता और जीवन साथी के लिए अप्रिय होंगे |

इस पुस्तक को लिखने के रूप में, मैंने ८० युवा जोड़ों और २० माता – पिता के बीच यह जानने के लिए एक शोध आयोजित किया था कि उनके बच्चे या जीवन साथी के अपने - अपने दुर्लभ किंतु आशाजनक परियोजनाओं में व्यस्त होने के विषय में उनकी क्या राय है |

लगभग हर माता - पिता ने अपनी इच्छा व्यक्त की कि उनके बच्चे उनके साथ समय बिताएँ | लेकिन सबसे दिलचस्प बात यह थी कि अस्सी युवा जोड़ों में से सिर्फ चार ही लोग अपने साझेदारों को अपनी छाया की तरह बनाना चाहते थे | अधिकांश अन्य लोगों को अपने भागीदारों से रचनात्मकता और नवीनता की उम्मीद थी |

लोग अपने माता-पिता और जीवन साझेदारों को अपने विचारों के अभाव या खराब कार्यान्वयन के लिए जिम्मेदार मानते हैं, किंतु वास्तव में, यह अन्य के उत्पीड़न के कारण नहीं बल्कि उनके आगे बढ़ने के साहस की कमी के कारण होता है | उनके साथ अपने विचारों पर चर्चा करना न भूलें | उन्हें आत्मविश्वास में लीजिए - मुझे यकीन है कि वे उसे पसंद करेंगे |

४. लोग मेरे बारे में बुरा सोचेंगे ...

यह गलत धारणा है कि अन्य लोग हमेशा हमारे विषय में ही सोच रहे होते हैं | वास्तव में, उनमें से कुछ को छोड़कर, अधिकांश नई चीजों की खोज में व्यस्त होते हैं | हमारे लिए उनकी चिंता केवल एक अस्थायी भावना है और इसकी प्रमुखता केवल अगले दिलचस्प समाचार तक ही टिकती है |

चाहे वे आपके विषय में अच्छा सोचें या बुरा, यह आपकी चिंता बिल्कुल भी नहीं है | याद रखें, यदि आप गलत हैं तो आप दूसरों को अच्छा महसूस नहीं करा सकते तथा यदि आप सही हैं तो आपको दूसरों को अच्छा महसूस कराने की ज़रूरत ही नहीं है, वे इसे स्वयं महसूस करेंगे |

5. मेरे पास वित्तीय और अन्य प्रतिबद्धताएँ हैं ...

यह कथन सही है और प्रशंसा के योग्य है क्योंकि आप अपनी जिम्मेदारी स्वीकार करते हैं तथा प्रतिबद्धता की आवश्यकता का सम्मान करते हैं। किंतु हममें से अधिकांश यह नहीं समझते हैं कि सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि लोग हमेशा सोचते हैं और नवाचार, रचनात्मकता और परिवर्तन के विषय में चर्चा करते हैं, जब वे अपने वर्तमान में कमी महसूस करने लगते हैं | परिवर्तन की आवश्यकता पर चर्चा करने वाले लोग जानते हैं कि,

स्वयं में परिवर्तन, परिवर्तन करने का सबसे अच्छा समाधान है |

चूँकि हम मानते हैं कि, जिन परिवर्तनों की हम योजना बना रहे हैं, वे हमारी वित्तीय और अन्य प्रतिबद्धताओं को वर्तमान से कम दर्द और प्रयासों के साथ पूरा करने में हमारी सहायता कर सकते हैं, तो हम इसके लिए आगे क्यों नहीं बढ़ते हैं ?

6. मेरे पास भौतिक बाधाएँ हैं ...

यह स्वयंसिद्ध सीमाओं में से एक है, जो लोगों को अंतर्मुखी या सामान्य बनाती है। दुनिया में विशेष रूप से भारत में मधुमेह फैलाने के विषय में मेरी अनौपचारिक चर्चा के दौरान, मेरे मित्र, डॉक्टर अभिलाष जोसफ ने एक सरल लेकिन महान सच्चाई की टिप्पणी की, "कोई भी मानव शरीर किसी भी मामूली या बड़ी बीमारी से मुक्त नहीं होता है, कम से कम लोगों को रूसी तो मिल ही जाती है।"

भौतिक अवरोधों के विषय में चिंता करना, हमें सामान्यता में जारी रखने के अलावा कुछ भी करने में मदद नहीं करती है | जैसा कि पिछले अध्याय में चर्चा की गई थी, जो आपको पसंद नहीं है वह आपके साथ लंबे समय तक नहीं रहता है | याद रखें, अधिकांश बीमारियाँ, जो हमें लगता है कि हम पीड़ित हैं, वास्तव में हमारे शरीर पर इसके प्रभाव के कारण नहीं हैं बल्कि हमारे मन में हैं।

**भौतिक बाधाओं के अनुभव को अनदेखा करने का अभ्यास करें ताकि
विकलांगता की भावना आप पर सुनिश्चित तौर से ध्यान न दे ।**

7. मैं अपने चरम सीमा पर हूँ ...

मैंने कई औसत लोगों को देखा है, जो विकास योजनाओं और कार्यों को सुनने के बाद कहते हैं कि वे उपलब्धियों के अपने चरम सीमा पर हैं तथा उन्हें आगे किसी भी प्रेरणा की कोई आवश्यकता नहीं है। मेरी बात मानें, यदि वे अपनी चरम सीमा पर थे, तो वे कभी भी परिवर्तन तथा विकास के लिए अपनी भूख नहीं दिखाते। अभिनव योजनाओं से उनकी वापसी और कुछ नहीं, किंतु उनके विफलता और अंतर्विरोध के डर का चित्रण ही है। यदि वे अपने सभी बयान में सच्चे हैं, तो जब तक कि वे लगातार उसका पालन न करें, तब तक सफलता की प्रत्याभूति अधिक समय तक नहीं दी जा सकती है।

8. यह सबके बस की बात नहीं है |.....

यह ध्यान देने के दुर्भाग्यपूर्ण तथ्य है कि, औसत लोगों को अपनी खुद की विशेषता के विषय में शायद ही पता होता है। उनमें से अधिकांश सोचते हैं कि वे समाज का सिर्फ एक हिस्सा हैं, जिसमें समाज के सभी सदस्य गुणों और क्षमताओं में समान हैं। उद्यमी और आरंभकर्ता जो इसे मानते हैं, उन्हें एक बात ध्यान में रखनी चाहिए कि- ऐसे समाज का कोई अस्तित्व ही नहीं होता है।

चूँकि हम जानते हैं कि हमारी क्षमताएँ दूसरों से अलग हैं, तो हम अपने अभिनव विचारों के संदर्भ में खुद की तुलना दूसरों से कैसे कर सकते हैं? जब किसी चीज़ के परीक्षण करने की बात आती है तो हमें सबके साथ खुद को क्यों मिलाना चाहिए, ? याद रखें, तुलनात्मक अध्ययन करना अच्छा है, किंतु वे केवल समानताओं की पहचान करने के लिए नहीं होते हैं, असमानताओं के लिए भी होते हैं।

वे असमानताएँ आपके विजेता के किनारे भी हो सकते हैं। अपनी योजनाओं से आगे बढ़ने से न डरें क्योंकि सफलता हमेशा अलग-अलग विचारों का परिणाम रही है।

९. अगर मैं ...

'अगर मैं उनके/उनकी स्थिति में होता तो मैं उससे बेहतर कर सकता था' - एक सामान्य वक्तव्य जिसका इस्तेमाल उन लोगों द्वारा होता है, जिनमें कुछ शुरू करने की इच्छा की कमी होती है। वे एक ही वक्तव्य को तब तक जारी रखेंगे, जब तक कि कोई व्यक्ति उन्हें अपनी वर्तमान स्थिति के परिणाम न पूछे। भविष्य की परियोजनाओं के विषय में सर्वानुभव करना बहुत आसान होता है, किंतु उन्हें वास्तविकता में बदलना चुनौती का

मामला होता है | यह कौशल नहीं, किंतु इच्छा है | जो लोग अपना समय और ऊर्जा निवेश करने के लिए तैयार रहते हैं, वह निश्चित रूप से परिणाम प्राप्त करते हैं |

याद रखें, कि आपकी इच्छा आपके कौशल से अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह आपको कुशल बना सकता है या कुशल लोगों का इस्तेमाल कर सकता है |

.....

8. सकारात्मक सोच और मुमकिन सोच

मुझे स्व-सहायता पुस्तकों को पढ़ने, नेतृत्व गुरु के प्रेरक संदेश सुनने और स्वयं सहायता कार्यशालाओं में भाग लेने में मज़ा आता है | जिन किताबों को मैंने पढ़ा है और जिन कार्यक्रमों में मैंने भाग लिया है, उनमें से अधिकांश सकारात्मक सोच की आवश्यकता पर अधिक थे।

सकारात्मक सोच क्या है?

सकारात्मक सोच, मानसिक या भावनात्मक प्रक्रमक या दृष्टिकोण है, जो जीवन के उज्ज्वल पक्ष पर केंद्रित है और सकारात्मक परिणामों की उम्मीद करता है।

यह लोगों को खुशी, स्वास्थ्य और सफलता की आशा करवाता है, तथा यह विश्वास दिलाता है कि वह किसी भी बाधा और कठिनाई को दूर कर सकता है और जो लोग ऐसा सोचते हैं, वे अपने परिणामों के लिए उचित समय तक इंतजार करने के लिए भी तैयार होते हैं | वे गर्भावस्था अवधि का सम्मान करते हैं |

सकारात्मक सोच हमें सुखद महसूस कराती है और यह ख्याति, खुशी और सफलता को दर्शाती है | यह हमें स्वस्थ रखता है, हमारी आवाज को शक्तिशाली बनाता है, और आत्मविश्वास का स्तर बढ़ाता है | यह हमें दूसरों से मदद लेने का लाभ दिलाता है तथा हमें नकारात्मकता न फैलाने के लिए प्रोत्साहित करती है |

सकारात्मक सोच को बनाए रखने के कई तरीके होते हैं | सकारात्मक विचारक बनने के लिए, तथ्यों की अच्छी तरह से जानकारी होनी चाहिए | अशिक ज्ञान लोगों को गलत धारणाओं की ओर ले जाता है, जो उन्हें चीजों के नकारात्मक पक्ष को देखने के लिए प्रोत्साहित करता है, क्योंकि सफल लोगों के विपरीत, दुविधाओं में असफल और औसत संभावनाएँ वाले लोग नई चीजों और परिवर्तनों का विरोध करने की प्रवृत्ति दिखाते हैं | अधिकतर वे अपनी प्राथमिकताएँ स्थापित करने और उनके अस्तित्व को प्रकट करने के लिए ऐसा करते हैं |

एक सकारात्मक विचारक बनने के लिए, प्रत्येक को नुकसान की तुलना लाभों को देखने का प्रयास होना चाहिए और इसे करने की कोशिश करनी चाहिए | भले ही लाभ कम हो, अभ्यास उतना ही करना चाहिए ताकि लाभ के बढ़ने के लिए हमें अधिक संभावनाएँ दिखाई दें |

याद रखिए,

कोशिश करने देने से कोई नुकसान नहीं सिर्फ लाभ होता है, एक नई चीज़ सीखने का लाभ।

कई नकारात्मक विचारक बिना किसी कारण के सही चीजों को खारिज करने की आदत रखते हैं तथा उन्हें यह गलतफ़हमी होती है कि उन्हें इस विषय का पूरा ज्ञान है तथा उन्हें किसी भी समीक्षा, संशोधन या अद्यतन की आवश्यकता नहीं है |

समीक्षा करने, संशोधित करने और अद्यतन करने के लिए तैयार रहें।

प्रत्येक को नए चीजों को करने के प्रयासों की इच्छा दिखानी चाहिए | बिना किसी अनुभव के हम कैसे कुछ पेशेवरों और विपक्षों को जान पाते हैं ? एक उद्यमी होने के नाते, मुझे कुछ नकारात्मक विचारकों के दिमाग में अपने विचारों को बोने में बहुत सारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। ओह ! यह एक अलग ही अनुभव था |

नकारात्मक विचारक किसी अभियान को विफल करने के लिए अपनी एड़ी – छोटी का ज़ोर लगा देते हैं | वे जनता में अपने संगठन के अधिक सहायक होने का अभिनव करते हैं तथा अकेले में बिल्कुल ही उसके विपरीत होते हैं | वे अपने सहकर्मियों की बातें छिपकर सुनते हैं तथा असफलता के उनके गढ़े हुए विफलता के अनुभव से उन्हें भी विफल होने के लिए तैयार करते हैं | उनमें से अधिकतर, यह भी नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं और क्यों | कार्यों को न करने के उनके खुद के कारण होते हैं तथा उनमें से अधिकतर ने कभी अपने संगठन के लिए एक संपत्ति के रूप में नहीं, बल्कि एक दायित्व के रूप में कार्य किया है |

सबसे दुखद बात यह है कि वे अपने स्वयं के या सहकर्मियों की विफलता की जिम्मेदारी नहीं लेते हैं तथा वे दूसरों को आधे रास्ते ही छोड़ देते हैं | सकारात्मक सोच को समृद्ध करने के लिए, “अन्य लोगों को क्या लगता है या हमारे विषय में क्या बात करेंगे” जैसी बातें को अनदेखा करना अनिवार्य होता है | लोग टिप्पणी करते हैं | याद रखें,

दर्शक हर खेल का हिस्सा होते हैं | उनके बिना खेल नीरस हो जाता है।

प्रत्येक को अन्य की टिप्पणियों तथा रायों के विषय में चिंता करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि उनकी राय अधिकतर मौसमी तथा लोकतांत्रिक होते हैं। उनकी राय हमेशा भीड़ के साथ चलती है तथा भीड़ सदा परिवर्तनों का विरोध करती है। कभी उनसे मौन होने की उम्मीद न करें, क्योंकि,

चुप्पी केवल एक केंद्रित समुदाय से ही उम्मीद की जा सकती है।

केवल अनुकूल परिस्थितियों की कल्पना करने से हम नकारात्मक विचारकों की तुलना में अधिक सकारात्मक बन सकते हैं। कल्पना हमारे अवचेतन मन को उसी में पंजीकृत करने में मदद करती है ताकि उपलब्ध आसान और त्वरित हो सके। याद रखें, हम अनुकूल परिस्थितियों को देखने में कुछ भी नहीं खोते हैं और न ही इसके विपरीत देखने में कुछ भी हासिल करते हैं, फिर हम अनुकूल और फायदेमंद स्थितियों की कल्पना क्यों नहीं करते?

अवचेतन मन से आंतरिक प्रतिरोध, सकारात्मक विचार स्वीकार करने में असामान्य नहीं होते हैं। हमेशा सकारात्मक विचारों को निकालने के लिए वहाँ एक जोर दिया जाता है। हमारे भीतर के मन में सकारात्मक विचार रखने के लिए लगातार अभ्यास की आवश्यकता होती है। यह हमें बार-बार हतोत्साहित कर सकते हैं किंतु विजेता वो है जो कभी हार नहीं मानते हैं। प्रयासों में संगतता केवल तभी संभव होती है जब हम सकारात्मक पक्ष को देखते रहते हैं।

सकारात्मक वाक्यों के प्रयोग से, हम सकारात्मक सोच क्यों रखने लगते हैं? ऐसा इसलिए है क्योंकि हमारे विचार हमारे शब्द हैं, हमारे शब्द हमारे कार्य हैं और कार्य व्यक्तियों की सफलता का निर्णय लेते हैं। बुद्धिमान लोग आम तौर पर परिस्थितियों से कम प्रभावित होते हैं। परिस्थितियाँ लगातार बदलती हैं। परिस्थितियों को अपने विचारों का मार्गदर्शन न करने दें, ताकि आप सही के लिए खड़े हो सको।

प्रतिज्ञान तकनीक सकारात्मक सोच को बनाए रखने के सर्वोत्तम तरीकों में से एक है। नुकसान के बजाय लाभ के अभिलेखों को रखने से सकारात्मक सोच को बनाए रखने में हमें अधिक मदद मिलती है।

मुस्कुराहट सकारात्मक सोच को समृद्ध कर सकती है तथा इससे परिणाम निराशाजनक नहीं होते हैं। रोज़मरा की जिंदगी में रचनात्मक सोच के अभ्यास तथा सकारात्मक परिणाम के दृश्य बनाने की आदत बनाएँ।

अधिक संवेदनशील होना भी सकारात्मक सोच को पैदा करने और बनाए रखने के सर्वोत्तम तरीकों में से एक है।

हर समय सकारात्मक ढंग से सोचना हर किसी का काम नहीं है तथा कुछ इसे बकवास के रूप में भी मानते हैं, तथा वे उनकी हँसी उड़ाते हैं जो लोग सकारात्मक सोच को खारिज करते हैं। उनके पास इसके लिए अपने ही कारण हैं। यह एक तथ्य है कि सकारात्मक सोच केवल व्यावहारिक रूप से तब संभव हो सकती है, जब उसकी संभावना के साथ मिश्रण हो जाता है।

मुमकिन सोच क्या है?

कठिनाइयों के बीच संभावनाओं की तलाश करने की संभाव्यता एक व्यवस्थित प्रक्रिया है।

मुमकिन सोच लोगों को अधिक तार्किक और तंदरुस्त तरीके से सोचने के लिए प्रेरित करता है। यह एक सार्वभौमिक तथ्य है कि,

हर असंभवता या प्रतिकूलता कुछ शांत संभावनाओं और अवसरों के शेर वाला पक्ष होता है।

औसत लोग उन भारी आवाजों और चुनौतियों से डरते हैं। संभावना की सोच लोगों को सकारात्मक सोच से परे ले जाती हैं तथा हर परिस्थिति में विकल्पों से उन्हें अवगत कराते हैं। मुमकिन सोच लोगों को एक अलग दृष्टिकोण से चीजें दिखाता है। यह उन्हें मानसिक अनुशासन बनाए रखने द्वारा बहुत बुरी स्थिति में भी बने रहने के लिए तैयार करता है। इससे उन्हें एक से अधिक परिप्रेक्ष्य या दृष्टिकोण बनाने में मदद मिलती है। यह उन्हें किसी भी स्थिति में अपनी क्षमता की याद दिलाता है तथा अधिक लचीलेपन और अधिक रचनात्मक कार्यों की अनुमति देता है।

एक सकारात्मक विचारक की तुलना में मुमकिन विचारक होना बेहतर है क्योंकि किसी नकारात्मक पक्ष की याद दिलाए बिना कुछ सकारात्मक सोचना कठिन होता है। याद रखें, नकारात्मकता कभी निराश नहीं करती। एक बार नकारात्मक विचार हमारे मस्तिष्क में प्रज्वलित हो जाएँ तो उसकी चिंगारी को बाहर निकालना बहुत कठिन होता है। इसमें कुछ घंटे या दिन भी लग सकते हैं। ऐसे विचारों से अलग होना बहुत कठिन होता है तथा उस समय तक एक और नकारात्मक विचार हमें परेशान कर सकता है।

जब पहली बार मैंने मुमकिन सोच के विषय में पढ़ा था, तब मैं सोच में पड़ गया था। इससे मुझे यह समझ आया कि किस तरह मुमकिन सोच द्वारा जीवन को सफल बना सकते हैं। मेरा मानना है कि यह दुनिया अवसरों और चुनौतियों की भूमि है। हर पल हमें प्रयोगों और विकास के लिए अवसर प्रदान करता है। जीवन स्वयं ही एक प्रयोग है। जो भी उन प्रयोगों के दौरान एक संरचित दृष्टिकोण बनाते हैं, वे सफल होते हैं तथा दूसरे उसमें हार जाते हैं।

चुनौतियों का पूरे दिल से स्वागत करना चाहिए | आम आदमी के लिए ऐसा करना कठिन होता है | किंतु हमें ऐसा करना ही चाहिए क्योंकि हर चुनौती से हमें आत्म-मूल्यांकन तथा विकास के अवसर मिलते हैं | यह हमें यह महसूस कराता है कि हम कहाँ हैं |

हर कठिनाई या चुनौती हमें विकल्पों के विषय में सोचने में मदद करती है | यह हमें उस सुविधा क्षेत्र से बाहर आने के लिए मजबूर करता है जहाँ विकास और नवाचार मुश्किल से ही आते हैं | हमारे जीवन में हर खतरनाक स्थिति हमें विकल्प तलाशने की मांग करती है | विकल्प और कुछ नहीं केवल संभावनाएँ ही हैं |

जैसा कि पहले चर्चा की गई है, इस दुनिया में प्रत्येक वस्तु के एक से अधिक चेहरे होते हैं | इसी तरह, हर समस्या के लिए, दो या दो से अधिक समाधान होते हैं |

हर समस्या के लिए, दो या दो से अधिक समाधान होते हैं |

आम लोगों के लिए, कठिनाइयाँ सफलता की राह पर एक रुकावट होती है तथा वे अपने वर्तमान कार्य प्रणाली को समाप्त करने के संकेत होते हैं, जबकि सफल लोगों के लिए वे विकल्प चुनने के अनुस्मारक हैं |

संभावनाएँ तलाशने से हमारा जीवन अधिक होनहार और सार्थक बन सकता है। मैंने कई बिक्रीकर्ता को तब निराश होते देखा है, जब उनके प्रतिद्वंद्वी उन्हीं की तरह एक उत्पाद का विज्ञापन करते हैं | किंतु वे इसके पीछे की असली संभावना का एहसास नहीं करते हैं | वास्तव में, एक प्रतिद्वंद्वी के प्रत्येक विज्ञापन उत्सुकता और ग्राहकों के बीच की जरूरत बनाने के प्रयास को कम करता है | विज्ञापन, चाहे कहीं से भी हों, समय और संसाधनों को बचाता है। वे लोगों को उत्पाद से परिचित कराते हैं |

बाजार शोधकर्ताओं का कहना है कि लगभग ८९ % खरीदार, किसी भी खरीद के लिए अपना मन बनाने से पहले विकल्पों की तलाश करते हैं |

हर प्रतिकूलता हमें छोटी या बड़ी संभावनाएँ लाती है - आम तौर पर बड़ी संभावनाएँ ही | हमने विचार किया है कि प्रतिकूलता वास्तव में प्रतिकूलता नहीं है, किंतु संभावनाएँ हैं |

बारिश प्रतिकूल परिस्थितियाँ नहीं, संभावनाएँ होती हैं |

बारिश फसलों को समदृढ़ करती है तथा हमेशा बाढ़ का कारण नहीं बनती है |

हवाएँ विफलताएँ नहीं, किंतु संभावनाएँ लाता हैं,

हवाएँ पालों वाले जहाज़ को स्थानांतरित करती हैं,

पर्वत प्रतिकूलता नहीं संभावनाएँ होते हैं,

पर्वत अधिक वर्षा को संभव बनाते हैं।

पृथक्करण प्रतिकूलता नहीं है, किंतु संभावनाएँ हैं |

अलगाव हमें एकता के मूल्य की याद दिलाते हैं |

अस्वीकृति प्रतिकूलता नहीं, किंतु संभावनाएँ हैं,

अस्वीकृति हमारी कमी का पता लगाने में हमारी सहायता करती है।

आलोचना प्रतिकूलता नहीं, किंतु संभावनाएँ हैं,

आलोचना हमारी शक्तियों और कमज़ोरियों को जानने में हमारी मदद करती है |

चुनाव विपक्षी नहीं, किंतु संभावनाएँ हैं,

चुनाव दिखाते हैं कि हमारे लिए कौन है |

ऋण प्रतिकूलता नहीं, किंतु संभावनाएँ हैं,

ऋण हमें अपनी छिपी प्रतिभाओं का परीक्षण कराते हैं |

विफलता प्रतिकूलता नहीं हैं, किंतु संभावनाएँ हैं,

असफलता और कुछ भी नहीं, केवल 'सफलता में देरी' है |

जीवन में विपक्षियाँ कोई नई बात नहीं हैं | यह थी और रहेगी | कोई भी इस से मुक्त नहीं था | अधिक सफल साधकों ने भी अपने पूरे जीवन में संकटों का अधिक का सामना किया होगा | दुर्भाग्य से दूर करने के लिए सफलता में दृढ़ विश्वास होना आवश्यक है | संभावनाएँ केवल उन लोगों को दिखाई देती हैं, जो उसकी खोज करते हैं |

कुछ पाठकों को आगे की संभावनाओं के विषय में सोचने की आवश्यकता पर संदेह हो सकता है, जब वे पहले से अनुकूल स्थिति में होते हैं |

जो कुछ भी नियमित रूप से अद्यतन नहीं होता है, वह आसानी से 'कालग्रस्त' हो जाता है।

बुरी स्थिति में भी संभावनाओं को जानने के लिए लगातार मानसिक व्यायाम की आवश्यकता होती है | यह संभव है कि एक से अधिक परिप्रेक्ष्य या दृष्टिकोण के निर्माण द्वारा हम अधिक लचीलेपन और रचनात्मक कार्य के लिए द्वार खोल देते हैं |

सबसे दिलचस्प बात यह है कि अधिकतर संभावनाएँ हमारी नाक के नीचे होते हैं वे संभावनाएँ अस्वीकृत लोगों की तुलना में आसान हो सकती हैं |

हम संभावनाओं को अपनी स्थिति की व्याख्या के माध्यम से, या एक अवसरवादी सोच शैली का उपयोग करते हुए किसी पुरानी स्थिति को नए ढंग से देखकर स्पष्ट कर सकते हैं |

प्रतिकूल परिस्थितियों में संभावनाओं को देखने के लिए बहुत अधिक लचीलेपन की आवश्यकता होती है | खुद को पूर्व विचारों और कठोर दृष्टिकोण से अलग करने के लिए तैयार होना चाहिए |

बाधाएँ अवसरों को बाधित करती हैं।

हमें मुमकिन विचारकों की नयी आकृति प्रदान करने के लिए, आभार का रवैया दिखाने की आदत का अभ्यास करना चाहिए क्योंकि यह केवल खुले दिल वाले लोगों द्वारा ही संभव होता है | जो लोग इस तरह की आदतें बनाए रखते हैं, वे आम तौर पर उनके आशीर्वादों की तुलना में उनके बोझों की अपेक्षा करते हैं |

निंदक तथा शिकायतकर्ता शायद ही किसी की सराहना करते हैं।

एक मुमकिन विचारक बनने के लिए, जीवन में चुनौतियों को स्वीकार करने की इच्छा होनी चाहिए क्योंकि चुनौतियाँ और कुछ नहीं, केवल अवसर होते हैं | हमारी हर चुनौती जिसे हम जीत लेते हैं, हमारे आत्मविश्वास और संभावना के अस्तित्व का प्रमाण है - सफलता की संभावना का |

विषाक्त लोगों से दूर रहें तथा विषाक्त व्यक्ति होने से बचें | प्रतिकूल परिस्थितियों में भी नकारात्मकता फैलाने से बचें | जीवन में निराशाजनक घटनाएँ हमें परिस्थितियों को धिक्कारने तथा दूसरों में नकारात्मकता फैलाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं | जब मौके हमारे नियंत्रण से बाहर होते हैं, तब मौन रहने का अभ्यास करें क्योंकि चुप्पी हमारे मस्तिष्क को विकल्पों की खोज करने में मदद करेगी।

सक्रिय तथा आकर्षक बनें | निष्क्रियता हमें नीरस और असमर्थ बनाते हैं | हमें दावा करने के लिए कुछ भी नहीं छोड़ा जाएगा | हमारा अवचेतन मन हमेशा हमारी क्षमताओं के सबूत की खोज में रहता है | कुछ भी किए बिना हम इस तरह के प्रमाण कैसे प्राप्त कर सकते हैं ?

एक मुमकिन विचारक बनने के लिए, किसी को बदलाव के विरोध करने से बचना चाहिए तथा 'कर सकते हो' की मानसिकता को बनाए रखना चाहिए | परिवर्तनों का विरोध करके, वास्तव में, हम सफलता की संभावनाओं से इनकार कर रहे हैं क्योंकि सफलता बिना किसी बदलाव के कठिन होती है |

ध्यान केंद्रित होने से लोगों को मुमकिन विचारक होने में मदद मिलती है | ध्यान केंद्रित होने से लोगों को केवल उतना ही दिखता है, जितनी की उन्हें आवश्यकता होती है तथा यह उनकी निराशाओं को कम कर देता है | यह उनकी पिछली विफलता या सफलता की जिम्मेदारी लेने के लिए आवश्यक होता है | जिम्मेदारी लेने की आदत, हमें अपनी गलतियों से सीखने के कई अवसर देते हैं | विफलता को स्वीकार करने के लिए अपने मन को तैयार रखें | याद रखिए, विफलता स्थायी नहीं होती है | हर विफलता हमें सुधार लाने के तथा उसमें से कुछ सीखने का अवसर देती है |

एक मुमकिन विचारक बनने के लिए, स्व-विश्लेषण तथा आत्म-प्रशंसा की आदत का पौष्ण करें | अपनी आत्म-चर्चा के दौरान अपनी सराहना करना न भूलें, क्योंकि हर प्रशंसा अवचेतन मन में दर्ज हो जाती है, ताकि यह आपको हमेशा सकारात्मक बनाए रखे |

एक सकारात्मक मन ही अधिक संभावनाओं के लिए खोज करता है तथा जो लोग उन संभावनाओं का पता नहीं लगाते हैं वे एक समय के बाद समाप्त हो जाते हैं |

.....

9. नौ प्रमुख गलतियाँ

हालांकि हमारे चारों ओर की दुनिया में कई अवसर और संभावनाएँ होती हैं, फिर भी कई लोग अपने जीवन में केवल खतरे और बारंबार हार को देखते और अनुभव करते हैं। ऐसा क्यों है ?

लोग अपने जीवन में बार-बार कुछ गलतियाँ करते हैं। जाने - अनजाने में हम नौ प्रमुख गलतियाँ कर बैठते हैं। हमारे नियमित अभ्यास और संगति के कारण हम अपने जीवन में उन नौ गलतियों के आदी हो जाते हैं या उन्हें आत्मसात कर चुके होते हैं तथा यह हमारे गुण भी बन गए हैं। आम आदमी के विपरीत, सफल लोग उन गलतियों को करने से बच जाते हैं।

- विश्लेषण के बिना अनुसरण करना,
 - प्रयास किए बिना छोड़ना,
 - नए प्रयासों में देरी करना,
 - परिवर्तनों का विरोध,
 - अनुपालन करने के पहले शिकायत,
 - अयोग्य लोगों के लिए उदार बनें,
 - स्वयं को कम समझना,
 - गलत धारणा को ध्यान में रखना,
- तथा
- गलत संगति को बनाए रखना

आम लोगों द्वारा किए गए गलतियाँ हैं

१. विश्लेषण के बिना अनुसरण करना

मेरी राय में 'विश्लेषण किए बिना अनुसरण करना' एक अत्यंत बुरा पागलपन है जो लोगों को सामान्यता में जारी रखता है। यहाँ तक कि अकादमिक योग्य और प्रतिभावान लोग भी इस अवांछनीय व्यवहार का शिकार होते हैं। हम ऐसे अकादमिक योग्य लोगों को 'सुशिक्षित' नहीं कह सकते क्योंकि उनमें से अधिकांश ने अभी तक 'तथ्यों और आंकड़ों को ही याद किया' है तथा अब तक जीवन में परिवर्तन की प्रक्रिया से गुजरना बाकि है।

दुनिया के कई हिस्सों में, अकादमिक योग्य लोगों को शिक्षित माना जाता है। हालांकि, शैक्षणिक योग्यता केवल शिक्षित होने के रूप में माना जाने योग्य मानदंडों में से एक है।

सच्ची शिक्षा प्रणाली किसी व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन करने के लिए पर्याप्त सक्षम होनी चाहिए तथा उन्हें समझदार निर्णय लेने के लिए सक्षम बनाती है, ताकि वे खुद पर और दूसरों पर बोझ बने बिना इस दुनिया में प्रभावी ढंग से जीवित रहें।

ध्यान देने की एक दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि, मौजूदा शिक्षा प्रणालियों में से ज्यादातर मानव संसाधन को प्रसंस्करण यंत्र की बजाय एक भंडारण उपकरण के रूप में मानते हैं। ऐसी व्यवस्थाएँ किसी भी विचारकों, सुधारकों या नेताओं को कम तथा अनुयायियों को अधिक पैदा करते हैं।

हम नवीनता, दुविधा तथा अनिश्चितता की दुनिया में रहते हैं। नए धर्मों का निर्माण हर दिन होता है, नई मंडलियाँ उत्पन्न होती हैं, तथा राजनीतिक दल विभाजन और विचलन की प्रक्रिया से गुजरते हैं। लोग अवसरवादी धार्मिक प्रचारक, सलाहकार, राजनीतिक गॉडफादर और मानव देवताओं से घिरे हुए हैं।

आजकल धर्म और राजनीति दो सबसे आम और शक्तिशाली प्रभाव हैं। तीसरी दुनिया के अधिकांश देशों में, धर्म भी राजनीतिक निर्णयों को नियंत्रित करता है। चर्च, मस्जिद, तथा मंदिर राजनीतिक साजिश के जगह बन गए हैं। कई धर्माध्यक्ष प्रसिद्ध राजा निर्माता हैं।

तथाकथित धार्मिक प्रचारकों में से अधिकांश जनमत में शांति का प्रचार करते हैं तथा निजी में रूढ़िवाद और नफरत का पाठ पढ़ाते हैं। वे खुद को आम आदमी और ईश्वर के बीच मध्यस्थ होने का दावा करते हैं। उनमें से अधिकांश सुसमाचार के कुल अनुबंध होने का तथा स्वर्ग के एकमात्र साधन होने का दावा करते हैं। वे दूसरों को विश्वास दिलाते हैं कि मोक्ष केवल उनके माध्यम से ही संभव है और किसी और के माध्यम से नहीं।

राजनीतिक, व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में धर्म और मानव देवताओं का प्रभाव, सोच और विश्लेषण के हकदार होते हैं।

वे पृथ्वी पर शांति लाने के लिए युद्ध के लिए लोगों को तैयार करते हैं। वे अपने इच्छुक पार्टियों को जीवन देने के लिए मारने का दावा करते हैं। वे आम लोगों के बीच भाईचारे के बजाय भेदभाव को अंतः क्षेप करते हैं। वे सोचने पर भी प्रतिबंध लगाते हैं।

आम आदमी बिना पूछे उनका पालन करते हैं तथा वे उनके लिए कुछ भी त्यागने के लिए तैयार रहते हैं। उनके इरादों को कभी संदेह नहीं किया जाता है तथा लोगों को उनके मानवीय देवताओं की सलाह के मुकाबले कोई अन्य समाधान नहीं मिलता है। लोगों को उनके द्वारा पूर्ण मुक्ति, सफलता और समृद्धि की उम्मीद होती है।

पाठकों से अनुरोध है कि मुझे गलत न समझें। मैं किसी भी राजनीतिक विचारधारा, धर्म या विश्वास के खिलाफ नहीं हूँ।

हमेशा एक बात ध्यान में रखें कि, यह संसार भयानक परिवर्तन और प्रगति की निरंतर प्रक्रिया से गुजर रहा है। अधिकांश सिद्धांतों का पालन जो हम वर्तमान में कर रहे हैं, उन्हें समीक्षा या संशोधन की आवश्यकता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि इस संसार में उपलब्ध सभी सिद्धांत गलत या भ्रामक हैं। हालांकि, एक बात निश्चित है-

विकृति की प्रक्रिया से कुछ भी स्वतंत्र नहीं है, दर्शन एक अपवाद नहीं है।

इस दुनिया में सब कुछ परिवर्तनों के अधीन है। परिवर्तन एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है जिससे किसी भी कारण से बचा नहीं जा सकता है। यह सभी के साथ हो रहा है। अंतर केवल यह है कि, कुछ के लिए यह तेज़, और अन्यों के लिए, यह धीमा हो सकता है।

चूँकि बहुत से विकल्प शानदार हैं, इसलिए हमें स्वयं द्वारा चुने गए एकल विकल्प के साथ संतुष्ट क्यों होना चाहिए?

चूँकि कई अन्य संभावनाएँ हमारे प्रतिकूल परिस्थितियों से निपटने के लिए उपलब्ध होते हैं, तो हमें दूसरों के 'संदिग्ध निर्देश' का पालन क्यों करना चाहिए?

स्वतंत्र विचारक प्रभावित अनुयायियों की तुलना में अधिक सफलता प्राप्त करते हैं।

बिना विश्लेषण के अनुसरण करना, लोगों को और कहीं नहीं केवल सामान्य स्थल पर ले जाता है, जहाँ सभी उपलब्ध संसाधन लगभग विलुप्त हो जाते हैं। खालीपन और

निराशाओं के अलावा हम क्या उम्मीद कर सकते हैं ? किंतु हमारे क्रंदन के लिए कोई औचित्य नहीं है क्योंकि परिणाम कभी आकस्मिक नहीं होते हैं, बल्कि हमारे जाने – अनजाने के विकल्पों के उत्पाद होते हैं ।

अभिनव स्वतंत्र विचारों का उत्पाद है ।

बिना विश्लेषण के अनुसरण करने से, सफल व्यक्ति की तुलना अधिक मध्यस्थ लोगों की रचना होती है । यह नेताओं की तुलना में अधिक अनुयायियों तथा मालिकों की तुलना में अधिक दासों की रचना करता है ।

ऐसे कई माता-पिता हैं जो अपने बच्चों को अपने नक्शेकदम पर 'सबसे आज्ञाकारी और मूक अनुयायियों' के रूप में घोषित करते हैं । वे खुद को 'सबसे सफल माता - पिता' के रूप में भी पेश करते हैं ।

वे अपने बच्चों द्वारा बिना प्रश्न किए ही अपनी बातों का पालन करवाते हैं । उनके अनुसार, जो बच्चे अपने हित या राय की कल्पना करते हैं, वे अवज्ञाकारी तथा उग्र होते हैं ।

उनका दृढ़ विश्वास होता है कि उनके बच्चे अपने जीवन में कुछ भी चुनने के लिए पर्याप्त परिपक्व नहीं हैं । वे उन्हें स्वतंत्र व्यक्तियों के रूप में कभी देखना नहीं चाहते जिनके अपने व्यक्तित्व और सपने होते हैं ।

वास्तव में, मुझे ऐसे माता-पिता पर दया आती है क्योंकि अपने बच्चों द्वारा अपने कदमों के पालन करवाने से, वे नेताओं से अधिक अनुयायी पैदा कर रहे हैं । वे उन्हें उनकी रुचि के अनुसार क्षेत्र का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित करने की बजाय उनमें वृद्धि की हर संभावना को प्रतिबंधित कर देते हैं ।

वे अपने बच्चों को बिना विश्लेषण के अनुसरण करने के लिए तैयार करते हैं । सोच में निरंतर हस्तक्षेप बच्चों को डरपोक बनाता है तथा जीवन में वास्तविक समय की चुनौतियों का सामना करने में असमर्थ बनाता है । ऐसे माता-पिता अपने बच्चों के भविष्य को बनाने की बजाय तोड़ देते हैं ।

उन्हें इस तथ्य का एहसास नहीं होता है कि उनके विचार और सपने उनकी पीढ़ी के होते हैं । मेरी राय में, ऐसे माता-पिता लालची, ज़रूरत साधक तथा स्वार्थी होते हैं ।

उन्होंने अपने 'समय' में हर संभव स्वतंत्रता का आनंद उठाया तथा मनोवांछित जीवन जीया । किंतु वे नहीं चाहते कि उनके बच्चों को भी वैसा ही जीवन मिले । उनमें से अधिकांश अपने बच्चों का प्रयोग अपने अचेतन सपने को पूरा करने के लिए करते हैं । ऐसे

माता-पिता उन लोगों से अलग नहीं हैं, जो एक पेड़ पर मछली को चढ़ाने की कोशिश करते हैं।

पेड़ों पर मछलियों के चढ़ने की अपेक्षा करना और कुछ नहीं, केवल एक मूर्खता है।

मैं ऐसे माता-पिता से अनुरोध करता हूँ कि वे अपने बच्चों को उनके रुचि अनुसार क्षेत्र का चयन करने दें। जिस तरह से वे चाहते हैं, उन्हें वैसे रहने दीजिए क्योंकि माता-पिता की जिद् उन निर्दोषों को बहुत बुरी तरह से प्रभावित कर सकती है। न भूलें कि, आपका समर्थन भविष्य में उन्हें वैज्ञानिक, तकनीकी दिग्गज, संगीतकार, डॉक्टर, विपणक, शिक्षक, नेता, आदि में से कुछ भी बना सकता है।

उनके पास कई सपने और नए विचार होते हैं तथा उनका मस्तिष्क नए विचारों को समायोजित करने के लिए बिल्कुल नया है। उन्हें उच्च उड़ान भरने दें। आइए हम उनके सपनों को हमेशा के लिए दफ़नाने की बजाय उन्हें पंख दें। याद रखें,

हर प्रवृत्त अवधारणा को कम से कम एक बार तो अस्वीकार कर दिया जाता है।

अधिकांश महाविद्यालय छोड़ने वाले तथा निगमित जगत के गैर-उत्पादक कर्मचारी पीड़ित होते हैं और इस तरह के आरोपों के उत्पाद हैं एवं वृद्धाश्रम में माता-पिता उनके अस्वीकृति के प्रमाण के रहने वाले टुकड़े ही होते हैं।

अद्यतन जानकारी के हर पहलू में माता-पिता और शिक्षकों को आदर्श होना चाहिए। कई माता-पिता और शिक्षक बच्चों को प्रमाण पत्र धारक बना रहे हैं, किंतु पेशेवर नहीं। घर और विद्यालय ‘रोजगार साधक’ बना रहे हैं, नौकरियाँ नहीं। कई लोग देनेवाले से अधिक लेनेवालों की रचना करते हैं।

यह ब्रह्मांड सभी की जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त समृद्ध है। इस दुनिया में किसी भी चीज़ की कोई कमी नहीं है। यह दुनिया अवसरों और संभावनाओं की भूमि है। फिर हमें अपने बच्चों के विषय में इतनी चिंता क्यों करनी चाहिए? विचार करें कि इस ब्रह्मांड की हर सृष्टि एक उद्देश्य से होता है।

इस ब्रह्मांड में होने के हमारे उद्देश्य से अनजान होने का अर्थ यह नहीं है कि अस्तित्व का कोई उद्देश्य नहीं है।

बड़े होने के नाते, एक ही मार्ग, वह भी एक अयोग्यपूर्ण मार्ग, में उन्हें सीमित करने की अपेक्षा कई मार्गों को प्रदर्शित करने में पूर्ण समर्थन का विस्तार और मार्गदर्शन करना

चाहिए |

राय नहीं विकल्प दें, लक्ष्य नहीं मार्गदर्शन करें।

विश्लेषण के बिना अनुसरण करने से, हमें संभावनाएँ नहीं, किंतु प्रतिकूल परिस्थितियाँ ही दिखती हैं, क्योंकि अन्य लोगों द्वारा दिखाए गए पथ या अवसर कई लोगों को ज्ञात थे तथा ये पहले से ही पता लगाए जा चूके थे। वहाँ सिवाय आपसे पहले गुजरने वाले व्यक्ति के पद - चिन्ह को छोड़कर, और कुछ भी नहीं बचेगा।

कौन जानता है कि वे कहाँ पहुँचे हैं ?

विश्लेषण के बिना अनुसरण करना, व्यक्ति के जीवन कौशल को हासिल करने की क्षमता को सीमित करता है। वास्तव में, हममें से अधिकांश, खासतौर पर माता-पिता अपने बच्चों के जीवन में, जीवन कौशल के महत्व के विषय में नहीं सोच पाए होंगे। वे इस बात से अनजान हैं कि उनके शैक्षणिक कौशल से अधिक ज़रूरी और आवश्यक कई बार जीवन कौशल होते हैं।

जीवन कौशल लोगों को प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच अवसरों को उजागर करती है। इससे उन्हें विश्वास होगा कि,

कठिनाइयाँ और कुछ नहीं केवल संभावनाओं का बाहरी खोल होता है।

बाधाएँ हमेशा योग्य वस्तुओं की रक्षा के लिए बनाई जाती हैं। अंदर की वस्तु बाधा से कई गुना अधिक कीमती होती है। अन्यथा, वहाँ कोई बाधा नहीं होती।

बिना विश्लेषण के अनुसरण करने से स्वयं और समाज पर एक व्यापक और दीर्घकालिक प्रभाव पड़ सकता है। वर्तमान समय की मध्यस्थता ऐसी कार्यवाही का परिणाम है। हालांकि इरादों पर संदेह करने के कई कारण थे, किंतु उन्होंने कभी ऐसा नहीं किया। नकारात्मक प्रभावों के खिलाफ कई पीले अलर्ट (सिग्नल) थे, फिर भी वे उनके साथ रहे ... अंत में, यह सामान्यता में हुई बिना विश्लेषण के बाद उन्हें गुलामी, निराशा, अक्षमता और असुरक्षा लाई गई।

विश्लेषण के बिना अनुसरण की आदत को दूर करने के लिए चार नियम होते हैं :

नियम संख्या १

हमेशा ध्यान रखें कि:

- (क) हर चमकती चीज़ सोना नहीं होती है।
- (ख) हर चीज़ का एक मूल्य होता है तथा निः शुल्क कुछ भी नहीं होता है,
- (ग) रक्तपात से कभी भी शांति नहीं लाई जा सकती है,
- (घ) हर कार्यवाही के पीछे एक या अनेक उद्देश्य हो सकते हैं,
- (ङ) इस ब्रह्मांड में सब कुछ परिवर्तन के अधीन है, चाहे वो नकारात्मक हो या सकारात्मक।

नियम संख्या २

विश्वास करने से पहले, नास्तिकता के बजाय विश्वास करने के कारणों की खोज करें, क्योंकि कभी-कभी आपके अंधविश्वास या अविश्वास आपको बाद में निराश कर सकते हैं।

नियम संख्या ३

विकल्पों को कभी अनदेखा न करना, क्योंकि हर सिद्धांत में एक वैकल्पिक विकल्प होता है।

नियम संख्या ४

हमेशा खुद को सर्वाधिक अच्छे न्यायकर्ता के रूप में विचार करें, क्योंकि आपसे बेहतर, किसी और को इस दुनिया में आपकी आवश्यकताओं, इच्छाओं, ताकतों और कमजोरियों के विषय में नहीं पता होता है।

२. प्रयास किए बिना छोड़ना।

हम अपने चारों ओर तीन प्रकार के लोगों को देख सकते हैं - विचारों वाले लोग तथा इसके लिए आगे बढ़ने की चाह रखने वाले, विचारों वाले लोग, किंतु इसके लिए आगे बढ़ने की कोई हिम्मत नहीं करने वाले, तथा बिना विचारों वाले लोग। प्रथम श्रेणी के लोग बहुत ही दुर्लभ, किंतु सफल होते हैं। तीसरी श्रेणी में मूक अनुयायियों के समूह का निर्माण होता है तथा समाज के विकास की दिशा में शायद ही कोई योगदान देता है।

दूसरी श्रेणी के लोग सबसे आम समुदाय बनाते हैं। उनके पास कई विचार होते हैं। किंतु इसके लिए आगे बढ़ने के लिए कोई हिम्मत नहीं दिखाते हैं।

सामान्यता विचारों की कमी के कारण नहीं, बल्कि लोगों को इसे कार्यान्वित करने के द्विजक के कारण होती है | उनमें से अधिकांश योजना तैयारी तथा चर्चा करते हैं किंतु निष्पादित नहीं करते हैं | उन्होंने कोई भी प्रयास शुरू करने से पहले अपनी योजना को छोड़ देते हैं | अधिकांश लोग अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव चाहते हैं वे चाहते हैं कि सभी समृद्धि औरों की अपेक्षा अपने जीवन में ही अधिक आए | कोई भी अपने जीवन में दर्द और दुख नहीं चाहता है | लगभग सभी जानते हैं कि जीवन में परिवर्तन असंभव हो जाता है, जब इसके लिए कोई प्रयास नहीं होता | फिर भी, लोग परिवर्तनों की कोशिश क्यों नहीं करते ? उनमें से ज्यादातर एक भी प्रयास करने के लिए तैयार नहीं होते हैं | बिना कोशिश किए जाने से आलस और आत्मविश्वास की कमी का स्पष्ट संकेत होता है | आम आदमी के विचार बाइबिल की कहानी में बीज के समान होती हैं |

“एक बोने वाला बीज बोने निकला | बोते हुए कुछ मार्ग के किनारे गिरा और पैरों से रौंदा गया तथा पक्षियों ने आकर उसे चुग लिया | कुछ पथरीली भूमि पर गिरा और उगते ही सूख गया क्योंकि उसमें नमी न थी | कुछ कँटीली झाड़ियों में गिरा और झाड़ियों ने साथ – साथ बढ़कर उसे दबा दिया | अन्य बीज अच्छी भूमि पर गिरा और उगकर सौ गुणा फल लाया |”

- लूका ८ : ५ – ८

एक प्रयास को छोड़ना काफी आसान, सरल और तेज़ होता है | किंतु ऐसे छोड़ने के बाद के प्रभाव इतने आसान, सरल या तेज़ी से पारित नहीं होते हैं | औसत लोगों ने प्रयासों के आरंभ या प्रयासों से पहले उसे छोड़ दिया क्योंकि ये सबसे आसान बात है जो वे कर सकते हैं | यह साधारण व्यक्ति के बीच इतनी आम बात है कि वे ऐसे कुछ लाभों की आशा करते हैं जिनके लिए उन्होंने कभी भी कोई प्रयास नहीं किया या किसी कार्य की शुरूआत ही नहीं की |

दिलचस्प तथ्य यह है कि लोग 'कुछ चीज़ों' से कुछ लाभ प्राप्त करने की अधिक आशा करते हैं, जिन पर उनका कोई नियंत्रण होता ही नहीं है, किंतु उसी समय जिसपे वे विनियमित कर सकते हैं उसपे कोई उम्मीद ही नहीं रखते हैं |

छोड़ने वाले लोगों के पास अपनी प्रतिक्रिया को साबित करने के लिए कई कारण तथा समर्थन तर्क होते हैं | वे दूसरों की विफलताओं के कई वास्तविक कहानियों को भी प्रस्तुत करते हैं | वे अपने आगे बढ़ने के प्रयासों की बजाय, छोड़ने का औचित्य साबित करने के लिए अपने स्तर का सर्वश्रेष्ठ प्रयास करते हैं |

बहुत से लोग किसी परीक्षण के लिए भी नहीं जाते हैं क्योंकि परीक्षाएँ उस सुविधा क्षेत्र में बाधा ला सकती हैं जिसमें सामान्य लोग हमेशा के लिए जारी रखना चाहते हैं। याद रखें, जीवन स्वयं ही एक प्रयोग है तथा जो लोग इसके लिए आगे बढ़ने में संकोच करते हैं, वे संभावनाओं के किसी भी नए क्षेत्र का पता कभी नहीं लगा पाएँगे।

अवसर केवल उन लोगों को दिखाई देते हैं जो इसके लिए बढ़ने की चाह रखते हैं, काम करने के लिए पर्याप्त संवेदनशील होते हैं, तथा लड़ने के लिए पर्याप्त साहसी होते हैं। यह एक सार्वभौमिक तथ्य है कि कुछ भी रातोंरात हासिल नहीं किया जा सकता है। हम केवल एक ही दिन में कुछ महान हासिल करने की उम्मीद नहीं कर सकते हैं। केवल धैर्य और कठिन परिश्रम द्वारा ही किसी वास्तविक महत्व के चीज़ को हासिल किया जा सकता है।

जीवन में अधिक ऊँचाई हासिल करने के लिए दृढ़ता की आवश्यकता होती है। दृढ़ता का स्थान न तो शिक्षा ले सकती है और न ही प्रतिभा। केवल दृढ़ता और दृढ़ संकल्प ही सपनों को वास्तविकताओं में परिवर्तित कर सकते हैं। यह हमारे सभी प्रयासों के लिए सकारात्मक परिणामों की अपेक्षा करना लालच के अलावा और कुछ भी नहीं है। जब हम बीज बोते हैं, तो कुछ फसल बनकर उग जाते हैं तथा कुछ नष्ट भी हो जाते हैं। किंतु महत्वाकांक्षी किसान कभी बुवाई करने से नहीं रुकता है। किसी को वास्तविकता को स्वीकार करने के लिए पर्याप्त रूप से तैयार होना चाहिए - 'गुरुत्वाकर्षण तथा क्षीणन' की वास्तविकता को।

सब कुछ गुरुत्वाकर्षण और क्षीणन के अधीन है। जीवन में नकारात्मक परिणाम या सफलता की देरी होना बहुत आम बात है। हर नकारात्मक परिणाम कुछ नया सीखने और अधिक परिष्कृत दृष्टिकोण के लिए अवसर प्रदान करता है। अवसर केवल उन लोगों को दिखाई देते हैं, जो खुद को अपने उद्देश्यों के लिए समर्पित करते हैं, न कि छोड़नेवालों को।

बिना परीक्षण के छोड़ने की आदत से कैसे बाहर निकलें?

1. हमेशा मान लें कि अंडे को तोड़े बिना ऑमलेट बनाना असंभव है।
2. एक अनुसरणकर्ता होने के बजाय अनुयायी बनें, दीक्षा नवीनता का एक उत्पाद है - यह कारक सफल लोगों के सर्वोत्तम गुणों में से एक है।
3. प्रतिबद्धताओं में विश्वास करें - परिणाम निराशाजनक नहीं होंगे।
4. विलंब को निरुत्साहित करें क्योंकि 'कल' हमारे नियंत्रण में नहीं हो सकता है।

5. याद रखें, हारने वाले दर्शकों से एक दर्जे ऊपर ही होते हैं क्योंकि बिना उनके, जीत हासिल करना असंभव होता है तथा इतिहास में प्रत्येक अभिलेख में केवल दो चीजें होती हैं- विजेता और हरनेवाला, दर्शक नहीं।

३. नए प्रयासों में देरी करना।

चीज़ों को टाल देना सबसे बुरी आदत में से एक है, जो महत्वाकांक्षी लोगों को भी अपने प्रयासों में विफल कर सकता है। यह वांछित परिणाम को अस्वीकार या उसमें विलंब कर सकता है। कल या 'आगे के दिन' टालनेवालों के लिए सबसे अच्छा दिन है। प्रत्येक स्थगन के लिए उनके पास अपने ही औचित्य होते हैं। उनमें से अधिकतर बहुत अधिक योजनाओं में विश्वास करते हैं। उनमें से कुछ लोग अपने समय का एक बड़ा सा हिस्सा सफलता की तुलना संभावनाओं की बदौलत योजना बनाते और उन्हें बदलते हैं। वे केवल तभी आराम महसूस करते हैं जब वे कुछ टालने के कारणों का आविष्कार कर लेते हैं। मजेदार बात यह है कि वे कार्य करने की तुलना में विलंब करने के कारणों को पुनर्रचना करने में अधिक वक्त बिताते हैं।

विलंब हमें अवसरों को देखने में दृष्टिहीन बना देती है। यह वास्तव में लोगों को असहाय बना देती है तथा सामान्यता की ओर ले जाता है।

'इसे करो और अभी ही करो' जैसे सिद्धांत में विश्वास करना एक सबसे प्रशंसनीय गुणों में से एक है जिसे सफल व्यक्ति बनाए रखते हैं।

लोगों की अधिक संख्या के लिए, नियोजन हर चीज ठीक करती है। वे विश्वास करते हैं और हर जगह योजना बनाने की आवश्यकता का दावा करते हैं। उनके लिए, नियोजन के बिना कोई दीक्षा आत्मघाती हो सकता है।

**हमारे चारों ओर का समाज, मूलतः दो प्रकार के लोगों से भरा हुआ होता है -
योजनाकार तथा शिकायतकर्ता।**

बार-बार वही काम करना और अतीत से भिन्न परिणाम की उम्मीद करना मानवीय जीवन की प्रमुख विक्षिप्तता में से एक है। प्रगति के लिए जुटना असामान्य नहीं होता है। किंतु हममें से कितने एक कार्य को शुरू करने के लिए या कम से कम एक प्रतिशत दैनिक प्रयासों को बढ़ाने के लिए तैयार होते हैं?

योजनाकारों और शिकायतकर्ताओं की कोई कमी नहीं है, किंतु 'कर्ताओं' की है।

बहुत से लोग खुद के लिए या समाज के लिए बहुत कुछ करना चाहते हैं, किंतु वे ऐसा नहीं करते हैं क्योंकि वे कार्य को टालनेवाले होते हैं। वे अपने सपनों को कल पे छोड़

देते हैं | दुर्भाग्यवश, उनका कल उनके कार्यों को कई दिनों के बाद के लिए स्थानांतरित कर देता है और उनके कल ही हमेशा के लिए उनके कार्यों को भंग कर देते हैं |

दो तरह के टालनेवाले व्यक्ति होते हैं - अभ्यस्त तथा स्थितिपरक |

अभ्यस्त टालनेवाले स्थितिपरक टालनेवालों की तुलना में अधिक जोखिम में होते हैं | कुछ सरल अभ्यासों के माध्यम से, स्थितिजन्य टालनेवालों को सही किया जा सकता है | काम के माहौल या सहयोग में परिवर्तन उनमें बदलाव ला सकता है जबकि अभ्यस्त टालनेवालों को कठोर व्यायाम और निगरानी की आवश्यकता होती है |

लोग एक कार्य या प्रयास को क्यों टालते हैं ? इसका कारण बहुत सहज है, कि उनके 'पेट में आग' की कमी है |'

विलंब और कुछ नहीं, 'पेट में आग' की अनुपस्थिति के दिखाए गए लक्षण ही हैं

|

मेरा विश्वास है, टालने की आदत को सुधरा जा सकता है और यह सभी के लिए संभव होता है |

कोई भी श्वास लेने की प्रक्रिया या अपनी नगनता को ढकने पर विलंब नहीं करता है | वे जानते हैं कि इन कार्यों के बिना जीना कठिन हो जाएगा | सफलता केवल तभी संभव हो सकती है जब सपने और क्रियाएँ भी गंभीरता से देखी जाती हैं |

सफल लोगों और मध्यस्थों के बीच एक प्रमुख अंतर यह है, कि जब क्रियाएँ औसत दर्जे वाले लोगों को बाधित करती हैं, निष्क्रियता दूसरों को बाधित करती है |

जब सफल लोग अपने सपनों को सांचे में डालने की कोशिश करते हैं, तब सामान्य लोग उसी को टालने का प्रयास करते हैं।

ज्यादातर निंदक और शिकायतकर्ता टालनेवाले भी होते हैं | टाल - मटोल महत्वाकांक्षी लोगों के कार्य पूरे होने तक उन्हें बेचैन कर देते हैं, जबकि प्रजनक इस विषय में कभी नहीं सोचते हैं | वे अपने कार्यों को स्थगित करने में कोई असुविधा महसूस नहीं करते हैं | वे बिना किसी कारण के ही अपने कार्यों को टाल देते हैं और टालने की प्रक्रिया को अपनी आदत बना लेते हैं | उनमें से अधिकतर एक 'आरामपसंद' दृष्टिकोण में विश्वास करते हैं |

लेकिन उन्हें एक बहुत ही सामान्य तथ्य का एहसास नहीं होता है कि उनके आसान जीवन का अस्तित्व हमेशा उनके मेहनती माता-पिता, महत्वाकांक्षी नियोक्ता या समर्पित देखभाल करने वालों की हिस्सेदारी पर होती है।

लोग कार्यों को क्यों टालते हैं?

इच्छा, एकाधिक केंद्रित ध्यान तथा कई प्राथमिकताओं की कमी ही, शिथिलता के मुख्य कारण हैं। अधिकांश अपनी इच्छाओं की कमी के कारण अपने सपनों को पूरा करने में शंका करते हैं। इच्छा से जीवन में बदलाव लाया जा सकता है, क्योंकि इसके बिना परिवर्तन असंभव है। इच्छा के अभाव उन्हें प्रजनक बना देते हैं, जिससे उन्हें सामान्यता में जारी रहना पड़ता है।

इच्छा टाल – मटोल को समाप्त कर देती है।

जीवन में सफलता हासिल करने के लिए वृद्धि और विकास के लिए एक अनन्त खोज आवश्यक होते हैं।

**अपने सपनों को पूरा करने का सबसे अच्छा तरीका है कि इस पर कार्य करना है
और इसी समय पर।**

क्रियाएँ लोगों को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह घटना या परिस्थिति नहीं है, जो किसी के भाग्य का निर्णय लेती है, किंतु उन परिस्थितियों या घटनाओं के प्रति उनका जवाब है। समय पर कार्यवाही करने से परिहार और वृद्धि की कई परेशानियों से बच सकते हैं।

प्रजनक के साथ एक प्रमुख असुविधा यह है कि वे अपने समय का मौल नहीं करते हैं।

उनके लक्ष्य 'स्व व्यवस्थित' नहीं होते हैं। उनकी इच्छाओं में से अधिकांश इच्छाएँ उनकी अपनी नहीं होती हैं। उनके मार्ग और गंतव्यों का निर्णय दूसरों और परिस्थितियों के द्वारा किया जाता है।

जब हमारे मार्गों और गंतव्यों का निर्णय दूसरों और परिस्थितियों द्वारा होता है, तो हम एक कठपुतली या नाटक के एक चरित्र की तरह बन जाते हैं, तथा हमारे कार्यों और इसके कार्यक्रमों का निर्णय उनके द्वारा ही किया जाता है। अंततः, हम जीवन पर अपना नियंत्रण खो देते हैं और जीवन सामान्यता में जारी रहता है।

बेहतर तरीके के बिना हम बेहतर परिणाम कैसे प्राप्त कर सकते हैं ? वर्तमान शैली को बदले बिना हम अपने जीवन में बदलाव की उम्मीद कैसे कर सकते हैं ?

प्रजनक अपने कार्यों को टालने के लिए कई मूर्खतापूर्ण कारणों को खोजने में माहिर होते हैं | उनके वादे हमेशा कल के लिए होते हैं, वर्तमान के लिए कभी नहीं | किंतु सबसे दुखद बात यह है कि उनका कल कभी नहीं आता है |

ऐसा माना जाता है कि मनुष्य इस ब्रह्मांड में सबसे बुद्धिमान और समझदार प्राणी है | यह सच भी हो सकता है |

किंतु मैंने कभी किसी जानवर या पक्षी को किसी अन्य समय के लिए अपनी गतिविधियों को स्थगित करते कभी सुना या पढ़ा नहीं है | कोई भी जानवर या पक्षी अपने खाने के शिकार या घोंसले के बनाने के प्रयास को कल पर नहीं छोड़ते हैं | किंतु मनुष्य का मामला पूरी तरह से अलग ही है | वे जनता में शपथ लेते हैं किंतु कभी किसी वादे को पूरा नहीं करते हैं | वे वादा करते हैं किंतु कभी कुछ प्रदान नहीं करते हैं | 'स्थगन' उनकी सामान्य प्रवृत्ति है |

जिन अधिकांश प्रजनकों से मैंने बात की है, उनका दृढ़ – विश्वास है कि, उनके आज की तरह, उनका कल भी उनके नियंत्रण में होगा | वे इस पर समय के किसी भी प्रभाव की आशा नहीं करते हैं |

वे चीजों को अपूर्ण रखते हैं और मतवालेपन की अनुमति देते हैं | वे अपने जीवन में लोगों, घटनाओं और बिना केन्द्रित कारकों के हस्तक्षेप की अनुमति देते हैं | वे बिना किसी प्राथमिकता या अल्प प्राथमिकता मुद्दों पर अपना बहुमूल्य समय बिताते हैं | ज्यादातर प्रजनकों को समय की कमी की एक आम शिकायत रहती है | वे बहुत व्यस्त होने का ढोंग करते हैं | कभी-कभी दुनिया के नेताओं से भी व्यस्त होने का अभिनय करते हैं |

यह ध्यान देने की दिलचस्प बात है कि, व्यस्त दुनिया के नेताओं में से अधिकांश बहुमुखी होते हैं | उनमें से अधिकतर लेखक भी होते हैं | वे दुनिया का गौरव ग्रन्थ लिखते हैं, दुनिया को क्रांतिकारी और अभिनव विचार देते हैं | समय की कमी उनके लिए एक बाधा नहीं होती है |

किसी भी प्रयास के बिना, कुछ उम्मीद करना और कुछ नहीं केवल मूर्खता है | हम बुवाई के बिना कैसे फसल काट सकते हैं ? बहुत से लोग दूसरों के कठिन परिश्रम से लाभ उठाते हैं | दूसरों के श्रम से लाभ प्राप्त करना और कुछ नहीं, बल्कि शोषण है और ऐसे शोषण कभी भी लंबे समय तक नहीं टिक पाते |

सही समय पर सही काम करना सफलता की कुंजी है | कई लोग अपनी ज़िंदगी की ज़रूरतों से भी अनजान होते हैं |

वास्तव में, इसके लिए काम करने के अलावा हमारे जीवन में वित्तीय बहुतायत, बेहतर संबंध, शांति या आनंद हासिल करने के लिए कोई छोटा रास्ता, रहस्य या चाल नहीं है | इसे करो और ऐसा अभी ही करो |

मैंने देखा है, भारत में कई बिक्री कर्मियों ने त्यौहार के समय शैक्षिक उत्पादों के लिए अपने बिक्री के प्रयासों को स्थगित करने का विचार किया था कि त्यौहार का मौसम शैक्षिक उत्पाद बिक्री के लिए अच्छा नहीं होता है |

वास्तव में, वे दो महत्वपूर्ण चीजों से अनजान हैं,

पहला, त्यौहार के मौसम शैक्षिक उत्पाद बेचने के लिए बिल्कुल भी प्रतिकूल नहीं हैं तथा ये हमें कम से कम अज्ञात ग्राहकों को भी बधाई देने और उनके साथ व्यापार या व्यक्तिगत संबंध स्थापित करने का मौका देता है |

दूसरा, यह है कि भारत में कोई भी त्यौहार या महत्वपूर्ण दिनों के बिना किसी भी महीने का मिलना कठिन है |

इसके अलावा, कई लोग हैं, जो बरसात के मौसम के खत्म होने का, नए राजनीतिक दल सत्तारूढ़ लेना, मुद्रास्फीति का अंत, आने वाले प्रवासी के आगमन का, कर प्राधिकरण से छूट की घोषणा या आने वाले नए शिक्षा प्रणाली द्वारा आदि का इंतजार करते हैं |

याद रखें, उपर्युक्त चीजें हों या ना हों, किंतु आपकी बिक्री की उपलब्धि में सुधार तभी आएगा, जब आप सभी मौसमों और अवसरों के लिए तैयार होंगे | वास्तव में, कोई अच्छे या बुरे समय जैसी कोई चीज नहीं होती है | यह इस पर निर्भर करता है कि हम इसका जवाब कैसे देते हैं |

वर्तमान समय की तुलना में और कोई समय बेहतर नहीं होता तथा आज की तुलना में अन्य कोई दिन बेहतर नहीं होता।

बेहतर कल होने के लिए हमें आज पर बेहतर नियंत्रण रखना आवश्यक है | नियंत्रण केवल कार्यवाही के माध्यम से संभव है, न कि चूक या विलंब के माध्यम से |

निष्क्रियता या विलंब किसी को भी उजले कल की उम्मीद करने का कोई अधिकार नहीं देता है।

कार्यवाही परिणाम के हकदार होते हैं, दीघ्रसूत्रता नहीं।

दीघ्रसूत्रता की आदत को दूर करने की युक्तियाँ

१. हमेशा विश्वास करो कि,

- क) हमारे जीवन में जो कुछ भी होता है वह हमारी प्रतिक्रियाओं या गैर-प्रतिक्रिया का परिणाम ही होता है।
- ख) यह घटना नहीं है, किंतु इस घटना की प्रतिक्रियाएँ हैं जो हमारे जीवन में परिणाम तय करती हैं।
- ग) इस ब्रह्मांड में एकमात्र हम ही हैं जो हमारे जीवन में परिवर्तन ला सकता है - कोई और नहीं।
- घ) उचित कार्यों के बिना परिणाम की अपेक्षा करना और कुछ नहीं, केवल मूर्खता है।

२. जब आप कुछ टालने की इच्छा महसूस करते हैं, तो मन में तीन प्रश्न ज़रूर लाएँ।

- क) "मुझे टालना क्यों चाहिए ?"
- ख) "क्या मैं या कोई अन्य, समाज में इस तरह की दीघ्रसूत्रता से लाभान्वित हूँ ?"
- ग) "क्या सबूत है कि भविष्य में मैं उस पर कार्यवाही करूँगा ?"

३. दीघ्रसूत्रता से बचने के लिए,

- क) पूर्णता का इंतजार करने से बचें।
- ख) ऐसा करना शुरू करें और इसे अभी करें।
- ग) दैनिक सूची बनाएँ और दैनिक समीक्षा करें।

४. परिवर्तनों का विरोध

अधिकांश वाहनों का खराब होना उसके मुख्य इंजन की विफलता के कारण नहीं बल्कि वाल्व ट्यूब्स जैसे कुछ मामूली हिस्सों के खराब होने के कारण हैं। वाहन की लागत की तुलना में मरम्मत या प्रतिस्थापन लागत बहुत कम हो सकती है। किंतु इसे सुधारे बिना यात्रा संभव नहीं होती है। मानव का मामला भी अलग नहीं होता है।

लगभग हर व्यक्ति अपने जीवन में सफलता हासिल कर सकता है, अगर वे बदलाव की इच्छा दिखाते हैं। लोग बहुत कम या बिना किसी कारण के बदलाव का विरोध करते हैं। उनका हठ उन्हें असफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

हमारे आसपास के अधिकांश लोग प्रतिभाशाली होते हैं और सफलता की तकनीक के विषय में अच्छी तरह से सूचित होते हैं। तो वह क्या है, जो उन्हें सामान्यता की स्थिति में जारी रखता है? यह और कुछ नहीं केवल परिवर्तनों को स्वीकार करने का प्रतिरोध है। परिवर्तन के बिना विकास असंभव हो जाता है और जो लोग बदलाव के लिए डिझाइन दिखाते हैं, वे अपने या दूसरे के जीवन में कुछ भी बदल नहीं सकते हैं।

जीवन में सफल होने के लिए बदलाव के लिए तैयार रहने की इच्छा अत्यंत आवश्यक होती है। विचारों और कार्यों में लचीलापन, समय की आवश्यकता है। दुर्भाग्य से, आबादी का केवल एक बहुत ही छोटा प्रतिशत लचीलेपन की गुणवत्ता के साथ ही धन्य है। अधिकांश लोग लचीलेपन को असमर्थता के संकेत ही मानते हैं। कई अन्य लोगों के लिए, लचीलापन और अवसरवाद एक – समान ही है।

हम जबरदस्त बदलावों की दुनिया में रह रहे हैं। चाहे हम इसे स्वीकार करें या नहीं, यह एक वास्तविकता है। परिवर्तनों के खिलाफ अपना मुँह फेरने से कोई लाभ नहीं। परिवर्तन आवश्यक और अपरिहार्य भी होते हैं।

निर्णय लेने में लचीलापन, कई उपलब्ध विकल्पों से सर्वोत्तम उचित व्यावहारिक विकल्प को चुनने की प्रक्रिया है, जबकि अवसरवाद स्वार्थीपन का दृष्टित संकेत है।

मौजूदा प्रणाली या परिवर्तन का प्रतिरोध एक नई घटना नहीं है। यह शुरुआत से ही वहाँ रहा है। इस दुनिया में कुछ भी स्थायी नहीं होता है। सब कुछ, चाहे जीवित हो या गैर-जीवित, विकास या क्षय के अधीन है। परिवर्तन आम और आवश्यक होते हैं। चाहे हम इसे अनुमति दें या न दें, यह सभी के साथ होता है। फर्क सिर्फ इतना है, कुछ में, परिवर्तन धीमे

होते हैं और दूसरों में तेजी से | हमें विचारों और कार्यों में बदलावों का स्वागत तथा समायोजित करने की आवश्यकता होती है |

लोग परिवर्तन का विरोध क्यों करते हैं ? उन परिवर्तनों के लाभ उन्हें आकर्षित क्यों नहीं करते हैं ?

आम आदमी और महत्वाकांक्षी लोगों के बीच में एक बड़ा अंतर यह है कि, जब आम आदमी अपने सुविधा क्षेत्र में जारी रखना पसंद करता है, तब महत्वाकांक्षी लोग उसी को तोड़ने की इच्छा दिखाते हैं | महत्वाकांक्षी लोगों को परिवर्तन की आवश्यकता के विषय में कोई संदेह नहीं होता है | वे बदलावों के अनुकूल होने में कोई झिझक नहीं दिखाते हैं |

जो लोग परिवर्तन के प्रति प्रतिरोध दिखाते हैं, वे ऐसा इसलिए करते हैं, क्योंकि उन्हें अपनी निजी या आधिकारिक जीवन में अपने महत्व को खोने का डर होता है | उनमें से अधिकांश विफलता के भय के बंदी होते हैं | उनमें से अधिकतर अपनी क्षमताओं के विषय में संदेह करते हैं, किंतु साथ ही यह भी नहीं चाहते की दूसरों को उनकी अक्षमताओं के विषय में पता चले |

जो लोग खुद को अद्यतन करने में संकोच करते हैं, वे सामान्य रूप से किसी ठोस कारण के बिना परिवर्तन का विरोध करते हैं और ऐसे लोग सकारात्मक परिणामों में विश्वास नहीं करते | वे कुछ नया जानने की कोशिश नहीं करते और केवल अपने ज्ञान पर ही भरोसा करते हैं | वे लोगों और सिद्धांतों पर संदेह करते हैं | सबसे बुरी बात यह है कि वे दूसरों को प्रभावित करने की कोशिश करते हैं ताकि उनका अभियान विफल हो सके |

परिवर्तनों को स्वीकार करना और अनुकूल बनाना सभी का काम नहीं है | इसमें बहुत – से लचीलेपन और समझदारी की आवश्यकता होती है | इसके लिए निस्वार्थता और सहानुभूति की आवश्यकता होती है | परिवर्तन तब ही संभव होते हैं, जब हम अपने आप को हठ से मुक्त कर देते हैं |

हठ अवसरों को बाधित करते हैं।

हमारे चारों तरफ बहुत से लोग अपने और दूसरे के हठ के ही शिकार होते हैं | तुलनात्मक रूप से, हमारे स्वयं की तुलना में अन्य के हठ से निपटना आसान होता है |

जब परिवर्तन का विरोध किया जाता है, तो अवसर कम दिखाई देते हैं | हर परिवर्तन कुछ अवसरों के साथ आता है | जो लोग परिवर्तन के अंत के परिणामों पर संदिग्ध होते हैं, वे एक बात को ध्यान में रखते हैं, कि आधुनिक दुनिया ही सभी आयामों में परिवर्तन को

स्वीकार करने के लिए कई लोगों की इच्छा का उत्पाद होते हैं | इसमें कोई संदेह नहीं है कि परिवर्तनों के अनुकूल होने की हमारी इच्छा अद्भुत परिणाम पैदा कर सकती है |

जो लोग परिवर्तनों का विरोध करते हैं, वे आमतौर पर अपने संबंधों में 'ईमानदार' और अपने काम के लिए 'समर्पित होने' के रूप में दिखावा करते हैं | किंतु उनमें से अधिकतर ऐसे नहीं हैं, वे स्वार्थी और अविचल होते हैं | वे सामूहिक कार्यसूची पर अपने निजी कार्यसूची लागू करने की कोशिश करते हैं | वे बहस मात्र करने के लिए तर्क देते हैं और कमजोर दिल वाले लोगों को परिवर्तनों के खिलाफ इकट्ठा करने के लिए राजी कर देते हैं | ऐसे कमजोर दिल वाले लोग दूसरे के हठ के दुर्भाग्यपूर्ण शिकार बन जाते हैं |

अधिकांश आम आदमी अपने क्षेत्र में सफल बनने में कड़ी मेहनत के महत्व से सहमत होते हैं | किंतु उनमें से अधिकांश जाने - अनजाने में अपने दृष्टिकोण में नवाचार जोड़ना भूल जाते हैं | वे अपने नियमित कार्य को दोहराते हुए सहज महसूस करते हैं | वे अभी भी अभ्यास के सामान्य दर्शन में विश्वास करते हैं - "अभ्यास मनुष्य को परिपूर्ण बनाता है" | वास्तव में, उन्हें सच को समझने व स्वीकार करने में बहुत देर हो चुकी है |

अभ्यास कभी भी लोगों को परिपूर्ण नहीं, किंतु परिचित बनाता है।

वास्तव में, केवल नवाचार उन्मुख सही प्रथाएँ ही लोगों को सही बना सकते हैं |

नवाचार के बिना प्रयास, बोरियत और निराशा के अलावा कोई परिणाम नहीं लाता है।

आम पुरुषों का मानना है कि कुछ दोबारा करके वे खुद को माहिर कर सकते हैं और वे आगे की संभावनाओं को खोजने की कोशिश नहीं करते हैं |

बहुत से लोग अपने कार्यों का असली उद्देश्य भी नहीं जानते हैं | वे अपनी प्रक्रियाओं पर संदेह नहीं करते हैं, भले ही परिणाम में देरी हो या परिणाम ही न मिला हो |

प्रत्येक क्षण में अवसरों का निर्माण हो रहा है किसी भी समय कोई स्थायी रुकावट नहीं होती है |

बदलने की इच्छा हमें प्रतिकूलता की अपेक्षाएँ दिखाती है | यह हमें बाधाओं की तुलना में विकल्प दिखाते हैं |

परिवर्तन के लिए प्रतिरोध लोगों को पुराने विचारवाला बना देती है।

परिवर्तनों का विरोध करने की आदत को दूर करने के कई तरीके हैं |

परिवर्तनों के विरोध की आदत को दूर करने की युक्तियाँ

1. सुनने के लिए तैयार रहें।

किसी को धैर्यपूर्वक और ध्यान से दूसरों को सुनने का अभ्यास करना चाहिए | हमारे द्वारा किए गए अधिकांश अस्वीकृति, अधूरे या सूचना की कमी के कारण होते हैं | ध्यान से सुनने के लिए पूर्वाग्रहों और पूर्व शर्त से मुक्त होना चाहिए।

2. इस एहसास से बचें कि "मुझे सब कुछ पता है"।

दूसरों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की अनुमति दें क्योंकि हर दबा हुआ विचार एक दिन विस्फोट होकर फूट जाएगा | उन विचारों पर ध्यान दें, जो आपको सीधे बताए जाते हैं | राय, विचारों का स्रोत हो सकती है।

3. प्रयोग करने के लिए तैयार रहें।

वास्तव में, एक पूरी पीढ़ी के लिए कोई आदर्श सिद्धान्त नहीं होते हैं | सब कुछ परीक्षण और त्रुटि के माध्यम से ही आता है | प्रयोगों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए क्योंकि उनके द्वारा और अधिक परिष्कृत परिणाम अपेक्षित किए जा सकते हैं | परिणाम सकारात्मक या नकारात्मक होने के बावजूद, आपको अनुभव के संदर्भ में ही सही किंतु लाभ दिलाता है।

4. अद्यतन के लिए तैयार रहें।

अद्यतन एक व्यवस्था प्रणाली की आवश्यकता होती है | आपको स्व-अद्यतन करने से बचने का कोई अधिकार नहीं है क्योंकि आपके अद्यतन की कमी से संगठन तथा आपके साथ सहयोग करने वालों को नुकसान हो सकता है | मैं हमेशा उन लोगों को सलाह देता हूँ, जो अद्यतन करने में अनिच्छा दिखाते हैं, अगर वे साथ नहीं आ सकते हैं तो संगठन से दूर चले जाएँ क्योंकि ऐसे लोगों के साथ एक अभियान में जाना आत्मघाती होगा।

5. विश्वास कीजिए, दूसरों के पास अन्य कई कार्य भी होते हैं।

मैंने कुछ अति स्वयंसेवित कर्मचारियों को परिवर्तनों का विरोध करते हुए देखा है क्योंकि वे गलत सोचते हैं कि परवर्तन दूसरों के द्वारा उन्हें दबाने या नुकसान पहुँचाने के लिए किया जाता है | ऐसे लोगों की अपनी योग्यता या प्रतिबद्धताओं के संदर्भ में कमी हो सकती है | उनकी चिंता केवल पकड़े जाने के डर के प्रतिबिंब के अलावा और कुछ नहीं है | वास्तव में, दूसरों को किसी को नुकसान पहुँचाने और दबाने के अलावा कई अन्य चिंताओं

भी होती हैं इसलिए वे नए विचारों को लाते हैं | बस दृष्टिकोण में सहकारी होना चाहिए क्योंकि लंबे समय तक अकेले चलना कठिन होता है |

5. अनुपालन करने के पहले शिकायत करना।

दोष देना तथा शिकायत करना बहुत आम बात है, किंतु यह औसत दर्जे के लोगों की बुरी प्रवृत्ति है। वे अपने हर गैर-अनुपालन के लिए कई कारण खोजते हैं। वे हर बात के लिए दूसरों को दोष देते हैं। वे लोगों, प्रणालियों और संगठनों को दोषी ठहराते हैं। वे खुद में कोई दोष नहीं देख पाते हैं, किंतु दूसरों में देखते हैं। वे अपनी विफलता के लिए शायद ही कोई ज़िम्मेदारी लेते हैं।

सफल लोगों और साधारण व्यक्तियों में एक मुख्य अंतर यह होता है कि, औसत दर्जे वाले लोगों के विपरीत, सफल लोगों को किसी भी कार्य के अनुपालन में कोई झिझक नहीं दिखाई देती है, जब उन्हें बताया जाता है वे असंबद्धियों को फिर से बदलने की कोशिश नहीं करते हैं।

अधिकांश प्रबंधकों के लिए, अनुपालन करने से पहले शिकायत करना एक प्रमुख चिंता का विषय होता है। मैं कई प्रबंधकों के विषय में जानता हूँ जो अवांछित अस्वीकृति और लोगों से सहयोग की कमी के कारण अपनी व्यावसायिक योजनाओं को मुश्किल से लागू करते हैं। आत्मविश्वास की कमी वाले लोग इसे बढ़ावा देने के बजाय अपने ऊष्मायन चरण में अभियान को समाप्त करने का सर्वोत्तम प्रयास करते हैं।

प्रयास किए बिना ही लोग शिकायत कर्यों करने लगते हैं? लोग अनुभव करने से पहले ही विरोध कर्यों करने लगते हैं? वास्तव में, कई बार-बार असफलता और शोषण के कारण परेशान हो जाते हैं। पुनः मिली असफलताओं के कारण उनके अनुभव ने उन्हें संभवतः संभावनाओं की अपेक्षा असंभवता में विश्वास करवाता है। निराशा पूरी तरह से परिहार्य नहीं होती है, किंतु इसकी घटना को सीमित करना संभव होता है।

हालांकि, उन्हें एक बात का ध्यान रखना चाहिए कि, एक बार की विफलता हमेशा के लिए एक विफलता नहीं बनती है।

जब लोग दूसरों या विचारों पर आशा खो देते हैं, तो वे स्वयं उनसे दूर रहते हैं। उनकी उदासीनता उन्हें संभावनाओं की तुलना में असंभव कार्यों के सभी पहलुओं का मूल्यांकन करवाता है। उन्हें छोड़ने का प्रलोभन प्रयास करने के लिए उनकी प्रेरणा से अधिक होता है।

अधिकांश शिकायतकर्ता आत्मविश्वास की कमी रखते हैं और वे स्वीकृति से अधिक प्रतिरोध बनाए रखते हैं। उनमें से ज्यादातर हठों के शिकार होते हैं। वे शिकायत या

अस्वीकार करने से पहले किसी परीक्षण को करने में भी कोई चिंता नहीं दिखाते हैं | वे अपनी गलत धारणाओं और नकारात्मक रुख के साथ जीवित रहते हैं | उनके आधे मन के प्रयासों से हमेशा नकारात्मक परिणाम ही मिलते हैं | याद रखें, शिकायत हर किसी के द्वारा संभव हो सकता है, किंतु अनुपालन करना दक्षता, साहस और खुलेपन का मामला होता है |

पालन किए बिना शिकायत की आदत पर निम्न चरणों का पालन करके काबू पाएँ |

1. पूरी तरह से और ध्यान से सुनें।

हमारे चारों ओर बहुत से लोग हैं जो कुछ पूरी तरह से सुनने से पहले ही प्रतिक्रिया करते हैं | कभी-कभी आंशिक जानकारी खतरनाक हो सकती है और आंशिक जानकारी पर प्रतिक्रिया रिश्तों को भी खराब कर सकते हैं |

2. इसके लिए बढ़ने के लिए तैयार रहें।

याद रखें, सफलता केवल उन लोगों के साथ जारी रहती है जो इसके लिए इंतज़ार करते हैं, खोज करते हैं, और बढ़ते हैं | चूँकि हम 'प्रयासों और परिणामों' के सिद्धांत में विश्वास करते हैं, यहाँ तक कि, भगवान् भी उन लोगों के साथ असहाय बन जाते हैं जो काम नहीं करते हैं किंतु वरदान माँगते हैं क्योंकि भगवान् एक ही समय में दोनों कर्ता और बकाएदारों का पक्ष नहीं ले सकते |

3. असंभावनाओं की तुलना संभावनाओं पर विश्वास करें।

हर नए विचार में संभावनाओं और आगे के विकास के अवसर होते हैं | बिन खोजवाले अवसरों में कोई नई शिक्षा नहीं होती है और ऐसे लोग जो इस तरह के अन्वेषण से बचना चाहते हैं, वे किसी भी तरीके से खुद को अनूठा बना लेते हैं | आम आदमी नियमित आशीर्वाद प्राप्त कर भी सकता है या नहीं भी, किंतु अद्वितीय व्यक्तित्व हमेशा विभिन्न अनुभवों के साथ आशीष पाते हैं | हमेशा विश्वास करें कि, हर नए अनुभव से कुछ हासिल करने की संभावना होती है और इसके लिए आगे बढ़ने से संकोच न करें |

4. स्वयं में विश्वास करें।

खुद पर विश्वास करने से आत्मविश्वास में वृद्धि होती है तथा आत्मविश्वास लोगों को भयभीत होने की बजाय प्रयास करने वाला बनाता है | सफलता या जीवन में विफलता की जिम्मेदारी लेने के लिए तैयार रहें क्योंकि जिम्मेदारी लेने से आगे सीखने और विकास करने के अवसर मिलते हैं |

5. बहादुर बनें।

हमेशा एक बात ध्यान में रखें कि, हर बार जब हम पालन किए बिना शिकायत करते हैं, हम डरकर, किंतु अनजाने में ही तीन चीजें घोषित करते हैं- हम परिवर्तनों के अनुकूल होने में असमर्थ हैं, परिवर्तन हमारे सुविधा क्षेत्र को परेशान कर सकता है, और परिवर्तन हमारी सच्चे रूप से मुखौटा हटा देता है।

यदि रखें, उपरोक्त घोषणाएँ इच्छा, साहस और हिम्मत वाले लोगों के लिए कभी भी सजावटी नहीं होते हैं।

चुनौतियों का सामना करने के लिए बहादुर रहें, क्योंकि आप सर्वोत्तम योग्य हैं।

6. अयोग्य लोगों के लिए उदार बनें।

अवांछित लोगों की ओर उदार होने से उम्मीद से ज्यादा प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अयोग्य लोग परजीवियों की तरह होते हैं और सफलता प्राप्त करने वाले आम तौर पर ऐसे लोगों के शिकार बन जाते हैं। ऐसे परजीवियों को अग्रिम में पहचान लिया जाना चाहिए। ऐसे परजीवियों के प्रभाव से दूर रहना आवश्यक है, क्योंकि ये 'निर्दोष मेहनतकर्शों' के रक्त और मांस में पनपते रहते हैं।

ऐसे परजीवी प्रारंभ में खुद को 'टूटे हुए निर्दोष' के रूप में दर्शते हैं जो उनके बुरी किस्मत के शिकार होते हैं। वे दुर्भाग्य और शोषण की कहानियों का निर्माण करते हैं। वे अपने माता-पिता सहित अन्य लोगों को भी बुरा बोलने से नहीं पछताते हैं। वे बहुत सच्चे और ईमानदार होने का दिखावा करते हैं। प्रारंभ में, वे बिना भुगतान किए गए 'ओवरटाइम जॉब्स' के लिए भी तैयार होते हैं। वे अपने वर्तमान मालिक और संगठन की चापलूसी करते हैं। वे अपने मौजूदा संगठनों और उनके मौजूदा संगठन के अनुभवों की तुलना करते हैं और सार्वजनिक रूप से यह घोषणा करते हैं कि वर्तमान कार्यालय 'दुनिया का सबसे अच्छा कार्यालय' है।

उनमें से अधिकांश, उन लोगों के आत्मविश्वास को जीतने में सफल होते हैं जिनसे वे संपर्क करते हैं। चाहे वह एक रिश्ता हो या एक संगठन, वे स्वयं को अनिवार्य बनाने की कोशिश करते हैं।

उचित समय पर, वे मदद के लिए दूसरों के पास जाना शुरू कर देते हैं। उनमें से अधिकांश को धन की आवश्यकता होती है तथा उनके व्यक्तिगत जरूरतों की कोई सीमा

नहीं होती है। उनकी वित्तीय आवश्यकता कभी समाप्त नहीं होती है और यह दिन-प्रतिदिन बढ़ती रहती है। वे दुर्भावनापूर्ण संबंधों और वित्तीय लेनदेन में शामिल होते हैं।

वे खुद को अपना काम करने में बहुत व्यस्त दिखाते हैं, किंतु उनका व्यस्त कार्यक्रम उनकी आधिकारिक नौकरी के लिए नहीं अपितु अनौपचारिक नौकरी के लिए होता है। सफलतापूर्वक अपने शोचनीय स्थिति को पेश करने के लिए वे कहानियों और स्थितियों को तदनुसार तैयार करते हैं। वे सार्वजनिक माहौल में विलाप करने से भी नहीं कतराते तथा अलग-अलग लोगों को अपना अलग चेहरा ही दिखाते हैं।

जब वे दूसरों की सहायता प्राप्त करते हैं, तो वे दिखाते हैं कि वे इस दुनिया में सबसे धन्य हैं। वे दाता की चापलूसी जारी रखते हैं और साथ ही, वे मानते हैं कि वर्तमान में जो कुछ भी प्राप्त होता है उसमें उनका अधिकार है, न कि विशेषाधिकार, और वे गंभीरता से यह भी मानते हैं कि वे और अधिक के लायक हैं। वे दूसरों से बार-बार सहायता प्राप्त करते हैं, जब तक कि वे अपने अगले अपेक्षाकृत बेहतर शिकार को प्राप्त नहीं कर लेते और हमेशा दूसरे शिकार की तलाश में रहते हैं।

उनके आवरण की भविष्यवाणी करना भी कठिन होता है। वे बिना सूचना और स्पष्टीकरण के या कभी-कभी कुछ अपूर्ण बहाने के साथ गायब हो जाते हैं। वे दूसरों से प्राप्त होने वाले कृत्यों के प्रति कृतज्ञता का कोई रवैया नहीं दिखाते हैं।

अब वे जनता में उन लोगों और संगठनों को शाप देते हैं जिन्हें उन्होंने 'दुनिया में सबसे अच्छा' घोषित कर दिया था। वे छोटे मौद्रिक लाभों के लिए उन्हें धोखा देने से नहीं कतराते हैं। वे अपने अतीत को भूल जाते हैं। वे उस व्यक्ति या संगठन के दुश्मन और प्रतिद्वंद्वियों के साथ झुंड बनाते हैं, जिनसे वे तब तक अपनी आजीविका प्राप्त कर रहे होते थे। वे निर्दोष लोगों की प्रतिष्ठा को उनके बारे में कहानियों के निर्माण से नुकसान पहुँचाने की कोशिश करते हैं। वे नियमित रूप से दोष देते व शिकायत करते हैं और इसे अपनी आदत बना लेते हैं। वे खुद को सस्ते में बेच देते हैं।

यह एक तथ्य है कि उपरोक्त विशेषताओं के साथ इस समाज में उचित संख्या में लोग मौजूद हैं। धोखा मिलने से पहले उन्हें पहचानना बेहतर है, क्योंकि उनके साथ मिलकर हमारी परिसंपत्तियों का नुकसान हो सकता है।

ऐसे लोग वास्तव में योग्य लोगों के जीवन को भी दुखी कर देते हैं।

आम तौर पर आम आदमी को सब स्वीकृत मान लेते हैं। वे निर्दोष होते हैं तथा अन्तर्निहित होकर दूसरों पर भरोसा करते हैं तथा कुछ झूठे अभिमान के शिकार होते हैं। वे

आसानी से दूसरों की ओर आकर्षित हो जाते हैं तथा वे अपनी झूठी प्रतिष्ठा को बरकरार रखने के लिए अयोग्य लोगों की ओर अपना सहयोग बढ़ाते हैं।

वे सबकुछ अपने शोषण होने के बाद ही महसूस करते हैं। वे अपनी अनिर्णायिकता पर पश्चाताप करते हैं, फिर भी उसी गलती को दोहराते हैं। वे अपने अनुभव से कभी नहीं सीखते हैं। बिना किसी कारण के दूसरों को संदेह करना उचित नहीं होता है। वास्तव में, दूसरों पर संदेह करने का कोई कारण ही नहीं होता है।

आम आदमी इतना उदार होता है कि वे न तो संदेह करते हैं और न ही किसी को भी मानने से इंकार करते हैं। उनके लिए 'संदेह न करना' और 'विश्वास' एक ही बात है।

मैं उन युवा उद्यमियों की कई असली घटनाओं की कहानियों से गुजरा हूँ, जिन्हें अपने भरोसेमंद लोगों द्वारा धोखे मिले थे। उनमें से अधिकतर, सही लोगों को चुनने में उतने समझदार भी नहीं थे।

प्रत्येक को विश्वास करने या दूसरों को नास्तिक बनाने का ठोस कारण होना चाहिए। किसी को लोगों पर भरोसा करना चाहिए, किंतु उन पर निर्भर होने से बचना चाहिए।

सफलता प्राप्त करने वालों को लोगों की समीक्षा करने का अभ्यास करना चाहिए। किसी को एक पुराने उल्लू की तरह सतर्क रहना चाहिए, जो अधिक देखता है और कम बोलता है। जैसा कि पिछले अध्यायों में वर्णित है, ब्रह्मांड हमें दिन-प्रतिदिन जीवन में पीले सचेतक देते हैं। यह एक सहज ज्ञान, आंतरिक अनुभूति या एक देरी के रूप में हो सकती है।

हम उन्हें लगातार कैसे पहचान सकते हैं? ...। संवेदनशील और ईमानदार लोगों पर संदेह रखें क्योंकि हर व्यवहार के पीछे एक उद्देश्य होता है। फैसले के लिए पर्याप्त समय की अनुमति दें। जल्दबाज़ी में किए गए फैसले बाद में हमें निराश कर सकते हैं। उन पर नज़र रखें और अपने काम के इतिहास का आकलन करना न भूलें, क्योंकि कोई लंबी अवधि के लिए प्रतिरूपित नहीं कर सकता है। वे एक न एक दिन निश्चित रूप से अपनी असलियत का खुलासा कर ही देते हैं।

पीले सचेतकों को नजरअंदाज करने से बचें, क्योंकि अपराधविज्ञानी मानते हैं कि कोई भी अपराधी कम से कम एक सबूत छोड़े बिना तो अपराध कर ही नहीं सकता है। लोग पहले ही अपने भविष्य के लक्षण दर्शाते हैं।

ऐसे शोषणकर्ताओं से निपटना और कुछ भी नहीं, बल्कि मूर्खता है। उनसे निपटने का सबसे अच्छा तरीका उन पर समय बर्बाद करने के बजाय पूरी तरह से उनसे दूर रहना है। उनसे कम संपर्क करें और स्व-अलगाव का अभ्यास करें।

एक अच्छे नेता बनें और उनकी गतिविधियों की जानकारी रखें और काम पर अपने प्रदर्शन का दस्तावेजी प्रमाण बनाए रखें। जहाँ तक उनकी चिंता का सवाल है, बचना एक सबसे अच्छी नीति है ताकि हम निराशा से बच सकें और समय बचा सकें।

7. स्वयं को कम समझना।

लगभग सभी के जीवन में कुछ सपने होते हैं। दुर्भाग्य से, उनमें से बहुत कम प्रतिशत ही उन सपने को साकार कर रहे हैं। यह मुझे आश्वर्यचकित करता है कि कई लोग अपने सपनों को पूरा क्यों नहीं कर रहे हैं।

स्व-सहायता पुस्तकें और प्रमुख वक्ता हमें ऐसे लोगों की तीव्र इच्छा की कमी के कारणों को दर्शा सकते हैं। असफल लोगों की भी बहुत - सी तीव्र इच्छाएँ होती हैं, किंतु वे अपने मानसिक अवरोधों से समान रूप से प्रभावित होते हैं।

जब सफल लोग अपने लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करने की आदत को बनाए रखते हैं, साधारण लोग अन्य की राय को, अपने सपनों को प्रभावित करने की अनुमति देते हैं।

लोग दूसरों को अपने सपने को नियंत्रित करने की अनुमति देते हैं क्योंकि वे खुद को कम समझते हैं। वे अपनी ही क्षमताओं और सामर्थ्य में शक करते हैं। उनमें से अधिकांश स्वयं की अपेक्षा अन्य की क्षमताओं में विश्वास करते हैं।

आत्मनिर्दिष्टता लोगों को केवल प्रतिकूल परिस्थितियाँ ही दिखाता है, संभावनाएँ नहीं। यह उन्हें निष्क्रिय चरण में ले जाता है। जो लोग खुद को कमजोर ठहराते हैं, वे मानते हैं कि उनके दुर्भाग्य के कारण ही वे कमियों के साथ पैदा हुए हैं। वे कोई भी प्रयास करने से पहले ही आत्मसमर्पण कर देते हैं। वे हार स्वीकार करने में कोई झिझक नहीं दिखाते क्योंकि उनका मानना है कि सफलता केवल भाग्यशाली लोगों के लिए ही संभव होता है।

एक व्यक्ति के शुरुआती बचपन के दिनों, माता-पिता की सामाजिक स्थिति, परिवार की खराब वित्तीय स्थिति, समुदाय के अंतर्गत आने वाला व्यक्ति, शारीरिक विकलांगता, माता-पिता या देखभाल करने वालों के क्रूर व्यवहार, नियोक्ताओं, सहयोगियों और जीवन सहयोगियों से समर्थन की कमी और राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक व्यवस्था आदि के अनुचित प्रभुत्व ... कुछ ऐसे कारक हैं जो लोगों के बीच आत्मनिर्धारण के प्रति योगदान करते हैं।

आत्मनिर्दिष्टता एक गंभीर मानसिक स्थितियों में से एक है जिसमें व्यक्तिगत विश्वास प्रणाली के साथ सीधा संबंध होता है। जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण रखने के लिए, प्रत्येक को अपने स्वयं के विश्वास प्रणाली को सही करने की आवश्यकता होती है। सोच

प्रक्रिया को फिर से बनाना आवश्यक है। जीवन के प्रति एक आशावादी दृष्टिकोण रखने के लिए एक निरंतर मानसिक व्यायाम आवश्यक होता है।

खुद को कम समझने की आदत को दूर करने के लिए कई युक्तियाँ हैं।

आत्म-अवमूल्यन की आदत को दूर करने की आठ युक्तियाँ।

1. तुलना से बचें।

खुद को दूसरों के साथ तुलना करने से बचें, क्योंकि लोग अपने प्रकृति में और दिखावट में अद्वितीय होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में तरीके और अभियान हमेशा दूसरों से अलग होते हैं। दूसरों को पूरी तरह से पढ़ना कठिन होता है तथा लोग अपनी समस्याओं और कमियों का पता जनता को लगाने नहीं देते हैं। हम जो देख रहे हैं वह वास्तविक कहानी से पूरी तरह से अलग हो सकता है।

हम अन्य की चिंताओं, कमजोरियों और समस्याओं के विषय में क्या जानते हैं?

याद रखें, इस दुनिया में अधिकांश समस्याएँ प्रकृति में संक्रामक होते हैं तथा आप इस से पीड़ित एकमात्र व्यक्ति नहीं हैं। इसके अलावा, ध्यान रखें कि कोई भी किसी भी कमी से मुक्त नहीं है। अन्य लोग वही बातें करते हैं जो आप करते हैं, किंतु चिंता और तुलना के लिए कोई जगह नहीं होती क्योंकि आप अपने दृष्टिकोण में अद्वितीय होते हैं।

तुलना करने की प्रक्रिया लोगों को प्रोत्साहन करने के मुकाबले अधिक निराश करती है।

2. लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करें।

लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करना जीवन को और अधिक सार्थक बनाता है, यह विचलन और गलत संगठनों से लोगों को अलग करता है।

यह व्यक्ति के आत्मविश्वास का स्तर बढ़ाता है। अपनी उपलब्धियों और काम की तुलना किसी और से करने से तब तक बचें जब तक कि आप सभी मापदंडों से मेल न कर सकें।

3. विषाक्त लोगों से दूर रहें।

नकारात्मक मानसिकता वाले लोगों का प्रभाव महत्वपूर्ण और हानिकारक हो सकता है। जरूरत का लाभ उठाने वालों के साथ होने से बचें क्योंकि सकारात्मक सोच

वाले लोग शायद ही लंबे समय तक उनके साथ रह पाएँगे | विकास और रचनात्मकता को बढ़ावा देने वाले लोगों को अपने चारों ओर धेरें |

4. शारीरिक व्यायाम का नियमित अभ्यास करें।

इससे लोगों को उनके मन और शरीर को साथ – साथ रखने में मदद मिलती है | इससे लोगों को अपने जीवन के उद्देश्यों को संरेखित करने और उनकी एकाग्रता के स्तर में वृद्धि करने में मदद मिलेगी ताकि यह लोगों को बिखरे हुए विचारों और तुलना से बचा सके | ध्यान करना सर्वोत्तम विकल्पों में से एक हो सकता है |

5. अपनी राय को प्राथमिकता दें।

अन्य की राय को अधिक महत्व देते हुए हमें उनको संतुष्ट करने के लिए बाध्य किया जाता है, भले ही यह हमारी ज़रूरतों और सपनों को अनदेखा करने का मतलब हो | हमारी ज़रूरतों पर निरंतर दमन करने से हमें यह विश्वास हो सकता है कि हम सबसे अच्छे के लायक नहीं हैं | यह लोगों को नियति और भाग्य पर अधिक निर्भर करवाता है | मेरा विश्वास कीजिए, आप केवल एक ही व्यक्ति हैं जो आपके सपने को पूरा करने के लिए पूरी तरह से समर्पित हो सकते हैं क्योंकि कोई भी आपके सपनों को आपसे बेहतर नहीं समझ सकता | अपनी राय को प्राथमिकता देते हुए लोगों को निर्भयी और केंद्रित बना सकते हैं | याद रखें, अगर हम अपने विचारों का समर्थन नहीं करते हैं, तो वह कोई और भी नहीं करेगा तथा यदि हम अपने सपनों की देखभाल नहीं करते हैं, तो हमारे लिए यह कौन करेगा ?

6. स्वयं पर विश्वास करें।

यह एक सिद्ध सत्य है कि लोग अपने जीवन में सफल होने के लिए महान प्रतिभाओं के साथ पैदा हुए हैं | दुर्भाग्यवश, कई लोग उनके अस्तित्व को लेकर अनजान होते हैं | एक 'कर सकते हैं' मानसिकता को बनाए रखने से जीवन को और अधिक सफल बनाया जा सकता है | हमेशा अपनी क्षमताओं पर विश्वास करें और स्वयं का सम्मान करना न भूलें, क्योंकि अगर हम खुद का सम्मान नहीं करते हैं, तो दूसरे क्यों करेंगे ? अपने मन को मानने दें कि आप सर्वोत्तम के लायक हैं और फिर आप निश्चित रूप से सर्वश्रेष्ठ प्राप्त करेंगे क्योंकि आपका मन कुछ भी स्वीकार नहीं करेगा जो आपकी उम्मीदों से कम है |

जो स्वयं का सम्मान करते हैं केवल वे ही दूसरों के द्वारा सम्मानित होंगे।

7. बौद्धिक बनें।

बौद्धिक होने पर लोगों को अपना योग्य होना महसूस होता है | नवीनतम ज्ञान और जानकारी के साथ अपने आप को भी समृद्ध करें क्योंकि ज्ञान लोगों को शक्ति और आत्मविश्वास देता है | ज्ञान लोगों को समझदार बनाता है और उनकी चाहत के अनुसार चयन करने के लिए सक्षम बनाता है |

ज्ञान लोगों को आकर्षित करता है और उनसे अपने मालिक का सम्मान करवाता है।

स्व-सहायता पुस्तकों को पढ़ना, लिखना, रचनात्मक चर्चाओं में शामिल होना और स्वैच्छिक हितकारी गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी आदि लोगों को अधिक बौद्धिक बना सकते हैं।

8. अपना ख्याल रखना।

व्यक्तिगत संवारने और दिखावे को महत्व देना, लोगों को अधिक आत्मविश्वास और स्वीकार्य बनाता है। यह परोक्ष रूप से लोगों को एक संदेश भेजता है कि उनसे कैसे व्यवहार किया जाना चाहिए। एक पुरानी कहावत है, 'पोशाक आधी भूमिका निभाता है'। चाहे वह एक व्यक्ति हो या स्थान, सफाई अनुशासन के स्तर को इंगित करता है। स्वयं की देखभाल आत्म-सम्मान को बढ़ाती है और आत्म-सम्मान खुद को छोटा बनाने की सोच को कम करती है।

8. गलत धारणा को ध्यान में रखना।

किसी को सफल बनाने में धारणा एक प्रमुख भूमिका निभाती है। हमारे निर्णय हमारी धारणाओं पर आधारित होते हैं। धारणा क्या है? धारणा वह है जिससे हम अपने इंद्रियों पर आधारित एक घटना को अर्थ दे सकते हैं।

अन्य अवयवों की तरह, हमारी धारणा भी हमारे संबंधों को बना या तोड़ सकती है। कोई भी संगठन तब तक नहीं बढ़ सकती जब तक वे रिश्तों पर आधारित नहीं होते। हमारी धारणा हमें दूसरों के साथ संचार करने से राजी करती है या हमें वापस ले जाती है।

समीक्षा (एक माँ), अपने दोस्तों के साथ अपने फ्लैट्स के नीचे वाले बगीचे में बैठी बातें करने में व्यस्त थीं। उसने अपनी चार साल की इकलौती बेटी को अपने दाहिने हाथ में आंशिक रूप से काटे गए एक सेब को और दूसरे हाथ में एक पूरे सेब को लिए हुए समूह

की ओर आते देखा | समीक्षा ने यह सोचते हुए कि वह बिना किसी झिझक के ही समीक्षा को वो पूरा सेब दे देगी, इसलिए उसने उससे यूँ ही, कोई भी एक सेब दे देने के लिए कहा |

अगले ही पल में बच्ची ने दूसरे सेब को भी काट लिया | यह सभी के लिए विशेष रूप से एक झटका था, खासकर समीक्षा के लिए, जो अपनी बेटी के प्रेम और लगाव के बारे में अपने दोस्तों से बहुत कुछ कहती थी |

वह अपने दोस्तों के सामने बहुत अपमानित महसूस करने लगी क्योंकि कभी, यही दोस्त उससे ईर्ष्या करते थे जब वह अपनी बेटी के विषय में उन्हें बताती थी | कम से कम एक पल के लिए, वह खुद को ऐसे अकृतज्ञ बच्ची को पाने की बात पर कोसने लगी |

अचानक बच्ची ने अपने बाएँ हाथ वाले सेब को अपनी माँ को दिया और कहा, "माँ, आप इसे लीजिए, यह अधिक मीठा है |"

धारणा हमारे दिमाग की पूर्वापेक्षा करते हैं जो हमारे बुद्धिमान निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को पंगु बना सकते हैं | हमारी धारणाएँ हमारी संचार प्रक्रिया को भी प्रभावित करते हैं | सार्वजनिक बोलने की क्षमता हमारी धारणा से काफी प्रभावित होती है | गलत धारणा हमें विफलता से डरने के लिए प्रेरित करती है |

हम दूसरों के विषय में जो सोचते हैं, वह हमेशा सच नहीं होता है | लोग अपने अनुभवों और प्रतिबद्धताओं पर आधारित निर्णय आसानी से कर लेते हैं | वे जो देखना चाहते हैं वही खोजते हैं और वे केवल उन बातों पर ध्यान देते हैं जो वे सुनना चाहते हैं | उनकी धारणा के अनुसार ही, वे लोगों से प्यार या नफरत करते हैं |

ऐसे कई कारक हैं जो एक व्यक्ति की धारणा को प्रभावित करता है जिसमें शुरुआती बचपन के दिन, योग्यता, सहकर्मी समूह, समाज जिसमें वे शामिल हैं, नशा और मदिरा का प्रभाव, जानकारी का स्तर, प्रशिक्षण, प्राप्त प्रशिक्षण, व्यक्ति द्वारा पाया गया पर्यवेक्षण स्तर, रोशनी का स्तर, परिस्थिति के साथ परिचय, और बहुत कुछ ...|

हमारी धारणा हमें निर्णय लेने के लिए तैयार करती है और यह हमारे विचारों और कार्यों को नियंत्रित करती है | धारणाओं के आधार पर संबंध और संगति को बनाया या तोड़ दिया जाता है | यह ध्यान देने की दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि, मानव जाति के अधिकांश लोग अंत तक, अपने जीवन में गलत धारणाओं के प्रतिकूल प्रभावों पर ध्यान नहीं देते - जब तक वे इसे महसूस करते हैं, तब तक बहुत देर हो जाती है |

हमारी गलत धारणा हमसे दूसरों के प्रति नकारात्मकता फैला सकती है | जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, जो हमारे भीतर है वही केवल दूसरों के साथ बाँटा जा सकता

है। जब हम दूसरों को कुछ देते हैं तो हम सदा उसमें से कुछ अपने पास भी आरक्षित रखते हैं। नकारात्मकता का मामला भी अलग नहीं है। हमारे भीतर बची नकारात्मकता आंतरिक रूप से विकसित हो सकती है और हमारे सकारात्मक विचारों, सपनों, विश्वासों और कार्यों को प्रभावित कर सकती है। नकारात्मकता संक्रामक होती है। यह हमारे सभी प्रयासों को विफल कर सकते हैं।

धारणा हमारी निर्णय लेने की प्रक्रिया को बहुत प्रभावित करती है। हम अपने आंतरिक समझ और पिछले अनुभवों के साथ संयुक्त पर्यावरणीय टिप्पणियों के व्यक्तिगत विश्लेषण के आधार पर निर्णय करते हैं। नतीजतन, धारणा एक व्यक्ति से दूसरे में भिन्न होती है। सही धारणा, निर्णय लेने में स्पष्टता को बढ़ावा देती है।

जीवन में सफलता हासिल करने के लिए, हमें हमेशा एक सही धारणा की आवश्कता होती है। गलत धारणा को ध्यान में रखना एक प्रमुख गलतियों में से एक है जो हम करते हैं और जो हमें सही अवसरों पर दस्तक देने से रोकता है। सही धारणा को बनाए रखने के कई तरीके होते हैं।

धारणा सुधारने की सात युक्तियाँ

1. सहानुभूत होने की अपेक्षा समृद्ध होएँ।

सहानुभूति रखने से लोगों को किसी भी तथ्य की भावनात्मक पक्ष दिखाई देती है। भावनाओं पर किए गए फैसले और राय बाद में आंशिक रूप से या पूरी तरह से गलत साबित होते हैं। बुद्धिमान लोग भावनाओं के आधार पर शायद ही कोई राय या निर्णय लेते हैं। निर्णय लेने के दौरान भावनाओं को अलग रखना जरूरी होता है। सामंजस्यपूर्ण दृष्टिकोण सही धारणा पाने के लिए मदद करती है।

संवेदनशील निर्णय लोगों को रिश्तों को जीतने वाला बनाती है।

2. सुनने के लिए तैयार रहें तथा रक्षात्मक होने से बचें।

हमेशा रक्षात्मक होना, अवसरों से इनकार करता है। यह रिश्तों को खराब कर देता है। विचारों को सुनने, स्वीकार और समायोजित करने की इच्छा प्रगति को संभव कर देता है। दूसरों में रुचि दिखाने से लोगों और रिश्तों को जीतने में मदद मिलती है। दूसरों को 'सुनने' से निर्णय आसान और त्रुटि मुक्त बन सकते हैं। उचित संचार बातों को स्पष्ट करता है और कम अस्वीकृति को आमंत्रित करता है। धैर्यपूर्वक सुनने की इच्छा से विचारों में स्पष्टता आती है ताकि सही धारणा को प्राप्त किया जा सके।

3. प्रचारों पर विश्वास करने के बजाय प्रामाणिक स्रोतों से अपने संदेह को साफ़ करें।

सफल लोगों के विषय में सकारात्मक और नकारात्मक प्रचार फैलाना आम बात है। नकारात्मक फैलाव तेजी से फैलते हैं क्योंकि वे अनुचित और अवांछित ईर्ष्या और निराशाओं का मिश्रित उत्पाद होते हैं। सामान्य लोग इसे फैलाने में आनंद लेते हैं क्योंकि यह उन्हें एक अपरिभाषित अस्थायी आनंद देता है।

सफल लोगों के विषय में अधिकतर नकारात्मक प्रचारों में कमजोर भाइयों के लिए सहानुभूति के चिह्न या किसी मौजूदा प्रणाली को निष्ठाहीन समर्थन मिलता है। जब नकारात्मक प्रचारकों पर धारणाएँ बनती हैं, तो परिणाम सहायक नहीं होते हैं। एक अच्छा गुण, जो अच्छे नेता अपने जीवन में बनाए रखते हैं, वह यह है कि वे अपने संदेह को संभ्रातों पर विश्वास करने के बजाय सही स्रोतों से स्पष्ट करने में भी नहीं झिल्लित होते हैं। वे ज्ञान संकलित करते हैं, सवाल पूछते हैं, सबूत ढूँढ़ते हैं, तथा तथ्यों को स्थापित करते हैं। जब उन्हें अपने वरिष्ठ अधिकारियों के विषय में कोई संदेह होता है, तो वे उनसे पूछने के लिए साहस दिखाते हैं क्योंकि वे अपनी क्षमताओं पर विश्वास करते हैं। जब संदेह हो, तो पूछने में संकोच न करें क्योंकि एक बार बनाई गई धारणा को बदलना कठिन होता है।

4. टीम की धारणा को बदलने के लिए अपनी जीत को प्रकाशित करें।

सफलता के विषय में लोगों की धारणा को बदलना इन दिनों सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है, जिसका सामना बिक्री और विपणन प्रबंधक करते हैं। लोगों को सपने तथा सफलता में विश्वास करवाना अत्यधिक कठिन कामों में से एक है। उनकी गलत धारणा यहाँ मुख्य खलनायक के रूप में कार्य करती है। लोग ईश्वर में विश्वास करने के अलावा, किसी और बात को केवल तभी मानते हैं जब उनके पास कोई प्रमाण होता है। औसत लोग आम तौर पर सफलता में विश्वास नहीं करते क्योंकि वे अपने तत्काल परिवेश में सफलता का कोई प्रमाण नहीं देखते हैं। असफलता उनका आम अनुभव और वास्तविकता है। उनकी धारणाएँ उनकी पिछली वास्तविकताओं के आधार पर बनी हुई हैं।

व्यक्तियों को अपनी जीत प्रकाशित करनी चाहिए ताकि उनका अवचेतन मन सफलता की वास्तविकता को हमेशा के लिए स्वीकार कर सके। टीम के नेताओं और प्रबंधकों को अपनी टीम की जीत का जश्न जनमत में मनाना चाहिए ताकि टीम की धारणाएँ बदल सकें।

5. स्वतंत्र बनें।

हमारे अतीत के अनुभवों के आधार पर हमारी अधिकांश धारणाएँ बनाई जाती हैं। लोग अपनी अंतिम साँस तक उसे याद रखते हैं। बचपन के दिन, माता-पिता, मीडिया, सहकर्मियों, नशा व मदिरा आदि के प्रभावों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। सही धारणा के लिए, किसी को प्रभावित करने वाले कारकों से अलग होना चाहिए और स्वयं को स्वतंत्र विचारकों के रूप में ऊपर उठाना चाहिए।

जब विचार और क्रियाएँ बाहरी कारकों द्वारा नियंत्रित होते हैं, तो लोग अपना व्यक्तित्व खो देते हैं। स्वतंत्र सोच से लोग 'ताक' को देखते हैं जो आम तौर पर उन लोगों को दिखाई देता है जो इसके लिए प्रयास करते हैं।

6. एक पूर्णतावादी होने से बचें।

जीवन में एक 'पूर्णतावादी' दृष्टिकोण लोगों को गुणों की तुलना में कमी की तलाश करवाता है। निरंतर गलती खोजने का अभ्यास उनको नकारात्मक विचारकों से अभ्यस्त करा देता है। वे दूसरों की कड़ी मेहनत को कम समझते हैं और उन्हें कर्मशील मानते हैं।

हर किसी से पूर्णता की अपेक्षा करना और कुछ नहीं केवल लोभ है। लोग विभिन्न पहलुओं में अद्वितीय होते हैं और उनसे सामान्य होने की उम्मीद करना, उचित नहीं हो सकता है।

एक पूर्णतावादी बनने का प्रयास, लोगों को कम सहकारी तथा उनकी सादगी को कम कर सकता है। इससे लोगों के बीच की खाई बढ़ जाती है और उन्हें अलग-थलग भी किया जा सकता है। दूसरों को स्वीकार करना सीखें, जैसे वे हैं क्योंकि उनकी अद्वितीयता ही आपका ध्यान उनकी तरफ लेता है। सहिष्णुता केवल एक क्षमता ही नहीं है बल्कि एक महान गुणवत्ता भी है। सही धारणा के लोग दूसरों का सामना करने में सक्षम होते हैं तथा अपने और अन्यों के जीवन में बदलाव लाते हैं।

7. समीक्षा का अभ्यास करें।

हर निर्णय और फैसले लेने से पहले पुनर्विचारों को अनुमति दें। समीक्षा के बिना कुछ सुधार करना कठिन होता है तथा निर्णय लेने का मामला भी अलग नहीं होता है। पुनर्विचार करने से चीजों में गड़बड़ी तथा पूर्व शर्त से मुक्त होया जा सकता है। शायद दूसरी धारणा सही हो सकती है क्योंकि वे भावनाओं से कम प्रभावित होते हैं।

पहली छाप सबसे अच्छा प्रभाव हो सकती है, किंतु पहली राय सबसे अच्छी राय हो यह ज़रूरी नहीं।

निर्णय में विलंब करना न भूलें, क्योंकि औसत लोगों का स्वामित्व सीमित जानकारी के साथ अन्य लोगों को परखने के लिए पर्याप्त नहीं होता है | पुनर्विचार को अनुमति देने से कभी निराशा नहीं होती है, किंतु बेहतर धारणा तक पहुँचने में मदद मिलती है |

9. गलत संगति को बनाए रखना।

हम सकारात्मक और नकारात्मक दृष्टिकोण वाले लोगों से घिरे हुए हैं | उनका सहयोग हमारे भाग्य की योजना बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है | यह हमारे भविष्य को बना या तोड़ सकता है | हमारे जुनून और दर्शन हमारे संगठनों द्वारा प्रतिबिंबित होते हैं |

अच्छी संगति हमारे जीवन में सारे सद्गुण ला सकते हैं तथा साथ ही, इसके विपरीत हमसे सब कुछ ले जा सकते हैं | अच्छे सहयोग लोगों को एक अलग परिप्रेक्ष्य के माध्यम से देखने वाला बनाता है | यह अवसरों को रोकने की बजाय उसको उत्पन्न करता है |

संकुचित दिमाग वाले लोगों की संगति हमें एहसास करने की बजाय प्रतिक्रिया दिखाने वाला, अनदेखा करने की बजाय बदला लेने की कोशिश करने वाला, प्यार करने की बजाय नफरत करने वाला बनाता है | गलत संगति लोगों को अनैतिक प्रथाओं का पालन करने के लिए लुभाती है | यह हमारे सपनों को धुंधला करता है, हमें अपने लक्ष्यों से भटकाता है, और हमें अपने प्रयासों को बीच में ही छोड़ने के लिए प्रेरित करता है | यह लोगों को इसके साथ सहयोग करने की बजाय व्यवस्था प्रणाली और संगठनों से लड़ने के लिए राजी करता है | गलत संगति कभी भी कोई आशा नहीं देती है किंतु निराशा देती है |

जब यहाँ संगति के मामले की बात आती है, तो प्रेरण का सिद्धांत मनुष्यों पर भी लागू होता है | प्रेरण सिद्धांत का कहना है कि एक चार्ज शरीर पास के पदार्थों को सक्रिय कर सकता है, बशर्ते पदार्थ में पर्याप्त प्रभार को समायोजित करने के लिए उपयुक्त होना चाहिए या इसके माध्यम से उसी के मुफ्त प्रवाह की अनुमति होनी चाहिए |

यहाँ दो स्थितियों पर ध्यान देना चाहिए - आस-पास के शरीर में प्रभार को समायोजित करने के लिए पर्याप्त उपयुक्त होना चाहिए तथा इसके माध्यम से शुल्क के मुफ्त प्रवाह की अनुमति होनी चाहिए |

इंसान के मामले भी अलग नहीं होते हैं | लोग चुनते हैं, आमंत्रित करते हैं, अनुमति देते हैं, और संगठित करते हैं |

कभी-कभी लोग अपनी गलत संगति को लेकर पश्चाताप करते हैं, खासकर उनके कारण भारी नुकसान उठाने के बाद | वे किसी दया के लायक नहीं होते हैं |

संगति कभी अनजाने में नहीं बनते हैं।

गलत संगति लोगों को अपने मान प्रणालियों में समझौता करने के लिए प्रेरित करती है | वे लोगों को अस्थायी लाभ के लिए अपने आत्मसम्मान का आत्मसमर्पण करने के लिए प्रेरित करते हैं | यह लोगों को अपनी क्षमताओं और सशक्ति के प्रति अंधा बनाता है। यह संभावनाओं की तुलना में प्रतिकूलता की ओर ले जाता है।

कुछ संगति ज्ञान और संभावनाओं के खजाने की चाबी होती है। अच्छी संगति हमें सफलता की राह दिखाते हैं। यह हमारे सबसे अच्छे गुणों को पहचानता है।

चूँकि सहयोग और सफलता के बीच एक करीबी संबंध होता है, इसलिए हम उनके सहयोगियों को देखकर यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि वह भविष्य में क्या करेगा।

जो संगठन वे बनाए रखते हैं और जिन लोगों के साथ वे घूमते हैं, वे उनकी नियति का फैसला करते हैं। जिन लोगों के साथ हम सहयोग करते हैं, उनका हमारी व्यक्तिगत सफलता पर एक बड़ा प्रभाव और असर होता है।

आमतौर पर लोग अपने संगठन के समान स्तर बनाए रखते हैं, जिसमें वे होते हैं - यह आय स्तर, शैक्षणिक या बौद्धिक उपलब्धियाँ होती हैं। हमारे हित के क्षेत्र, चर्चा के विषय, दार्शनिक स्थल जिसमें हम यात्रा करते हैं, आदि..., मुश्किल से ही अलग होते होंगे।

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, हमारी संस्थाएँ लिपट की तरह होती हैं; यह या तो हमें ऊपर ले सकता है या नीचे। हम जो भी रिश्ते बनाए रखते हैं, ज़रूरी नहीं कि वह लंबे समय तक चले ... हमारा गलत चयन हमें अंत में विषाक्त लोगों तक पहुँचा देता है। इसलिए, यह ज़रूरी है कि सही संगति बनाएँ।

हम जिसके साथ जुड़ते हैं, हम वैसे ही होते हैं।

गलत संगति गलत फैसले को प्रोत्साहित करते हैं और इस तरह के फैसले का असर नकारात्मक और जीर्ण होते हैं।

भले ही विभिन्न नौकरी, संगठनात्मक, और व्यक्तिगत संबंधित कारक मानव सपने और दृष्टि को प्रभावित कर सकते हैं, अन्य मनुष्यों के प्रभाव को हमारे विचारों और कार्यों को आकार देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है जो हमारी नियति का निर्धारण करते हैं।

चूँकि गलत संगति के पास कई चीजें देने के लिए होती हैं, इसलिए इससे दूर रहना आसान नहीं होता है। कुछ चीज़ों से दूर रहना, वह भी तब जब वे चमकदार होते हैं, कई लोगों के लिए कठिन हो जाता है। आम लोग उन प्रभावों के बंदी हो जाते हैं और उनके अस्तित्व का निर्णय उनकी संगति द्वारा ही किया जाता है।

नकारात्मक मानसिकता वाले लोग हमें अपने प्रयासों से वापस खींच सकते हैं। उनके सहयोग, लंबे समय तक, हमें सनक और अंतर्मुखी बना सकते हैं। जाने -अनजाने में वे हमें असफल बना देते हैं।

हमारे संगठनों ने हमारी धारणाओं को भी बनाने में प्रमुख भूमिका निभाई है।

सही संगठनों को बढ़ावा देने के लिए नौ युक्तियाँ।

1. उन लोगों के साथ सहयोग करें, जो आविष्कार, प्रोत्साहित, विस्तार और आपको प्रेरित करते हैं।

कुछ हद तक, प्रत्येक व्यक्ति कुछ महान प्रतिभाओं के साथ अद्वितीय होते हैं। उनमें से अधिकतर अपरिष्कृत अयस्क की तरह होते हैं। सबसे दुखद बात ये है कि बहुत से लोग अपनी प्रतिभाओं को पहचाने बिना ही अवसरों के इस भयावह दुनिया से गायब हो जाते हैं। जो लोग हममें श्रेष्ठ प्रतिभाओं की पहचान करते हैं व प्रोत्साहित करते हैं, वो हममें सर्वश्रेष्ठ प्रतिभा को बढ़ावा देते हैं और प्रेरित करके शायद दीर्घकालिक संगतियों को उत्पादक बनाते हैं। अच्छे रिश्ते कमियाँ दिखाते हैं, सुधार करते हैं और लगातार विकास को बढ़ावा देने में मदद करते हैं। वे सीखने और नवाचार को प्रोत्साहित करते हैं।

2. सामान्य लक्ष्यों वाले लोगों के साथ सहयोगी बनें।

एकाधिक केंद्रित ध्यान या प्राथमिकता, अभियान को विलंबित या असफल बना देता है।

विभिन्न धारणा के लोगों के साथ एक यात्रा मुश्किल से ही हमें समय पर अपने गंतव्य तक पहुँचने में मदद करती है। समूह में समान लक्ष्यों वाले लोगों का होना बेहतर होता है ताकि अस्वीकृतियाँ और नीचे खींचने की प्रक्रिया को कम किया जा सके। सफलता साधकों का एक संगठन कई दिशाओं का आविष्कार करता है जब सफलता के लिए उनका रास्ता आंशिक या पूर्ण रूप से अवरुद्ध होता है।

3. समान मूल्य वाले लोगों के सहयोगी बनें।

मूल्य ऐसी चीज है जिससे किसी भी चीज़ के लिए समझौता नहीं किया जा सकता है।

समान विचारधारा वाले लोगों के साथ संगति, यात्रा को आसान और कम अवरुद्ध कर देता है। समान मूल्य प्रणाली वाले लोगों का संगठन होने से हमें समझौता और नकारात्मक कार्यों से दूर रहना पड़ता है। यह हमारी निष्ठा और गरिमा की रक्षा करने में सहायता करता है। एक ही मूल्य प्रणाली के लोगों के साथ जुड़ने से हमें एक दूसरे के लिए जवाबदेह बनाता है ताकि आपसी देखभाल की उम्मीद की जा सके। समान रुचिकर वाले लोग जीवन को अधिक मजेदार और अर्थपूर्ण बनाते हैं।

४. उच्च स्तर के साथ सहयोग।

अधिक से अधिक सपने और महत्वाकांक्षा वाले लोगों की संगति में होने से हमारे मन को अधिक संभावनाओं को विस्तारित करने में मदद मिलती है। उनकी बातें और कार्य हमें जाने – अनजाने में प्रभावित करते हैं। इस तरह के सहयोग हमें अपने सुविधा क्षेत्र से बाहर निकलने में मदद करते हैं। सफल लोगों के साथ सहयोग करने से हमें नई जानकारी और उच्च स्तर के जीवन प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

५. जिन लोगों को ज्ञान की प्यास होती है उनके साथ सहयोग रखें।

ज्ञान साधक दूसरों की अपेक्षा अधिक संभावनाएँ खोज निकालते हैं।

इस बात पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि, जो लोग नए ज्ञान की खोज की आदत रखते हैं,, वे पूर्वग्रिहों से अपेक्षाकृत मुक्त रहते हैं। वे आम तौर पर स्वतंत्र निर्णय लेते हैं और विपत्तियों की अपेक्षा अधिक संभावनाएँ तलाशते हैं।

आम तौर पर वे 'सफलता साधक' का समूह बनाते हैं। वे अपने लक्ष्यों और सपनों के लिए गंभीर रहते हैं। वे जीवन को गंभीरता से देखते हैं और गैर-उत्पादक गतिविधियों पर अपना समय बर्बाद नहीं करते हैं। वे विलंब से बचते हैं और कार्यों में विश्वास करते हैं। ज्ञान साधकों के सहयोग हमें उनकी तरह से काम करने पर मजबूर करते हैं।

६. अपनी जीत का जश्न मनाने वाले लोगों के साथ जुड़ें।

उत्सव, खुशी को, खुले दिल को, और निस्वार्थता को इंगित करता है। दूसरों की सफलता का जश्न मनाने के लिए किसी में अपने आस-पास के लोगों के साथ सहयोग करने और मिलान करने की इच्छा होनी चाहिए। दूसरे की जीत का जश्न मनाने के लिए, किसी को खुद को अहंकार से मुक्त करने की आवश्यकता है। जो लोग दूसरे की सफलता का हर पल

खुशी से मनाते हैं, वे अद्वितीय और सच्चे प्रेरक होते हैं | वे सफलता से दूसरों को कभी पीछे नहीं खींचते हैं या रोके नहीं रखते हैं | वे नवाचारों को बढ़ावा देते हैं |

७. अवसरवादी से संबद्ध करने से बचें

अवसरवादी के संगठन में रहने के बजाय अकेले रहना बेहतर है।

लोग विभिन्न मानदंडों पर संगठन बनाते हैं | उनकी संगठन उनके जुनून के केवल प्रतिबिंब होते हैं | जुनून पर बने संबंध लंबे समय तक जीवित रहते हैं | किंतु यह ध्यान देने की दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि कुछ लोगों का जुनून अवसर बदल जाता है और उसके अनुसार वे अपने संगठनों को भी बदल लेते हैं | वे अन्य के सद्व्यवहार, धन, स्थिति, सामाजिक प्रभाव या परिवार की पृष्ठभूमि जैसे ठोस कारकों के आधार पर संबंध बनाते हैं |

ऐसे संगठनों के विषय में सावधानी बरतने की जरूरत है क्योंकि वे कोई दीर्घकालिक संबंध नहीं जोड़ते हैं | जब कोई नाकामयाबी मिलती है, तब वे लोगों और संगठनों को यूँ ही छोड़ देते हैं | वे लोगों को जनमत में समर्थन करते हैं और निजी तौर पर धोखा देते हैं | वे अपने अस्थायी लाभ के लिए दूसरों को धोखा देते हैं |

८. उन लोगों का सहयोग करें, जो समर्थन करने के लिए तैयार होते हैं।

प्रत्येक अभियान की सफलता उसमें शामिल सभी लोगों की क्षमता और सहयोग पर निर्भर करती है | अपने आप में या दूसरों में सारी प्रतिभाएँ होना कठिन और दुर्लभ होता है | संघों को प्रतिभा, कौशल और क्षमताओं के मामले में अंतराल को भरने में पर्याप्त सक्षम होना चाहिए |

संघों को इमारतों की नींव के समान काम करना चाहिए और उन्हें हमेशा एक समान भार लेना चाहिए | अभियान केवल तभी सफल हो सकते हैं जब सभी दृष्टि और क्रियाएँ उन्मुख और संगठित होती हैं |

९. खुले दिमाग वाले लोगों के साथ सहयोग।

आपसी ध्यान प्रत्येक संघ के आधार होने चाहिए | कोई भी सहयोग लंबे समय तक नहीं टिक सकता यदि आपसी देखभाल खो जाए | संगठन व्यक्ति की सर्वश्रेष्ठता को बाहर लाने में पर्याप्त सक्षम होना चाहिए | इसे हमेशा व्यक्तित्व का सम्मान करना चाहिए |

अपने रिश्तों का मूल्यांकन करने के लिए कुछ समय निकालें | क्या आपके मित्र उपरोक्त मानदंडों को पूरा करते हैं ? क्या आप उनमें से किसी को अपने प्रयोजन भागीदारों

के रूप में मान सकते हैं ? यदि हाँ, तो यह बहुत अच्छा है ! यदि नहीं, तो यह संभवतः बाहर निकल जाने का समय है तथा कुछ नए रिश्तों को स्थापित करने की शुरूआत करें | उपरोक्त रहस्यों के साथ, आप अपने संबंधों की गुणवत्ता और अपनी दीर्घकालिक सफलता को बढ़ा सकते हैं |

10. रवैया

रवैया हर व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है | अगर गलत रवैया बनाया रखा जाता है तो सफलता असंभव हो जाती है, भले ही हम अन्य सभी गुणों से परिपूर्ण हों |

रवैया क्या है ? यह किसी के विषय में सोच या महसूस करने का तय तरीका है | रवैया एक अधिनियम के पूर्व स्वभाव है | व्यवहार रवैया का नतीजा है |

हमारे जीवन के हर पल में, हम जीवन और दूसरों के प्रति हमारे दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करते हैं | उदाहरण के लिए, सुबह - सुबह उठने की हमारी आदत समय प्रबंधन के प्रति हमारे दृष्टिकोण को दर्शाती है | दूसरों को बधाई देने की आदत, सामाजिक जीवन की ओर अपना दृष्टिकोण दिखाती है | हमारे दिनचर्या, खाने की आदतें, बड़ों के प्रति सम्मान के संकेत, प्रेम लीला, जुनून, करुणा, आध्यात्मिकता इत्यादि., सब कुछ हमारे दृष्टिकोण को दर्शाता है | रवैया लोगों को सफल या असफल बना सकता है |

रवैया विकास की ऊँचाई तय करता है|

रवैया हमेशा विद्युत स्विच की तरह कार्य करता है, जो सर्किट को खराब या ठीक बनाता है |

रवैया चीजों को या तो बना सकता है या बिगाड़ सकता है|

रवैया लोगों को एक अलग परिप्रेक्ष्य के माध्यम से चीजों को देखनेवाला बनाता है | सही रवैया लोगों को हर जगह संभावनाओं और अवसरों को देखनेवाला बनाता है |

इस दुनिया में समस्याएँ और मुद्दें बहुत आम होते हैं | कोई भी, चाहे वह एक नवजात शिशु हो या एक मृत शरीर, जो अपनी निपटान की प्रक्रिया का इंतजार करता हो, इस दुनिया में समस्याओं और मुद्दों से पूरी तरह से मुक्त नहीं है |

अधिकांश आम आदमी मानते हैं कि यह दुनिया विपत्तियों और चुनौतियों का क्षेत्र है | हार और निराशाएँ उनके सामान्य अनुभव हैं | उनका दृढ़ विश्वास है कि उनके चारों ओर की दुनिया शोषणकर्ताओं और 'ज़रूरत मुहकों' से भरी है और वे अपने आसपास हर किसी पर शक करते हैं | दूसरों पर विश्वास करने की बजाय वे हमेशा संदेह करने के कारणों की खोज करते हैं | उनमें से अधिकांश केवल जीवन का अँधेरा भाग ही देखते हैं |

वह क्या है जो उन्हें हमेशा उनके जीवन के अँधेरे भाग को देखनेवला बनाता है ? यह और कुछ नहीं केवल उनका रवैया है | लोग विभिन्न दृष्टिकोणों के माध्यम से चीजों को देखते हैं |

सैम और पादरी की कहानी

एक पादरी एक रविवार के धर्मसमाज के दौरान मण्डली के सदस्यों को विवाहित जीवन के गुणों के विषय में समझा रहा था | अपने प्रवचन के दौरान, उन्होंने पुरुषों के जीवन में महिलाओं के महत्व का प्रकाश डाला | याजक ने सफल व्यक्तियों के तथा उनकी पत्नियों के प्रभावों के कारण उनके कार्य क्षेत्र में मिलने वाली सफलता के कई उदाहरणों का हवाला दिया | अंत में, उन्होंने अपने भाषण का निष्कर्ष एक सार्वभौमिक उद्धरण के साथ निकाला "हर सफल व्यक्ति के पीछे एक महिला का हाथ होता है |"

एक मिनट के विराम के बाद, पादरी उस समूह की ओर मुड़े और एक जवान लड़के सैम, जिसे उन्होंने उस वक्त भाषण के दौरान बार – बार उबासी लेते देखा था, उससे पूछा कि उसने समाज में महिलाओं के महत्व को समझा या नहीं | सैम ने स्वीकरात्मकता से उत्तर दिया |

पादरी ने पूछताछ जारी रखी, "आज मेरे भाषण से तुमने क्या समझा ?"

सैम ने उत्तर दिया ... "महिलाएँ हमेशा सफल पुरुषों के ही पीछे रहेंगी |

कुछ मिनट की चुप्पी के बाद, पादरी ने चर्च की सभा को बंद कर दिया |

लोग हमेशा अपने व्यवहार के अनुसार चीजों को देखते हैं और तदनुसार निर्णय लेते हैं |

कठिनाइयों और नाकामयाबी बहुत आम होते हैं | यह विशेष रूप से उन लोगों के लिए अधिक है जो प्रयास करते हैं | औसत दर्जे वाले लोगों के विपरीत, सफल लोग कभी उन्हें कठिनाइयों या नाकामयाबों के रूप में नहीं मानते हैं | वे उन्हें सीखने का अवसर मानते हैं | वे महान लोगों की बात बताते हैं जैसे थॉमस अल्वा एडिसन, जिन्होंने कहा था, "मैं विफल नहीं हुआ; मुझे सिर्फ १०,००० तरीके मिलें हैं जो काम नहीं करते |"

नवीनतम शोध के अनुसार, हमारा दृष्टिकोण ही है जो हमारी सफलता का ८५% योगदान और निर्णय लेता है, जबकि विद्यालयों और कॉलेजों से प्राप्त कौशल केवल शेष १५% योगदान ही देते हैं |

वास्तव में, कइयों ने कहा कि ८५% के लिए आवश्यक तत्वों की कमी है। यही कारण है कि लगभग सभी गुणों के होने के बाद भी, अधिकांश शिक्षित, सुन्दर, धनी, प्रतिष्ठित और स्वस्थ लोग भी अपने जीवन में सफल नहीं हैं,

सही रवैये का होना एक वरदान है - एक सच्चा वरदान।

सही दृष्टिकोण वाले लोग समस्याएँ नहीं, अवसरों को देखते हैं। वे कभी भी अभाव को नहीं भुगतते हैं, किंतु एक अधिशेष का आनंद लेते हैं। उनके लिए, अंधेरा सिर्फ एक उजाले दिन की शुरुआत है। नाकामयाबी केवल सावधानी रखने का एक अनुस्मारक है, और विफलताएँ केवल सफलता में देरी हैं। वे कभी पैसे के लिए काम नहीं करते हैं, किंतु उद्देश्य के लिए करते हैं और वे जानते हैं कि जब उद्देश्य पूरे होते हैं तब पैसा खुद उनका अनुसरण करने लगता है, इसका उल्टा कभी नहीं होता है।

सही रवैया लोगों को सीमाओं से परे पहुँचने के लिए अनुमति देता है। इससे उन्हें अँधेरे पक्ष की बजाय चीजों का उज्ज्वल पक्ष दिखाई देता है। यह लोगों को 'सफलता साधक' और 'विजेता' बनाता है। सही दृष्टिकोण वाले लोग कभी भी अप्रिय घटनाओं और बुरी परिस्थितियों को लेकर शिकायत नहीं करते हैं, किंतु वे प्रतिकूल स्थिति के बीच संभावनाओं का पता लगाते हैं। वे चीजों के सकारात्मक पक्ष पर विपरीत से अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं।

सही दृष्टिकोण वाले लोग जानबूझकर किए गए मज़ाक को रचनात्मक तरीके से लेते हैं। गपशप और पीठ पीछे चुगली कभी उन्हें निराश नहीं करते। वे केवल उनसे ध्यान देने के संकेत के रूप में ही व्यवहार करते हैं। सही रवैया लोगों को पूर्व शर्त से मुक्त करता है।

फादर इम्मानुएल और उनका समूह

फादर इम्मानुअल अपने हास्यवर्ति स्वभाव के लिए प्रसिद्ध थे, लेकिन साथ ही, उनके सीधे - सीधे दृष्टिकोण के कारण कुछ ही लोगों द्वारा पसंद किए जाते थे। वह हास्य के माध्यम से गिरिजाघर की असामान्यताओं को इंगित करते थे और दूसरों से अयोग्य व्यवहार पर स्पष्ट रूप से प्रतिक्रिया करते थे।

उनकी कुछ समूह के सदस्य उनके सच बोलने की आदत के कारण तथा अमीरों या निहित स्वार्थियों द्वारा दिए गए एहसानों को स्वीकार करने की अनिच्छा के कारण नापसंद करते थे। उनके प्रतिद्वंद्वी हमेशा उन्हें दोष देने के कारणों की तलाश में होते थे तथा उनके

विषय में बिशप से शिकायत करते थे ताकि उन्हें निकाला जा सके या उनका स्थनान्तरण किया जा सके।

एक दिन, रविवार के धर्मसमाज के दौरान, लोगों को उनकी आंशिक नींद से जगाने के लिए, उन्होंने एक अचंबित करने वाली बात के साथ अपना वक्तव्य शुरू किया,

"महारानी एलिजाबेथ का नीचला हिस्सा हमेशा गीला क्यों रहता है ?"

कुछ मिनट की चुप्पी के बाद, सभी एक-दूसरे को देखने लगे | यद्यपि उन्होंने 'नमी' के लिए कई जैविक कारणों का निदान करने का प्रयास किया, किंतु एक उल्लेखनीय या बेचैनी वहाँ थी, विशेष रूप से महिला विश्वासियों के बीच | उनमें से अधिकांश के लिए, यह प्रश्न काफी अशिष्ट था और एक पादरी से अप्रत्याशित था | उनमें से कुछ ने अवमानना के साथ उन्हें घूरना शुरू कर दिया तथा कुछ खुद के बीच ही घबराए हुए थे कि धर्मोपदेश के दौरान ऐसी अश्लील बातचीत करने के लिए एक पादरी को यह शोभा नहीं देती है।

पादरी ने अपने प्रश्न को अधिक स्पष्टता के साथ दोहराया, किंतु किसी से कोई जवाब नहीं मिला।

अंत में, पादरी ने इस सवाल का जवाब दिया, "महारानी एलिजाबेथ एक जहाज का नाम है गिरिजाघर में केवल एक शर्मिंदा मौन थी।

सकारात्मक रवैये वाले लोगों और नकारात्मक व्यक्तियों के बीच कुछ प्रमुख अंतर यह है कि;

जब सकारात्मक दृष्टिकोण वाले लोग बाधाओं को दूर करने के तरीकों की तलाश करते हैं, तब अन्य लोग, दोषी ठहराने के लिए लोगों की तलाश करते रहते हैं।

जब सकारात्मक दृष्टिकोण वाले लोग संकट के दौरान अपनी जरूरतों का बलिदान करते हैं, तो दूसरे उसी की रक्षा करते हैं।

जब सकारात्मक दृष्टिकोण वाले लोग समाधान तलाशते हैं, तो अन्य समस्याएँ तलाशते हैं।

जब सकारात्मक दृष्टिकोण से लोग वसूली के लिए योगदान देते हैं, तो दूसरे उसका फायदा उठाते हैं।

जब सकारात्मक दृष्टिकोण से लोग सबको एकजुट करते हैं, तो दूसरे उन्हें छोटे से लाभ के लिए बिखरे देते हैं।

जब सकारात्मक दृष्टिकोण वाले लोग खुश होने के कारण देखते हैं, तो दूसरे उसके विपरीत कारण देखते हैं।

जब सकारात्मक दृष्टिकोण वाले लोग विपत्तियों में संभावनाएँ देखते हैं, तो दूसरों को प्रतिकूलता की संभावनाएँ दिखाई देती है।

एक प्रबंधन सलाहकार होने के नाते, मैं कई कमज़ोर व्यापारिक इकाइयों से गुजरा, जो बचने के लिए संघर्ष कर रहे थे। संगठन के अंदर के लोगों के खराब रवैये ही उनकी नाकामयाबी का मुख्य कारण था।

छोटी चीजें ही एक बड़ा अंतर बनाती हैं।

भारतीय नौसेना के एक पूर्व अधिकारी (ex – petty officer) जिसने मुंबई की एक बड़ी सी कंपनी में एक सहायक प्रबंधक के पद के लिए आवेदन किया था, वह अपने नौसेना के बैच के साथी अमित सावले, जो उस कंपनी का CEO था और साक्षात्कार बोर्ड का कार्य संभाल रहा था, उसे देखकर बहुत ही आश्वर्यचकित और खुश हो गया।

हालांकि उनकी बेरोजगारी के कारण वे बेचैन थे, उनके पुराने बैच के दोस्त की उपस्थिति ने उन्हें नौकरी पाने का आश्वासन मिला। साक्षात्कार सफल हुआ और अंत में, शंकर को सीईओ के कार्यालय में सहायक प्रबंधक के रूप में चुन लिया गया।

सीईओ के रूप में अमित का विकास, शंकर के लिए आश्वर्य की बात थी। एक सप्ताह के अंत में, सीईओ ने अपने पुराने बैच के दोस्त शंकर को अपने घर में आमंत्रित किया।

अपने पद सेवानिवृत्ति के अनुभवों पर अपनी चर्चा के कुछ मिनटों बाद, शंकर ने अमित से पूछा कि कैसे उन्होंने खुद को वर्तमान स्तर की ऊँचाई तक पहुँचाया। सीईओ बस मुस्कुराए और बोले, "यह और कुछ नहीं मेरा व्यवहार था" ...। शंकर ने उसकी ओर उत्सुकता से देखा अमित ने कहा "शंकर मुझे नहीं पता है कि तुमको याद है या नहीं, हम दोनों थाणे के कार्यालय में काम करते थे। उस दिन हम दोनों ९:३० बजे तक काम करते रहे और उसके बाद मैस हॉल, जो हमारे कार्यालय से लगभग १५ मिनट दूर था, उस ओर निकल पड़े। हम उसके बंद होने से पहले पहुँचने के लिए जल्दी – जल्दी साइकिल चलाने लगे।

मैस हॉल तक पहुँचने से पहले ही मुझे एक बात का अनुमान हुआ कि अत्यधिक गोपनीय क्रिप्टो प्रकाशनों में से एक, जिसका इस्तेमाल उस शाम हम कर रहे थे, उसे हम

अपने नामित सुरक्षित लॉकर में रखना भूल गए थे ।

मैंने अपनी चिंता साझा की और तुमको गोपनीय प्रकाशन की सुरक्षित सुरक्षितता को आश्वस्त करने के लिए कार्यालय में मेरे साथ चलने के लिए कहा था । लेकिन तुमने कोई चिंता नहीं दिखाई और मुझसे भी कहा कि, "तुम चिंता क्यों कर रहे हो, रात के समय कार्यालय को सरक्षित रखने के लिए कई अन्य लोग हैं । यदि किताब बाहर छूट भी गई है, तो भी कोई उस पर तब तक ध्यान नहीं देगा, जब तक कि हम अगले दिन सुबह कार्यालय में वापस न पहुँच जाएँ ।"

"तुमने मुझे मेस के समय के बारे में पुनः याद दिलाया जो केवल ९:१५ बजे तक ही खुलता था और रात के खाने के लिए तुम आगे निकल पड़े । लेकिन मैं वापस आ गया और मैंने दस्तावेज़ को सही जगह पर सुरक्षित रखा । उस रात मुझे खाली पेट सोना पड़ा । "

अमित ने कहा, "हमारे जीवन में, हर चीज़ का हिसाब होता है, लेकिन आम लोगों को इस सत्य का एहसास नहीं होता है । हमारे प्रयास कभी व्यर्थ नहीं होते हैं । यह हमारे कार्यों के आधार पर, अच्छे या बुरे परिणाम के साथ पुरस्कृत किए जाते हैं ।"

"हमारे चारों ओर बहुत से लोग चीजों को बहुत हल्के से ले लेते हैं, उन्हें जीवन में कई चीजों में कोई गंभीरता नहीं मिलती । चाहे परवरिश, रिश्तेदारी, व्यवसाय, शिक्षा, वित्त, राष्ट्रीय सुरक्षा, प्रेम लीला, स्वास्थ्य सेवा या यौवन संबंध तक हो, हम उन्हें हल्के ढंग से नहीं देख सकते क्योंकि,

रवैया संक्रामक होता है, इसका प्रभाव हर जगह प्रतिबिम्बित होता है ।

"आपका हल्का दृष्टिकोण कम या शून्य परिणाम उत्पन्न करेगा क्योंकि आपके हल्के प्रयास कठिन और भारी चट्टानों को स्थानांतरित करने के लिए पर्याप्त नहीं होंगे, यह और कुछ नहीं बल्कि जीवन के प्रति आपका दृष्टिकोण ही है जो आपको समृद्ध या गरीब बनाता है, आपके किस्मत या भाग्य की यहाँ कोई भूमिका नहीं होती ।"

यहाँ कई कारक हैं जो हमारे दृष्टिकोण के गठन में योगदान करते हैं जिसमें परिवार की पृष्ठभूमि, बचपन के दिन, संगठन, तत्काल परिवेश, स्तर और शिक्षा प्रणाली, धार्मिक प्रभाव, वित्तीय पृष्ठभूमि, राजनीतिक परिवेश, मीडिया का प्रभाव, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, सहकर्मी के प्रभाव, नौकरी का तरीका, और अनुभव आदि शामिल हैं ।

सकारात्मक दृष्टिकोण प्रयास को बढ़ावा देता है, तथा प्रतिशोध और क्रोध के भूख को कम कर देता है । यह वर्तमान और भावी पीढ़ियों में समृद्धि और परिवर्तन लाता है ।

सकारात्मक रवैये वाले लोग प्रतिकूल परिस्थितियों को संभावनाओं में तथा नुकसानों को अवसर में बदल सकते हैं।

हम अपने चारों ओर बहुत पैसे और संपत्ति वाले लोगों को देखते हैं। वे प्रतिदिन अधिक जमा करते हैं किंतु फिर भी गरीबी का जीवन बिताते हैं। यह हमारी भौतिक संपत्ति नहीं, बल्कि उसी के लिए हमारा दृष्टिकोण है जो हमें समृद्ध या गरीब बनाता है।

एक सकारात्मक दृष्टिकोण को बनाए रखने से जीवन हरापन और आशाजनक हो जाता है। हम एक सकारात्मक दृष्टिकोण कैसे बना सकते हैं और बनाए रख सकते हैं? ऐसा करने के कई तरीके हैं।

सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने की बारह युक्तियाँ।

१. सपना देखें।

सकारात्मक दृष्टिकोण होने के लिए, हमारे जीवन में एक मजबूत इच्छा का होना आवश्यक है।

इच्छाएँ प्रतिकूल परिस्थितियों की तुलना संभावनाओं की तलाश करते हैं।

इस दुनिया में जीवित रहने के कारण हमारे सपने और इच्छाएँ हैं। वे हमें आगे बढ़ाते रहते हैं। जब हमारे सपने मजबूत हो जाते हैं, तो हम विकल्प और संभावनाओं को देखने के लिए मजबूर हो जाते हैं। जब संभावनाओं को देखना हमारी आदत बन जाती है, हम प्रतिकूल परिस्थितियों की अपेक्षा संभावनाओं के प्रेषक बन जाते हैं।

धीरे-धीरे, वे उन लोगों को हतोत्साहित करने की आदत बना लेते हैं, जो असंभव और अलगाव को सिंडिकेट करते हैं।

जब हम संभावनाओं के विषय में अधिक का दावा करते हैं तो हमारा अवचेतन मन असंभव की अपेक्षा संभावनाओं को स्वीकार करना शुरू कर देता है तथा हम और अधिक सकारात्मक विचारों को प्राप्त करते हैं।

२. सकारात्मक परिणामों में विश्वास करें।

सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखने के लिए हमारे विश्वास प्रणाली की समीक्षा की जानी चाहिए और उसे नियमित रूप से बनाए रखा जाना चाहिए।

मेरा विश्वास कीजिए, हमारा रवैया हमारे जीवन को प्रभावित करता है | जीवन के प्रति हमारा दृष्टिकोण यह निर्धारित करता है कि हम कितने खुश या दुखी होंगे | हम हमेशा यह नहीं बदल सकते कि हमारे साथ क्या होता है, किंतु हम अपनी प्रतिक्रिया के तरीके को बदल सकते हैं | हम हमेशा अपने जीवन में चुनाव करने के लिए स्वतंत्र होते हैं | हर बार जब भी हम किसी भी स्थिति का सामना करते हैं, हम एक विकल्प बनाते हैं |

३. एक सकारात्मक तरीके से घटनाओं का ढांचा बनाएँ।

सकारात्मक दृष्टिकोण को बनाए रखने के लिए, हमें घटनाओं को एक सकारात्मक तरीके से तैयार करने की आवश्यकता होती है | जिस तरह से हम घटनाओं के बारे में बात करते हैं, वह हमारे दृष्टिकोण को प्रभावित कर सकता है |

"आपके विश्वास आपके विचार बन जाते हैं,
आपके विचार आपके शब्द बन जाते हैं,
आपके शब्द आपके कार्य बन जाते हैं,
आपके कार्य आपकी आदतें बन जाती हैं,
आपकी आदतें आपके मूल्य बन जाते हैं,
आपके मूल्य आपके भाग्य बन जाते हैं। "
- महात्मा गांधी

जब हम एक नकारात्मक तरीके से एक घटना के विषय में बात करते हैं या सोचते हैं, तो हम इसके विषय में नकारात्मक तरीके से सोचते रहेंगे | हालांकि, अगर हम इसके विषय में सकारात्मकता से बात करते हैं, तो हम इसके लिए अपने दृष्टिकोण को बदलना शुरू कर देंगे |

प्रतिकूलताएँ आम और अपरिहार्य होते हैं | लेकिन हम हमेशा एक नई शुरुआत करने की स्वतंत्रता रखते हैं |

उदाहरण के लिए, जब हमें एक अप्रिय स्रोत से कोई कॉल, शगुन, या ईमेल से परेशान करने वाली कोई टिप्पणी मिलती है, तो हम सोच लेते हैं, कि 'यह दिन भयावह होगा।' दूसरी ओर, हम यह सोच सकते हैं कि, 'बेशक वह बुरा था, लेकिन हमारा दिन अब इससे बेहतर ही होगा।' घटनाओं पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं होता, किंतु प्रतिक्रिया पर होता है।

गुजरे पल कभी हमें किसी अवसर की पेशकश नहीं करते हैं - केवल सबक सिखाते हैं | तो हम इसके लिए चिंता क्यों करें ? गुजरे कल मात्र यादें होती हैं और हमारे वर्तमान को बदलने में शायद ही कोई भूमिका निभाते हैं |

सकारात्मक दृष्टिकोण वाले व्यक्ति, अतीत या भविष्य की अपेक्षा हमेशा वर्तमान में रहता है।

4. सकारात्मक भाषा का उपयोग करने का अभ्यास करें।

सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखने के लिए, हमें अपनी भाषा को बदलने का अभ्यास करना चाहिए | कोशिश किए बिना, केवल यह कहने के बजाय कि 'हम ऐसा नहीं कर सकते हैं', चलिए हम खुद को दूसरे तरीके से सोचने के लिए प्रोत्साहित करें |

आइए सकारात्मक भाषा का प्रयोग करके अभ्यास करें, जैसे "हम इसे कर सकते हैं यदि हम इसे नियम से करें।"

जब हम कहते हैं कि, 'हम ऐसा नहीं कर सकते हैं' तो हम विश्वास करते हैं कि यह असंभव है |

5. अच्छा अनुभव बनाएँ।

चूँकि, हमारे अनुभव, चाहे अच्छे हो या बुरे, हमारे दृष्टिकोण के गठन की दिशा में बहुत योगदान करते हैं; हमें अपने जीवन में अच्छे अनुभवों के लिए अधिक मौकों का निर्माण करने की आवश्यकता है | जैसा कि पिछले अध्याय में वर्णित है, कि हमारे जीवन में जो कुछ भी घट रहा है, वह गलती से नहीं आते हैं, किंतु हमारे अतीत में हमारे द्वारा किए गए चुनाव और विकल्प के परिणाम ही होते हैं | एक सकारात्मक दृष्टिकोण को बनाए रखने के लिए, हमें प्रतिक्रियाशील होने के बजाय सक्रिय होने का अभ्यास करना होगा ताकि हम भविष्य में नकारात्मक परिणामों को कम कर सकें |

सक्रिय होना परिणामों को बेहतर बना सकते हैं।

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, हर परिस्थिति में, हम दो विकल्पों में से किसी एक को चुनने के लिए स्वतंत्र होते हैं; या तो हम शिकायत कर सकते हैं, या हम समस्या को सुलझाने के लिए कुछ कर सकते हैं | हालांकि शिकायत करना अनुपालन करने से आसान होता है, कार्यवाही हमेशा लोगों को स्थिति को लेकर बेहतर महसूस कराते हैं | यह उन्हें सक्षम, आत्मविश्वासी और उत्पादक महसूस करवाएगा | हमारी कार्यवाही का हर परिणाम हमारी क्षमताओं या अक्षमता का दृश्यमान प्रमाण होता है |

जो लोग अपने जीवन में छोटी चीजों का आनंद भी नहीं उठा सकते हैं, वे शायद ही कभी अपने जीवन का आनंद ले पाते होंगे। क्योंकि, जब वे हर समय अपने बड़े लक्ष्यों पर ध्यान देते हैं, कभी-कभी जाने में, वे रोजमर्रा की जिंदगी की खुशियों को खो देते हैं।

अपने बच्चों की मुस्कुराहट, एक पुराने स्कूल के दोस्त से गले मिलना, तारों और चाँद की रोशनी से भरी एक रात, एक धुंधली सुबह पर चलना। यह बहुत सरल लग सकता है, किंतु साधारण चीजें हमेशा आसान नहीं होते हैं और वे पैसे की शक्ति से बाहर भी होते हैं।

६. वर्तमान का आनंद लेने का अभ्यास करें।

सकारात्मक दृष्टिकोण को बनाए रखने के लिए, हमें हर क्षण का आनंद लेने का अभ्यास करना चाहिए और जो हम कर रहे हैं, उसीसे खुशी लेनी चाहिए।

भौतिकवादी दुनिया के प्रति असंतुष्टता भी हमारे नकारात्मक दृष्टिकोण को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकती है। हमारे समाज में बहुत से लोग हैं, जो हमेशा नई चीजों की खोज में होते हैं, भले ही उन्हें उसकी कोई जरूरत नहीं होती।

उनके पास जो कुछ भी है, वे उससे खुश नहीं हैं। हालांकि वे जनता में इसका खुलासा भी नहीं करते हैं, वे हमेशा दूसरों के साथ खुद की तुलना करते रहते हैं।

जब लोग हमेशा अगले साधन की तलाश में रहते हैं, तो वे उसकी सराहना नहीं करते जो उनके पास है। वास्तव में, हम अपनी खुशियाँ वहाँ देखते हैं जो हमारे पास नहीं हैं, न कि जो कुछ हमारे पास है, जिसका अर्थ है, हम हमेशा उस चीज़ की खोज करेंगे जो हमें खुश कर देगा।

७. पढ़ने को अपनी आदत बनाएँ।

स्वयं सहायक पुस्तकों को पढ़ना, पॉडकास्ट या रेडियो कार्यक्रमों को नियमित रूप से सुनना और आत्म-चर्चा करने का अभ्यास करना, जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखने में भी हमारी सहायता कर सकता है।

स्वयं से बात करना एक अच्छा व्यायाम है जो कई सफल लोगों द्वारा सफलतापूर्वक अभ्यस्त किया गया है। अगर हम अपने भीतर के आलोचक को सकारात्मक आवाज में बदलते हैं, तो हम अपने अच्छे कर्मों के लिए खुद की सराहना करते हैं और प्रत्येक प्रशंसा हर एक के लिए मूल्यवान हो जाती है।

एक सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखने के लिए, हमें मीडिया और समाचारों से बचने की जरूरत है जो हमें नीचे की ओर झुका देती है। वे हमें उतना ही प्रभावित कर सकते हैं, जितना वे अन्य लोगों को करते हैं, जिन्हें हम अपने चारों ओर घेर लेते हैं।

८. खुद की राय का मूल्य करें।

एक सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखने के लिए, हमें अपने ही राय को महत्व देना आवश्यक है। अन्य लोग हमें खुद के विषय में बुरा महसूस कराने का प्रयास कर सकते हैं। लोग दूसरों को परखते हैं तथा दूसरों पर टिप्पणी करने में खुशी महसूस करते हैं। आम आदमी हर चीज़ के विषय में अपनी राय देने में बहुत उदार होता है। वे लोगों को परखते हैं तथा दूसरे की उपस्थिति या कार्यों पर अपनी राय देते हैं। किंतु अक्सर उनकी राय का दूसरों के साथ कोई लेना देना नहीं होता है। उनकी राय अधिक मौसमी और स्थितिजन्य होते हैं।

अक्सर, लोग दूसरों के विषय में जो बात करते हैं, वे वास्तव में दूसरों की अपेक्षा अलग हो सकते हैं। कई लोग ऐसा खुद को बेहतर महसूस कराने के लिए करते हैं।

९. आत्म अनभिज्ञता से बचें।

यह लोगों की बुरी प्रवृत्तियों में से एक है जो बिना किसी कारण के खुद को कम अनुमानित करते हैं। भले ही खुद को कमजोर करने वाले लोगों की संख्या ग्रामीण इलाकों में अधिक है, शहरी क्षेत्रों के लोग भी इसमें कम नहीं। अपने देश या समुदाय के बावजूद, लगभग सभी इंसान खुद के अल्पानुमान की बुरी प्रवृत्ति से प्रभावित होते हैं।

खुद के अल्पानुमान की आदत से बचने के लिए और सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ाने के लिए, आपको अपनी छोटी - छोटी चीज़ों पर भी भरोसा होना चाहिए तथा विश्वास करना चाहिए कि यदि वे यह एक छोटी सी चीज कर सकते हैं, तो वे शायद अन्य चीज़ें भी कर सकें जो कि अधिक चुनौतीपूर्ण होते हैं। हर बार जब वे नई चीज़ें करते हैं, तो उनका आत्मविश्वास स्तर बढ़ जाता है और वे जीवन के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण प्राप्त करने में सक्षम होते हैं।

१०. विषाक्त लोगों से दूर रहें।

एक सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखने के लिए, हमें विषाक्त लोगों से बचना चाहिए जो नकारात्मकता फैलाते हैं तथा सकारात्मक लोगों के साथ खुद को घेरना चाहिए। जिन लोगों के साथ हम सामूहीकरण करते हैं, वे हमारे मानसिक रुख को बहुत प्रभावित करते हैं।

| हमें अपने आप को उन लोगों के बीच रखना चाहिए जो खुश होने की कोशिश करते हैं, क्योंकि वह हमें खुश होने के लिए प्रोत्साहित करेगा |

११. दूसरों की सहायता करें।

दूसरों की सहायता करके, वास्तव में, हम सकारात्मक बदलाव ला रहे हैं, जो हमें बेहतर महसूस कराता है, तथा एक सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करता है | इसके अलावा, यह हमारी जिंदगी में हमारे लिए कृतज्ञता की भावना विकसित करने में मदद करता है |

याद रखें, चीजों को सकारात्मक रूप से देखना और सकारात्मक दृष्टिकोण रखना, हमें मन की शांति दिलाता है तथा मुसीबतों से बचाता है | समय बचाएँ और कम दुश्मन बनाएँ |

नियोक्ता या कर्मचारी, शिक्षक या छात्र, पुजारी या आस्तिक के रूप में सफल होने के लिए, सकारात्मक दृष्टिकोण रखना जरूरी है | चाहे हमारे क्षेत्रफल की गतिविधियाँ कुछ भी हो, सफलता का निर्णय किसी और से नहीं बल्कि हमारे दृष्टिकोण से ही लिया जा सकता है |

१२. कृतज्ञता का एक दृष्टिकोण बनाए रखें।

कृतज्ञता का एक दृष्टिकोण दिखाने का अभ्यास करें, ताकि हम न केवल उत्सर्जन करें बल्कि साथ ही अपने आप में और अधिक सकारात्मक ऊर्जा भी जोड़ सकें | दूसरों के चेहरे में मुस्कुराहट लाने की अपेक्षा उन्हें रुलाना आसान होता है | दूसरों को मुस्कुराहट से भरना तब तक असंभव होता है जब तक कि हम खुद को सकारात्मक दृष्टिकोण से न भर दें | आभार एक अच्छे दृष्टिकोण के लिए आवश्यक है क्योंकि यह हमें आस-पास की अच्छी चीजों की सराहना करने में मदद करता है | प्रशंसा की सराहना की उम्मीद कभी मतलबी लोगों से नहीं की जा सकती |

.....

11. कृतज्ञता का रवैया

रवैया सही मायने में तब प्रतिबिंबित और पूर्ण होता है, जब कृतज्ञता का रवैया हमारे जीवन के सभी अच्छे और बुरी चीजों के अनुभवों की ओर दिखाया जाता है।

याद रखें,

जब अच्छे अनुभव हमें खुशी देते हैं, तब बुरे अनुभव हमें सबक सिखाते हैं।

हमारे पास इस दुनिया में खुश होने के कई कारण होते हैं, लेकिन साथ ही जो कुछ भी हमारे पास नहीं है उस पर भी पछतावा करने का हमें कोई अधिकार नहीं है, क्योंकि अधिकारों को केवल तभी उचित बनाया जा सकता है, जब हमारा उसमें कोई योगदान हो।

यह ध्यान देने योग्य दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि अधिकांश आम आदमी बिना किसी योगदान के कई चीजों की उम्मीद करते हैं तथा उन पर अपने अधिकार होने का दावा करते हैं। वे हमेशा स्वयं को 'अधिकारों' के लिए सतर्क दिखाते हैं किंतु कभी भी 'कर्तव्यों' के लिए सतर्क नहीं बनते। वे अपने जीवन में किसी भी चीज के लिए कृतज्ञता का कोई रवैया नहीं दिखाते हैं।

सबसे बड़ा विरोधाभास,

**जो व्यक्ति कृतज्ञता का कोई रवैया नहीं दिखाता है,
वह दूसरों से उसकी अधिक अपेक्षा करता है।**

यह उन्हें तब उत्तेजित करता है जब उनका पालतू कुत्ता उन्हें शुभकामनाएँ देते समय अपनी पूँछ हिलाने में देरी कर देता है। यह उन्हें असहिष्णु बना देता है जब उनके जवान बच्चे अलग तरीके से सोचने लगते हैं। इससे उन्हें तब बेचैनी होती है जब उनके पति जाने – अनजाने में किसी बात के लिए उनकी सहमति लेना भूल जाते हैं।

बुरी चीजों को छोड़कर, वे अपने द्वारा दूसरों के लिए किए गए हर कार्य का एक स्पष्ट हिसाब रखते हैं, साथ ही साथ वे सभी बुरे अनुभवों को याद करके, उन पर अपनी प्रतिक्रिया दिखाना नहीं भूलते जो उन्हें दूसरों से प्राप्त हुए हैं। बल्कि वे सड़कों पर किए गए छोटे-छोटे दान का भी हिसाब रखते हैं। वे प्रतिफल की उम्मीद के साथ सब कुछ करते हैं।

इन दिनों, हममें से अधिकांश आराम और उपयुक्तता की दुनिया में रह रहे हैं। हम आरामदायक घरों में रहते हैं, अच्छे कपड़े पहनते हैं, विश्वसनीय परिवहन का लाभ उठाते

हैं, आधुनिक संचार का लाभ उठाते हैं और बहुत कुछ | कई लोग स्वच्छ पानी, स्वस्थ भोजन, आकर्षक जलवायु, और खूबसूरत परिवेश के आशीर्वाद से परिपूर्ण होते हैं | हममें से अधिकांश की पहुँच गुणवत्ता शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल तक होती है | हममें से अधिकांश अधिक आज़ादी, बचाव और सुरक्षा के साथ एक अच्छे जीवन जीते हैं |

यद्यपि अपने किसी प्रयास के बिना ही, हम इस ब्रह्मांड के सभी अद्भुत वरदानों का आनंद उठाते हैं, फिर भी हम, उन चीज़ों पर जो हमारे पास नहीं हैं, ध्यान केंद्रित करने की बुरी आदत में पड़ जाते हैं | हम आसानी से भूल जाते हैं कि दुनिया भर के लाखों लोग अपने जीवन की जरूरतों को पूरा किए बिना जीवित रहते हैं | अधिकांश लोग खुश होने की बजाय नाखुश होने के कारण ढूँढ़ते रहते हैं |

साथ ही, हममें से ऐसे कितने लोग हैं, जो अपने जीवन में विभिन्न अवसरों पर किए गए लाभों को याद करते हैं और उसके लिए आभारी होते हैं ? इस दुनिया को कृतज्ञता दिखाने के कई कारण होते हैं | हमें ब्रह्मांड का बहुत आभारी होना चाहिए कि हमें मनुष्य के रूप में जन्म लेने का अवसर मिला, जानवर के रूप में नहीं | मानव जीवन कितना अद्भुत है ... इसमें सपने, सोच, कार्य, शासन, सही, सुधार और भूलने की क्षमता है ...।

मुझे नहीं लगता कि किसी अन्य जानवर के पास ये सभी आशीर्वाद हैं

कृतज्ञता का दृष्टिकोण

हमें ब्रह्मांड का आभारी होना चाहिए कि हमारे पास हमारी देखभाल करने वाले माता-पिता हैं, क्योंकि इस दुनिया में कई बच्चों को उनके जन्म के बाद सड़कों पर छोड़ दिया जाता है |

प्रत्येक को अपनी मिली हुई आजादी, जिसका वह लुप्त उठाता है, उसके लिए बहुत आभारी होना चाहिए क्योंकि इस दुनिया में कई लोगों को पढ़ने तक की अनुमति नहीं होती है | विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ के मिलने के लिए हमें आभारी होना चाहिए क्योंकि कई लोग दुनिया के विभिन्न भागों में भूखे रह रहे हैं | हमें सामाजिक सुरक्षा और जलवायु का आनंद लेने के लिए पर्याप्त आभारी होना चाहिए; इस दुनिया में कई लोग अभी भी उपशून्य या उच्च तापमान में जीवित रह रहे हैं | हमारे आधुनिक वाहनों के लिए हमें बहुत आभारी होना चाहिए क्योंकि इस दुनिया में कई लोग अब भी मीलों की दूरी नंगे पैर ही तय कर रहे हैं |

प्रत्येक को एक शांतिपूर्ण देश होने के लिए बहुत आभारी होना चाहिए क्योंकि कई लोग अभी भी इसे एक बनाने के लिए लड़ रहे हैं |

हमें समृद्ध या उत्तरदायी बनाने के लिए ब्रह्मांड का आभारी होने दें, क्योंकि बहुत से लोग अपने प्रिय लोगों की भूख को मिटाने के लिए अपने आंतरिक अंगों को बेच रहे हैं।

आभार प्रकट करने के हमारे दृष्टिकोण को हमारे सपने प्राप्त करने में सहायक होने दें.....

मेरे साथ अपने निरंतर यात्रा के लिए बहुत – बहुत धन्यवाद। बेशक, इस पुस्तक को पढ़ने में आपके द्वारा दिखाई जानेवाली आपकी रुचि आपके सफल होने की इच्छा का संकेत करते थे। मेरा इरादा सिर्फ आप में एक चिंगारी उत्पन्न करना था क्योंकि मुझे पता है कि एक छोटी सी चिंगारी आपके जीवन में बड़ा ज्ञान पैदा कर सकता है।

यदि मेरे ट्यूशन मास्टर श्री वेलायुधन द्वारा उत्पन्न की गई एक समान चिंगारी, सालों पहले मुझे बदल सकती है और मुझे औसत दर्जे से मेरे वर्तमान समृद्धि के लिए तरक्की की ओर ले सकती है, तो यही आपके साथ क्यों नहीं हो सकता?

मुझे यकीन है कि आप अपने जीवन में हर सफलता और समृद्धि को हासिल करेंगे क्योंकि आप इसके लायक हैं। आशा है कि आप इस जीवन को बदल देने वाले इस संदेश को अपने चारों ओर फैलाने में संकोच नहीं करेंगे।

आशा है कि आप मेरी अगली किताब के माध्यम से दूसरे दौर में मेरे साथ जुड़ेंगे। तब तक के लिए एक छोटा – सा अंतराल लें।

.....

नोट

નોટ